सम्पादक-मण्डल :

व्यवस्थापक :
धर्मभानु जी

सम्पादक :
आचार्य हरिश्चन्द्र

सह सम्पादिका :
आचार्या सुभाषिणी

समाज सन्देश

सामाजिक व सांस्कृतिक लेखों का संगम
गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां
तथा
कन्या गुरुकुल खानपुर कलां का मासिक पत्र

प्रकाशन तिथि : 25 जनवरी, 1979

वर्ष 19 जनवरी/फरवरी/मार्च, 1979 अंक 9/10/11
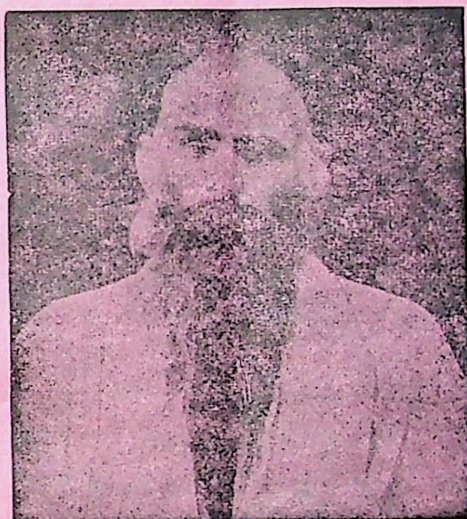
(स्व० श्री भक्त फूलसिंह जी)

तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदेऽर्चन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन् ।
अवन्त्यस्य पवितारमाशवो दिवः पृष्ठमधिरोहन्ति तेजसा ॥८७६॥

फैली हुई द्युलोक में तप की पवित्रता ।
स्थिर तन्तु हैं जहां बढ़ते सच्चरित्रता ॥
इस सोमभक्त को सभी हैं प्यार कर रहे ।
जो शीघ्र दिव्य तेज से द्योलोक भर रहे ॥

—निधि

मूल्य : एक प्रति 90 पै० वार्षिक चन्दा 10 रुपये

विषय-सूची

समाज सन्देश में छपे विचारों से हमारा सहमत होना या न होना आवश्यक नहीं। समाज सन्देश में हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी मत से सम्बन्ध रखता हो अपने लोकहितकारी विचार अथवा लेख प्रकाशनार्थ भेज सकता है। उसकी मौलिकता का लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा।

—सम्पादक

❀

लेख भेजने तथा अन्य विषयक पत्र व्यवहार का पता :—

योगेश चन्द्र

गुरुकुल भैंसवाल कलां (सोनीपत)

सम्पादकीय—

गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष में

"चमन वाले खिजां के नाम से घबरा नहीं सकते ।
कुछ ऐसे भी फूल खिलते हैं, जो मुरझा नहीं सकते ।।"

हम इस वर्ष 26 जनवरी को अपनी सार्वभौमिकता की स्थापना के 28 वर्ष पूर्ण कर 29वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। 26 जनवरी हमारे महान् राष्ट्र की आशाओं एवं आकांक्षाओं का महा पर्व है। उन आस्थाओं का पुण्य पर्व जिनकी घोषणा सन् 1930 की 26 जनवरी को रावी के तट पर आज से 48 वर्ष पूर्व की गई थी कि—

"हमारा यह विश्वास है कि किसी भी दूसरी जनता की तरह भारतीय जनता का भी यह अनुल्लंघनीय अधिकार है कि बह स्वतन्त्र हो और अपने श्रम के फल का उपगोग करे, उसकी जीवन की आवश्यकताएं पूरी हों ताकि उसे विकास के पूरे अवसर मिल सकें।"

इतिहास में कुछ ऐसी तिथियां आती हैं जो हमें हमारे गौरवमय अतीत के पृष्ठों में खो जाने के लिए बाध्य कर देती हैं, जिन का स्मरण कर प्रत्येक साधारण से भी साधारण मानव का खून खोलने लगता है। उत्साह की तरंगें हिलोरे लेने लगती हैं तथा अपने पूर्वजों का स्मरण कर वह मन में कुछ न कुछ करने की ठान लेता है। ऐसी ही असामान्य तिथियों में 26 जनवरी की गणना होती है जिसका महत्त्व 'गणतन्त्र दिवस' के रूप में विश्व-विख्यात है तथा प्रत्येक मानव के हृदय-पटल पर अंकित है। दीवाली की तरह, जो असत्य पर सत्य की विजय—राम राज्य की स्थापना का प्रतीक है, हमारा यह विशाल संभावनाओं वाला राष्ट्र गणतन्त्र दिवस का साम्राज्यवाद पर स्वराज्य की विजय के प्रतीक के रूप में प्रतिवर्ष मनाता रहा है। गली मोहल्लों से लेकर मैदानों और राजधानी के विजय चौक तक हर जगह देश के करोड़ों नर-नारी नारे लगाते रहते हैं, मगर इस बार के उत्साह में खुशी के अतिरिक्त एक भावना और होगी—और वह है उपलब्धि का सन्तोष !

सन् 1950 में अपनी स्थापना के बाद से, गणतन्त्र ने इस देश की 60 करोड़ जनता की खुशहाली के साधन कायम करने, विदेशी गुलामी के अवशेषों को बुहार फेंकने और नव-साम्राज्यवादी गुलामी के अदृश्य फन्दे को काटने के लिए शानदार प्रयास किए थे परन्तु आपात् स्थिति की घोषणा से तथा मीसा (MISA) जैसे प्रजातन्त्र घातक कानून से गणतन्त्र को 26 जून, 1975 को कलंकित कर दिया गया। 24 जून 1971 को इसी मीसा को जब लोक सभा में पेश किया गया तो श्री अटल विहारी वाजपेयी ने इसे 'जंगली कानून' कह कर पुकारा था तथा इसे तानाशाही की तरफ पहला कदम बताया था। श्री राजनारायण ने उसी दिन कहा था कि आज से लोकतन्त्र खतरे में है। श्री लाल कृष्ण अडवानी ने भी इसे प्रतिपक्ष तथा मजदूर, गरीबों के आन्दोलनों को कुचलने के लिए सरकारी हथकण्डा तथा काला कानून कह कर बहिष्कार किया था। परन्तु यह कानून पास होकर ही रहा तथा उन नेताओं के वे इतने पहले कहे गये वचन सत्य साबित हुए। परिणाम स्वरूप लोकतन्त्र, गणतन्त्र को कलंकित होना पड़ा, परन्तु शुक्रिया परमात्मा का जो उसने निरीह जनता के साथ हुए खिलवाड़ व उपहास का अन्त करने के लिए चुनावों की घोषणा करवा दी तथा पुनः गणतन्त्र, लोकतन्त्र की स्थापना हुई और एक बार फिर हमें निष्कलंक गणतन्त्र मनाने का अवसर मिला। खैर ! रहने दीजिए इसे।

क्या कभी आपने विचारा कि गणतन्त्र किन कष्टों को झेलने का फ़ल है ? यह कितनी कुर्बानियों की धरोहर है, जिसका उपभोग हम स्वतन्त्र वातावरण में जन्म ले करके कर रहे हैं। आजादी प्राप्ति का प्रयत्न काफी लम्बे समय से किया जा रहा था क्योंकि भारत वर्ष को गुलामी के दिन काफी देखने पड़े हैं। 800 वर्ष तक भारत मुस्लिमों के आयत्त (आधीन) रहा। 200 वर्ष पर्यन्त आंग्ल शासकों की धौंस झेली, परन्तु बीच-बीच में स्वतन्त्रता के लिए प्रयासों की भी कसर न छोड़ी गई। सन् 1857 की क्रान्ति हुई, साइमन कमीशन बायकाट हुआ, असैम्बली हॉल में धमाके हुए, परन्तु आज़ादी नहीं मिली। इस आजादी को प्राप्त करने के लिए असंख्य मातृभक्त देश भक्तों को अपनी जान की होली खेलनी पड़ी थी। राष्ट्र में दो दल थे—एक नर्म दल, तथा दूसरा गर्म दल।

नर्म दल के नेता गान्धी जी थे जो अहिंसा व सत्य के पुजारी थे, कहते—यदि तुम किसी का भला नहीं कर सकते तो किसी का बुरा भी मत करो। यहां तक कि यदि कोई एक गाल पर चपेटा मारता है तो दूसरा गाल भी उसकी तरफ फेर दो। कर भला होगा भला के वे पक्के समर्थक थे ? 'कष्टकेनैव कण्टकम्' की नीति उन्हें स्वीकार न थी। वे कवि की इस उक्ति को चरितार्थ करते थे—जो तो को कांटा बुए ताहि बुए तू फूल।

इस के विपरीत वे लोग थे जो आजादी देवी की पूजा के लिए भारत माता की गुलामी की शृंखलाओं को कतरने के लिए कष्ट तो क्या प्राण तक देने या लेने में नहीं

झिझकते थे। गुलामी की अपेक्षा फांसी के फन्दे को चूमना या शत्रु को मौत के घाट उतार देना प्रशस्यतर जानते थे। उन्हें आजादी चाहिए किसी भी कीमत पर क्यों न मिले। आजादी की कीमत स्पष्टतया बलिदान है। क्रान्ति कारी समय-समय पर लूट-खसूट को भी बुरा नहीं मानते थे क्योंकि पैसे की ज़रूरत उन्हें इसके लिए बाध्य करती थी। उनके मन्तव्य को यह उक्ति स्पष्ट जाहिर करती है—

"जहां सच न चले वहां झूठ सही।
जहां हक न मिले, वहां लूट सही।।

काकोरी डकैती में कितने वीरों को फांसी का फन्दा चूमना पड़ा था। वास्तव में कुछ दयालु सी प्रकृति के लोग यथा महात्मा गांधी जी थे। वे उन लोगों को अच्छा नहीं समझते थे क्योंकि उनके सिद्धान्त भिन्न थे, यही कारण है कि आज आजादी प्राप्ति का सेहरा महात्मा गांधी के सिर बांधा जा रहा है क्योंकि उनकी पार्टी आजादी के एकदम बाद सत्ता में आ गई थी। तथापि उन शूरवीरों के पास स्वतन्त्रता प्राप्ति का इसके अतिरिक्त कोई सुव्यस्थित ढंग या उपाय न था, क्योंकि गोरे अंग्रेज शान्ति से मानने वाले नहीं थे, इसका प्रमाण गांधी जी के अनेकों आन्दोलनों की असफलता है। उन्हें शक्ति की, ईण्ट का जवाब पत्थर से देने की आवश्यकता थी, जो क्रान्तिकारियों ने दिया। लातों के भूत बातों से नहीं मानते। राम प्रसाद बिस्मिल शान्ति प्रिय लोगों को कहा करते थे— "आजादी कोई भिखारी को मिलने वाली भीख नहीं जो झोली में डाली जा सके। यह एक अमूल्य रत्न है जिसे प्राप्त करने के लिए सख्त से सख्त कष्ट उठाने की नौबत आती है" और आई भी। चाणक्य नीति में का है—

"नातिसरलैर्भाव्यं गत्वा पश्य वनस्थलीम्।
सरलास्तभ छिद्यन्ते कुब्जास्तिष्ठन्ति पादपाः।।"

अर्थात्—सीधे तो वृक्ष भी नहीं छोड़े जाते। सीधे खड़े पेड की टहनी को भी आते-जाते लोग तोड़ लेते हैं तथा टेढ़े वृक्ष को कोई हाथ नहीं लगाता। अतः आजादी की प्राप्ति में क्रान्ति का अपना विशेष महत्त्व है। आज जबकि सम्पूर्ण राष्ट्र में बलिदाता वीरों को श्रद्धांजलियां पेश की जा रही हैं वहीं खड़े होकर हमें यह भी प्रण लेना चाहिए कि हम अपनी मातृभूमि की इज्जत आबरू के वास्ते अपनी जान तक को भी लुटा देंगे, परन्तु मां का अपमान सहन न करेंगे।

अन्त में नेता जी सुभाषचन्द्र बोस, अशफाक उल्ला खां, राजेन्द्र लाहिड़ी, राम मनोहर लाहिा, महात्मा गांधी, सरदार भगतसिंह, चन्द्र शेखर, राजगुरु, बिस्मिल, सुख देव, जवाहर लाल नेहरू, धींगरा इत्यादि सभी देशभक्त वीरों को श्रद्धाँजलियां अर्पित हैं। परमात्मा ऐसे सपूत राष्ट्र को देता रहे, इसी इच्छा के साथ...... । हमारा सार्वभौम, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतान्त्रिक गणतन्त्र जिन्दाबाद !

"शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मिटने वालों का यही बाको निशाँ होगा।।"

—सम्पादक

---

* ओ३म् *

कन्या गुरुकुल खानपुर कलां

(निकट गोहाना)

जि० सोनीपत (हरियाणा)

का

38वां वार्षिक-महोत्सव

महोत्सव की तिथियां :-

माघ सुदी चतुर्दशी एवं पूर्णिमा सम्वत् २०३५, तदनुसार
शनिवार, रविवार, **10** व **11** फरवरी **1979** ई०

विशेषताएँ :--

लोक-प्रतिष्ठित एवं ख्यातिनामा सन्यासियों, महात्माओं, विद्वानों, राजनीतिज्ञों, समाज-सेवियों, भजनोपदेशकों तथा प्रतिभावान् छात्राओं आदि द्वारा सामयिक उपदेश, प्रवचन, भाषण, भजन-गीत एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ, स्त्री-सम्मेलन, आयुर्वेद-सम्मेलन एवं नशाबन्दी-सम्मेलन इस महोत्सव की विशेषताएँ होंगी ।

आमन्त्रित महानुभाव :—

शासन के उच्चाधिकारियों, मन्त्रियों, नेताओं, समाज के उत्कृष्ट-सेवकों, धर्म-गुरुओं, साधु-सन्यासियों, भजनोपदेशकों तथा जाने-माने विद्वानों-विदूषियों एवं आप सबको इस शुभ अवसर पर सादर आमन्त्रि किया गया है ।

विशेष :—

स्वामी श्री सुरेन्द्रा नन्द जी महाराज की अध्यक्षता में दिनांक 3 फरवरी, 1979 से प्रातः सायं "वेद-परायण यज्ञ" होगा।

आपकें विनीत सेवक :—

सुभाषिणी
आचार्या

विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड
उपकुलपति

भारतीय राजनीति—

अनिश्चितता के भंवर में

मार्च 1977 में जनता-लहर पर सवार होकर जिस उत्साह से जनता पार्टी सत्ता में आई थी, आज वह सारा उत्साह समाप्त प्राय है। आज फिर जनता पार्टी के बदल के रूप में एक तीसरे 'विकल्प' की तलाश शुरु हो गई है लेकिन कुल मिला कर स्थिति इतनी विकट है कि बड़े बड़े राजनीति-विशारदों की समझ में कुछ नहीं आ रहा है। कुछ पर्यवेक्षकों के विचार से जनता पार्टी का विकल्प जनता पार्टी के ही अन्दर से निकलेगा। किशन पटनायक जैसे कुछ समाजवादी चिन्तक समझते हैं कि कदम कुआ में बाल्टी डाल कर तीसरा विकल्प निकल सकता है। लेकिन लगता है लोकनायक की राजनीतिक रस्से में अब वह दम नहीं रहा और साथ ही समाजवादी खेमे में भी दो गुट हैं—एक गुट मोरार जी के पूंजीवाद की चोबदारी कर रहा है तो दूसरा गुट चौ० चरण सिंह के 'सामन्तवाद' का हुक्का भर रहा है। ऐसी स्थिति में 'समाजवाद विकल्प' भी दूर की कौड़ी नजर आता है।

माकपा (मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी) को भी 'हावड़ा प्लेनम' में अपनी स्थिति का आहसास हो गया लगता है। उसने भी बदली हुई परिस्थितियों में जनवादी साम्यवादोन्मुखी दलों में एकता को अपरिहार्य आवश्यकता बताया है। लेकिन बीस पन्थों और बाईस निष्ठाओं में बंटे साम्यवादी एक जगह इकट्ठे हो सकेंगे? और सांथ ही क्या भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल साम्यवाद के पौधे का प्रत्यारोपण कर सकेंगे?—यह चिन्तनीय विषय है।

अधिकृत कांग्रेस के स्वर्ण सिंह ने संघर्ष की अपेक्षा समर्पण को वरीयता प्रदान कर अपने लिए एक नया विशेषण—स० शरण सिंह—भारतीय-प्रेस-जगत में प्रचलित करा दिया है। शेष बचे चन्द्र जीत यादव तथा डॉ० कर्णसिंह जैसे लोग किस कदर तीसरा विकल्प दे सकेंगे—यह हमारी समझ से बाहर की बात है।

एक और सब से सशक्त और जनोन्मुखी विकल्प की बात, जो आज के दिन हिन्दोस्तान के ही नहीं, दुनियां के प्रेस में जोर-शोर से चलती है वह है—किसान और देहात की पृष्ठ-भूमि से जुड़े हुए, भारत के भू० पू० गृहमन्त्री चौ० चरण सिंह और उनका भालोद एवं कुछ समाजवादी साथी। इसमें दो राय नहीं कि आज के दिन चौ० चरणसिंह की जन-अपील अन्य सभी नेताओं से ज्यादा है। चौ० चरण सिंह ने भारतीय राजनीति के गणित को भली भांति समझा है और इसलिए आज हिन्दुस्तान की कृषक और पिछड़ी जातियों पर चौ० साहब की पकड़ है और ये वर्ग शैदाई हैं चौ० साहब के।

कांग्रेस ने नेहरू के समय में भी और इन्दिरा के समय में भी एक राजनैतिक धुरी कायम कर रखी थी। वह धुरी थी—ब्राह्मण, मुसलमान, और हरिजन की। वह धुरी टूटते ही इन्दिरा का महल धराशाही हो गया। कृषक और अन्य पिछड़ी जातियां हमेशा विभक्त रही हैं इस लिए संख्या में अधिक होते हुए भी निर्णायक शक्ति नहीं बन सकी हैं। लेकिन यह शायद भारतीय राजनीति में पहली बार होने जा रहा है कि कृषक और पिछड़ी जातियां एक झण्डे के नीचे इकट्ठी होने जा रही हैं। यही चौ० चरण सिंह की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

लेकिन पिछले कुछ दिनों से फिर 'फार्मूला-मौसम' शुरु हुआ है अगर चौ० साहब इस फार्मूले की भूल-भुलैया में फंस गये तो यह उनके लिए तो आत्मघाती कदम होगा ही साथ ही भारतीय राजनीति का भी दुर्भाग्य होगा। क्योंकि एक सही और स्वस्थ विकल्प की किरण आते-आते विलुप्त हो जायेगी। इसलिए हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि प्रभु चौधरी साहब को सद्बुद्धि दे ताकि भारतीय राजनीति आज जिस अन्धेरे चोहराहे पर खड़ी है उससे पार पा सके। और भारतीय प्रजातन्त्र पर आये संकट के बादल छंट जायें तभी देश का दूरगामी हित सम्भव है।

—राजेन्द्र सिंह

अमेरिका की भूमि पर—विवेकानन्द

—वेद पाल शास्त्री
गढ़ी अजीमां (हिसार)

वक्तृत्व-कला के प्रवीण ज्ञाता जिन्होंने अपने भाषण से शिकागो के सर्व-धर्म-सम्मेलन में सबको मन्त्र-मुग्ध कर दिया था ऐसे स्वामी विवेकानन्द की अमेरिकी सफलताएं सर्वत्र परिचर्चा का विषय है। परन्तु उस महान् सफलता के इतिहास में जिन यातनाओं की गाथा है उससे कितने लोग परिचित हैं ?

सन् 1893 ई० के उन दिनों की बात है जब विवेकानन्द दक्षिण भारत का भ्रमण कर रहे थे। उन्हीं दिनों मद्रास के उनके कुछ शिष्यों ने शिकागो में होने जा रहे सर्व-धर्म-सम्मेलन की चर्चा सुनी। उन्होंने विवेकानन्द से सम्मेलन में सम्मिलित होकर हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व करने का आग्रह किया। विचार विमर्श के पश्चात् सहर्ष वे तैयार हो गये। जैसा कि सम्मेलन में भाग लेने के लिए कुछ औपचारिकताओं की पूर्ति भी करनी पड़ती है, इस बात से वे अनभिज्ञ थे। अतः जब 31 मई सन् 1893 को उन्होंने बम्बई से शिकागो के लिए प्रस्थान किया तब उन्हें उस सम्मेलन की तिथि का ज्ञान नहीं था और न ही उसमें सम्मिलित होने का प्रवेश-पत्र ही लिया था।

अमेरिका में वे किसी प्रकार का परिचय-पत्र लेकर नहीं गये। अतः शिकागो जैसे महान् नगर में जब वे अपरिचित-अवस्था में घूम रहे थे तो दर्शकों की भीड़ लग गई। कुछ लोग उनके गेरुवे वस्त्रों को घूर कर देख रहे थे तो कुछ हंसी उड़ा रहे थे। बालकों का समूह भी उनका मज़ाक करता हुआ उनके पीछे-पीछे चलता जा रहा था। इस प्रकार की अनेक आपत्तियों के साथ संघर्ष करने के बाद एक होटल में रहने का स्थान प्राप्त कर पाये।

वहां पर उन्हें पता लगा कि सितम्बर मास से पूर्व सर्व-धर्म सम्मेलन आरम्भ नहीं होगा। साथ ही जो अपना परिचय-पत्र नहीं लाये उनका भाग लेना असम्भव होगा। तत्पश्चात् उन्होंने निश्चयात्मक रूप से विचार किया कि वे सम्मेलन में भाग नहीं ले सकेंगे।

उनके पास तुच्छ धन-राशि होने के कारण होटल का व्यय देने के बाद शीघ्र समाप्त हो गई। उस भयंकर परिस्थिति में उस धैर्यवान् सन्यासी का हृदय विचलित हो गया। उन्होंने सोचा अगर मैं हठधर्मी युवकों की बात न मानता तो आज यह व्यर्थ ही संकट सामने न आता। इस प्रकार शिकागो में संकल्प-सिद्धि का कोई उपाय न देख कर उन्होंने बोस्टन की ओर प्रस्थान किया। यात्रा के दौरान उनकी भेंट एक वृद्ध महिला से हुई। उनके अद्भुत वेश को देख कर उसने उनसे परिचय प्राप्त किया और अपने घर ले गई। संयोगवश कठिनाइयों से उन्हें मुक्ति प्राप्त हुई और आशा-रूपी दीपक ने उन्हें प्रकाश दिया। उक्त महिला के निवास स्थान पर उनकी भेंट यूनानी भाषा के प्रसिद्ध प्रोफेसर श्री जे० एच० राइट से हुई। वे भी विवेकानन्द से बहुत ही प्रभावित हुए। उन्होंने उन्हें शिकागो के सर्व-धर्म-सम्मेलन के लिए बहुत प्रेरित किया। जब विवेकानन्द ने बताया कि उनके पास परिचय-पत्र नहीं है तो प्रोफैसर राइट ने विश्वास दिलाते हुए कहा—"स्वामी, आप से आपके प्रमाण-पत्र मांगना तो उसी प्रकार है जैसे सूर्य से यह पूछना कि उसे चमकने का अधिकार प्राप्त है या नहीं।"

प्रोफैसर महोदय ने शिकागो सम्मेलन से सम्बन्धित अपने एक मित्र श्री बनी के नाम पत्र लिखकर स्वामी जी को दे दिया। अब वे बड़े उत्साह के साथ बोस्टन से शिकागो के लिए रवाना हुए। शिकागो उतरते ही उन्हें अनुभव हुआ कि प्रोफैसर राईट का दिया हुआ परिचय-पत्र, जिस पर श्री बनी का पता भी लिखा हुआ था, कहीं गुम हो गया है। एक बार फिर उन्हें चारों ओर से निराशा ने घेर लिया। इतने बड़े शहर में प्रोफैसर राइट के मित्र का पता किस प्रकार लगाया जाये? उन्होंने कुछ व्यक्तियों से पूछने का प्रयास भी किया परन्तु सभी उन्हें घृणित समझकर मुंह फेर कर चले गये। धीरे-धीरे सायंकाल का समय आया। धन का उनके पास अभाव था। उन्होंने रात व्यतीत करने के लिए किसी होटल में शरण लेनी चाही किन्तु अर्थ-प्रधान उस नगर में कोई होटल वाला एक धनहीन भारतीय सन्यासी को भला आश्रय क्यों देता? वे भटकते रहे, निरन्तर समस्या कठिन होती चली गई।

चारों ओर शीतकाल की प्रखर वायु बह रही थी। बर्फ गिरनी प्रारम्भ हो गई थी। उनके पास पर्याप्त मात्रा में गर्म कपड़े नहीं थे। और अन्य कोई उपाय न देख विवेकानन्द ने रेलवे के माल गोदाम के सामने पड़े पैकिंग-बक्स में प्रवेश किया और अपने अंगों को उसके भीतर समेटते हुए असीम उत्कण्ठा से सुबह की प्रतीक्षा करने लगे।

किसी प्रकार रात व्यतीत हुई। प्रातःकाल वे आशा-रूपी सङ्गिनि को साथ लेकर राज मार्ग पर निकल पड़े। भोजनादि का प्रबन्ध न हो सकने के कारण क्षुधा से उनका शरीर शिथिल हो रहा था। निरुपाय हो कर भोजन की आशा से वे भिक्षा के लिए चल पड़े परन्तु उनके मैले-फटे वस्त्र एवं क्लाँत मुख को देख कर लोग घृणा से मुंह फेर लेते। किसी ने जोर-जबर्दस्ती की और उपेक्षा से अपना द्वार बन्द कर लिया। करुणा-प्रेरित

धर्मों का महासम्मेलन करने वाले शिकागो नगर में एक विदेशी सन्यासी के लिए अपनी तुच्छ क्षुधा शान्त करना असम्भव हो गया। आशा को छोड़ कर राज-मार्ग के किनारे पर बैठ गये और सब कुछ उन्होंने उस अदृश्य सत्ता के हाथों में छोड़ दिया।

परीक्षा की घड़ियां पूर्ण हुई। सहसा उनके सामने के भवन का द्वार किसी तिलस्मी घटना के समान खुला तथा एक अपूर्व सुन्दरी ने धीरे से आकर बड़े मधुर स्वर से उनसे पूछा—"महाशय, क्या आप धर्म-सभा के एक प्रतिनिधि हैं?" विवेकानन्द विस्मित होकर उसे देखते रहे और फिर उन्होंने अपनी कठिनाई समक्ष रखी। वह सुन्दरी उन्हें अपने घर ले गई। उसने हर प्रकार से उनकी सेवा की और फिर धर्म सभा कार्यालय में ले जाकर उन्हें सम्मेलन का विधिवत प्रतिनिधि बनवा दिया।

जिस शहर में विवेकानन्द को थोड़ी सी भोज्य सामग्री के लिए अब तक द्वार-द्वार पर भटकना पड़ा था, और मिली थी घृणा, उपेक्षा और पीड़ा, अन्ततः धर्म-सम्मेलन में अपूर्व सफलता प्राप्त होने के बाद बड़े-बड़े व्यक्ति भी उनके सामने नत-मस्तक हुए फिर बड़े-बड़े चित्र राजमार्गों पर स्थापित किये गये जिन चित्रों पर "स्वामी विवेकानन्द" लिखा होता और हजारों पथिक उन चित्रों के प्रति अपनी श्रद्धा एवं आस्था प्रकट करते हैं।

चुटकुले—

●

मालिक नौकर से – आज तुम हजामत के लिए जो पानी दे गए थे, वह बहुत गन्दा पानी था।

नौकर—(ठहर कर) हजामत का पानी, मैं तो चाय का प्याला दे गया था।

× × × ×

सोहन को नई घड़ी खरीदे दो ही हफते हुए थे कि वह बन्द हो गई। उसने घड़ी खोल कर देखी तो उसमें एक चिंटी मरी पड़ी है। यह देख कर वह झट बोल उठा कि अब समझ में आया कि इस का तो ड्राइवर ही मरा पड़ा है।

× × × ×

एक जवान आदमी को भीख मांगते देख कर नेकी राम जी ने उससे पूछा—"तुम समर्थ होकर भीख मांगते हो, कोई काम-धन्धा क्यों नहीं करते?"

"बाबू जी कोई काम-धन्धा तो तब करूं जब इस धन्धे से फूरसत मिले।" भिखारी ने जवाब दिया।

क्रमशः—

गीता का
* पाँचवा अध्याय *

लेखक :

आचार्य विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड

●

अर्जुन की उद्विग्नता कृष्ण का उपदेश होने पर भी बनी रही। वह फिर श्री कृष्ण से बोले—हे कृष्ण ! आपके उपदेश समझ में नहीं आ रहे हैं। कभी कुछ कहते हो, कभी कुछ कहते हो। कभी कहते हो कर्मों का सन्यास होना चाहिए, कभी कहते हो कर्म-योग होना चाहिए। निश्चित रूप से अपने विचार प्रकट कीजिये।

अर्जुन की बातों को सुन कर श्री कृष्ण बोले—हे अर्जुन ! अधीर मत हो, मेरी बात सुन—कर्म सन्यास तथा कर्मयोग दोनों ही कल्याणकारी हैं। फिर भी कर्म सन्यास से कर्मयोग को मैं श्रेष्ठ मानता हूँ। कर्म सन्यास का भाव है असक्ति रहित होकर कर्म करना, कर्मयोग का भाव यह है—योगस्थ होकर आत्म समाहित होकर काम करना। जो प्रभु समाहित होकर काम करता है वह कर्मयोगी है। उसमें अहंकार का संचार नहीं होता है। कर्म सन्यास में प्रभु में समाहित न होने से अहंकार का समावेश हो जाता है। अतः कर्म सन्यास से कर्मयोग को उत्तम कहा है। वैसे दोनों ही उत्तम हैं।

कर्मयोगी में सामान्य इच्छा तथा द्वेष नहीं रहता है। सुख दुःख की अनुभूति उसे नहीं होती है। बन्धन से वह मुक्त रहता है। सांख्ययोग (कर्मसक्ति त्याग) तथा कर्म-योग इन दोनों में विशेष अन्तर नहीं है। दोनों में से किसी एक को भी स्वीकार करने में दोनों के फल मिल जाते हैं। योग युक्त होने पर ही कर्म सन्यास में सफलता मिलती है।

जो योगयुक्त है, जिसका आत्मा सब तरह से पवित्र है, जिसकी इन्द्रियां बस में हैं, जो सब प्राणियों को समानता से देखता है, ऐसा पुरुष ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है। आत्म ज्ञानी पुरुष सूंघता हुआ, स्पर्श करता हुआ, देखता हुआ, सुनता हुआ, खाता हुआ, सोता हुआ, श्वास लेता हुआ, बोलता हुआ, छोड़ता हुआ, लेता हुआ, पलक मारता हुआ भी इन्द्रियां इन्द्रियों के विषय में जा रही हैं ऐसा माने, मैं कुछ कर रहा हूँ ऐसा न माने। ऐसा करने से अनासक्ति के भाव उत्पन्न होते हैं। जो ब्रह्म को समर्पित होके, आसक्ति को छोड़ कर काम करता है वह कभी भी पापों से लिप्त नहीं होता है।

योगिजन केवल मात्र शरीर से या मन से या बुद्धि से या केवल इन्द्रियों से ही काम करते से दिखाई देते हैं। अपने से नहीं। इससे उनकी आत्म शुद्धि प्रकट होती है। जब कर्मयोगी फल की आसक्ति छोड़ कर काम करता है तब उसे स्थिर शक्ति प्राप्त होती है। जो योग युक्त न होकर कर्म करता है वह आसक्ति में फल पाता है।

आत्मवशी योगी शरीर से ही नहीं मन से भी सब कर्मों में असक्ति का त्याग करता है। कर्तृत्व तथा कर्मत्व तथा कर्मफल से योग स्वभाव बनकर प्रवृत्त हो रहा है। प्रभु न किसी के पाप या पुण्य को ग्रहण करता है। यह संसार अज्ञान से आवृत्त होकर रहता है। इस अज्ञान के कारण प्राणी मोहित होते हैं। जो मानव इस संसार में ब्रह्मगत बुद्धि होकर, ब्रह्म में लीन होकर अनासक्त होकर कर्म करते हैं उनके सब दोष तथा पाप दूर हो जाते हैं।

ज्ञानी पुरुष की दृष्टि 'विद्याविनय सम्पन्न' ब्राह्मण को, गाय को, हाथी, कुत्ता, चण्डाल आदि को भी पञ्चतत्वों से निर्मित शरीर स्वीकार करती है। इनके शरीर प्रकृति के गुणों से प्रेरित होते हैं। सब में समान आत्मा मानकर तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से सबको समदृष्टि से देखती है।

जो जन संसार में समता, समानता के भाव सब प्राणियों के साथ रखते हैं उन्होंने मानों संसार को जीत लिया है। जो कर्म सन्यासी योगी है उसे प्रिय की प्राप्ति पर बहुत प्रसन्नता नहीं होती है। अप्रिय को प्राप्त कर विशेष दुःख नहीं होता है। उसकी बुद्धि में स्थिरता रहती है, उसमें किसी भी प्रकार के मोह का संचार नहीं होता है।

ऐसे पुरुषों की बाह्यस्पर्शों में, इन्द्रियों के विषयों में आसक्ति नहीं रहती है। उसे ब्रह्म के दर्शन होते हैं। वह सदा आनन्दित रहता है। जितने इन्द्रियों के स्पर्श से उत्पन्न होने वाले सुख होते हैं, अन्त में वे सारे दुःख के कारण होते हैं। वे नाशवान हैं। उनमें विवेकी पुरुष रमण नहीं करता है।

इस शरीर के त्यागने से पूर्व अर्थात् मृत्यु से पूर्व ही जो विवेकी पुरुष काम-क्रोध से उत्पन्न वेग का अवरोध कर लेता है वही योगी है, वही सुखी है। जिसको आत्म-

शान्ति प्राप्त हो जाती है प्रभु के दर्शन भी उसी को प्राप्त होते हैं। जो ऋषि होते हैं वे ही ब्रह्म निर्वाण को प्राप्त करते हैं। जिन्होंने काम तथा क्रोध का त्याग कर दिया है, जिनका मन तथा चित्त स्थिर या शान्त हैं, जिन्होंने आत्मतत्त्व को जान लिया है उनको ही ब्रह्म-निर्वाण प्राप्त होता है।

जिनके इन्द्रियों के विषय दूर हो गये हैं, जो सतत उन्नतिशील हैं, जिनके श्वास-प्रश्वास स्थिर हैं, जिनके मन तथा इन्द्रियें बस में हैं, जिनकी सामान्य इच्छा, भय तथा क्रोध दूर हो गये हैं वे पुरुष जीवन काल में भी मुक्त के समान हैं।

अन्त में ऐसे विवेकी पुरुष कर्म सन्यासी होके प्रभु को प्राप्त कर शान्ति लाभ करते हैं।

यह कर्म सन्यास नाम का अध्याय है। जिसमें आसक्ति रहित होके या योगयुक्त होके कर्म करने का निर्देश है।

* * *

❀ छठा अध्याय ❀

श्री कृष्ण योगी तथा सन्यासी को एक ही मानते हैं—जो कर्मफल का आश्रय (सहारा) न लेकर करने योग्य कार्य को करता है वही सन्यासी है, वही योगी है। पर जो यज्ञ आदि क्रिया को छोड़ देता है तथा कर्म करना भी छोड़ देता है वह सन्यासी या योगी कहलाने का अधिकारी नहीं है। अनाश्रित कर्म वह होता है जिस कर्म को केवल-मात्र दूसरों के भले के लिए किया जाता है वह अनाश्रित कर्म है। जैसे एक माली मालिक के लिए ही वृक्षारोपण करता है अपने लिए नहीं। इसी प्रकार जो कर्म केवल दूसरों के लिए ही किया जाता है वह अनाश्रित कर्म माना जाता है।

इसी विषय को और स्पष्ट करते हुए कृष्ण जी अर्जुन से कहते हैं कि—हे अर्जुन! तू सन्यास तथा योग को एक ही मान तथा जान। जब तक संकल्प रहित नहीं हुआ जाता तब तक न योगी है न सन्यासी है। संकल्प रहित होके काम करने वाला पुरुष भगवान की इच्छा के अनुकूल कार्य करता है।

योग की इच्छा वाले मुनि का संकल्प रहित काम ही योग मार्ग में ले जाने वाला है। योगरूढ पुरुष सदा शान्ति से ओत-प्रोत रहता है। जब इन्द्रियों के विषयों में तथा कर्मों में मनुष्य आसक्त नहीं होता है तभी वह योगरूढ होता है।

उन्नतिशील पुरुष अपने आप से ही अपनी उन्नति करे अपने आपको गिराये नहीं। मनुष्य वही ऊपर उठता है जो यह विश्वास करे कि मैं आगे बढ़ सकता हूँ, इस काम को कर सकता हूँ परन्तु जो इसके विपरीत सदा निराशा में भरा रहता है, और सोचता है कि यह काम मेरे बस का नहीं है, वह कभी उन्नति नहीं कर सकता है। तभी अपने टूटे हुए, निराश हुए मन को उठा, साहस पकड़ तभी यश तथा सुख प्राप्त कर सकेगा।

आत्मजयी पुरुष की पहचान यह है वह सर्वथा शान्त रहता है, वह सदा समाहित रहता है, ठण्डक-गर्मी, सुख-दुःख, मान-अपमान में समभाव से बरतता है। वह ज्ञान तथा विज्ञान से तृप्त रहता है, वह निर्विकार रहता है, उसकी इन्द्रियां उसके बस में होती हैं। उसके लिए मिट्टी तथा स्वर्ण एक समान हैं। उनमें उसे कोई अन्तर नहीं दिखलाई देता है।

मित्र, शत्रु, उदासीन, मध्यस्थ, द्वेष तथा बन्धुओं में भी ऐसा ज्ञानी पुरुष समबुद्धि रहता है। किसी के प्रति राग या द्वेष उसमें प्रवेश नहीं पाता है।

योगी बनने के साधनों का आगे कथन करते हुए श्री कृष्ण कहते हैं—हे अर्जुन! प्रतिदिन योगी एकान्त शान्त स्थान में बैठ कर अपने आत्मा को प्रभु से संयुक्त करे। ऐसे व्यक्ति को वासना जन्य इच्छायें त्याग देनी चाहिए। वह लोभ से सर्वथा मुक्त रहे। वासना तथा लोभ मानव को प्रकृति में फंसाने वाले हैं। अतः उनसे छुटकारा नितान्त आवश्यक है।

पवित्र एकान्त शान्त स्थान में उत्तम आसन बिछा कर बैठे। आसन ऐसा हो कि वह किसी भी प्रकार से दुःखदायक न हो। ठीक आसन न होने से, न लगने से मन स्थिर नहीं होता है। चित्त तथा इन्द्रियों को सांसारिक विषयों से हटावें। अपने मन को एकाग्र करके एक स्थान पर स्थिर करे। स्थिरता सम्पादन में कोई आग्रह न हो। इस प्रकार से स्थिर करे कि मन स्वाभाविक रूप से स्वयं ही स्थिर हो जावे। आत्मशुद्धि की इच्छा से मन को, आत्मा को प्रभु से जोड़े। धारणा, ध्यान, समाधि का अभ्यास करे।

शरीर, गर्दन तथा शरीर को सीधा रखे तथा उसमें स्थिरता रहे। इधर-उधर न हिलने दे। सर्वतः शान्ति से युक्त रहे सर्वथा भय से दूर रहे, ब्रह्मचर्य का पालन करे। इस प्रकार अपने मन को बनाकर भगवान का ध्यान करे।

प्रतिदिन इसी प्रकार से योगी अपने आत्मा को परमात्मा के साथ युक्त करे। ऐसा करने से योगी को महान् शान्ति लाभ होता है। अधिक भोजन करने वाले का योग सिद्ध नहीं होता है, कभी भी एकान्त में न बैठने वाले का भी योग सिद्ध नहीं होता है। अधिक जागना, अधिक सोना भी योगमार्ग में रुकावट है। खाना पीना, सोना, जागना उचित मात्रा में हो।

उचित भोजन, उचित विहार, ठीक प्रकार से कर्म करने में गति (कर्म भी उचित मात्रा में हो), उचित जागना और शयन योग मार्ग में प्रगति के साधन हैं।

जब चित्त नियमित या निरुद्ध हो जाता है तब योगी आत्म अवस्थिति को प्राप्त कर लेता है। उस अवस्था में वह लौकिक इच्छाओं रहित हो जाता है। स्थिर चित्त की पहचान बतलाते हुए कृष्ण जी बतलाते हैं—हे अर्जुन! वायु रहित स्थान पर जैसे दीपक की लौ स्थिर रहती है उसी प्रकार जब चित स्थिर हो जाता है तब उसकी भी यही दशा होती है। जब योगी का चित्त स्थिर हो जाता है तब वह अपने आत्मा से परम-आत्मा के ज्ञान नेत्रों से दर्शन कर अत्यन्त सन्तुष्ट हो जाता है।

उस अवस्था में उसे अतीन्द्रिय सुख (आत्मिक सुख) प्राप्त होता है। ऐसी अवस्था प्राप्त होने पर वह कभी भी चलायमान, व्याकुल नहीं होता है। जब योगी की यह दशा होती है। वह बड़ा सुख अनुभव करता है। ऐसी दशा में योगी के पहुँचने पर यदि उस पर कोई बड़े से बड़ा दुःख भी आ पड़े तो भी वह डांवाडोल नहीं होता है। उस दुःख को वह हंसता हुआ सहन करता है।

अतः इस योग को स्थिर रखने के लिए इसका प्रतिदिन अभ्यास करना चाहिए। इसको जीवन का अंग बना लेना चाहिए। संकल्पों को उत्पन्न करने वाली कामनाओं का त्याग करें। मन से इन्द्रियें समूह का अवरोध करता रहे। यह देखता रहे कि कोई इन्द्रिय पथ-भ्रष्ट तो नहीं हो रही है।

इस काम को करने में शीघ्रता न करे। शनैः शनैः मन का ऐसा स्वभाव बनावे कि वह लौकिक वासनाओं से विमुख होकर आत्म-अवस्थिति की ओर अग्रेसर रहे। अन्य लौकिक विषयों का चिन्तन न करे। ध्यान में मन की ऐसी दशा हो जावे कि उस समय लौकिक विषयों से मन सदा विमुख रहे। सदा आत्मा के विषय में ही मन चिन्तन करे।

जब मन ध्यान के समय इधर-उधर भागे उस समय मन को प्रेम से, धैर्य से रोक कर आत्म-सम्मुख करने का शान्ति से प्रयत्न करता रहे।

जब प्रतिदिन योगी इस प्रकार अभ्यास करता है उसमें से पाप दूर हो जाता है तब उसे ब्रह्म का संस्पर्श, अलौकिक दर्शन प्राप्त होता है, तब उसे सुख तथा शान्ति लाभ होता है।

जब प्रतिदिन योगयुक्त रह कर योगी इस प्रकार ध्यान करता है तब उसे अनुभव होता है कि प्रत्येक प्राणि में यह व्याप्त है। तथा सब प्राणी उसमें व्याप रहे हैं। उसे सब कुछ अभिन्न दिखलाई देता है। यह योग की महान स्थिति है।

जिसे सर्वत्र प्रभू दिखाई देता है तथा जो सब को अपने में देखता है। ऐसी दशा में योगी को हर समय प्रभु दिखलाई देता रहता है तब वह कभी भी पापाचार में फंस कर पतित नहीं होता है। सब प्राणियों में प्रभु की सत्ता देखने वाला योगी प्रभु भक्त होता है।

परम योगी का वर्णन करते हुए श्री कृष्ण कहते हैं—जो ब्रह्म की सत्ता का दर्शन तो करता ही है परन्तु इसके साथ-साथ सब प्राणियों को आत्मवत् देखता हुआ सबके सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख मानता है वह परमयोगी है। योगी को दूसरों के दुःखों को दूर करने का भी प्रयत्न करना चाहिए।

अर्जुन बोले—आप समता, समभाव का उपदेश कर रहे हैं। आप तो समभाव प्राप्त हैं। आप के लिए सब कुछ ठीक है। पर मेरा मन साम्य अवस्था में नहीं है। चंचलता से घिरा हुआ है। अतः मैं आपके विचारों से कैसे सहमत हूँ। मैं तो मन का रोकना वायु के रोकने के समान कठिन मानता हूँ। अतः आप मुझे इस विषय को समझाने की कृपा करें।

अर्जुन की बातों को सुन अर्जुन के मन की चञ्चलता को दूर करने की इच्छा से कृष्ण बोले—हे अर्जुन! सुन, मैं यह स्वीकारता हूँ कि मन बड़ा चञ्चल है, इसका अवरुद्ध करना बड़ कठिन है फिर भी अभ्यास तथा वैराग्य से इसका अवरोध हो सकता है।

किसी काम कों बार-बार करने पर वह काम सरल हो जाता है इसी प्रकार बार-बार मनके अवरोध करने पर सधे हुए घोड़े की तरह मन भी सध जाता है तथा वश में हो जाता है। अभ्यासी को अपने अभ्यास के कारण मनका अवरोध करना सरल हो जाता है। दूसरा वैराग्य (विबेक) से मन का अवरोध होता है। जब किसी वस्तु की वास्तविकता का ज्ञान हो जाता है तब उसमें आसक्ति नहीं रहती। मन को जब सांसारिक बिषयों की वास्तविकता का ज्ञान हो जाता है तब मन का उन लौकिक विषयों की ओर लगाव नहीं रहता है। वैराग्य का अर्थ है जिस अवस्था में लौकिक राग न रहे वास्तविक राग अर्थात् विवेक हो।

आत्मा जम मन पर शासन करता है तब मन अवरुद्ध होता है। परन्तु जिसका मन अनवरुद्ध है, भागा-भागा फिरता है, उसका योग सफल नहीं हो सकता है। अतः आत्मा से मन को नियन्त्रित कर।

अर्जुन फिर बोले—हे कृष्ण! आप यह तो बतलावें जिसका मन वस में न हो परन्तु उसमें श्रद्धा हो, यदि उसका योग सिद्ध न हो उसकी क्या दशा होती है। कहीं वह उभय भ्रष्ट तो नहीं हो जाता कि न दीन का रहे न दुनिया का रहे। मेरी भी कुछ ऐसी दशा हो रही है आप कृपा करके मेरे इस सन्देह को दूर करने की कृपा करें।

श्री कृष्ण अर्जुन की जिज्ञासा सुन कर उसे कहने लगे—हे अर्जुन ! ऐसे पुरुष की न तो इस लोक में न परलोक में कोई हानि होती है। वह मनुष्य कल्याण-कारी है। उसका मन उसके काम में रुकावट है। वह वस्तुतः श्रद्धालु है, कल्याण चाहता है अतः उसकी दुर्गति नहीं होती है।

ऐसा व्यक्ति पुण्यकर्त्ताओं के लोक में, उत्तम पुरुष के घरों में अनेक जन्मों तक जब तक उसका मन स्थिर नहीं होता है तब तक वहां उत्पन्न होता रहता है मरता रहता है। अनेक जन्मों के बाद पवित्र जीवन वाले योगियों के घर उसका जन्म होता है। इस प्रकार के जन्म की प्राप्ति बड़े भाग्य की बात है।

तदन्तर वह पूर्व संस्कारों के कारण तथा उन योगियों के संग से अपनी यौगिक क्रिया को प्रारम्भ करता है। उस क्रिया को करता-करता वह सफलता को प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार प्रयत्न करता हुआ योगी पवित्रता को प्राप्त कर लेता है। उस पवित्रता को प्राप्त कर वह संसिद्ध योगी बन कर परमगति को प्राप्त कर लेता है।

हे अर्जुन ! सुन, योगी तपस्वियों से श्रेष्ठतर है, ज्ञानियों से भी योगी श्रेष्ठतर है, कर्म योगियों से भी वह श्रेष्ठतर है। अतः हे अर्जुन ! तू भी योगमार्गी बन जिस तेरेसे सारे सन्देह दूर हों।

जो श्रद्धालु योगी होता है, प्रभु में जिसकी अपार गति है वह परम-पद को प्राप्त करता है।

इस अध्याय में ध्यान का निरुपण किया है। ध्यान के द्वारा आत्मदर्शन तथा प्रभुदर्शन होता है।

पांच मुक्तक

—विजया गुणवती

लहर ही लहर को बनाती रही है,
लहर यों किनारे को पाती रही है।
कभी डगमगाई जो मंझधार नौका,
किनारे को पतवार लाती रही है ॥

कलम में नहीं शक्ति जो लिख सके कुछ,
हृदय वेदना ही लिखाती रही है।
भला आंख क्या ही स्वयं रो सकी है,
हृदय वेदना ही रुलाती रही है ॥

सृष्टि का रूप, रूप पर स्नेह,
स्नेह में जीवन बसता है।
स्नेह में गन्ध वासना युक्त,
इसी पर जीवन हंसता है ॥

नहीं सिर्फ रंगीनी जीवन को रंगीन बनाती है,
कठिन कुलिश की चोटें भी तो जीवन बहलाती हैं।
मृदुल सुमन खा-पवन थपेड़े सभी भूमि पर छा जाते,
प्रिया पाणि पर मेंहदी तो पिस कर ही रंग लाती है ॥

नारियां, नर, रूप रंग में या कि गोरे या कि काले,
सृष्टि कर्त्ता ने बनाए रूप रंग दो ही निराले।
गौर को पा रीझ जाना, कृष्ण रंग पा खीझ जाना,
प्रेम रंग गोरा न काला, तुम इसे मत भूल जाना ॥

परिवर्तन

—सविता मलिक

शास्त्री शंकर लाल माहेश्वरी के जीवन का एक प्रसंग है। वे तब युवा थे। एक दिन सुब संध्या-वन्दना कर रहे थे कि एक ब्राह्मण भिक्षा माँगने आ पहुँचा। 'भिक्षां देहि' उसने हाँक लगाई। जब दुबारा यही शब्द कान में पड़े, शास्त्री जी को प्रतीत हुआ कि शायद घर में उनके सिवा कोई नहीं है, जो भिक्षा दे। ब्राह्मण को देर न हो, यह सोच वे सन्ध्या छोड़ कर उठे। बरामदे की ओर नजर डाली, तो क्या देखते हैं कि एक ब्राह्मण धो पोंछ कर बरामदे में रखी हुई थाली और कटोरी झोली में डाल कर लम्बे डग भरता हुआ निकल रहा है।

शास्त्री जी ने पुकारा तो ब्राह्मण ने बाहर निकलने की ओर उतावली की। परन्तु देहलीज तक जाकर उसे वापिस बुला लाये। ब्राह्मण लौट आया। शास्त्री जी बोले—"मैं सन्ध्या कर रहा था, अतः आपको तुरन्त भिक्षा न दे सका। क्षमा करें! जरा ठहरें और सीधा ले लें।

बाह्मण को बरामदे में पड़े झूले पर बैठा कर खुद सीधा लेने जाने लगे। तब ब्राह्मण ने इन्हें रोक कर कहा—"शास्त्री जी, मैं आपका अपराधी हूँ, मैं अब सीधा लेने का हकदार नहीं हूँ। मैं तो बरामदे में पड़ी थाली कटोरी झोली में भर कर जा रहा था।" और उसने थाली कटोरी बाहर निकाली।

शास्त्री जी शान्ति पूर्वक कहने लगे—"यह मुझे ज्ञात था। आप मेरे तईं अपराधी हैं, इससे दुःखी होने की कोई बात नहीं। कोई भी मनुष्य अपराध करता है, तो उसका अपराध पहले अपने प्रति होता है। तब कहीं वह दूसरे का अपराधी हो सकता है।" अपरिग्रह ब्राह्मण का जीवन-व्रत है, फिर भी इस उमर में आपने जिस ढंग से बर्तन लिए, उसे देखते हुए और उसके कारण को समझते हुए, आपको सीधा देना धर्म हो जाता है। आप मेरे लिए दुःखी न हों। अपना धर्म समझ लें।

शास्त्री जी ने उसी थाली कटोरी में सीधा भर कर ब्राह्मण को दे दिया। यही नहीं भीतर से घी भरा लौटा भी ले आये और उसे आग्रह पूर्वक देते हुए बोले—"थाली, कटोरी और लौटा ये तीन बर्तन साथ होने चाहिएं। अतः इन तीनों बर्तनों सहित सीधा भी स्वीकार करें।"

वृद्ध ब्राह्मण बहुत सकुचाया, पर सीधा उसे स्वीकार करना ही पड़ा। उस दिन से वह युवा शास्त्री जी का शिष्य बन गया। उसका जीवन ही बदल गया। वह एक समय ही भोजन करता, ग्यारह गायत्री मन्त्र समाप्त होने पर किसी घर में भिक्षा के लिए नहीं ठहरता। कोई अंधा-अपंग मिलता तो उसे ठिकाने तक पहुंचाता। किसी के सिर पर ज्यादा बोझ हो, तो उसके घर तक पहुंचा आता। शास्त्री जी नित्य वेद प्रवचन करते, वह ब्राह्मण एकाग्रचित हो उसे सुनता था। इस प्रकार उसके जीवन में मोड़ आ गया।

अनमोल बातें :—

जाने क्या हो गया है लोगों को, कोई नामे खुदा नहीं लेता।
जिसको देखो तुम आज दुनियां में, वोह है दिलदादा सिर्फ दौलत का ।।१।।

मेरे आक़ा के क़ौल के मूजिब, उसको मोमिन कभी न कहियेगा।
वोह जो खुद अपना पेट तो भरले, और हमसाया जिसका भूखा हो ।।२।।

❀ ❀ ❀ ❀

मिनी कविता

द्रोपदी के चीरः—

कृष्ण लीला सुन कर
अबोध बालक बताता था
कि कृष्ण—
गोपियों के कपड़े चुराकर
द्रोपदी के चीर बढ़ाता था।

❀ ❀ ❀ ❀

चुटकला :—

सर्कस का बौना जोकर अपनी उल्टी-सीधी हरकतों से दर्शकों को हंसाने का प्रयत्न कर रहा था, परन्तु दर्शक बिल्कुल नहीं हंस रहे थे। उसके सारे प्रयत्न फैल हो गये तो उसने एक घोषणा की—"साहेबान, अब आपके सामने हम ऐसा नायाब आइटम पेश करने जा रहे हैं कि आप हंसते हंसते लोट-पोट हो जायेंगे।" दर्शकों के कान खड़े हो गए। तभी उसने घोषणा की—"तो जनाब यह रहा हमार नायाब आइटम कवि सम्मेलन, जिसमें देश के प्रख्यात बौने अपना काव्य-पाठ प्रस्तुत करेंगे।" इतना सुनते ही दर्शक हंसने के बजाय गेट की ओर दौड़ पड़े।

★★

जीवन—एक पहेली

●

जीवन क्या है ?
एक मञ्जिल,
जिसे ग्रौ, हम
सभी खोजते हैं ।
पर पाता है विरला ही
भोग-विलास को तिलाँजलि दे,
संघर्ष ही जीवन है ।
परस्पर हितों का टकराव,
देता है जीवन में भटकाव,
ग्रभिलाषातीत हो,
समस्त भुवनमीत हो,
उज्जवल वर्तमान है,
तिमिर-व्याप्त क्यों न ग्रतीत हो,
फिर ग्रामोद ही जीवन है ।
जीवन है बहता पानी,
एक विचित्र कहानी,
जलचरों तुल्य प्राणी,
काल-संग प्रवाहित निरन्तर,
ग्राधार शून्य ग्रसीम सफर,
जल में उगते कंटक, कमल भी,
यहां सुख ग्रलग, दलते दुःख दल ही,
तम में लिपटा, ग़म में डूबा है जीवन ।

स्वप्न में बने बादशाह,
जागे, सब तबाह,
ग्रन्तर से उभरी ग़म की ग्राह,
परम संगीन स्वप्न है जीवन,
जिसका ग्रादि वाह ग्रौ, ग्रन्त ग्राह !
माना जीवन-सफ़र है सुहाना,
पर नाविक ! किसे मिला है मुहाना,
जीवन है नाटक,
हिम्मत कर खुले हैं फाटक,
लेकिन सब कल्पना है,
ग़म-ग्रनल में तपना है,
'खूबसूरत नग़में' कोई सुनाता है
एक बेचारा कांटों की सेज बताता है,
डाल पे बैठी कोयल ने कहा,
क्या ग्रानन्द है ग्रहा,
तल्प सुप्ता राजकुमारी बोली,
जीवन फूलों की सेज है महा,
सब का जीवन है भिन्न,
एकाकी मैं क्यों हूँ खिन्न,
पहेली ग्रब ग्राप ही बूझिए,
सर्वसम्मत, एक, ग्रभिन्न ।

—यशः पाल सिंह 'विद्यालंकार'

गतांक से आगे—

हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान
तथा उत्तर-प्रदेश के
प्रसिद्ध लोक-कवि

चौ० ईश्र सिंह गहलौत
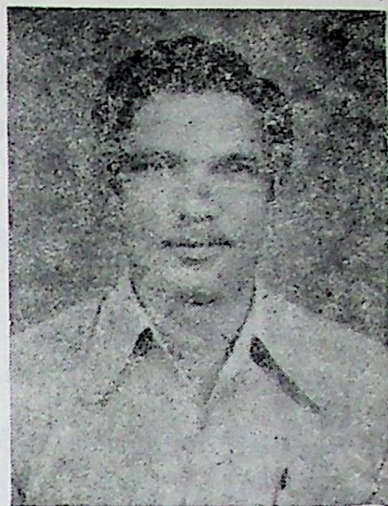
प्रो० प्रकाश वीर दलाल

आपने समाज सुधार के लिए भी भजन लिखे। बाल विवाह का—'कोए ऐसी ना जोट मिलाइयो, बूढ़े बैल कै मत ब्याहियो' गीत लिखकर बड़ा सख्त विरोध किया। अपने लड़के लड़कियों को जवान होने पर जाट महासभा के नियम के अनुसार दहेज के लेन-देन के बिना शादी की।

किसान और मजदूर की हमदर्दी में भी आपने बड़ा प्रचार किया। एक बार गुरुकुल भैंसवाल के उत्सव पर दीन बन्धु चौधरी छोटूराम की उपस्थिति में—'सैयाद ना सता मुझे मैं तो किसान हूँ।' गीत गाया तो चौधरी छोटू राम ने भावविभोर होकर मंच पर ही खड़े होकर अपनी बाहों में ले लिया और एक गीत और गाने को कहा जो—'दुनियां का दरोड़ा, सिर पीटै है किसान का' टेक से शुरु किया। उनके बाद आज फिर से इस देश में किसान और मजदूर की हमदर्दी की भावना जनता के सामने उभर कर आ रही है। चौ० ईश्वर सिंह किसान और मजदूर के हमदर्द होने के साथ-साथ पूंजीपतियों और शहरियों के बड़े विरोधी थे। वे देहात को पवित्रता का तथा शहर को चालाकी और अपवित्रता का परिचायक मानते थे—इसका एक स्पष्ट उदाहरण यहां पर गीत के रूप में है:—

टेक: अच्छी चीजें सारी हैं जंगल बन देहात में।
सृष्टि रची पृथ्वी पहल बने बन जंगल।
प्रकृति देवी ने किया जंगल में मंगल।
प्रभु चित्रकारी है जंगल ······ ।।१।।

वनस्पति अन्न से बन में जीव जन्म लेते।
अग्नि वायु आदित्य अंगिरा को वेद ब्रह्म देते।
ज्ञान उजियारी है जंगल ······ ।।२।।

वेद और वेदांग पढ़े जंगल बन में किये याद।
गौतम पतंजलि कपिल व्यास जैमिनि कहते कणाद।
सभ्यता हमारी है जंगल ····· ।।३।।

शिव नारद कनक च्यवन भारद्वाज बन में।
बाल्मीकि शृंगी शुक्र महाराज बन में।
योगी तपधारी हैं जंगल ····· ।।४।।

साधु ऋषि आश्रम हैं गुरुकुल बन में।
लव और कुश, ध्रुव रहे पल बन में।
बाले शस्त्र खिलारी हैं जंगल ····· ।।५।।

शुद्ध दूध दही शहद घी देहात में।
सादगी सच्चाई शुद्ध हृदय भी देहात में।
हों सब खेती क्यारी हैं जंगल ····· ।।६।।

कमेड़ा गौमा बिषखपरा बासा सुखमना चिरपटा।
गिलो गौरख मुण्डी शिवलिंगी ब्रह्मी पत्थर चटा।
औषध तरकारी हैं जंगल ····· ।।७।।

परम धर्म कर्म शर्म मिलते हैं देहात में।
प्रेम परम भरम मर्म मिलते हैं देहात में।
ढूंढ़ो सच्ची यारी है जंगल ····· ।।८।।

रामपूरती कीकरसिंह चन्दगी पहलवान हैं।
जोगेन्द्र, सिकन्दर, छोटू राम जी दीवान हैं।
पेशा जमींदारी है जंगल ····· ।।९।।

सारी चीजें अच्छी लगें एक की कसर है।
ईश्वर सिंह उस बिन बेड़ा अधवर है।।
विद्या बिन अनारी हैं जगल ····· ।।१०।।

वे यह गीत गाकर कहा करते थे कि शहर की तरफ मत भागो क्योंकि शहर मनुष्यों की ईमानदारी को हरने की जगह होती है। इसके साथ-साथ—

'बिकते धर्म कर्म शर्म शहर में, हर एक तरह की फर्म शहर में।
शहर में शामत चालचलन की।।'

आदि गीत गाकर भी शहर और देहात की बुराई और अच्छाई बताते थे।

चौधरी साहिब की मातृभाषा हिन्दी थी। किन्तु बचपन से ही उर्दू फ़ारसी पढ़ी—और इसी में ही शायरी के अन्दर महारत हासिल की। लेकिन प्रचार में कभी भी हिन्दी और संस्कृत की बड़ाई करने से नहीं चूकते थे। आपने 'शाहजहां के दरबार का फैसला' एक ऐतिहासिक घटना के द्वारा यह सिद्ध किया है कि संसार की सब से उत्तम भाषा संस्कृत है। इसी में आपने शाहजहां की बेटी का काशी विद्यापीठ के ब्रह्मचारी पं० जगन्नाथ से विवाह सम्बन्ध बड़े अच्छे ढंग से चित्रित किया है। हिन्दी के प्रचार के लिए तो आपने सांघी, भगोती पुर, खरैंटी, निडान खेड़ा, मलौट, जुलाना, शादी पुर, मीताथल, जसराणा, कासनी तथा ककरौला आदि में अनेक लड़के और लड़कियों की पाठशालाएं खुलवाईं, जहां पर अब बड़े-बड़े स्कूल बन चुके हैं। देहात में शिक्षा के प्रचार के लिए अनपढ़ और पढ़े-लिखे नर-नारियों की आपस में तुलना करके गीत द्वारा कार्य करने का उनका ढंग बड़ा ही निराला था। जगहँ-जगह पर—

'कोई जोड़ रहा पत्थरों सेती प्यार, हमने प्यारा ओ३म् नाम निराकार।
कोई दीवाली को मुरदा डाला बार, म्हारै हवन की उठ रही महकार॥'

आदि गीत गाकर मूर्तिपूजा के खण्डन और हवन के मण्डन में भी गीत गाये। आप भारतीय संस्कृति के बड़े पुजारी थे। पतलून की बात तो बहुत दूर की थी—पाजामा पहनना भी आपको पसन्द नहीं था। धोती कुर्त्ते को ही भारतीय वेशभूषा का परिचायक मानते थे। पहलवानी पर बड़ा बल दिया करते थे। अंग्रेजी फैशन के इतने विरोधी थे कि प्रचार में बार-बार पतलून बाज तथा जुल्फ बाज कहकर खण्डन करते थे। अपने भजन की—"इस फैशन ने जुल्म गुजारे कर दिया देश खवार, मेरे भगवान् दया करिये।" पंक्ति कह कर बार-बार भगवान् से देश को फैशन की बीमारी से बचाने के लिए प्रार्थना किया करते थे।

स्त्री-शिक्षा के लिए आपका प्रचार सबसे अधिक होता था। आप जानते थे कि यदि स्त्री शिक्षित हो गई तो हमारा सारा समाज ही शिक्षित हो जावेगा। इस विषय पर, कथाओं तथा भजनों का विश्लेषण करके देखा जावे तो उनका आधे से ज्यादा साहित्य मिलता है। अनपढ़ नारी को बड़ा कोसते थे—उसे समाज के लिए बीमारी मानते थे। उसे फूहड़ और मूर्खा कहा करते थे। कन्या को न पढ़ाने वाले माता पिता को भी अनाड़ी कहा करते थे। समझाने और नफरत दिलाने के लिए इस विषय पर सैंकड़ों गीत लिखे हैं— 'पिता माता अनाड़ी जो ना कन्या पढ़ावैं।' 'प्यारी जिन्दगानी पढ़ाई बिन खो दई।' 'अनपढ़ बहू आवै साथ लावै टोटा।' आदि गीतों से उनकी भावना का अन्दाजा लगाया जा सकता है। यही नहीं मनुष्यों के लिए भी वे पढ़ना लिखना बड़ा जरूरी समझते थे और—'जिसको अनपढ़ मिलै जमाई समझो खैर नहीं है' कह कर मनुष्यों के मन में पढ़ाई के प्रति जागरूकता पैदा किया करते थे। उनकी पढ़ाई के प्रति इतनी लगन थी कि प्रचार में यहां तक भी कह देते थे कि जिस लड़के या लड़की का रिश्ता (सगाई) अनपढ़ लड़की या लड़के से हो चुका है— उसे नाश से बचने के लिए वह

रिश्ता तोड़ देना चाहिए। इसके अतिरिक्त वे नारियों के लिए जेवर पहनने को भी अच्छा नहीं मानते थे। उससे चोरी डांके का डर हमेशा बना रहता है। स्त्रियों के बारे में उन की मान्यता थी कि यदि स्त्रियां सांग, सिनेमा और मेले में जाना छोड़ दें तो इन सभी में भीड़ बन्द हो सकती है और काफी हद तक बदमाशी बन्द हो सकती है।

राजनीति के क्षेत्र में आप अहिंसा को ठीक नहीं मानते थे। शत्रु के साथ प्यार की भाषा अपनाने से किस प्रकार हानि होती है—इसको बौद्ध मतावलम्बी मगध नरेश की कथा बना कर स्पष्ट किया है। मगध नरेश जालिम हूणों को अपना भाई समझता था। वह उनको प्यार से जीतना चाहता था। परन्तु बाद में उसे तलवार उठानी पड़ी। इस कथा के माध्यम से चौधरी साहिब उस समय भारत-चीन सम्बन्धों की चर्चा किया करते थे और बार-बार कहते थे कि— 'तलवार जीते, ना प्यार जीते।' वे सामाजिक क्षेत्र में तो हिंसा के समर्थक थे किन्तु राजनीति में इसे कभी भी उचित नहीं मानते थे। इस कथा के अतिरिक्त दूसरी कथाओं में भी 'ईंट का जवाब पत्थर', 'थप्पड़ का जवाब मुक्का' कह कर स्पष्ट किया करते थे कि देश की सुरक्षा केवल-मात्र प्यार से नहीं की जा सकती। शत्रु प्यार को कमजोरी मानता है और समय मिलते ही हानि पहुँचाता है। इसका प्रमाण हिन्दी-चीनी भाई-भाई' के नारे से भी मिल सकता है कि चीन ने सन् 1962 में हमारे देश के साथ क्या व्यवहार किया।

आपका प्रचार क्षेत्र बड़ा विस्तृत था। जाट संस्कृत हाई स्कूल रोहतक, जिसकी स्थापना मास्टर बलदेव सिंह जी ने की थी, का चन्दा हर वर्ष दो मास के लिए करवाते थे। उस दौरान आप किसी प्रकार की आर्थिक सहायता चन्दा करवाते समय नहीं लेते थे। इस स्कूल के लिए बुटाना, मुण्डलाना, सामाण पूठी, बास, पेटवाड़, मांडौठी (लेखक का निजी ग्राम), डीघल, बेरी, गोछी, धांधलान, सांपला, भापड़ौदा आदि बड़े-बड़े गांवों में प्रचार के द्वारा चन्दा करवाते थे। सन् 1924 में संगरिया मण्डी बीकानेर का जाट स्कूल अर्थाभाव के कारण टूटने को जा रहा था—उसके लिए लगातार एक साल तक चन्दा करवाया—जो आज एक बहुत बड़ा विद्यापीठ है। आप जाट हाई स्कूल हिसार उत्सव पर भी सेठ छाजू राम के निमन्त्रण पर कई बार गये। गुरुकुल भैंसवाल के उत्सव पर भी आप हर वर्ष आते थे। अनेक पाठशालों के प्रचार के कार्य में व्यस्तता के कारण लोग कई-कई मास पूर्व उनसे कार्यक्रम लेने के लिए आते थे। जब आप भिवानी आर्य-समाज के उत्सव पर पं० फूलचन्द 'निडर' के निमन्त्रण पर जाते थे तो वहां के मुसलमान उनकी शायरी सुनने के लिए बहुत बड़ी तादाद में आते थे—हालांकि वे इस्लाम की भूठ का बड़े सख्त शब्दों में खण्डन करते थे—

'खुदाया कैसी मुसीबतों में कुरान वाले पड़े हुए हैं।
कदम-कदम पर शुद्धि का शर ले कमान वाले खड़े हुए हैं॥'

ये पंक्तियां इस बात का स्पष्ट प्रमाण हैं। आप आर्य हिन्दी महा विद्यालय दादरी में भी प्रचारार्थ जाते रहे। जिला सोनीपत के बली ग्राम में आपने मौलवी को

शास्त्रार्थ में भी हराया था तथा अनेक आदमियों को जनेऊ देकर शुद्धि का काम किया। न केवल हरियाणा के उपरोक्त स्थानों पर ही आप जाते थे किन्तु पश्चिमी उत्तर प्रदेश खासकर मुजफ्फर नगर तथा मेरठ जिले में भी आप चौ० तेजसिंह के निमन्त्रण पर अनेक बार गए। आर्य समाज के प्रचार के लिए आपने हिसार, करनाल, रोहतक, गुड़गांव तथा राजस्थान की हनुमानगढ़ तहसील के लगभग नव्वे प्रतिशत गांवों का भ्रमण किया। उनकी सुरीली और ऊंची आवाज का इतना प्रभाव था कि साँगी उनके मुकाबले पर कभी भी नहीं ठहर पाये।

आर्य धर्म के प्रचार के समय आपने अनेक शिक्षा-संस्थाओं में सौ-सौ रुपये दान दिया, जिसमें गुरुकुल भैंसवाल, गुरुकुल पंचगामा, आर्य हिन्दी विद्यालय दादरी तथा जाट स्कूल रोहतक आदि विशेष रूप से शामिल हैं। गुरुकुल भैंसवाल के ब्रह्मचारियों को तो दो बार विशेष भोजन भी दिया। आप की गुरुकुलों के बारे में कितनी अटूट श्रद्धा थी उसका प्रमाण इन पंक्तियों में मिल सकता है :—

'चलो सखी देखने चलें, हो रहा वेद प्रचार, गुरुकुल देश सुधारेगा।'
'रामायण पढ़ ब्रह्मचारी बनेंगे राम लखन अवतार, गुरुकुल देश सुधारेगा।'
'देवकी मां ने बेटे भेजे, पढ़-पढ़ बनेंगे कृष्ण मुरार, गुरुकुल देश सुधारेगा॥'

चौधरी ईश्वर सिंह ने जो कथाओं के माध्यम से इतिहास लिखा है, उसमें आप ब्राह्मण, जाट, राजपूत, अहीर, गूजर, सैनी, रोड आदि सभी को क्षत्रिय मानते थे। वैश्य, सिक्ख, मराहठा, मुसलमान, आर्य वीराँगनाओं (पतिव्रता, दयावती तथा लड़ाकू के रूप में) तथा कर्ण आदि का इतिहास गीतों में बनाकर गाया—जिनमें तीन-तीन, चार-चार घण्टे का समय लग जाता था। जहां कहीं भी कथाओं में भगवान् का वर्णन आता है—वहीं पर उसे निराकार कहकर उसका निरूपण किया गया है। बंगाल बन्दू ग्राम में भैंरों के मन्दिर में भगवान् की मूर्ति को देख कर कहा —'कैद में क्यों भगवान् रुके।' इतिहास की अन्य अनेक (लगभग दो सौ से ऊपर) कथाएं और भी हैं किन्तु उनमें राजा हरिश्चन्द्र, कृष्णसुदामा, महाराजा नल, महाराणा प्रताप, शक्तिसिंह, शिवाजी, शूरसेन, जसवन्त सिंह राठौर, पृथ्वी सिंह राठौर, महाराजा सूरजमल, महाराजा जवाहर सिंह, गुरु गोविन्द सिंह, फतेह सिंह, जोरावर सिंह, वीर हकीकत राय, महाराजा रणजीत सिंह, महारानी चन्दा, भक्त तेजा जाट, पं० भारवि, माई गूजरी, किशोरी माई, पद्मा बाई, भूपाल, महारानी द्रौपदी, वीरांगना, दुर्गा देवी, केशर बाई, महारानी लक्ष्मी बाई, जमना बाई मरैहठा, उषा कुमारी, सूरज सिंह चन्द्रा (जिसमें एक क्षत्रिय का हरिजन की लड़की के साथ सच्चा भाई बहन का प्यार दिखाया गया है), दानी कर्ण, कबीर दास, रविदास आदि कथाओं के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। नवजागरण पर महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, नेता जी सुभाष चन्द्रबोस, भक्तसिंह, वीर चन्द्र शेखर, रामप्रसाद बिस्मिल तथा जलियां वाला खूनी इतिहास पर भी कथाएं लिखीं— 'कहै डायर फायर करदो यह तो

हिन्दुस्तानी है' लिख कर प्रकट किया कि अंग्रेज डायर की नजर में हमारी क्या कीमत थी। महात्मा भक्त फूल सिंह पर बड़ी मार्मिक कथा लिखी। 'महात्मा गांधी जी के जीवन की अन्तिम झांकी, 'श्रो हत्यारे हाथ नहीं कांपा।' आदि गीतों में लिखी। इनके अतिरिक्त भी उनका बहुत बड़ा साहित्य उर्दू भाषा में लिखा हुआ अब भी उनके शिष्य कुंवर जौहरी सिंह आर्य भजनोपदेशक गुरुकुल भैंसवाल के पास सुरक्षित है।

उनके शिष्यों में स्वर्गीय स्वामी नित्यानन्द, चौ० सूरत सिंह, पं० शिवकरण, कुंवर जौहरी सिंह, कांशी राम, छोटू राम, भाई मूलचन्द, हरफूल सिंह, भाई बलराम सैनी, सज्जन सिंह, भाई गैला राम हरिजन, भाई प्रभाती राम हरिजन, भीकन सिंह होडल, भाई सत्यवीर सिंह मलिक आदि प्रमुख हैं—जिन्होंने उनकी ही शैली को अपना कर वेद-प्रचार किया है। इनके अतिरिक्त भी उनके अनेक शिष्य रहे हैं—जिनका जिक्र स्थानाभाव से नहीं किया जा रहा है। उनका गाने का ऐसा तरीका था कि आज भी उस शैली पर कोई गीत गाता है तो सुनने वाला फौरन समझ जाता है कि यह शैली चौधरी ईश्वर सिंह की है।

आपका भोजन सादा होता था और मांस, शराब आदि के आप बड़े विरोधी थे। मिठाई तथा तली हुई चीजों का कभी भी प्रयोग नहीं करते थे। 'जिनके प्रीतम पीवें शराब उनका जीना क्या जीना।' शराब के बारे में गीत रच कर बहुत गाया करते थे। गंगा, जमना, रामराय, पिंडारा आदि गन्दे मेलों में स्त्रियों के जाने पर उन्हें बड़ा कष्ट होता था और प्रचार में इन मेलों में होने वाली बुराइयों का बड़े साफ शब्दों में वर्णन करते थे।

अन्त में उस महान् कवि को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हुआ यह लिखना चाहूँगा कि उन्होंने समाज से सम्बन्ध रखने वाला कोई क्षेत्र ऐसा नहीं छोड़ा जिस पर अपनी कलम न उठाई हो। सभी विषयों पर उनके भजन मिलते हैं। आजादी के बाद भी— 'हुआ राज हमारा है सखी रंग बरसैगा।' 'तेरे पा पा को मिटादें बाकी रह जागा किस्तान' आदि गीत लिख कर अपने देश की गौरव गाथा गाई।

आपकी अन्तिम कविता, जो आपने 12 जौलाई 1958 को लिखी—"काल से काल जानै सो जानै" है। उसके बाद आपका 14 जौलाई को दो दिन बाद आपके अपने गांव ककरौला में स्वर्गवास हो गया।

(समाप्तम्)

विहस्यताम् विचार्यताम्

—पं० प्रशस्यमित्र शास्त्री
एम० ए० (लब्धस्वर्णपदक)

एक: प्रश्नः

यदि—

साहित्य संगीत कला विहीनः,
साक्षात् पशुः पुच्छ विषाणहीनः।

तर्हि—

साहित्य संगीत कला सुयुक्तः,
स किं पशुः पुच्छविषाणयुक्तः ?

द्वितीयः प्रश्नः

लज्जैवाऽऽभूषणं नार्या लज्जैव वसनं यदा।
कथं कार्पासवस्त्राणि नारी परिदधात्यसौ॥

षोडशी प्रार्थना

सश्रद्धं मन्दिरे गत्वा पुत्रपुष्पकराशुभा।
प्रत्यहं षोडशी काचित् प्रार्थयत्येवमीश्वरम्॥
न मे याच्ञाऽस्ति हे देव ! काचिदप्यात्मनेपरम्।
जनन्यै कृपया कश्चिज्जामाता दीयतां मम॥

गदहा कः

सभामध्ये तु कस्मिंश्चिद् वैद्यः कोऽपि गुणान्वितः।
"गदहे" ति विशेषेण देवदत्तेन कोपितः॥
कुप्यन्तं वैद्यराजं तं दृष्ट्वाऽसौ देवदत्तकः।
समाधानं करोत्येवं नतेन शिरसा तदा॥
मा कुपः किं न वेत्सि त्वं यद् रोगो 'गद' उच्यते।
गदं हन्ति च यो लोके स एव 'गदहा' स्मृतः॥

अभि नवनागपूजा

कदाचिदपि संसारे येनाऽद्यावधि कुत्रचित् ।
चायपानार्थमप्येकं मित्र नैव निमन्त्रितम् ।।

साग्रहं दुग्धपानार्थं नयन्तं मित्रमण्डलम् ।
देवदत्तमुवाचैवं सखा कश्चन विस्मितः ।।

कृपण ! ब्रूहि को हेतुर्देवदत्ताद्य मित्रक ।
निमन्त्रयसि निःशेषान् सुहृदो दुग्धपीतये ।।

मित्रस्य वचनं श्रुत्वा देवदत्तः सुघोस्तदा ।
मन्दं मन्दं विहस्यैनं प्रत्यूचे मित्रमण्डलम् ।।

भो मूर्खाः ! किं न जानीथ दुग्धदानस्य कारणम् ।
पुण्या तु तिथिरद्यैव वर्त्तते नागपञ्चमी ।।

सरकारी वकील ने जज साहब को चोर की पहचान कराते हुए छड़ी से संकेत किया, कि—"हुजूर ! इस छड़ी के सिरे पर खड़ा व्यक्ति चोर है।"

अभियुक्त ने उत्सुक्तापूर्वक पूछा—"कौन से सिरे पर हुजूर !"

❀ ❀ ❀ ❀

शराब की दूकान—

एक्सक्यूज मी
शराब की दूकान किधर है ?
जी ! बस······
थोड़े ही आगे
'गांधी मार्ग' पर है।

Approved for Libraries by D. P. I'S Memo No. 3/44—1961—B. Dated 8-1-62

Approved by the Chairman, Central Library Committee, Panjab Vide their Memo No. PRD-Lib.-258-61/1257-639 dated Chandigarh, the 8th Jan. 1962.

For—

1. The Secretary to Government, Punjab, Housing and Local Government Department, Chandigarh.
2. The Director of Panchayats, Chandigarh.
3. The Director of Public Instruction, Panjab Chandigarh.
4. The Deputy Director Evaluation, Development Department Panjab Chandigarh.
5. The Assistant Director, Young Farme and Village Leaders, Development Department, Panjab Chandigarh.
6. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Jullundur.
7. The Assistant Director of Panchayats, Rohtak.
8. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Patiala.
9. All Local Bodies in the Panjab.
10. All District Development and Panchayat Officers in the State.
11. All Block Development and Panchayat Officers in the State.
12. All District Public Relations Officers in the State.

'समाज सन्देश'—डाक घर गुरुकुल भैंसवाल कलां
Regd. No. P/RTK-21

सदस्य संख्या
नाम
स्थान
पत्रालय
जिला

व्यवस्थापक श्री धर्मभानु गुरुकुल भैंसवाल ने नेशनल प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर कार्यालय समाज सन्देश गुरुकुल भैंसवाल (सोनीपत) से मुद्रित तथा प्रकाशित किया।

ॐ

समाज सन्देश

(हिन्दी मासिक-पत्र)

सामाजिक व सांस्कृतिक लेखों का संगम

प्रकाशन तिथि : 25 मार्च, 1979

वर्ष 19 — अप्रैल, 1979 — अंक 12

इस अंक में—

सम्पादक-मण्डल :

व्यवस्थापक : धर्मभानु जी

सम्पादक : आचार्य हरिश्चन्द्र

सह सम्पादिका : आचार्या सुभाषिणी

मूल्य : एक प्रति 90 पै० ● वार्षिक चन्दा 10 रुपये

आर्य युवक सम्मेलन की अपील

गुरुकुल विद्यापीठ भैंसवाल कलां के इस महोत्सव के अवसर पर होने वाला यह युवक सम्मेलन देश का ध्यान निम्न तथ्यों की ओर आकृष्ट करता है—जो चिन्ता-जनक हैं :—

1- आजके युवक अपने आदर्श, संस्कृति, सभ्यता और सदाचार से भटकते जा रहे हैं।

2- अपने वेश-भूषा, आचार-विचार के प्रति हीन भावना से प्रेरित होकर अंग्रेज के चले जाने पर भी योरोप की नकल में संलग्न हैं।

3- जगद् गुरु बनने के स्वप्न देखने वाला स्वतन्त्र भारत आज भी परमुखापेक्षी है। शिक्षा, कला, कौशल और स्वावलम्बन में पिछड़ा है।

अतः युवकों से अपेक्षा करता है कि वे जीवन का रुख एकदम पलटें। अधःपतन से ऊपर को उठें। सादा जीवन, उच्च विचार वाला भारत का आदर्श अपनावें। संसार को मार्ग दिखावें।

❀ ❀ ❀ ❀

शराब बन्दी सम्मेलन में स्वीकृत प्रस्ताव

विद्यापीठ गुरुकुल महाविद्यालय भैंसवाल कलां के 60वें महोत्सव पर दूर दूर से एकत्रित इस आर्य जनता की दृढ़ धारणा है कि देश और जाति के सर्वाङ्गीण अधःपतन में मुख्य कारण बढ़ता हुआ मद्यपान का व्यापक व्यसन ही है— अतः इसका विरोध सामाजिक, राजनैतिक तथा पंचायती तौर पर बलपूर्वक किया जाना चाहिए। सरकार और पंचायतों से साग्रह निवेदन है कि शीघ्रातिशीघ्र इस के विरोध में प्रस्ताव पारित करके दृढ़ता से लागू करवाने का पूर्ण प्रयत्न करें।

समाज सन्देश में छपे विचारों से हमारा सहमत होना या न होना आवश्यक नहीं। समाज सन्देश में हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी मत से सम्बन्ध रखता हो अपने लोकहितकारी विचार अथवा लेख प्रकाशनार्थ भेज सकता है। उसकी मौलिकता का लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा।

—सम्पादक

❀

लेख भेजने तथा अन्य विषयक पत्र व्यवहार का पता :—

देवराज विद्यालंकार

गुरुकुल भैंसवाल कलां (सोनीपत)

* ओ३म् *

अमर शहीद महात्मा भक्त फूल सिंह जी

संस्थापक :—

गुरुकुल भैंसवाल कलां तथा कन्या गुरुकुल खानपुर कलां

जि० सोनीपत (हरियाणा)

जन्म : 24–2–1885 बलिदान : 14–8–1942

सम्पादकीय—

गुरुकुल कांगड़ी में सहशिक्षा

आर्य समाज को स्थापित हुए एक सौ चार वर्ष हो गए हैं। इस थोड़े से समय में आर्यसमाज ने भारत वर्ष को ही नहीं, अपितु संसार को बहुत कुछ दिया है। महर्षि दयानन्द जो आर्य समाज के संस्थापक थे अपने आप में त्याग, तप, ब्रह्मचर्य, सत्यज्ञान और कर्त्तव्यपालन की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने जिस पौधे को आरोपित किया था वह शीघ्र ही फला एवं फूला। सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक और साहित्यिक क्षेत्रों में आर्यसमाज की देन को अनदेखा नहीं किया जा सकता। यह आर्यसमाज रूपी वाटिका शीघ्र ही उजड़ जायेगी इसकी कल्पना महर्षि ने कभी नहीं कि होगी? यहां के स्वार्थी साधु-सन्यासियों व आर्य समाज के नेताओं ने ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पं० लेखराम, ला० लाजपत राय, भक्त फूल सिंह आदि महापुरुषों की कुर्बानियों को भुला दिया।

गुरुकुल कांगड़ी आर्य समाल की सब से प्राचीन एवं संसार प्रसिद्ध संस्था है जिसे स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने खून-पसीने से सींचा था। लेकिन पंजाब प्रतिनिधि सभा के माध्यम से वहां के धन-माल को हड़पने के लिए निरन्तर लूटेरे संस्था में घुसते चले गए तथा स्वार्थ साध कर आगे बढ़ गए।

महर्षि दयानन्द व स्वामी श्रद्धानन्द दोनों ने ही गांव शहरों से दूर, बनों, पहाड़ों व नदियों के किनारे आश्रमों में 25 वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य पूर्वक विद्याध्ययन के लिए गुरुकूलों के स्वप्न ही नहीं संजोये थे, अपितु उन्हें क्रियान्वित किया था। लेकिन क्या महर्षि दयानन्द ने इसलिए आर्य समाज की स्थापना की थी कि उनकी संस्था को लोग लूट खायें? क्या स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना खून इसलिए बहाया था कि उनकी वाटिका को बर्बाद किया जाए? आज गुरुगुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के परिसर में एक साथ लड़के तथा लड़कियां अनेकों प्रकार की भड़कीली पोशाकें पहनें भंवरों व तितलियों की भान्ति मण्डराते फिर रहे हैं। इकट्ठे पढ़ते हैं, इकट्ठे चाय पीते हैं, इकट्ठे खेलते हैं, इकट्ठे गप्पें लड़ाते हैं। इससे बढ़ कर निकृष्ट और घटिया बात आर्यसमाज के लिए और क्या हो सकती है? क्या स्वामी श्रद्धानन्द की आतमा ऐसा कुकृत्य देख कर आज रो नहीं रही होगी? जिन मूक सेवकों ने इस संस्था के लिए अपने सारे सुखों को लात मार अपना जीवन लगाया और विश्व के अन्दर इसे भारतीय प्राचीन और एवं अर्वाचीन

संस्कृति एवं शिक्षा के केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित किया, क्या इसलिए कि इस संस्था में पैसे कमाने के लिए सहशिक्षा प्रचलित कर दी जाए ? इतना होते हुए भी बड़े दुर्भाग्य की बात है कि आर्य समाज के ठेकेदार और कुलभूमि के स्नातक चुप्पी साधे बैठकर तमाशा देख रहे हैं। गुरुकुल कांगड़ी की व्यवस्था सुधारने के लिए पिछले वर्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ला० रामगोपाल शाल वाले तथा बहन पुष्पा देवी ने आमरण अनशन किया था। प्रधान मन्त्री के आश्वासन पर उन्होंने अनशन समाप्त किया था। लेकिन अभी तक हमारी सरकार ने कोई भी सन्तोष-जनक हल नहीं निकाला है। प्रशासक तो बैठा दिया गया है लेकिन अभी तक बाह्य तथा आन्तरिक व्यवस्था का सुप्रबन्ध नहीं हो पाया है। श्री धर्मवीर जी विद्यालंकार सहायक मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल ने गुरुकुल कांगड़ी की बिगड़ती हालत और सहशिक्षा आदि के विरुद्ध आवाज उठाकर श्लाघनीय कार्य किया है। इस संस्था की मन, वचन व कर्म से आचार्य प्रियव्रत तथा धर्मपाल विद्यालंकार ने जो सेवा की है वह गुरुकुल कांगड़ी तथा आर्यसमाज के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है।

मैं आर्य नेताओं तथा साधु-सन्यासियों से अपील करता हूँ कि वे दलगत राजनीति तथा स्वार्थपूर्ति के लिए श्रद्धानन्द की कुर्बानी को बलि का बकरा न बनायें। भारत सरकार से भी प्रार्थना है कि गुरुकुल कांगड़ी को सुचारु रूप से संचालित करने में सहयोग करें। यहां से तत्काल सहशिक्षा बन्द करके भारतीय संस्कृति के एकमात्र केन्द्र की रक्षा करें।

अन्त में गुरुकुल कांगड़ी के सभी स्नातकों से भी मेरा अनुरोध है कि गुरुकुल प्रांगण में बुरे तत्वों को नहीं घुसने दें तथा सरकार पर भी इसकी रक्षा के लिए दबाव डालें। स्नातक बन्धुओं के लिए यह कुलभूमि जननी से भी बढ़ कर है। सभी स्नातक एकत्रित होकर इसकी बाह्य एवं आन्तरिक व्यवस्था पर विचार करें और यहां से सह-शिक्षा को तुरन्त बन्द करवायें। यदि स्नातक इस ऋषि भूमि को नहीं सम्भालेंगे तो वह दिन दूर नहीं जबकि इस संस्था में लगे ईंट व पत्थरों को भी लोग उखाड़ कर अपने घर ले जायेंगे। बाहर के लोगों से सुधार की आशा करना बेतुकी और निराधार बात है। स्नातकों से ही इस कुलभूमि की रक्षा सम्भव है।

—देव राज विद्यालंकार
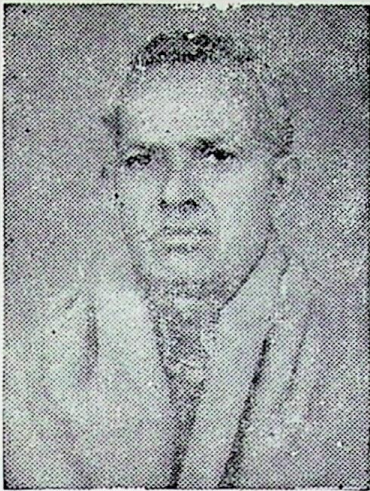
* महाभारत *

लेखक :
आचार्य विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड

●

वक्तव्य

महाभारत को पञ्चम वेद कहा गया है। इसका कारण है कि समय-समय पर विद्वानों ने अपने विचार, आचार, व्यवहार को इस ग्रन्थ के द्वारा प्रकट किया है। अब तक हिन्दी भाषा में जो महाभारत लिखे, दृष्टि में आये हैं, उनमें कुछ अपूर्णता सी प्रतीत हुई। बहुत सी उत्तम घटनाओं का उनमें परित्याग कर दिया है, जिससे संस्कृत से अनभिज्ञ पुरुषों को महाभारत के विषय में पूरी जानकारी प्राप्त नहीं होती है।

व्यास मुनि रचित महाभारत में भी कुछ बातें, कुछ घटनायें अतिरञ्जित की हुई मिलती हैं। जिनके पढ़ने में भावनोन्मुख तो हुआ जा सकता है परन्तु हम वास्तविकता से सर्वथा दूर हो जाते हैं। कुछ कथानक अव्यवहारिक से हैं, जिन में अतिशयोक्ति तथा अव्यवहारिकता प्रकट होती है। कुछ इतिहास जैसे—कर्ण, द्रोण, कृप, धृतराष्ट्र, पाण्डु पुत्रों की उत्पत्ति के तरीके भी समझ में आने कठिन हो जाते हैं, उनको व्यवहारिक बनाकर लिखने का प्रयत्न किया गया है परन्तु यह विचार रखा गया है कि ग्रन्थकार की इच्छा से विपरीत न लिखा जावे। कुछ वर्णन इस प्रकार के हैं, जिनके पढ़ने से यह प्रतीत होता है कि इतिहास में इनको व्यर्थ ही अपने पाण्डित्य के प्रदर्शन के लिए जोड़ा गया है। ऐसे प्रकरणों को सर्वथा छोड़ दिया गया है। जो उत्तम राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, कौटुम्बिक उपदेश महाभारत में लिखे हैं उनका सारभूत अंश इस ग्रन्थ में अवश्य लिखा गया है।

वैसे भूमिका पूरे ग्रन्थ की समय पर लिखूंगा : अब तो केवल इसे भूमिका का प्रारम्भ मात्र मानिये।

आदि पर्व

वंश परम्परा

दक्ष के पुत्र अदिति, अदिति से विवस्वान्, विवस्वान् से मनु, मनु से इला, इला से पुरूखा, पुरूखा से आयु, आयु से नहुष, नहुष से ययाति का जन्म हुआ। ययाति की देवयानी और शर्मिष्ठा दो पत्नियां हुईं। देवयानी के गर्भ से यदु और तुर्वसु ये दो पुत्र उत्पन्न हुए। शर्मिष्ठा ने द्रह्यु, अनु, पूरु इन तीन पुत्रों को पैदा किया। यदु की सन्तान यादव और पुरु की सन्तान पौरव कहलाई। श्रीकृष्ण यदु के वंशज थे और दुष्यन्त पुरु के वंशज थे।

पूरु का पुत्र जनमेजय हुआ, जिसने तीन अश्वमेघ यज्ञ किये। विश्वजित् यज्ञ करके राजा जनमेजय वानप्रस्थाश्रम सेवी बना। जनमेजय का पुत्र प्राचिन्वान् हुआ, उसने यदु कुल की अयूमकी नामक कन्या से विवाह कर संयाति नामक पुत्र उत्पन्न किया। संयाति का पुत्र अहंयाति, अहंयाति का सार्वभौम, सार्वभौम का जयत्सेन, जयत्सेन का अवाचीन, अवाचीन का अरिह, अरिह का महाभौम, महाभौम से अयुतनामी पुत्र हुआ।

अयुतनामी ने अनेक यज्ञ किये। अयुतनामी से अक्रोधन, अक्रोधन से देवातिथि, देवातिथि से अरिह, अरिह से ऋक्ष, ऋक्ष से मतिनार पुत्र उत्पन्न हुआ। मतिनार ने द्वादश वार्षिक यज्ञ का अनुष्ठान किया। मतिनार का तंसु, तंसु का ईलिन, ईलिन के दुष्यन्त आदि पांच पुत्र हुए।

दुष्यन्त ने विश्वामित्र की पुत्री शकुन्तला से विवाह किया। शकुन्तला से भरत का जन्म हुआ। भरत का भुमन्यु, भुमन्यु का सुहोत्र, सुहोत्र का हस्ती हुआ, जिसने हस्तिनापुर की स्थापना की। हस्ती का विगुण्ठन, विगुण्ठन का अजमढि नामक पुत्र हुआ। अजमढि की कैकेयी, गान्धरी, विशाला, ऋक्षा इन रानियों से अनेक पुत्र हुए। ये सब पृथक्-पृथक् वंश प्रवर्तक राजा हुए। अजमीढ़ के प्रतापी पुत्रों में राजा संवरण कुरु वंश के प्रवर्तक हुए।

संवरण का कुरु, कुरु का विदूर, विदुर का अनश्वा, अनश्वा का परिक्षित, परिक्षित का भीमसेन, भीमसेन का प्रतिश्रवा, प्रतिश्रवा का प्रतीप पुत्र हुआ। उसने शिबि देश की राजकन्या सुनन्दा से विवाह किया। उसके गर्भ से देवापि, शान्तनु, वाल्हीक नाम के तीन पुत्र हुए। देवापि बाल्यावस्था में ही विरक्त होकर वन को चले गये। शान्तनु राजा हुए।

प्रतीप ने अपने पुत्र शान्तनु को सब प्रकार की शिक्षा दिलवाई। उसको वेदों

की शिक्षा और धनुर्वेद की शिक्षा दिलाई गई। अपने पिता द्वारा अभिषिक्त शान्तनु राज्य कार्य उत्तम प्रकार से करने लगे। बलवान् शान्तनु मृगयाशील होके वन में हिंसक-प्राणियों को मारने के लिए जाया करते थे।

एक दिन शान्तनु ने परम सुन्दरी गङ्गा नामक नारी के दर्शन किये। वे उसके परम सुन्दर रूप को देख कर उस पर मोहित हो गये। वह भी शान्तनु के परम सुन्दर शरीर को देखकर उन पर मुग्ध हो गई। राजा ने उस स्त्री से कहा—हे देवी ! मेरी प्रार्थना है कि तुम मेरी पत्नी बनकर मुझे प्रसन्न करो।

अपने रूप पर मोहित हुए राजा को देख कर वह राजा को बोली – राजन् ! मैं एक शर्त पर आपकी पत्नी बनने के लिए उद्यत हूँ, वह यह है कि जो मैं करूं उस काम से आप मुझे न हटावें। यदि आप मेरी इस बात को स्वीकार करें तो मैं आपकी पत्नी बनने के लिए उद्यत हूँ। इसके साथ-साथ आप यह भी प्रतिज्ञा करें, यदि आपने इस प्रतिज्ञा का भंग किया तो आप मुझे रोक न सकेंगे।

गङ्गा के रूप पर मोहित हुए राजा ने उस देवी की सारी बातें स्वीकार कर लीं। तब वह प्रसन्न होके रथ पर सवार हो गई। राजा भी उसे अपने रथ में सवार करके प्रसन्न होकर नगर में आये। गङ्गा के शील स्वभाव, सदाचार, रूप और एकान्त सेवन से राजा उस पर बहुत प्रसन्न था।

समय आने पर क्रमशः उस देवी ने आठ पुत्र उत्पन्न किए। वह उत्पन्न होते ही प्रत्येक पुत्र को गङ्गा नदी के जल में डाल देती थी। पत्नी का यह क्रूर स्वभाव राजा को अच्छा नहीं लगा। कहीं यह देवी मुझको छोड़ कर अन्यत्र न चली जावे इस भय से राजा उसको रोक नहीं रहा था। अन्त में जब वह अपने अन्तिम पुत्र को गङ्गा नदी में डालने चली तो वह स्वयं को न रोक सका। वह बोला—हे पुत्र घातिनी ! तू कौन है ? तू इस पुत्र हत्या के निन्दित कर्म को करती हुई क्यों नहीं लज्जित होती है। तू बहुत पापिन है।

राजा की क्रोध भरी बातों को सुन कर वह बोली—हे राजन् ! अब मैं इस बालक को नहीं मारूंगी और अपनी प्रतिज्ञानुसार आपके घर में भी नहीं रहूँगी। मेरा यह पुत्र देवव्रत या गङ्गादत्त के नाम से प्रसिद्ध होगा। यह बालक अभीं शिशु है। अतः इसके पालन-पोषण के लिए इसे मैं अपने साथ ले जाऊंगी। जब यह शिशु बड़ा तथा योग्य हो जावेगा तब इसे मैं आपके पास भेज दूँगी। आपकी मुझ से जब मिलने की इच्छा होगी उस समय मैं आपकी सेवा में उपस्थित हो जाऊंगी। ऐसा कह वह देवी उस शिशु को अपने साथ लेके अन्तर्धान हो गई। फिर वह अपने अभिलषित स्थान पर चली गई। उस बालक का नाम आगे चल कर गाङ्गेय भी हुआ। राजा शान्तनु भी पत्नी और पुत्र के वियोग से सन्तप्त होकर अपने नगर हस्तिनापुर में आ गये।

शान्तनु को सुशिक्षित पुत्र की प्राप्ति और देवव्रत की भीष्म प्रतिज्ञा

शान्तनु महाराज को सब राजाओं ने उनके गुणों से प्रभावित होकर 'सम्राट' की उपाधि प्रदान की थी। वे प्रजा का पालन-लालन अति प्रेम से करते थे। गङ्गा के वहां से चले जाने पर राजा ने ब्रह्मचर्य व्रत का कठोरता से पालन किया।

एक बार शान्तनु हिंसक पशु को बाण से विद्ध कर उसका पीछा करने गङ्गा तट पर आये। शान्तनु ने देखा कि गङ्गा का जल थोड़ा-थोड़ा बह रहा है। राजा ने इसका कारण जानना चाहा। कारण को जानने की इच्छा से आगे बढ़े हुए राजा ने एक आश्चर्य जनक दृश्य देखा कि एक विशाल काय कुमार दिव्यास्त्रों का अभ्यास कर रहा है। उसके बाणसमूह से जल की धारा रुकी हुई है। उस बालक के अलौकिक कर्म को देख कर वह आश्चर्य चकित हो गया। बाल्यकाल में ही देखे गये अपने पुत्र को शान्तनु नहीं पहचान सके।

उस बालक ने अपने पिता को अपनी माया से मोहित किया। वह एक दम अन्तर्धान हो गया। जब राजा इस प्रकार आश्चर्य-चकित था, उसी समय गङ्गा देवी अपने पुत्र का हाथ पकड़ कर राजा के सम्मुख आई।

उसने राजा को नमस्कार कर कहा—हे राजन! यह आपका वही पुत्र है जो मेरे उदर से उत्पन्न हुआ है। अब यह अस्त्र-शस्त्र वेत्ताओं में अग्रणी माना जाता है। अब आप इसे स्वीकार करें। अब इसे आप अपनी राजधानी में ले जावें। इसने महर्षि वसिष्ठ से छः अंगों समेत समस्त वेदों का अध्ययन किया है। यह अस्त्र विद्या में पारगत और महा धनुर्धर है। शुक्राचार्य की नीति विद्या का भी इसे पूर्ण ज्ञान है। परशुराम से भी विद्या प्राप्त की है। राजधर्म का यह महान ज्ञाता है। यह आपका बहुत योग्य पुत्र है, इसे आप अपने घर में ले जावें। ऐसा कहके गङ्गा देवी तत्काल अन्तर्धान हो गई।

राजा शान्तनु उस योग्य पुत्र को प्राप्त कर अति प्रसन्न हुए। वे उसे लेकर अपनी राजधानी में आये। कुछ काल के पश्चात् ही राजा ने उसके अलौकिक गुणों से प्रभावित होकर उसे 'युवराज' पद पर अभिषिक्त किया। उसके उत्तम आचरण से सारी प्रजा उससे प्रेम करती थी। इस प्रकार पुत्र के साथ रहते हुए राजा के चार वर्ष बड़ी प्रसन्नता से व्यतीत हो गए।

एक दिन राजा यमुना निकटवर्ती वन में गये। वहां पर उनको अलौकिक गन्ध आई। जब वे 'यह गन्ध कहां से आ रही है' यह जिज्ञासा कर रहे थे, तभी उन्हें मल्लाह की एक सुन्दरी कन्या के दर्शन हुए। राजा उसके रूप पर मोहित हो गए। राजा ने उस कन्या के समीप जाके उससे उसका सारा पता लगाया। उस कन्या से पुरी जानकारी लेके राजा कन्या के पिता दाशराज के समीप गए। उसने अपनी इच्छा भी उसके पिता के सम्मुख रखी कि वह उसकी कन्या से विवाह करना चाहता है।

राजा की बात सुन कर दाशराज बोला—हे राजन ! मेरी इच्छा इस कन्या को श्रेष्ठ वर के साथ विवाहने की है। आप भी पहले मेरे मन की बात को ध्यान से सुन लें, तदनन्तर इस कन्या से विवाह करने की सोचें। वह यह है—

हे राजन् ! मैं अपनी कन्या को आपको प्रदान करने के लिए उद्यत हूँ परन्तु मैं जो कुछ कहूँ उसे आप ध्यान से सुनें आप पहले यह प्रतिज्ञा कीजिये कि कन्या के उदर से जो पुत्र उत्पन्न होगा, उसे ही आप राजगद्दी का उत्तराधिकारी बनावेंगे।

यद्यपि राजा काम ज्वर से पीड़ित था तो भी वह दाशराज को यह वचन देने में असमर्थ था, क्योंकि वे देवव्रत को ही राज्य का उत्तम अधिकारी मानते थे। वहां से कुछ भी उत्तर न देकर उस कन्या के सौन्दर्य को स्मरण करते हुए हस्तिनापुर में आ गये।

एक दिन देवव्रत अपने पिता से मिलने गये। उसने अपने पिता को अत्यन्त चिन्तित देखा। वे उनसे बोले—पिता जी ! आपका तो सब ओर से मंगल कुशल है, भूमण्डल के राजा महाराजा आपके आदेश को स्वीकार करते हैं, इतना होने पर भी मैं आप को शोकमग्न देख रहा हूँ। आजकल आप पहले की तरह घोड़े पर सवार होकर बाहर भी धूमने नहीं जाते हैं। आपका यह सुन्दर शरीर दिनों दिन निर्बल होता जा रहा है। इसका कारण मेरी समझ में नहीं आता है।

अपने पुत्र की बात सुन कर राजा ने पुत्र से कहा—हे पुत्र ! सुनो, तुम मेरे एक ही पुत्र हो, अस्त्र-शस्त्र विद्या से बहुत प्रेम करते हो। मैं तुम्हारे स्वाभाविक युद्ध के स्वभाव को देख कर चिन्तित सा हो जाता हूँ और सोचता हूँ कि यदि कभी तुम पर कोई विपत्ति आ गई तो वंश परम्परा समाप्त हो जावेगी। मुझे यह भी विश्वास है कि तुम सौ पुत्रों के समान अकेले हो। बहुत सोचने पर भी मेरी चिन्ता मुझ से दूर नहीं होती है।

मैं अब विवाहित भी नहीं होना चाहता हूँ फिर भी यह सोच कर कि वंश परम्परा का लोप न हो अतः मुझे पत्नी की कामना हुई है। पुत्र ! तुम्हारा कल्याण हो। एक पुत्र का होना पुत्र न होने के समान माना जाता है।

देवव्रत ने पिता की बातें सुन कर उन पर विचार किया। अपने विचार की दृढ़ता के लिए वह पिता के साथ भ्रमण के लिए जाने वाले मन्त्री के समीप गये और उनसे पिता की चिन्ता का कारण जानना चाहा। राज पुत्र की बात को सुन कर मन्त्री बोले—हे राजकुमार! तुम्हारे पिता विवाह कराना चाहते हैं परन्तु उस कार्य में कुछ रुकावट हो गई है। अतः वे चिन्तित रहते हैं।

वास्तविकता का पता लगाने के लिए वे अपने पिता के सारथी के समीप भी गये और उससे भी पिता की चिन्ता का कारण जानना चाहा। सारथी ने राजकुमार को कहा—युवराज! तुम्हारे पिता जी का अनुराग एक धीवर कन्या से हो गया है परन्तु उस धीवर ने तुम्हारे पिता के सामने विवाह के लिए एक शर्त्त रखी है और वह यह है कि—'जो मेरी पुत्री के गर्भ से पुत्र उत्पन्न हो वही तुम्हारे पिता की राजगद्दी का अधिकारी हो'। आपके पिता धीवर को ऐसा कोई वर नहीं देना चाहते हैं। वह निषाद राज भी इसी शर्त्त पर विवाह करने के लिए स्थिर है। यही चिन्ता का कारण आपके पिता जी का है। इस विषय में आप जो उचित समझें, वही करें।

वास्तविकता से अवगत होकर युवराज देवव्रत वृद्ध क्षत्रियों के साथ निषादराज के समीप गये। निषादराज ने देवव्रत को अपने घर में आया देख उसका यथा विधि सत्कार किया। फिर निषाद ने कहा—मैं यह मानता हूँ कि आप इस विशाल राज्य को पूर्णतः संभालने में समर्थ हैं फिर भी मैं अपने मन की बात अवश्य ही आपके सामने रखूंगा। मैं यह भी मानता हूँ कि कन्या के लिए ऐसा वर मिलना कठिन है। मैं आपको यह भी सूचित कर दूं कि मेरी यह कन्या आर्य पुरुष की सन्तान है, जो गुणों में आर्य कन्याओं के समान है। आर्य के वीर्य से ही मेरी पुत्री का जन्म हुआ है। इसका नाम सत्यवती है। महाराज शान्तनु मुझ से अपने लिए इसे मांगने आये थे, उनसे भी मैंने यही बात कही थी, कि मैं आपके साथ इसका विवाह करने को उद्यत हूँ परन्तु इसके गर्भ से जो सन्तान हो वही राज्य की अधिकारी होनी चाहिए।

आपके घर में मेरी कन्या के जाने पर मुझे एक दोष और प्रतीत होता है, 'वह है बलवान् से शत्रुता'। मैं यह मानता हूँ आप बहुत ही बलवान् हैं। आपका शत्रु चाहे देव हो चाहे दानव हो, वह आपसे विरोध करके चिर काल तक जीवित नहीं रह सकता है इस विवाह में इसी प्रकार का दोष भी मुझे दिखलाई देता है। इस बात को आप भली प्रकार सोच लें।

दाशराज की वातों को सुन कर देवव्रत बोले—दाशराज! सुनो, इस कन्या के उदर से जो बालक होगा वही इस विशाल राज्य का अधिकारी होगा। यह सुन दाशराज बोले—राजकुमार! मैं यह मानता हूँ कि आप महाराज शान्तनु की ओर से उत्तर-दायी बन कर आये हैं, अब आपका मेरी कन्या पर पूरा अधिकार है।

मैं आपसे एक बात और कहना चाहता हूँ, वह यह है, मैं यह तो मानता हूँ कि आप तो अपने वचन पर दृढ़ रहेंगे, परन्तु हो सकता है आप का पुत्र इस बात पर दृढ़ न रहे, अतः इस विषय में भी मेरी सन्देह निवृत्ति करें।

दाशराज के सन्देह को दूर करने के लिए देवव्रत बोले—हे दाशराज ! मेरी सत्य प्रतिज्ञा को सुन, जिसे मैं अपने पिता के सुख के लिये करता हूँ। राज्य तो मैंने पहले ही छोड़ दिया है। अब मैं सन्तान छोड़ने की प्रतिज्ञा करता हूँ। आज से लेके मेरा अखण्ड ब्रह्मचर्य चलेगा। मेरे पुत्र न होने पर भी स्वर्ग में मुझे अक्षय लोक प्राप्त होंगे। मैं आज सबके सामने प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैंने आज से ही राज्य तथा मैथुन दोनों सदा के लिये त्याग दिये हैं। मैं ऊर्ध्वरेता ब्रह्मचारी बन के संसार में रहूंगा।

जब युवराज देवव्रत ने यह प्रतिज्ञा की तो दाशराज के रोंगटे खड़े हो गये। उसने कहा—राजकुमार ! मैं इस कन्या को आपके पिता के लिए प्रदान करता हूँ। देवव्रत के मुख से इस प्रतिज्ञा को सुन कर सबने उसे भीष्म नाम से पुकारा। उसी दिन से उसकी भीष्म नाम से प्रसिद्धि हुई।

दाशराज की आज्ञा को प्राप्त कर भीष्म सत्यवती के समीप जाके उससे इस प्रकार बोले—माता जी ! आप रथ पर सवार होइये और हमारे घर की ओर चलिए। सत्यवती भी अपने पिता की अनुमति से रथ पर बैठी और वह भीष्म आदि के साथ हस्तिनापुर की ओर चली। यह सारे समाचार राजा शान्तनु के समीप पहुंचे। वे पुत्र के इस अनुपम त्याग से बड़े प्रभावित तथा प्रसन्न हुए। पुत्र के मिलने पर राजा ने उसे स्वच्छन्द मृत्यु का वरदान या आशीर्वाद दिया।

* *

सत्यवती के गर्भ से चित्राङ्गद और विचित्र वीर्य की उत्पत्ति, शान्तनु तथा चित्रांगद की मृत्यु—विचित्र वीर्य की राज्य प्राप्ति।

सत्यवती चेदिराज वसु की कन्या थी, निशादराज तो केवल उसे पालने वाले पिता थे। इस बात का पता महाराज शान्तनु को था, अतः उन्होंने उससे शास्त्रीय विधि के अनुसार विवाह किया। कुछ समय के पश्चात् सत्यवती के गर्भ से चित्राङ्गद नामक पुत्र हुआ। समय बीतने पर सत्यवती ने दूसरे पुत्र विचित्र वीर्य को भी जन्म दिया।

विचित्र वीर्य अभी बालक ही थे कि अचानक महाराज शान्तनु की मृत्यु हो गई। माता सत्यवती की अनुमति से भीष्म ने चित्राङ्गद को राजगद्दी पर बिठलाया। वह बड़ा वीर था, वह अपने समान किसी को भी योद्धा नहीं मानता था।

एक बार उसके पास चित्राङ्गद नाम वाला एक गन्धर्व आया और उससे बोला—हे राजन्! तेरा और मेरा एक ही नाम है। मैं तुम से युद्ध करना चाहता हूँ। मेरा ऐसा विश्वास है मेरे नाम वाला व्यक्ति मुझ से युद्ध करके जीवित नहीं रह सकता है। चित्राङ्गद भी वीर था, वह भी उससे युद्ध के लिए तैयार हो गया।

निश्चित समय पर उन दोनों का युद्ध सरस्वती नदी के तट पर समय-समय पर तीन वर्ष तक चलता रहा। अन्त में मायावी चित्राङ्गद ने राजा चित्राङ्गद का वध किया। गन्धर्व उसको मार कर अपने प्रदेश में चला गया।

चित्राङ्गद की मृत्यु से सत्यवती और भीष्म को बहुत दुःख हुआ। राजगद्दी को रिक्त देख कर छोटे राजकुमार विचित्रवीर्य को राजगद्दी पर बिठलाया गया।

भीष्म की देखरेख में राजा विचित्रवीर्य कुरु जांगल देश के राजा बने। विचित्रवीर्य अपने बड़े भाई भीष्म का पितृ तुल्य आदर करते थे। भीष्म भी उस अल्प वयस्क नरेश की पूरी तरह सहायता करते थे।

(क्रमशः)

छोटू राम पार्क में ——एक दिन

—देवराज विद्यालंकार

पिछले वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी चौ० छोटू राम जी की 79वीं जन्म तिथि बसन्त पञ्चमी (1-2-79) को छोटू राम पार्क रोहतक में बड़ी धूम-धाम से मनाई गई। जब मैं सवा ग्यारह बजे छोटू राम पार्क में पहुँचा तो० रणजीत सिंह जी सम्मेलन में उद्घोषक का कार्य संचालन कर रहे थे। डा० मंगल सैन उद्योग मन्त्री हरियाणा ने अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए कहा कि वे कट्टर आर्यसमाजी थे, त्यागी थे और शोषण से संघर्ष करने वाले थे। वे जीवित होते तो देश का विभाजन नहीं होता। तत्पश्चात् श्री सुखदेव जी शास्त्री ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की ओर से बोलते हुए—"स जातो येन जातेन याति वंश: समुन्नतिम्" की व्याख्या करते हुए चौ० छोटू राम की देन पर प्रकाश डाला। उसके बाद श्रीमती कृष्णा देवी सोनीपत, श्री अमीर सिंह जी हांसी, कैप्टन दलीप सिंह, श्री हरिचन्द हुड्डा एम० एल० ए०, श्रीमती शान्ति राठी एम०एल०ए०, जगजीतसिंह पोहलू एम० एल० ए०, चौ० चन्द्रभान छिकारा, श्री भलेराम जी एम०एल०ए० बरौदा आदि ने चौ० छोटू राम के जीवन से शिक्षा लेने की अपील की। सत्यपाल जी मलिक यू०पी० ने देश की अर्थव्यवस्था की आलोचना करते हुए चौ० छोटू राम केस पनों के समाजवाद को देश में लाने के लिए देश के राजनैतिक ढांचे को बदलने की अपील की।

चौ० छोटू राम के नजदीकी मित्र चौ० सूरजमल जी भूतपूर्व लोक निर्माण मन्त्री पंजाब ने 80% अंक प्राप्त करने वाले सम्बन्धित संस्थाओं के विद्यार्थियों को पारितोषिक बांटा और चौ० छोटूराम की दूरदर्शिता के अनेकों उदाहरणों से लोगों का मन मोह लिया। उसके बाद श्री सन्तकुमार एम० एल० ए०, श्री फूल चन्द जी भूत पूर्व विधायक, श्री उदय सिंह दलाल विधायक, श्री प्रीत सिंह राठी मन्त्री हरियाणा सरकार, श्री सत्यवीर जी मलिक, अध्यक्ष योजना बोर्ड हरियाणा, श्री हरस्वरूप जी बूरा विधायक, ओजस्वी वक्ता श्री ओमपाल जी, श्री मेहर सिंह जी राठी मन्त्री हरियाणा सरकार आदि सभी ने किसानों से संगठित होने की अपील की। मूलचन्द जी जैन मन्त्री हरियाणा सरकार ने कहा कि वे भारत के महान सपूत थे तथा वे कट्टर आर्य समाजी थे। आर्य समाज के माध्यम से उन्होंने देश को नवजागृति प्रदान की। गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार आदि के निवारण के लिए उन्होंने जी तोड़ कोशिश की।

तत्पश्चात् सम्मेलन के हीरो श्री राजनारायण जी संसद सदस्य जो सिर पर पीली पगड़ी, हाथ में छड़ी, चश्मा, धोती, कुर्ता, मोटी जुराब तथा सादे जूते पहने हुए थे

ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि— "मैं मन्त्रीमण्डल के बन्धनों से नहीं बन्धा रह सकता था। मैं हमेशा किसानों के हितों की लड़ाई लड़ता रहूँगा। सुलझती हुई गुत्थी को उलझाना ही मेरा काम है। जो हमारी तरफ आंखें लाल करेगा उसकी आंखें फोड़ दी जायेंगी। किसानों की पार्टी में दम है बाकी पार्टियां निपुंसक हैं। किसानों के हितों के लिए मैं पूंजीवादी नीतियों के विरुद्ध सरकार का छक्का छुड़ा दूंगा। जनता पार्टी से जब तक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कीड़े को नहीं निकाला जायेगा तब तक देश का भला नहीं होगा।" उन्होंने अखिल भारतीत ग्रामीण युवा सम्मेलन के आयोजन की अपील की।

तत्पश्चात् श्रीमती चन्द्रावती एम० पी० ने बाहर से आये हुए अतिथियों का स्वागत किया। श्री राम किंकर जी मन्त्री भारत सरकार ने भी लोगों को नैतिक उत्थान की प्रेरणा दी। श्री ओम् प्रकाश जी विधायक ने भी अपने ओजस्वी भाषण के द्वारा गीता के प्रसिद्ध श्लोक—"यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमथर्मस्य तदात्मानम् स्रजाम्यहम ॥" की व्याख्या करके चौ० छोटूराम को श्रद्धांजलि अर्पित की।

"श्री रविराय जी स्वास्थ्य मन्त्री भारत सरकार"—किसान की भारत को देन तथा गांधी जी से सर छोटू राम जी की तुलना करते हुए कहा कि वे हरियाणा के नहीं अपितु सारे हिन्दुस्तान के नेता थे। वे क्रान्तिकारी नेता थे। साम्प्रदायिकता को उन्होंने समाप्त करने का पुरजोर यत्न किया, राष्ट्रीय एकता के लिए उन्होंने किसान सम्मेलन की आवश्यकता पर बल दिया। श्री धर्मवीर जी वशिष्ठ एम० पी० ने अपनी भावभीनि श्रद्धांजलि एक ओजस्वी कविता के माध्यम से देते हुए कहा कि—एक भारतीत पत्रकार से चीन के प्रमुख राष्ट्रीय नेता भी चौ० चरण सिंह की विचारधारा सुनने के लिए उत्सुक देखे गए हैं।

श्री मनीराम बागड़ी संसद सदस्य ने मुख्य मन्त्री चौ० देवी लाल को बसन्तपञ्चमी के पुण्य दिन पर सार्वजनिक अवकाश की घोषणा के लिए बधाई देते हुए अपने ओजस्वी भाषण द्वारा चौ० छोटू राम को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की और अन्त में सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती गायत्री देवी संसद-सदस्या (धर्मपत्नी चौ० चरणसिंह) ने बहुत नपे-तुले शब्दों में चौ० छोटूराम को श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए उत्सव की परिसमाप्ति की।

इस सम्मेलन में अनेकों विधायकों को समयाभाव तथा बाहर से आये अतिथियों को प्राथमिकता देने के कारण बोलने का अवसर नहीं मिल सका। अतः वे अपनी मूक श्रद्धञ्जलि अर्पित करके लोटते देखे गये। जिसमें से हमारी संस्थाओं के प्रधान तथा हरियाणा के भू० पू० शिक्षा मन्त्री चौ० माड़ू सिंह जी तथा श्री गंगाराम जी विधायक गोहाना हल्का आदि प्रमुख थे। सभी धर्मों तथा जातियों तथा पार्टियों के नेताओं द्वारा श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई जो इस सम्मेलन की एक विशेषता थी।

गुरुकुल भैंसवाल के ६०वें वार्षिक उत्सव पर

स्वामी सुमेधानन्द का प्रवचन

आदर के योग्य आर्य सज्जनों और माताओं ऋग्वेद के 40वें अध्याय में सब से पहला मन्त्र है :—

ओं ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्चित् जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध कस्य स्विद धनम् ।।

इस जगत के अन्दर जो कुछ भी मनुष्य, पशु-पक्षी, कीट इत्यादि और इनके अतिरिक्त फल फूल अन्न अनेकों प्रकार का वैभव है उन सबका स्वामी तो अवश्यमेव ईश्वर ही है। इस सब ईश्वर की देन का सदुपयोग करना प्रत्येक सत्य पुरुषार्थ करने वाले पुरुष का स्वत्त्व स्वतः प्राप्त है। स्वयम् स्वः आवश्यकता के लिए और स्वः परिवार की आवश्यकता के लिए उचित उपभोग करके मानव समाज के यथोचित उपयोग के लिए भी अर्पण करने के लिए त्याग करना चाहिए ! समय आने पर सब मनुष्य प्राणधारी एक-एक करके संसार सागर से अन्त में विदा ही होते जाते हैं। अतः जिस धन सम्पत्ति के वे सर्वेसर्वा स्वामी समझे जाते हैं वह सब यहीं पर रह जाता है यदि अन्तिम समय से पूर्व ही यह सोच कर कि यह सब धन वैभव ईश्वर का है और ईश्वर के महान व पवित्र कार्यों के लिए ईश्वर के अमृत पुत्रों के हित के लिए इसके सदुउपयोग हो जाए तो यह वास्तव में श्रेयस्कर ही है। मैं भी यही विचार करता हूँ कि प्रभु ने मेरे निजी व्यय के लिए जो भी सुव्यवस्था सुविधा से कर दी है उसमें से उचित भाग ईश्वर के महान् व परम पवित्र कार्य के लिए सद्भावना, श्रद्धा व प्रेम से अर्पण करना अत्यन्त गौरव और सुखमय यश का कारण है।

मैं मनुष्य मात्र के लिए लौकिक और पारलौकिक यथार्थ ज्ञान का प्रचार प्रसार करना ईश्वर का महान कार्य और शिक्षित मनुष्यों का पवित्र कर्त्तव्य समझता हूँ। स्वामी विवेकानन्द ने यथार्थ कहा है कि :—

Education is the manifestation of knowledge already in man. Religion is the manifestation of diversity already in man.

शिक्षा उस दिव्य ज्ञान की अभिव्यक्ति करने में सहायता देती है, जो कि मानव

के अन्दर पहले से ही बीज रूप में व्यापक है। धर्म, ईश्वरत्व और दिव्यता की अभिव्यक्ति है जो कि पहले से ही प्रत्येक मानव के अन्दर उज्जवल सुललित दिव्य प्रकाश के साथ व्यापक है।

महर्षि दयानन्द जी ने अत्यन्त सरल और सुन्दर शब्दों में क्या ही उत्तम और हृदय-स्पर्शी शिक्षा के सम्बन्ध में विचार व्यक्त किए हैं—"शिक्षा अज्ञान रूपी अन्धकार का सर्वनाश करके ज्ञान रूपी दिव्य प्रकाश से मनुष्य के मस्तिष्क को सुप्रकाशित कर देती है। मानव को स्व: जाति, स्वराष्ट्र का सुयोग्य व शक्तिशाली उपयोगी अंग बना देती है। आपने मानव इतिहास में भी पढ़ा होगा, सुना भी होगा और इस समय भी स्पष्ट देख रहे होंगे कि जितने भो धार्मिक आध्यात्मिक तत्ववेत्ता, सत्यज्ञानी सन्त युगपरिबर्तक, धर्म प्रचारक हुए। जितने भी सच्चे देशभक्त राजनैतिक नेता हुए, जितने भी उच्च साहित्य-कार कवि, सुयोग्य लेखक, पत्रकार, दार्शनिक, वैज्ञानिक, आविष्कारिक हुए वे सब सुशिक्षित, सुयोग्य विद्या और ज्ञान धन से सुभूषित थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी से प्राय: जिज्ञासु लोग पूछा करते थे कि लाखों विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों के विद्यमान होते हुए भी आप किस उद्देश्य के लिए गुरुकुल की स्थापना कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि—"महर्षि दयानन्द जी कहते थे कि हम अपने ही राष्ट्र में विदेशी, मुसलमानी संस्कृति, सभ्यता, भाषा के विवश गुलाम बना दिये गये हैं। मैं चाहता हूँ कि आर्यवर्त्त के निवासी आर्यभाषा, आर्य संस्कृति, आर्य सभ्यता और वैदिक धर्म के उज्जवल दिव्य प्रकाश में विद्या व सुशिक्षा प्राप्त करें। इस उद्देश्य के लिए उन्होंने सस्कृत विद्यालय भी स्थापित किये। मैं तो महर्षि दयानन्द जी का शिष्य हूँ और इसलिए उनकी इस महान इच्छानुसार गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना कर रहा हूँ।

मैं जीवन के प्रत्येक कार्य में सुयोग्य, शक्तिशाली, विद्वान् और सदाचारी स्नातक भेजना चाहता हूँ। मैं राष्ट्र में सर्वश्रेष्ठ, सर्व उत्तम विद्वान् और सच्चरित्र स्नातक भेजना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि गुरुकुल के स्नातक उपयोगी और सुयोग्य नागरिक बनें। यदि आपको गुरुकुल कांगड़ी या किसी अन्य गुरुकुल के या अपने ही गुरुकुल (भैंसवाल) के स्नातक जीवन के विभिन्न कार्यक्षेत्रों में मिले हों तो आपको सम्भवत: उन के कार्य-व्यवहार तथा चरित्र का अध्ययन करके प्रसन्नता और सन्तोष हुआ होगा। यदि वास्तव में हुआ हो तो आपने अनुभव किया होगा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का और भक्त फूल सिंह का गुरुकुल की स्थापना करने का मौलिक उद्देश्य वास्तव मे पूरा हो रहा है। जब अन्य सरकारी और गैर सरकारी शिक्षिण संस्थाएं राष्ट्र और समाज के आवश्यक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सुशिक्षित सुयोग्य युवक युवतियों के जीवन का निर्माण कर सकती तो, क्योंकि गुरुकुलों अन्य सामान्य शिक्षा के साथ-साथ वैदिक धर्म, वैदिक संस्कृति सभ्यता की भी शिक्षा दी जाती है। इसलिए यह भी सुयोग्य, सुशिक्षित कार्य-कर्त्ताओं के साथ-साथ धर्म प्रचारकों, समाज और राष्ट्र सेवकों का निर्माण सफलता पूर्वक कर सकते हैं। यह गुरुकुल कष्ट-साध्य, तपस्या, पुरुषार्थ और आदर्श त्याग से

चलाये जा रहे हैं। इनमें कार्यकर्त्ता भी धर्म, संस्कृति, समाज, राष्ट्र की सेवा के सद्भावों से ओत-प्रोत होते हैं। वे स्वयं भी त्याग करते हैं और जनता-जनार्दन में सुयोग्य और सज्जन व्यक्तियों को त्याग तपस्या के लिए प्रेरणा करते रहते हैं।

प्राय: गुरुकुलीय संस्थाएं दान पर ही आश्रित होती हैं। शिक्षा प्रेमी, धर्म-प्रेमी, समाजसेवी सज्जनों को इस प्रकार की संस्थाओं में अवश्य दान देना चाहिए। मैं इस प्यारे गुरुकुल में सन् 1962 में भ्रमण करते हुए एक यात्री के रूप में आया था। अब सन् 1979 चल रहा है। मैं अभी तक आपके प्रिय गुरुकुल में निवास करता चला आया हूं। मैंने कुलवासियों के साथ पढ़ाने का कार्य भी किया है, खाया पिया भी है और इसी तरह से सुख और शान्ति से समय बिताता रहा हूँ। यदि मैंने गुरुकुल की सेवा की है तो कुलवासियों ने मेरी बहुत ज्यादा प्यार से सेवा की है। तो सच बात यह है कि मैं वास्तव में आप सब का समान रूप से ऋणी हूँ और आपका सच्चे हृदय से धन्यवाद करता हूं। यह गुरुकुल भी हमारी पवित्र मातृभूमि भारतवर्ष में एक पवित्र कुल माता ही है जिसने सुयोग्य सदाचारी सज्जन और कर्मयोगी स्नातकों को तैयार किया। कुलमाता का ऋण तो कोई चुका ही नहीं सकता। परन्तु कुलमाता की शिक्षा सम्बन्धी पवित्र सेवा के लिए अपने सुयोग्य मित्र श्री विष्णुमित्र विद्याप्रभाकर, विद्यामार्तण्ड, आचार्य धर्मभानु जी के कर-कमलों में यह अल्प राशि (1100/- रु०) सहर्ष स्व:इच्छा से अर्पण करता हूँ।

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निराभया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा भूत कश्चन् दु:खभाग ।।

❀ बधाई सन्देश ❀

पिछले वर्ष से श्री योगेशचन्द्र जी ने बड़ी सूझ-बूझ से "समाज सन्देश" का संचालन एवम् सम्पादन किया है। मैं समाज सन्देश परिवार की ओर से उन्हें बधाई सम्प्रेषित करता हूँ।

'समाज-सन्देश' का सम्पादन कार्य अब श्री देवराज जी विद्यालंकार, गुरुकुल भैंसवाल कलां, जि० सोनीपत (हरियाणा) करेंगे। पाठकों से अनुरोध किया जाता है कि 'समाज-सन्देश' से सम्बन्धित पत्र व्यवहार उपरोक्त पते पर ही करें।

—सम्पादक

अमर शहीद राव तुला राम

★

वीरों का जब जिक्र हुआ, एक नाम याद था आग्या।
सुनकर नाम उस राव तुला का, दुश्मन था घबराग्या ।।

जन्म लिया सन् 1825 में राव तुला ने,
पूर्णसिंह ने खुशी मनाई चांद खिला था घर में।
14 वर्ष का पुत्र छोड़ कर, पूर्ण गए स्वर्ग में,
राव वीर काबिल हो मेरा, माता इसी फिक्र में।
दयानन्द स्वामी का सत्संग राव तुला फिर पाग्या ।।

सन् 1857 में क्रान्ति एक जागी थी,
उसी समय में रानी झांसी वीर गति पागी थी।
जगह-जगह पर युद्ध हुए थे युवा रक्त खखोला था,
निकल पड़ा कुर्बानी देने उन वीरों का टोला था।
मित्र मिल्या तात्यां टोपे सा भाग देश का जाग्या ।।

नसीब पुर के मैदानों में, दुश्मन ठहर सके ना,
क्रान्ति वीर तो भूखे रह कर भी थे झुके कभी ना।
उसी समय कुछ अपने राजा धोखा करगे भारी,
नष्ट हो गई थी उमीदें राव तुला की सारी।
परदेशों जाकरके फिर फौज बणावन लाग्या ।।

दुश्मन से बदला लेने नस-नस में उठी तरंग थी,
करली सेना त्यार वीर ने मन में जगी उमंग थी।
बीमार हो गये राव तुला, काबुल में था जब डेरा,
तेईस, नौ, अठारह सो छयासी मृत्यु नै आ घेरा।
'देव', देश को देख सका ना अन्त समय पछताग्या ।।

—देवराज 'दीवान'

❀ शोक समाचार ❀

दिनाँक १६ फरवरी, १६७६ को आचार्य हरिश्चन्द्र जी सम्पादक 'समाज-सन्देश' के सुपुत्र श्री सतीश कुमार की मोटर साइकिल दुर्घटना में मृत्यु हो गई। सारा समाज-सन्देश परिवार इस असह्य दुःख के कारण हार्दिक सम्वेदना प्रकट करता है तथा परमात्मा से प्रार्थना करता है कि मृतात्मा को सद्‌गति प्रदान करे और उनके सम्बन्धियों तथा परिवार को यह आघात सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

—प्रबन्धक

❀ शोक समाचार ❀

गुरुकुल भैंसवाल के सुयोग्य अध्यापक श्री रतन सिंह की माता जी का 10 जनवरी, 1979 को देहान्त हो गया। समाज-सन्देश परिवार इस दुःखद समाचार के प्रति गहरी सम्वेदना व्यक्त करता है तथा ईश्वर से प्रार्थना करता है कि मृतात्मा को शान्ति व सद्‌गति प्रदान करे तथा परिवार को यह दुःख सहन करने का सामर्थ्य प्रदान करें।

—सम्पादक

दिल्ली, पंजाब तथा हरियाणा के आर्यसमाजी नेताओं से—

—यशः पाल सिंह 'विद्यालंकार'
मतलौढ़ा, हिसार

पंजाब के आर्यसमाज में पिछली सदी से झगड़े चले आ रहे हैं। प्रारम्भ में वे गुरुकुल सैक्शन और कालिज सैक्शन के नाम पर शुरु हुए। उस समय गुरुकुल सैक्शन के नेता स्वामी श्रद्धानन्द थे और कालिज ग्रुप के महात्मा हंसराज जी। दोनों महात्माओं के समय पंजाब के आर्य समाज ने सम्पूर्ण राष्ट्र का नेतृत्व किया। अपने त्याग तपस्या और बलिदान से राष्ट्रीय जीवन में नवप्राण फूंके। हजारों, लाखों युवकों को आर्य-समाज के रंग में रंग दिया। राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत हजारों आर्य युवक राष्ट्र को समर्पित हो गए, जिन में शहीद-ए-आजम सरदार भगतसिंह और श्री रामप्रसाद बिस्मिल आदि प्रमुख थे। उस शती के दूसरे दशक से पांचवें दशक तक उपरोक्त दोनों क्षेत्रों के नेता क्रमशः महाशय कृष्ण और श्री खुशहालचन्द खुरशन्द थे। जो बाद में महात्मा आनन्द स्वामी कहलाये। महाशय कृष्ण ने उर्दू प्रताप लाहौर से निकाला। उनकी लेखनी की धाक ब्रिटिश शासक मानते थे। सर सिकन्दर और चौ० छोटू राम की हकूमत भी तथा कांग्रेस सरकार भी इनकी धाक मानती थी। महाशय खुशहाल चन्द ने लाहौर से मिलाप निकाला और बाद में उनके पुत्रों ने हिन्दी मिलाप। और दोनों ही परिवारों में आज भी स्वनामधन्य पत्रकार चले आ रहे हैं। महाशय कृष्ण की वंश परम्परा में अखिल भारतीय समाचार पत्र सम्पादक सम्मेलन के अध्यक्ष वीर प्रताप के संचालक श्री वीरेन्द्र जी और दैनिक वीर अर्जुन के संचालक सम्पादक श्री नरेन्द्र जी हैं। महात्मा आनन्द स्वामी के पुत्र विख्यात पत्रकार श्री रणवीर दिल्ली से उर्दू मिलाप निकाल रहे हैं और पंजाब के भूतपूर्व आबकारी व कराधान मन्त्री श्री यश जालन्धर से हिन्दी मिलाप।

भारत विभाजन के पश्चात् डी० ए० वी० संस्थाओं और गुरुकुलों में सामञ्जस्य स्थापित हो गया परन्तु आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब में जाट और पंजाबी का नया झगड़ा शुरु हुआ। सन् 1956 से 1973 तक 17 साल आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की बागडोर श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती, श्री रघुवीर सिंह शास्त्री, श्री स्वामी ओमानन्द और प्रो० शेरसिंह के हाथ में रही। श्री रामनाथ भल्ला इस गुट के पैरोकार थे। सन् 1973 में श्री

रामगोपाल शाल वाले और श्री वीरेन्द्र स्वामी ओमानन्द के शिष्य श्री इन्द्रवेश और श्री अग्निवेश को साथ मिला कर पानीपत के मैदान में स्वामी ओमानन्द, प्रो० शेर सिंह, चौ० माड़ू सिंह, आचार्य विष्नुमित्र, कपिल देव शास्त्री आदि द्वारा समर्पित उम्मीदवारों (एक बार श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती और दूसरी बार स्वामी रामेश्वरानन्द) को पराजित किया। जब स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश, श्री वीरेन्द्र और रामगोपल शाल वाले से मिलकर न चल सके तब सितम्बर 1975 में पंजाब सभा तीन टुकड़ों में बंट गई। पंजाब, हरियाणा और दिल्ली की नई प्रतिनिधि सभाएं बन गई। स्वामी इन्द्रवेश और अग्निवेश ने इस विभाजन को स्वीकार नहीं किया और पहले उन्होंने श्री बंशीलाल व श्री बनारसीदास गुप्ता से मिल कर अपनी शक्ति कायम रखी तथा अब जनता पार्टी के साथ मिलकर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय आदि संस्थाओं में अपना वर्चस्व कायम किये हुए हैं। हमने गुरुकुल कांगड़ी में शिक्षा प्राप्त की है, हमारे रक्त के कण-कण में उस संस्था के प्रति अगाध स्नेह है। उस संस्था के यश में हमारा यश और अपयश में हमारा अपयश है। सभा के विभाजन के बाद दिल्ली, पंजाब और हरियाणा की प्रतिनिधि सभाओं का काम ठीक से चलने लगा था, परन्तु हरियाणा के आर्यसमाज का दुर्भाग्य कहिए कि जून 1977 में स्वामी रामेश्वरानन्द को आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का सर्वसम्मत प्रधान चुना गया। परन्तु श्री रामेश्वरानन्द जी नये अधिकारियों और अन्तरंग के चयन में वह सन्तुलन कायम न रख सके जो इस सभा के पहले प्रधान लाला दिलीप सिंह जी कायम कर गए थे। इस सभा में भी अब दो ग्रुप हो गए हैं। जो कि झज्जर और भैंसवाल के नाम से विख्यात हैं। झज्जर ग्रुप के नेता हैं प्रो० शेर सिंह, रघुवीर सिंह शास्त्री, स्वामी ओमानन्द, वेदव्रत शास्त्री, महाशय भरत सिंह आदि। इस ग्रुप के श्री सिद्धान्ती ने शनैः-शनैः सभी सार्वजनिक कार्यों से उपराम ग्रहण कर लिया है और उनकी जगह की पूर्ति श्री रामेश्वरानन्द ने कर दी है।

भैंसवाल ग्रुप के नेता हैं—चौ० माड़ू सिंह, आचार्य विष्णुमित्र, कपिलदेव शास्त्री, महेश्वर सिंह मलिक, ब्र० कर्मपाल आदि। महाशय भरत सिंह चौ० साहब को छोड़कर झज्जर ग्रुप से जा मिले हैं। स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश, स्वामी आदित्यवेश, शक्तिवेश आदि का तीसरा ग्रुप अलग से है। श्री वीरेन्द्र ने श्री पृथ्वी सिंह आजाद से मिल कर पंजाब की स्थिति पर प्रायः काबू पा लिया है। परन्तु कांगड़ी के मामले को लेकर स्वामी इन्द्रवेश और स्वामी अग्निवेश से उनका झगड़ा चल रहा है। पं० मुरारी लाल और रोपड़ के स्वामी वेदानन्द पंजाब में इन्द्रवेश, अग्निवेश का साथ देते हैं। अब जबकि स्वामी श्रद्धानन्द की पौत्री बहन पुष्पा और सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शाल वाले के अनशन के बाद यह सारा मामला प्रधान मन्त्री ने प्रशासक नियुक्त करके निपटा सा दिया है परन्तु मामला अभी भी गम्भीर है। आर्यसमाज पतन के कगार पर खड़ा है और यहां तक इसे लाने का उत्तरदायित्व प्रो० शेर सिंह, ओमानन्द व महाशय भरत सिंह को जाता है। आर्यसमाज को सिर्फ मात्र अब एक धक्के की आवश्यकता है और वह धक्का भी स्वामी ओमानन्द और महाशय भरत सिंह, देने के

लिए तत्पर बैठे हैं। तत्पश्चात् आर्य समाज को पुनर्जन्म भावी पीढ़ी को देना होगा। आर्यनेताओं की चन्द बुराइयां हैं जो मैं नीचे दे रहा हूँ। इन्हीं के कारण स्वामी ओमानन्द जैसे साधु सरकारी बाबा बने फिरते हैं और दम भरते हैं कि हम योगी हैं।

महाशय भरत सिंह : प्रतिज्ञा कहाँ गई ?

हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री हैं जनाब भरत सिंह ! मगर यह मन्त्री पद इनकी पुरानी चापलूसी का फल है। प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित 'सर्वहितकारी' साप्ताहिक में मैंने पढ़ा था कि महाशय भरत सिंह ने कहा है कि मैं पदलोलुप नहीं हूँ। भविष्य में सभा में किसी भी पद पर आरूढ़ नहीं होऊंगा, मेरा मकसद तो आर्यसमाज का प्रचार तथा महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार करना है। यह सब मैं सर्वसाधारण के साथ मिलकर करूंगा। मगर जब चापलूसी का वक्त आया तो महाशय जी पहले व्यक्ति निकले जिन्होंने चौ० माड़ू सिंह के विश्वास को ठोकर मारकर स्वामी ओमानन्द के चरणों में मस्तक झुका दिया। उस समय कहां गई थी वह प्रतिज्ञा जिसके आधार पर निरीह आर्य समाजी जनता को भुलावे में डाल कर फुसलाया जा रहा था। जब समाज का भविष्य इस प्रकार के बेपैंदी के लोटों (पात्र) के हाथ में दे दिया गया है वह समाज निश्चय ही पतनोमुख है। समय की पुकार है कि इस प्रकार के दब्बू व ढोंगी लोगों को समाज से बहिष्कृत किया जाना चाहिए। आर्य समाज के पावन इतिहास पर लगे इस कलंक पङ्क को जब तक सुधार की मार्जनी से परिमार्जित नहीं किया जायेगा तब तक मुझे कहने में कोई संशय नहीं कि आर्य समाज अपने चरम-लक्ष्य तक पहुँचने में अक्षम रहेगा। ये वही महाषय जी हैं जो चुनाव में बहादुरगढ़ के हल्के से कांग्रेस के अध्यक्ष थे परन्तु परिणाम आने पर ये जनता पार्टी की जीत पर शेर सिंह के समर्थन में ताली पीटते दिखाई दिए। समझ में नहीं आता ये किस पार्टी से सम्बद्ध हैं।

स्वामी ओमानन्द : स्वार्थपरता की चरम सीमा—

कहावत प्रसिद्ध है कि "अन्धा बांटे रेवड़ी अपनों-अपनों को दे"। यही बात स्वामी ओमानन्द पर चरितार्थ होती है। स्वार्थपरता ही विनाश का मूल है। एक समय था जब कि चौ० माड़ू सिंह सत्तासीन थे, उस समय स्वामी ओमानन्द जी अपनी औकात को भूल कर चौ० साहब से लिपटे रहते थे परन्तु चौ० साहब के सत्ताच्युत होते ही स्वामी ओमानन्द ने भी अपना असली चिरपरिचित रूप दिखा दिया और अपनी चमगीदड़ वाली नीति स्पष्ट करके चौ० माड़ू सिंह को अवहेलित किया। इन्हें क्या चाहिए ? इनके लिए तो पूजाई वही है जो इन्हें सरकारी पैसे से राजकीय मोडा बनाकर विदेश भेज सके। यही कारण है कि स्वामी ओमानन्द प्रो० शेर सिंह के हाथों कठपुतली बन कर रह गये हैं। स्वामी रामेश्वरानन्द जी नाम ख्याति के भूखे हैं यही जानकर उन्हें प्रधान बनाकर सम्पूर्ण अधिकार स्वामी ओमानन्द ने स्वयं संभाल लिये हैं। अभिप्रायः यह है कि स्वामी ओमानन्द आर्यसमाजी जनता के पैसों का दुरुपयोग अपने स्वार्थ के लिए करते हैं।

द्वेष इतना कि रिवाड़ी में होने वाली "गौशाला शताब्दी" समारोह की सूचना भी गुरुकुल भैंसवाल में नहीं भेजी गई। स्वामी ओमानन्द जैसा महाक्रोधी, द्वेषी तथा स्वकीय परकीय का समर्थक और स्वार्थी साधु शायद ही ढूंढ़े से मिले। इस प्रकार राग, द्वेषयुक्त को साधु कहलाने का क्या अधिकार है ? ये लोग दयानन्द मठ की जमीन का उपयोग अपने विश्रामगृह के रूप में करते हैं चाहे वहां पर गए हुए ग्रामीण आर्यसमाजी अतिथि को रात काटने की जगह भी न मिले।

प्रो० शेर सिंह : किसान विरोधी नितियां :

आर्य समाज जैसी संस्थाओं ने जहां अनेकों लोगों को पवित्र बिचार देकर साधु बनाया है वहां राजनीति में प्रवेश करने का सुयोग भी प्रदान किया है। प्रो० शेर सिंह को राजनीति में प्रवेश आर्यसमाज की बदौलत मिला, मगर प्रो० शेर सिंह ने आर्य समाज को ही मिटा देने वाली नीतियां सदा अपनाई। ओमानन्द की स्वार्थ लिप्सा की पूर्ति ये अवश्य करते रहे मगर उन्हीं द्वारा अपनाई गई चमगीदड़ वाली नीति न छोड़ सके। कांग्रेस से जनता, जनता से सी० एफ० डी० और सी० एफ० डी० से किसान विरोध का बाजा भी इन्होंने बजाया। जिन किसानों के वरद-हस्त-प्रदत्त वोटों से ये लोग राजभोग योग्य हुए उन्हीं की आवाज पर इन्होंने कुठाराघात किया। यही कारण है प्रो० साहब का हुक्का पानी बन्द करके 80 गांवों की पंचायत द्वारा इन्हें बहिष्कृत कर दिया गया है। स्वार्थ का अन्धा चश्मा इनके पतन के लिए उत्तरदायो होगा। कहते हैं "काठ की हांडी एक ही बार चूल्हे पर चढ़ती है" मगर यहां तो कई बार हो चुकी है लेकिन जो जितना होना था हो चुका अब किसान प्रो० साहब की स्वार्थी नीतियों को भली भांति समझ चुके हैं। अब उन्हें फुसलाना इतना आसान नहीं जितना कि पार्टी की फेर बदल।

उपरोक्त बातों में कितनी सत्यता है ? इससे सम्पूर्ण समाज परिचित है तब क्या इस स्थिति में हरियाणा और पंजाब के यह आर्य नेता आपस में विचार करके किसी ऐसे निश्चय पर नहीं पहुँच सकते जिससे कि इनका आपसी कलह समाप्त हो जाये और आर्यसमाज के सुदिन लौट आएं। जिस समय तक स्वामी ओमानन्द ने सन्यास नहीं लिया था और जब वे आचार्य भगवान देव के नाम से पहचाने जाते थे तब हरियाणा, पंजाब और दिल्ली के आर्य जगत् में उन्हें जो प्रतिष्ठिा प्राप्त थी वह आज समाप्त प्राय हो गई है और जिस तरह भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्रीमति इन्दिरा गान्धी अपनी छवि को बिगाड़ कर मात्र एक गुट की नेता रह गई हैं वही दशा स्वामी ओमानन्द की है। वे भी आज आर्य जगत् में एक छोटे से गुट के नेता समझे जाते हैं।

मेरे जैसा युवक क्या उनसे प्रार्थना कर सकता है कि वे अपने अहंकार और क्रोध को छोड़ कर निष्कलुष भाव से इन आर्यसमाज के दस बीस व्यक्तियों को एक स्थान पर बैठा कर इनमें आपस में समझोता कराने की कोशिश करेंगे। जिससे कि देशवासियों

के सम्मुख आर्यसमाज की वही पुरानी प्रतिष्ठा स्थापित हो सके। यदि ऐसा नहीं होता है तो हम समझेंगे कि दूसरों को उपदेश देने वाले ये आर्यनेता राग, द्वेष, ईर्ष्या, मात्सर्य और मोह से विमुक्त नहीं हैं अपितु गृहस्थियों से भी बदतर अवस्था में मानापमान के चक्कर में फंसे हुए हैं। इससे समाज की जो हानि हो रही है उसकी ये नेता कल्पना भी नहीं कर सकते। प्रभु के नाम पर इनसे प्रार्थना है कि भावी पीढ़ियों के मार्गदर्शन के लिए ये सब लोग मिल कर काम करें। क्या मैं आशा करूं कि कोई सन्यासी इस सम्बन्ध में पहल करेगा। अभी हमारा विश्वास उनके प्रति बना हुआ है।

पहेलियां

—ब्र० रामपाल सिंह 'मलिक'

तीन अक्षर का मेरा नाम,
उल्टा सीधा एक समान,
है किसी वृक्ष का नाम ॥ १ ॥

तीन अक्षर का मेरा नाम,
उल्टा सीधा एक समान,
है किसी वस्तु का नाम ॥ २ ॥

तीन अक्षर का मेरा नाम,
उल्टा सीधा एक समान,
है किसी व्यक्ति का नाम ॥ ३ ॥

तीन अक्षर का मेरा नाम,
उल्टा सीधा एक समान,
है किसी घृत का नाम ॥ ४ ॥

उत्तरः— 1- सरस, 2- चमच, 3- सतीश, डालडा।

एक व्यंग्य

आर्य समाज के ये 'जीवित' नेता —मुझे गर्व है उन पर !

—धीरेन्द्र विद्यालंकार'
हिन्दी विभाग (ई०)
दिल्ली वि० वि० दिल्ली–7

हाल ही में एक समाचार ने समाचार पत्रों का काफी स्थान ले लिया है और वह समाचार है गोहत्या का विरोध। यह भारत का दुर्भाग्य ही है कि उसके आर्थिक विकास की रीढ़ की हड्डी गोवंश को सुनियोजित ढंग से समाप्त किया जा रहा है। संसद में इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर अनेक प्रश्न उठे, आचार्य विनोबा जी जैसे सन्त पुरुष को अनशन करने का संकल्प लेना पड़ा। किन्तु आर्य समाज कहां रह गया ?

वैसे, मानना पड़ेगा कि गोवध के खिलाफ सबसे पहले आवाज आर्यसमाज ने ही उठाई थी। आर्य समाज के संस्थापक गुरुवर दयानन्द ने अंग्रेजों को ललकार कर इस जघन्य पाप को बन्द कराने को कह दिया था, जनता से उनकी भाषा में सही समर्थन की अपील की थी तथा इस सन्दर्भ में अपने दायित्व को अपने अनुयायियों पर डालते हुए पक्षीय तर्कों की शृंखला 'गोकरुणानिधि' में एकत्रित कर दी थी। अमर हुतात्मा फूलसिंह ने अपनी जान तक इस विधर्मी कुकृत्य को बन्द करा देने के लिए लगा दी थी।

1967 में गोहत्या विरोधी आन्दोल तेज हुआ था, काफी लोगों ने गिरफ्तारियां दी थीं, कुर्बानियां भी कम नहीं थीं। मुझे याद है बहुत ने निर्मम मार भी खाई थी। लेकिन उस समय आर्य समाज ही इस आन्दोलन का नेता था। छोटे-छोटे बच्चे घर से निकल पड़े थे, शिक्षा संस्थाओं में उन्होंने सत्याग्रह में भाग लेने को अपने आचार्यजन को अनुमति देने को विवश कर दिया था। मैं स्वयं उस समय ग्यारह वर्ष का था और जेल जाने को बहुत उत्सुक हो रहा था, हमें लाठियों का डर दिया गया लेकिन तब नेताओं में ही उत्साह था तो हमें कौनसा डर परेशान करता—सवेरे-सवेरे पैदल ही गुरुकुल सिंहपुरा से निकल पड़े थे पुलिस की कस्टडी का स्वागत करने—जेल भर कर सरकार को इस मांग को पूरा करने के लिए विवश करने। मुझे यह भी याद है कि उन दिनों सांकेतिक उपवास में भी हमने बड़े उत्साह से भाग लिया था, और वह दिन, जब जेल

मजिस्ट्रेट ने हम पर अयाचित 'दया' दिखा कर रिहा कर दिया था, हम सब के लिए कितनी उदासी का दिन था, अचानक हमें एक ख्याल आया था, और हम उस क्षेत्र में प्रवेश कर रहे थे जहां धारा 144 लागू थी तथा वहां भी नारे लगा कर हमने फिर गिरफ्तारियां दी थीं। मुझे स्मरण है कि गुरुकुल भैंसवाल के कुछ छात्र तो बिना पूछे ही जेल जाने को भाग निकले थे। सर्वत्र जेल जाने का एक नशा था और आर्य समाज के मस्त दीवाने लाठी, गोलियों की परवाह किए बिना दिल्ली की ओर कूच कर रहे थे, किन्तु उसी वक्त ..... ।

उसी वक्त आर्य समाज के ही एक नेता ने हमें दगा दे दिया; महात्माओं के आमरण व्रत को निष्फल कर दिया, बच्चों के उत्साह पर गाज गिरा दी, जनता की भावनाओं के साथ क्रूर खेल खेल कर स्वयं सरकार में आगे बढ़ गये। केन्द्र में जहां गृहमन्त्री पद पर श्री नन्दा इस आन्दोलन का समर्थन देते रहे वहां केन्द्र में अपनी साख जमाने को इन नेताओं ने इस आन्दोलन को वापिस लेने की घोषणा कर दी। लेकिन जनता ने इन्हें तब भी नहीं पहचाना। मुझे याद है कि जब कभी सत्याग्रहीजन पर लाठी-चार्ज हुआ ये नेता जीप पर बैठ कर अन्यत्र चले गए, क्योंकि इनमें सामर्थ्य था और जनता पर लाठीचार्ज होने का तमाशा देखा। मैं नहीं कहता हूँ, लेकिन इन आरोपों में कुछ सच्चाई है कि इन्हीं नेताओं ने केन्द्र में 'कुछ' हासिल करमे के लिए इन्दिरा जी के लिए 'परेशानी' बनी इस समस्या को उठा लिया।

और आज फिर गोहत्या के विरोध में उठा स्वर तीव्र हो रहा है—संसद में भी और संसद के बाहर भी। लेकिन किन की ओर से ? आर्य समाज की ओर से ? नहीं ! सारी जनता इस पाप का विरोध करने में तत्पर है किन्तु वे क्या कर रहे हैं, जिन्होंने सन् 1967 में भी आन्दोलन का नेतृत्व किया था। जनजागृति देने में तत्पर दयानन्द सरस्वती प्रशासन के द्वारा दिए गए 'उत्कोच' को पाप के रूप में देखकर अपनी आवाज को निरन्तर 'तेज' ही प्रदान करते रहे। यह वह काल था, जब अंग्रेज प्रशासन भारत पर लदा हुआ था, जिसका विरोध करते हुए लोग घबराते थे, कांग्रेस भी खुशामदी स्वर में उनसे प्रार्थना करती थी। किन्तु दयानन्द ने आवाज में 'कड़क' भरी क्योंकि वे सन्यासी थे। सन्यासी को प्रशासन या वित्त की कोई परवाह नहीं होती है—यह उद्घोष उन्होंने दिया था। किन्तु बड़ी-बड़ी घोषणाएं करके, ढिढौरा पीट कर 'सन्यास' की दीक्षा लेने वाले वे मॉडर्न सन्यासी कहां चले गये ? लगता है, उन्हें गद्दी मिल गई है, लेकिन यह अवश्य ही उसके सामने 'क्षुद्र' है, जो स्वामी दयानन्द को पेश की गई थी।

नितान्त आश्चर्य की बात है कि सत्ता में गया एक भी व्यक्ति, जो स्वयं को आर्यसमाज का कर्णधार मानता है, इस आन्दोलन के पक्ष में आवाज नहीं उठा रहा है। संसद में डा० रामजी सिंह की आवाज गूंजती है किन्तु उनका साथी···वह भी आर्यसमाजी नेता नहीं है। उनको जिताने में अपना जी जान तक समर्पित कर देने वाले, द्वार-द्वार

'वोट' की भीख मांगने वाले भी आज इस प्रश्न पर दर-दर जाने की बात तो दूर घर से निकल कर बात नहीं करते। किन्तु जहां कहीं अधिकार लेने का, प्रतिष्ठा और वित्तेष्णा पूरी करने का मौका ढूंढ़ने में ये चूकते नहीं हैं। जी हां, ये वे ही सन्यासी हैं, जिन पर आर्यसमाजें गर्व करती हैं, प्रत्येक बड़े समारोहों पर आमन्त्रित करती हैं— जनता को निर्देशन देने के लिए मंच देती हैं। किन्तु मुझे यह भी याद है, कि 'गोदुग्ध' न मिलने पर ये कर्मक्षेत्र से भाग निकलते हैं। जनता अभी भी इन्हें पहचान नहीं सकी है। इसी लिए तो आप पर जनता को, विशेष कर आर्यसमाज को बहुत गर्व है।

क्या आप जानते हैं ?

—राज सिंह भनवाला
कासेण्डी

संसार में महानतम तथा प्रथम

1- सब से गहरा सागर — प्रशान्त महासागर
2- सबसे बड़ा सागर — प्रशान्त महासागर
3- सर्वोच्च पर्वत शिखर — माउन्ठ एवरेस्ट (19,142 फुट) नैपाल
4- सबसे लम्बी नदी — मिसीसिपी (अमेरिका)
5- सबसे बड़ा गुम्बद — गोल गुम्बद (भारत)
6- सब से ऊंचा डैम — भाखड़ा डैम (740 फुट) भारत
7- सबसे बड़ा संग्रहालय — एलबर्ट संग्रहालय
8- सबले बड़ी लायब्रेरी — नेशनल कीव लायब्रेरी (रूस)
9- सबसे बड़ा महाद्वीप — एशिया
10- सबसे बड़ी दीवार — चीन की दीवार
11- सबसे बड़ा महल — वेटिकन महल (इटली)
12- सबसे बड़ा बैंक — बैंक आफ अमेरिका
13- क्षेत्रफल के हिसाब से सबसे बड़ा देश — सोवियत रूस
14- सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश — चीन
15- सबसे बड़ा पार्क — यैलोस्टोन नेशनल पार्क (अमेरिका)
16- ताजे जल की सबसे बड़ी झील — लेक सुपीरियर (अमेरिका)
17- नमकीन जल की सबसे बड़ी झील — कैस्पियन सागर (रूस)
18- सबसे गहरी झील — बेकाल (13700 फुट) साईबेरिया)
19- सबसे ठण्डा स्थान — वेरकोस्यांक (रूस)
20- सबसे गर्म स्थान — जेकोबाबाद (पाकिस्तान)

भजन

गऊ माता पर पड़ी विपत्ति, भार उठाना होगा।
खुला हुआ है आज जो गोहत्था, बन्द करवाना होगा ।। टेक ।।

गऊ माता हमारी आर्थिक समृद्धि का एक बड़ा आधार है।
रक्षा जो करेगा इसकी उसका बेड़ा पार है।
गोहत्या बन्द करवाने का जगह-जगह प्रचार है।
गऊ माता की रक्षा हित बच्चा-बच्चा मरने को तैयार है।
विनोवा जी ने किया व्रत जो, उसे निभाना होगा।
गऊ माता पर········ ।। १ ।।

गऊ माता के सच्चे भक्तों ने अपना सिर फुड़वाया था।
भक्त फूलसिंह ने संभालके का, गोहत्था तुड़वाया था।
संभालके के मुसलमानों ने भारी शोर मचाया था।
गऊ माता की रक्षा हित आज हमें शीश चढ़ाना होगा।
गऊ माता········ ।। २ ।।

मेरे देश को गऊ माता से, बहुत समय से प्यार रहा।
हजारों वर्ष पहले गऊ का पाली श्री कृष्ण मुरार रहा।
प्यारी भारत मां का दुलारा, लाल बहादुर नहीं रहा।
कौन बचावे आकर गैया कृष्णगोपाल नहीं रहा।
'कृष्ण चन्द्र मौंण' तनै गौ रक्षा हित सर्वस्व लुटाना होगा।
गऊ माता············ ।। ३ ।।

गऊ माता पर पड़ी विपत्ति, भार उठाना होगा।
खुला हुआ है आज जो गोहत्था, बन्द करवाना होगा।

—कृष्ण चन्द्र 'भौंण'
गुरुकुल भैंसवाल

नारी और धूम्रपान :
कटु विडम्बना

—महावीर अधिकारी

●

यों ही 'इण्डियन एक्सप्रैस' के पन्ने उलट रहा था, कि पुरुषों के लिए ईर्ष्याजनक समाचार पढ़ कर चौंक गया। क्या सचमुच नारियां सिगरेट पीयक्कड़ों में पुरुषों से आगे बढ़ने जा रही हैं ? अमेरिकी सर्जन प्रमुख की रिपोर्ट में बताया गया है कि नारियों की मृत्यु में अब 'फेफड़े' के केसों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। यह बात तो दीगर है कि भले सिग्रेट के उत्पादक और विक्रेता हम से सहमत न हों या भारत में वे सिग्रेट के पैकिटों के नीचे, विज्ञापनों के साथ एक कानूनी चेतावनी "कि सिग्रेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद है" उन्हें फूटी आंखों नहीं सुहाता है, फिर भी पिछली मैडिकल रिपोर्ट के अनुसार सिग्रेट ने मनुष्यों के स्वास्थ्य पर बहुत बड़ा आक्रमण किया है—भोले मनुष्य को अपनी झूठी गरिमा के लोभ में फांस कर उसे चूमने पर आमादा हो गया है। यह एक खतरनाक प्रवृत्ति है, जिसका विकास अब नारियों में हो रहा है, कितने अफसोस की बात है।

थोड़ा पीछे हट कर देखें तो इस विरोधाभास को निगलना पड़ेगा कि एक ओर मानव की आयु में इस शती में काफी वृद्धि हुई है और विशेष कर औरतों की आयु में तो पिछली शती की अपेक्षा पांच वर्ष की वृद्धि हुई है किन्तु इसके साथ ही साथ फेफड़ों की बीमारी, गुर्दे की खराबी या कैन्सर के प्रकोप में भी लगातार बढ़ौतरी हो रही है, दूसरे शब्दों में मनुष्य द्वारा मृत्यु पर विजय पाने की आकांक्षा के मार्ग यह कलमुंही सिग्रेट रस्ते में आ पहुँची है। जैसे ही इस शती ने इधर मुंह फेरा है, लगता है, साथ ही साथ नारी पर उक्त रोगों ने अपना प्रकोप करना तीव्र कर दिया है।

सन् 1900 के पश्चात् से सिग्रेट की बिक्री में काफी तेजो आई है। किन्तु उस समय सिग्रेट पीने की आदत का नारी क्षेत्र में विस्तार काफी धीमी गति से हुआ था। 1930 तक आते-आते सिर्फ 2% नारियां इस आदत की शिकार थीं जबकि कुल पुरुषों का करीब 60% भाग धूम्रपान का अभ्यस्त था।

सन् 1978 में अमेरिकी स्वास्थ्य विभाग ने धूम्र पीयक्कड़ों का सर्वे कराया था। स्थिति में काफी परिवर्तन आया हुआ था। लज्जामूर्ति नारी-समष्टि का 30% इस आदत से बुरी तरह ग्रस्त पाया गया। पुरुषों में बुद्धि जागृत पाई गई और करीब 32% पुरुषों ने सिग्रेट पीना छोड़ दिया था, पीयक्कड़ पुरुषों का प्रतिशत गिर कर 38% आ गया था।

जहां तक युवा खून का प्रश्न है 1964 में उनमें इस व्यसन के प्रति उपेक्षा का भाव आने लगा था। हां, पुरुषों में यह भाव अधिक था और 1975 तक आते-आते नवयुवक और युवतियों में धूम्रपीयक्कड़ों की संख्या करीब-करीब बराबर ही हो गई थी। किन्तु आज देखिए न, एक ओर तो बड़ों में सिग्रेटपान की आदत में कमी का रुख आया है तो दूसरी ओर किशोरियों में यह लत बढ़ी है। मैं समझता हूँ कि यह सब पाश्चात्य प्रभाव ही नहीं कहा जा सकेगा। मैंने पाया है कि कुछ किशोरियां स्वयं को असामान्य दिखाने के लिए, मॉडर्न (आधुनिक) बनाने की कोशिश में इस सिग्रेट का सेवन करती हैं, स्पोर्टस् की तरह इस आदत में परिष्कार तक लाती हैं और फिर यह उनके लिए आदत बन जाती है। मैं हरियाणा की तो नहीं कह सकता, किन्तु उसके पड़ौसी राज्य में ऐसी प्रवृत्ति का दुष्परिणाम यह होता है कि छूत का रोग होने से यह एक से दूसरे में शीघ्रता से फैलता है। किन्तु हमें इस विवेचन से ही सन्तोष नहीं करना है। पत्रिकाओं के माध्यम से उसे 'खतरा' बताते हुए उससे मुक्ति पानी है। इन नवदीक्षितों को बताना होगा कि नई मैडिकल रिपोर्ट बताती हैं कि महिलाओं में दिल के दोरे का रोग फैल रहा है। जो महिलाएं 'स्मोक' (धूम्रपान) करती हैं—उनके हृदय के स्पन्दन में बुरा असर होता है। जिससे ब्लडप्रेशर बढ़ जाता है, और वे काल के गाल की ओर ग्रसित होने बढ़ने लगती है।

1978 की 'नारी-हृद्‌गति अवरोध' सम्बन्धी रिपोर्ट में कहा गया कि 50 वर्ष से कम आयु की औरतों में, जिनकी मृत्यु हृदयगति के रुकने से हुई है, 3/4 मृत्यु 'स्मोक' की वजह से ही हुई हैं। चेनस्मोकर्स की आस पास वाली स्थिति के लोग (जो दिन में 35 तक सिग्रेट पी जाते हैं) तो नन-स्मोकर्स से 2000% अधिक (20 गुणा अधिक मरते हैं।

1977 में सात देशों की धूम्राभ्यासी नारियों का सर्वेक्षण हुआ तो पाया गया कि उनमें मेनोपॉज़ रोग प्रायः सिग्रेट का ही परिणाम है। जिस नारी को जितनी ज्यादह सिग्रेटें पीने का अभ्यास है उसे उतनी ही अधिक जल्दी 'मेनोपॉज़' रोग के होने की सम्भावना है। यही नहीं रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि नारी और पुरुष की औसत आयु में भारी अन्तर आ गया है।

नारियों को सचेत हो जाना चाहिए कि धूम्रपान का उनके स्वास्थ्य पर तो दुष्प्रभाव पड़ता ही है साथ ही उनकी सन्तान को भी उनके इस दुर्व्यसन-जनित पाप का भागीदार बनना पड़ता है। क्योंकि धूम्राभ्यासी नारी का बच्चा जन्म से ही कमजोर और कम वजन का होता है।

इस प्रकार नारियां यदि 'स्मोक' करती हैं तो 'स्मोकर' पुरुष से उन्हें ज्यादा घाटा है—उनकी आयु में कमी हो जाती है। विभिन्न रोगों की शिकार उन्हें होना पड़ता है तो यह विडम्बना ही न होगी कि इस घाटे को आमन्त्रित करने में वे पुरुषों से होड़ लगायें।

प्रसिद्ध अविष्कारक तथा अविष्कार

—राजसिंह भनवाला
कासेण्डी

1. बेयर्ड— टेलीविजन (सन् 1925)
2. ब्रेक्वेट— हैलीकॉप्टर (सन् 1909)
3. बुशनेल— पनडुब्बी (सन् 1876)
4. कोल्ट— रिवाल्वर (सन् 1885)
5. क्लेनीर— माइक्रोफोन (सन् 1777)
6. मैसेमर— इस्पात (सन् 1856)
7. वाटर मैन— फाउन्टेन पैन (सन् 1844)
8. राइट ब्रादर्स— वायुयान (सन् 1903)
9. स्विटन— टैंक (सन् 1914)
10. मारकोनी— रेडियो (सन् 1895)
11. जेम्स वाट— स्टीम इञ्जन (सन् 1764)
12. स्टीफैन्सन— रेलवे इञ्जन (सन् 1814)
13. राबर्ट वाइट हे— तारपीडो (सन् 1868)
14. मर्जन थेलर— लाइनोटाइप (सन् 1852)
15. मांट गोल्फर— गुब्बारा (सन् 1883)
16. रांगटन— एक्सरे
17. रोगर बेकन— बारुद
18. मैडम क्यूरी— रेडियम
19. जेनर— चेचक का टीका
20. युक्लियड— ज्यामिति (ज्योमेट्री)

श्री वीरेन्द्र सिंह मन्त्री हरियाणा द्वारा ५००० रु० का दान

30 मार्च को श्री वीरेन्द्रसिंह जी गृह एवं बिजली सिंचाई मन्त्री हरियाणा सरकार पावन कुलभूमि में आधा घण्टा के लिए आये। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को महात्मा भक्त फूलसिंह के पद चिन्हों पर चलने का उपदेश देते हुए उन्होंने कहा कि मैं जब छोटा सा बच्चा था तो महात्मा भक्त फूलसिंह ने हरिजनों का कुआं बनवाने के लिये 21 दिन का अनशन किया था और हमारे गांव में पंचायत करके कुआं बनवाया था। इसलिए गुरुकुल के अन्दर हरिजन विद्यार्थियों की शिक्षा का निःशुल्क प्रबन्ध किया जाना चाहिये। मन्त्री महोदय ने गुरुकुल को 5000 रुपये देने का ऐलान किया। श्री गंगाराम जी विधायक गोहाना और श्री भलेराम जी विधायक बरौदा ने भी संक्षिप्त एवं नपे-तुले शब्दों में महर्षि दयानन्द जी के पदचिन्हों पर चलने का सन्देश दिया।

नया प्रवेश आरम्भ

1 जून से गुरुकुल का नया प्रवेश आरम्भ हो रहा है। तीसरी श्रेणी से नीचे के विद्यार्थियों को ही गुरुकुल में दाखिल किया जाता है। गुरुकुल में प्रथम श्रेणी से धर्म शिक्षा, तृतीय श्रेणी से संस्कृत और पांचवीं श्रेणी से अंग्रेजी पढ़ाई जाती है। गुरुकुल के अन्दर दर्शन और विज्ञान (Science) अर्थात् प्राचीन और अर्वाचीन शिक्षा का अनोखा समन्वय है। यहां गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से विद्याधिकारी (मैट्रिक) और विद्यालंकार (बी ए.) की परीक्षायें दिलाई जाती हैं। जो सभी विश्वविद्यालयों और बोर्डों से मान्यता प्राप्त है। यहां का मैट्रिक पास विद्यार्थी शास्त्री, प्रभाकर और अन्य किसी महाविद्यालय में प्री-यूनिवर्सिटी में प्रवेश ले सकता है।

इसलिए पाठकों से अनुरोध किया जाता है कि अपने बच्चों के सर्वाङ्गीण विकास के लिए गुरुकुल भैंसवाल में प्रविष्ट करायें।

पाठक एवं लेखकों से अनुरोध

पाठक एवं लेखकों से अपील की जाती है कि समाज सन्देश को उत्कृष्ट एवं रोचक पत्रिका बनाने के लिए अपने अमूल्य सुझाव भेजें। इसके साथ पाठकों से भी अपेक्षा की जाती है कि वे अपनी लोक हितकारी रचनायें भेज कर अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करें। भविष्य में गुरुकुलों से सम्बन्धित पुराने और नये सेवकों का परिचय कराने के लिए एक विशेष स्तम्भ (परिशिष्ट) "एक परिचय" नामक शीर्षक से प्रकाशित करने का विचार है, इसलिए पाठकों से अनुरोध है कि गुरुकुलों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सेवक व्यक्तियों के बारे में निष्पक्ष एवं संक्षिप्त परिचय लिख भेजने का कष्ट करेंगे। इसके साथ ही साथ यह भी प्रार्थना की जाती है कि लेख के साथ सम्बन्धित व्यक्ति का पास पोर्ट साइज चित्र (फोटो) भेजना भी न भूलें।

—सम्पादक

Statement about ownership and other particulars about news paper "Samaj Sandesh" to be published in the first issue every year after last day of February.

FORM IV

(See Rule 8)

1. Place of publication ... Gurukul Bhainswal Kalan Distt. Sonepat.

2. Periodicity of its publication ... Monthly

3. Printer's Name ... Dharam Bhanu
   Nationality ... Indian
   Address ... Gurukul Vidya Peeth Bhainswal Kalan (Sonepat)

4. Publisher's Name, Nationality, Address .. Same as above No. 3

5. Editor's Name .. Harish Chander Acharya
   Nationality .. Indian
   Address ... 245, Model Town, Rohtak

6. Name and address of individuals who own the news paper and partners or share-holders holding more than one per cent of the total capital. — Mahasabha Gurukul Bhainswal Kalan (Sonepat)

I, DHARAM BHANU hereby declare that the particulars given above are correct to the best of my knowledge and belief.

(Sd.) DHARAM BHANU
Publisher,
'Samaj Sandesh'

Dated : 25th March, 1979

Approved for Libraries by D. P. I'S Memo No. 3/44—1961—B. Dated 8-1-62

Approved by the Chairman, Central Library Committee, Panjab Vide their Memo No. PRD-Lib-258-61/1257-639 dated Chandigarh, the 8th Jan. 1962.

For—

1. The Secretary to Government, Punjab, Housing and Local Government Department, Chandigarh.
2. The Director of Panchayats, Chandigarh.
3. The Director of Public Instruction, Panjab Chandigarh.
4. The Deputy Director Evaluation, Development Department Panjab Chandigarh.
5. The Assistant Director, Young Farme and Village Leaders, Development Department, Panjab Chandigarh.
6. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Jullundur.
7. The Assistant Director of Panchayats, Rohtak.
8. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Patiala.
9. All Local Bodies in the Panjab.
10. All District Development and Panchayat Officers in the State.
11. All Block Development and Panchayat Officers in the State.
12. All District Public Relations Officers in the State.

'समाज सन्देश'—डाक घर गुरुकुल भैंसवाल कलाँ

Regd. No. P/RTK-21

सदस्य संख्या

नाम पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

स्थान विश्व विद्यालय हरिद्वार

पत्रालय

जिला

हर माह हजारों प्रतियां बिकने वाले 'समाज सन्देश' मासिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

❋ विज्ञापन की दरें ❋

टाइटल पेज एक चौथाई	...	50 रुपये
बैक पेज आधा	...	60 रुपये
अन्दर का एक पृष्ठ	...	40 रुपये
अन्दर का आधा पृष्ठ	...	20 रुपये

व्यवस्थापक श्री धर्मभानु गुरुकुल भैंसवाल ने नेशनल प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर कार्यालय समाज सन्देश गुरुकुल भैंसवाल (सोनीपत) से मुद्रित तथा प्रकाशित किया।

समाज सन्देश

(हिन्दी मासिक-पत्र)
सांस्कृतिक, सामाजिक व साहित्यिक लेखों का संगम
प्रकाशन तिथि : 25 मई, 1979

वर्ष 20 मई, जून 1979 अंक 1/2

कन्या गुरुकुल खानपुर की 'यज्ञशाला'
जहां भक्त फूल सिंह जी का बलिदान हुआ
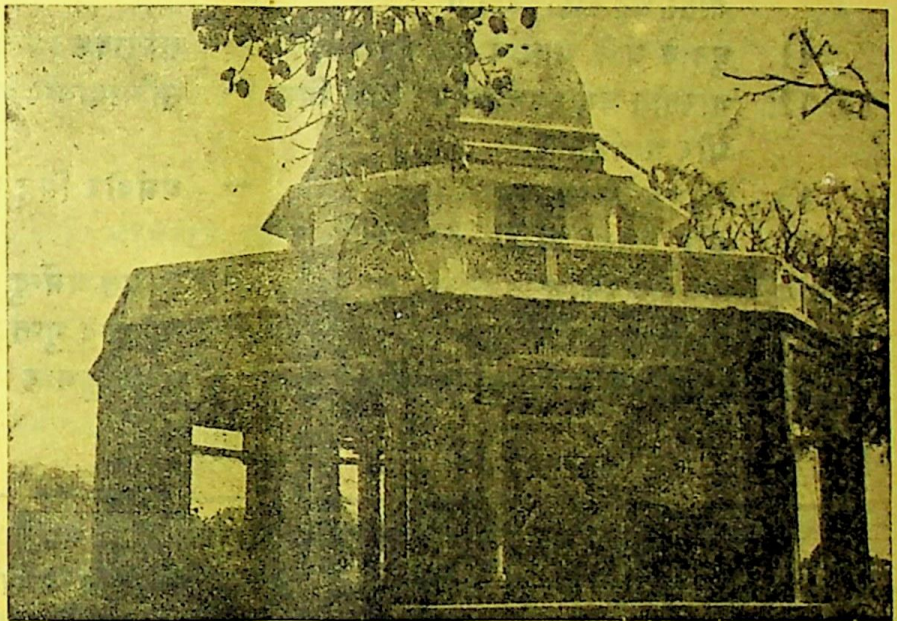
श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति ।
सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूर्धि महां असि ॥

तिरछी कुचाल युक्त भी जो इन्द्र ! भक्त है ।
भगवद्भजनविधान में दिल से प्रसक्त है ॥
उसकी सुनो पुकार तुम गोधन समृद्धि दो ।
तुम हो महान् अभीष्ट शौर्यवीर्यपूर्ति दो ॥

मूल्य : एक प्रति 1-25 रु० वार्षिक चन्दा 10 रुपये

इस अंक में—

समाज सन्देश में छपे विचारों से हमारा सहमत होना या न होना आवश्यक नहीं। समाज सन्देश में हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी मत से सम्बन्ध रखता हो अपने लोकहितकारी विचार अथवा लेख प्रकाशनार्थ भेज सकता है। उसकी मौलिकता का लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा।

—सम्पादक

लेख भेजने तथा अन्य विषयक पत्र व्यवहार का पता :—

देवराज विद्यालंकार

प्रकाशन प्रबन्धक

गुरुकुल भैंसवाल कलां (सोनीपत)

गोरक्षा का प्रश्न

आर्य समाज ने भी सन् 1966 में गोरक्षा आन्दोलन चलाया था। हजारों गोभक्तों ने जेल जाकर अपने गोभक्त होने का प्रमाण दिया था। हमारे गुरुकुल के ब्रह्मचारी तथा कर्मचारी भी तिहाड़ जेल में गोरक्षा के लिए एक महीने तक बन्द रहे। लेकिन कुछ स्वार्थी नेताओं ने राजनैतिक लाभ के लिए आन्दोलन वापिस ले लिया तथा भोली भाली गोभक्त जनता को धोखे बहकावे में डाल दिया और यह सारा आन्दोलन फेल हो गया।

मुझे आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द का यह कथन याद आता है कि – 'गौ आदि पशुओं के नाश से राजा और प्रजा दोनों का विनाश हो जाता है।' महात्मा गांधी ने भी कहा है – "हमारे ऋषियों ने हमें रामबाण उपाय बता दिये हैं – वे कहते हैं, 'गाय की रक्षा करो, सबकी रक्षा हो जाएगी, ऋषि ज्ञान की कुञ्जी खोल गए हैं, उसे हमें बढ़ाना चाहिए, बर्बाद नहीं करना चाहिए।"

उन दोनों महापुरुषों की उक्तियों में कितनी सजीवता और कितना सामञ्जस्य है यह पाठक गण स्वतः अनुमान लगा लेंगे। गाय के महत्व को प्रत्येक व्यक्ति जानता है। प्राचीन भारत में हमारे ऋषि-मुनि, राजा-प्रजा सभी गोपालक थे। आज भी गौ को गांवों में सबसे पहली रोटी दी जाती है तथा विवाहोत्सव में पिता पुत्री को गोदान देता है। गाय का हमारे देश की अर्थ-व्यवस्था से सीधा सम्बन्ध है। गाय हमारे दैनिक-जीवन का अभिन्न अंग बन गई है। इसके गोबर से खाद तथा गैस और गोमूत्र से औषध तैयार होती हैं, खाने-पीने के लिए दूध-दही, मक्खन और कृषि के लिए बैल गाय की ही देन है।

हमारे देश में छोटे-छोटे किसान हैं। सभी ट्रैक्टर नहीं ले सकते। मशीनों के लिए

पैट्रोल ईन्धन भी पर्याप्त मात्रा में हमारे देश में उपलब्ध नहीं होता। अतः कृषि के क्षेत्र में बैलों की क्षति-पूर्ति ट्रैक्टर कभी नहीं कर सकते।

इन सब बातों को देखते हुए मैं देश वासियों से आशा करूंगा कि अपने घरों में कम से कम एक गाय पालें। मैं गाय की सेवा करने की बात कहता हूँ तो गुरुकुल भैंसवाल की 'गोशाला' को गाय याद आती हैं जिन्हें देखते देखते मन नहीं भरता। गोहत्या पर पाबन्दी लगने के साथ गउओं के लालन-पालन की जिम्मेदारी भी निभाने के लिए देशवासियों को तैयार रहना चाहिए।

(गुरुकुल भैंसवाल की 'नन्दिनी' गाय)

बाबा का अनशन :-

केरल, पश्चिमी बंगाल तथा कुछ उत्तर पूर्वी प्रदेशों में, जहां अब भी गोहत्या चालू है, के प्रश्न को लेकर गान्धी जी के अनुयायी वयोवृद्ध नेता विनोबा भावे ने 22 अप्रैल को अनशन प्रारम्भ किया और 26 अप्रैल को तीसरे पहर प्रधान मन्त्री की इस घोषणा के साथ कि "गोरक्षा का विषय संविधान की समवर्ती सूची में लाने के लिए संविधान में संशोधन किया जायेगा" समाप्त हो गया।

कुछ व्यक्तियों ने इसे बाबा का अनुचित कदम भी माना तथा कहा कि जयप्रकाश नारायण की ओर से लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए बाबा ने यह ढोंग रचाया है। कुछ ने इसे राजनैतिक रूप देने का असफल प्रयास भी किया है। लेकिन मैं उन लोगों को जो कि कदम-कदम पर सही निष्काम भाव से किए हुए कार्य में छिद्र ढूंढ़ते रहने की जिनकी आदत बन गई है, यह बता देना चाहता हूँ कि आचार्य भावे की यह मांग कोई नई नहीं है। उन्होंने सन् 1951 से बराबर यह सवाल उठाया है। 1953 व 1954 में भी उन्होंने इस प्रश्न को उठाया था।

मेरे कुछ पत्रकार भाई इसे कांग्रेस (ई०) के समर्थन में किया गया अनशन मानते हैं। क्या विनोबा जी ने कांग्रेस के शासन में इस मांग के लिए प्रयत्न नहीं किए? किसी अच्छे व शुभ कार्य में भी छिद्र देखना क्या पत्रकारों की घटिया संकीर्ण विचारधारा का

जीता जागता सबूत नहीं है ? मैं इस अनशन का कोई भी राजनैतिक महत्व नहीं समझता। यह अनशन पूर्ण रूप से उचित है इसमें स्वार्थ एवं राजनीति का लेशमात्र भी समन्वय नहीं है। क्या गान्धी समर्थक जनता सरकार गान्धी व दयानन्द के स्वप्न को साकार करने के लिए गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा पाएगी ? मैं इस अनशन को सम-सामयिक और सही दिशा में सही कदम मानता हूँ और आचार्य विनोबा जी को अपने समाज सन्देश परिवार की ओर से बधाई सन्देश भेजता हूँ।

—देवराज विद्यालंकार

※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※

※ महासभा सूचना ※

समस्त महासभा के सदस्यों को सूचित किया जाता है कि,

दिनांक 9-6-1979, शनिवार को

पूर्व दोपहर **11** बजे

कन्या गुरुकुल खानपुर कलां में

महासभा की मीटिंग होगी।

सभी सभासद् समय पर उपस्थित होने की कृपा करें।

धर्मवीर

मन्त्री महासभा,

गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा

※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※

आचार्य द्विवेदी जी को—श्रद्धाञ्जलि !

— देवराज 'मलिक'
प्रकाशन प्रबन्धक 'समाज-सन्देश'

★

कालीदास और शेक्सपियर की, भान्ति तुम पर नाज है।
श्रद्धा-सुमन भेंट करने के, लिए शब्द नहीं आज है॥

जिला बलिया के गांव ओझवलिया में तेरा जन्म हुआ,
मात पिता गुरुओं के आदेशों का सच्चा मान किया।
हिन्दू विश्वविद्यालय से जो, उत्तम शिक्षा पाई थी,
जैसी शिक्षा पाई वैसी, ही वह रंगत लाई थी।
आधुनिक युग में हिन्दी की, तुझ से ही तो लाज है॥१॥

पैदा होते और मरते नित, जग में लाखों प्राणी,
व्यर्थ नष्ट कर देते हैं वे, ये महंगी जिन्दगानी।
'द्विवेदी' जैसे कुछ व्यक्ति, बनते अमिट निशानी,
स्वर्णाक्षरों में लिखी रहेगी, जिनकी सदा कहानी।
'अनामदास का पोथा' लिखने वाला तू सरताज है॥२॥

शान्तिनिकेतन में ही निरन्तर, बीस वर्ष तक काम किया,
बनारस में हिन्दी अध्यक्ष-पद, द्विवेदी जी ने थाम लिया।
पञ्जाब विश्वविद्यालय में भी, आ गए थे वे इस पद पर,
पुनः बनारस चले गए, अध्यक्ष बने थे फिर आकर।
लखनऊ विश्वविद्यालय की डी० लिट्० का तू ही ताज है॥३॥

संस्कृत, प्राकृत, दर्शन, बंगला धर्मशास्त्र का ज्ञानी था,
'पद्मभूषण' से किया अलंकृत साहित्यिक सम्मानी था।
छोड़ चला तू हाय! अचानक टूटी आशाएं सारी,
रो-रो श्रद्धा अर्पित करते 'देव' लोक के नर नारी।
सभी ओर से तेरी जय-जय की आती आवाज है॥
श्रद्धा-सुमन भेंट करने के लिए शब्द नहीं आज है॥४॥

(क्रमशः)

* महाभारत *

(आदि पर्व)

लेखक :
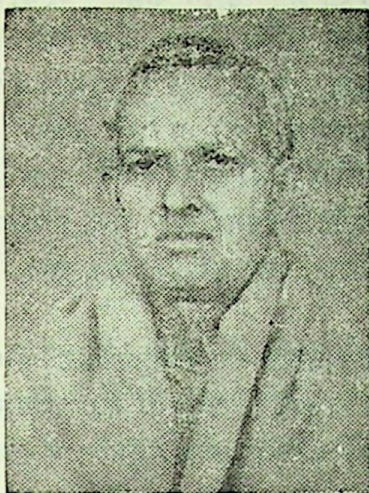
आचार्य विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड

●

भीष्म द्वारा काशीराज की कन्याओं का हरण,
शाल्व पराजय अम्बिका, अम्बालिका के साथ
विचित्रवीर्य का विवाह तथा उसकी मृत्यु

विचित्रवीर्य के युवा होने पर भीष्म ने उसके विवाह के विषय में विचार किया। उसने सुना कि काशीराज की तीन कन्यायें हैं, तीनों स्वयम्बर सभा में पति का वरण करेंगी।

उसी समय भीष्म माता सत्यवती की आज्ञा प्राप्त कर वाराणसी नगरी में गये। भीष्म ने स्वयम्वर में विद्यमान तीनों कन्याओं को देखा। स्वयम्बर सभा में सब राजकुमारों के नाम कथन किये जा रहे थे। स्वयम्बर में तीनों कन्यायें भीष्म को—'ये तो बूढ़े हैं', ऐसा सोच कर वे भीष्म से दूर चली गईं।

उस स्थान पर नीच स्वभाव के राजा आसीन थे, वे बातें करते हुए भीष्म का उपहास करने लगे। वे कह रहे थे—भरतवंशी भीष्म तो धर्मात्मा सुने जाते हैं, ये अब वृद्ध हो चुके हैं, शरीर में इनके झुरियां भी दिखाई देने लगी हैं। इनके शिर के बाल भी श्वेत हो गये हैं, फिर इनका यहां आने का क्या प्रयोजन है ? ये निर्लज हैं। भूमण्डल में इनके ब्रह्मचारी होने को जो बात फैल गई है, वह सब व्यर्थ है।

उन नरेशों की बातों को सुन भीष्म बहुत ही क्रुद्ध हुए। उनके सामने ही भीष्म जी ने तीनों कन्याओं का वरण किया। अवसर देख कर उन तीनों कन्याओं को उठा कर उसने रथ पर चढ़ा लिया। सब राजाओं का ललकारते हुए उसने कहा—वस्त्राभूषण देकर व्याहना ब्राह्म विवाह कहा है। कुछ लोग एक जोड़ा गाय और बैल को लेकर कन्यादान करते हैं, उसे आर्य विवाह कहते हैं। क्षत्रियगण स्वयम्वर की प्रशंसा करते हैं और उसमें पहुँचते हैं। उसमें भी वहां उपस्थित सब राजाओं को पराास्त करके जिस कन्या का अपहरण किया जाता है, क्षत्रिगण उसको सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। मैं इन तीनों को सब के सामने अपहरण करता हूँ, तुम सब अपनी शक्ति लगा कर मुझे रोकने का प्रयत्न करो। ऐसा कह भीष्म सब को ललकारते हुए कन्याओं का हरण करके चल दिये।

यह देख सब राजगण अपने-अपने आभूषण उतार कर, कवच पहन कर भीष्म से युद्ध करने के लिए उद्यत हुए। वहां पर अकेले भीष्म के साथ अनेक राजाओं का भयंकर युद्ध हुआ। वे राजगण बहुत काल तक भीष्म के अस्त्र शस्त्रों की मार को सहन न कर सके। पुनः युद्ध भूमि छोड़ कर भाग खड़े हुए।

शाल्वराज, जो स्त्री की कामना से स्वयम्बर में आया था, वह भीष्म से युद्ध करने सामने आया। वह भीष्म को ललकार कर कहने लगा कि ठहर, ठहर ! अब शाल्व और भीष्म का बहुत काल तक युद्ध हुआ। अन्य राजगण युद्ध से विमुख हो कर उन दोनों के भयंकर युद्ध को देखने लगे। दोनों ने एक दूसरे के ऊपर भयंकर बाणों का प्रहार किया। शाल्व ने भीष्म पर बाणों की झड़ी लगा दी। सब राजगण शाल्वराज को साधु, साधु (शाबाश) कहने लगे। उस समय भीष्म ने शाल्वराज पर बारुणास्त्र का प्रयोग किया। भीष्म ने शाल्वराज के सारथी को भी मार डाला परन्तु उसको जीवित छोड़ दिया। पुनः नदी, पर्वत, वन आदि को रथ के द्वारा पार करते हुए वे हस्तिनापुर पहुँचे।

धर्मात्मा भीष्म उन तीनों कन्याओं को पुत्रवधू, छोटी बहन और पुत्री की भान्ति मानकर कुरु देश में ले आये। भीष्म जी ने निश्चित दिन पर जब उन तीनों का विचित्रवीर्य के साथ विवाह करने का निर्णय लिया तो अम्बा भीष्म से बोली – हे धर्मात्मन् ! मैंने पहले ही सौभ नामक विमान के अधिपति शाल्व को पति रूप में वरण किया है। यही इच्छा मेरे पिता की भी है। मेरी इन बातों को सुन कर जो धर्म के अनुकूल हों, वही आप करें।

भीष्म जी ने अम्बा की यह बात ब्राह्मणमण्डली में रक्खी। सर्वसम्मति से अम्बा को शाल्व के समीप जाने की आज्ञा मिल गई। अम्बिका और अम्बालिका का विवाह शास्त्रोक्त विधि के अनुसार विचित्रि वीर्य से हुआ। विचित्रवीर्य उन दोनों को प्राप्त कर अत्यन्त भोगासक्त हो गये। अतः सात वर्ष तक रह कर राजा विचित्रवीर्य राजयक्ष्मा

रोग के शिकार हो गये। राजवैद्यों ने उनका बहुत उपचार किया परन्तु जीवित न रह सके। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनका यथा विधि प्रेतकार्य किया गया।

सत्यवती का भीष्म से राज्य ग्रहण और सन्तानोत्पत्ति के लिए आग्रह, भीष्म द्वारा अस्वीकृति।

पुत्र के मरने से दुखित पुत्र की इच्छा वाली सत्यवती भीष्म से यों बोली—हे पुत्र! अब तुम्हारा पितृवंश तथा मातृवंश तुम्हारे अधीन हैं। तुम्हारे से ही महाराज शान्तनु की वंश परम्परा चल सकती है। इन दोनों दुःखित वधुओं का सन्ताप मुझ से देखा नहीं जाता है। मेरा पुत्र तुम्हारा भाई है। वह यौवन काल में ही स्वर्गगामी हो गया है। मेरी ऐसी इच्छा है तुम इन दोनों पुत्रबधुओं में, जो पुत्र की कामना वाली हैं, पुत्रों को उत्पन्न करो। इस विशाल राज्य को तुम ही मेरी आज्ञा से सम्भालो। सारे परिवार का भार अब तुम पर ही है।

माता की बातों को सुन कर भीष्म बोले—मातः! आपने जो बातें कही हैं वे धर्मानुकूल तथा सामयिक हैं, परन्तु मैं राज्य के लोभ से राज्याभिषेक न कराऊंगा और न ही स्त्री सहवास करूंगा। जो प्रतिज्ञायें मैंने आपके विवाह के समय की थीं, मैं उनका भंग किसी भी अवस्था में न करूंगा।

मैं तीनों लोकों का राज्य छोड़ सकता हूँ परन्तु सत्य को कभी नहीं छोड़ूंगा। चाहे पृथ्वी अपनी गन्ध को छोड़ दे, जल रस का त्याग कर दे, तेज रूप को त्याग दे, वायु स्पर्श गुण से रहित हो जावे, सूर्य प्रभा को छोड़ दे, अग्नि उष्णता छोड़ दे, आकाश शब्द को और चन्द्र शीतलता का परित्याग कर दे। इन्द्र पराक्रम को छोड़ दे, धर्मराज धर्म की उपेक्षा कर दे मैं तब भी सत्य का त्याग नहीं कर सकता हूँ।

भीष्म की बात को सुन कर सत्यवती बोली—हे पुत्र! मैं तुम्हारी सचाई को जानती हूँ, फिर भी आपद्धर्म का पालन करना ही चाहिए। मेरी यह इच्छा है कि महाराज शान्तनु की वंश परम्परा नष्ट न होने पावे।

सत्यवती की बात सुन कर भीष्म बोले – हे मातः! धर्म की ओर दृष्टि डालो। धर्म के नाश से सब कुछ नष्ट हो जाता है। क्षत्रिय को सत्य मार्ग से कभी भी विचलित नहीं होना चाहिए।

भीष्म की सम्मति से व्यास का आवाहन—व्यास की माता सत्यवती की आज्ञा से विचित्रवीर्य की पत्नियों में गर्भस्थापन की स्वीकृति

यह सुन सत्यवती ने भीष्म को एक गुप्त रहस्य बतलाते हुए कहा—हे पुत्र ! तुम धर्मात्मा हो मैं तुमको एक गुप्त रहस्य बतलाती हूँ। आप अपने वचन से इधर उधर नहीं हो सकते हो मैं इसको भली प्रकार जानती हूँ। तुम मेरे उस गुप्त रहस्य को सुनो—

जब में युवति हुई, तब पिता की आज्ञा से यमुना नदी में कभी-कभी नौका चलाया करती थी। एक दिन पराशर मुनि मेरी नौका पर सवार होने के लिए आये। वे मेरे रूप को देखकर मुझ पर मोहित हो गये। मैं भी लजाती हुई स्पष्ट रूप से मुनि को इन्कार नहीं कर सकी। तब मुनि के संयोग से मेरे एक पुत्र हुआ, जिसको वेद व्यास नाम से कथन किया जाता है। जिस प्रकार विचित्रवीर्य अपने पिता महाराज शान्तनु से उत्पन्न हुए हैं, उसी प्रकार वह मेरे द्वारा उत्पन्न हुआ है।

यदि आपकी सम्मति हो तो मैं बहुओं में गर्भाधान के लिए उसे बुला लूं। उसने मुझे कहा हुआ है, 'माता जो जब आपको मेरी सेवा की आवश्यकता हो तब मुझे बुलालें।' तुम कहो तो उसे बुलाऊं ?

भीष्म ने सत्यवती की बात को सहर्ष स्वीकार किया। किसी के द्वारा माता के आदेश को प्राप्त कर व्यास जी माता सत्यवती के निकट पहुँचे। माता ने कुरु वंश के ऊपर आये संकट का वर्णन उससे किया।

माता की बातों को सुन व्यास बोले—हे मातः ! मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगा। मैं अपने भाई के लिए उत्तम पुत्र प्रदान करूंगा। विचित्रवीर्य की स्त्रियों को मेरे बताये माग के अनुसार विधिपूर्वक व्रत करना होगा। व्रतहीन कोई भी स्त्री मेरे समीप नहीं आ सकती है।

वेद व्यास की बातों को सुन सत्यवती बोली—हे पुत्र ! ऐसा प्रयत्न करो जिससे रानियां शीघ्र गर्भधारण कर सकें। राजा के बिना प्रजा अनाथ हो जाती है अतः तुम रानियों में शीघ्र गर्भ संस्थापना करो। भीष्म उन राजकुमारों का पालन-पोषण करके योग्य बना लेंगे।

यह सुनकर व्यास बोले—हे माता जी ! यदि आपकी ऐसी ही इच्छा है और आप शीघ्र ही पौत्र चाहती हैं तो रानियों को कहो कि वे मेरे असुन्दर रूप को देख कर

शान्त रहें, डरें नहीं। यदि बड़ी रानी अम्बिका मेरे गन्ध, रूप, वेष और शरीर को सहन कर ले तो वह आज ही उत्तम बालक को अपने गर्भ में धारण कर सकती है।

कौसल्या (अम्बिका) पुत्राभिलाषिणी होके मुझे शय्यासन पर मिले, ऐसा कहके वेद व्यास वहां से चले गये। सत्यवती ने भी अपनी पुत्रवधु को समझाया कि वह पुत्र प्राप्त करे, उस पुत्र से कुरुराज्य का संचालन हो सकेगा। माता सत्यवती की आज्ञा अम्बिका ने स्वीकार की।

व्यास जी द्वारा विचित्रवीर्य के क्षेत्र से धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर की उत्पत्ति

ऋतुस्नाता पुत्रवधू अम्बिका को शय्या पर बिठला कर सत्यवती ने वधू से कहा आज तुम्हारे समीप तुम्हारे देवर आवेंगे तुम सावधान होके उनकी प्रतीक्षा करना। अम्बिका अपने मन में यही सोचती रही कि भीष्म या अन्य कोई कुरुवंशी राजकुमार ही उसके पास आवेंगे।

ठीक समय दीपकों के दीप्त होने पर सत्यभाषी ऋषि व्यासदेव उपस्थित हुए। उनका शरीर काला, जटायें पीली थीं, आंखें चमकदार थीं। उनको देखकर डर के कारण अम्बिका ने अपनी दोनों आंखें बन्द कर लीं। तदनन्तर व्यास जी ने माता सत्यवती से मिलने पर उससे कहा कि—हे मातः! राजकुंवार गुणवान्, हाथी के समान बलवान् और बुद्धिमान् भी होगा परन्तु वह नेत्रहीन होगा। व्यास की बातों को सुन सत्यवती बोली—हे पुत्र! कुरुवंश का राजा नेत्रहीन हो यह उचित प्रतीत नहीं होता है, अतः कुरुवंश के राज्य संचालन के लिए वधू को दूसरा पुत्र प्रदान करो। समय पर ऐसा ही होगा यह कह कर व्यास ने वहां से प्रस्थान किया।

कुछ काल के पश्चात् अम्बिका ने अन्धे पुत्र को जन्म दिया। सत्यवती ने कुछ समय पश्चात् व्यास जी के निकट छोटी रानी अम्बालिका को भेजा। उसने उसे सब बातें समझा दी थीं कि वह अपने नेत्रों को व्यास जी से मिलने के समय बन्द न करे। इससे वधू ने आंखें तो व्यास के सामने बन्द नहीं कीं परन्तु वह व्यास जी के भयानक रूप को देख कर भय-भीत हो गई। डर के कारण वह पीली हो गई।

पौत्र के विषय में माता के पूछने पर व्यास देव ने फिर कहा—माता जी! अम्बालिका मुझे देख कर भयभीत होके पीली हो गई है अतः इसके गर्भ से पीला पुत्र होगा। उसे सब पाण्डु नाम से पुकारेंगे। यह कह ऋषि चले गये।

बड़ी रानी अम्बिका के लिए माता सत्यवती ने वेद व्यास से दूसरा पुत्र मांगा। वेद व्यास ने माता की बात को स्वीकार किया। माता के कहने पर अम्बिका ने उनके सामने तो इन्कार नहीं किया परन्तु व्यास के सम्मुख पुनः जाने का साहस न हो सका। अम्बिका ने अपनी रूपवती दासी को, अपने वस्त्राभूषणों से सजा कर श्री वेदव्यास के समीप भेज दिया। उस दासी ने ऋषि की भक्तिभाव से पूजा की और सेवा भी की। उस की सेवा और श्रद्धा से वे बहुत ही प्रसन्न हुए। उससे सहवास के अनन्तर व्यास देव ने माता से कहा—माता जी ! इस दासी के पेट से जो पुत्र उत्पन्न होगा वह गुणी, नीतिज्ञ और बुद्धिमान् होगा। इस प्रकार कुरुवंश का प्रवर्धन करने के लिए धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर नामक तीन पुत्र उत्पन्न हुए।

धृतराष्ट्र, पाण्डु, विदुर का जन्म—धृतराष्ट्र का विवाह—कर्ण का जन्म, पृथा द्वारा पाण्डु वरण, माद्री के साथ पाण्डु का दूसरा विवाह, पाण्डु की दिग्विजय

धृतराष्ट्र, पाण्डु, विदुर के युवा होने पर कुरुवंश, कुरुजांगल और कुरु क्षेत्र की बड़ी उन्नति हुई। कृषकों की कृषि हरी भरी थी। व्यापार भली प्रकार चालू था। सारी प्रजा सत्यपरायण, धर्मात्मा और यज्ञशील थी। कोई उस राज्य में कृपण या कंजूस नहीं था। भीष्म जी धृतराष्ट्र, पाण्डु, विदुर का पालन-पोषण पिता के समान करते थे। पाण्डु उत्तम धनुर्धर बने। विदुर धर्मात्मा और नीतिज्ञ थे। धृतराष्ट्र के अन्धा होने के कारण, विदुर के शूद्रा के गर्भ से जन्म होने से, पाण्डु को राज्य गद्दी पर आसीन किया गया।

एक दिन भीष्म बुद्धिमान् विदुर से बोले—हे पुत्र ! मैंने, माता सत्यवती ने, श्री व्यास ने मिल कर इस कुल को स्थापित किया है। मैं चाहता हूँ अब वही काम होना चाहिए जिससे इस कुल की उन्नति होती रहे।

मुझे पता लगा है यदु वंश में उत्पन्न राजा शूर सेन की कन्या, जिसे राजा कुन्तिभोज ने गोद लिया हुआ है, जिसका नाम कुन्ती या पृथा है, इसी प्रकार गान्धार राज सुबल की कन्या और मद्र नरेश की कन्यायें भी रूपवती और गुणवती हैं, मैं उन सब से पाण्डु और धृतराष्ट्र का ब्याह करना चाहता हूँ, तुम बुद्धिमान् हो इस विषय में तुम्हारा क्या मत है ?

भीष्म की बातें सुनकर विदुर बोले—हे महाराज ! आप ही हमारे माता, पिता, गुरु हो। जो आपको उत्तम जान पड़े, वही कीजिए हमको वह स्वीकार होगा।

तदनन्तर श्री भीष्म ने गान्धार राज की कन्या को धृतराष्ट्र के लिए उपयुक्त मान कर उनके पास अपना दूत भेजा। दूत ने भीष्म का सन्देश गान्धार राज से कहा। गान्धार राज पहले तो धृतराष्ट्र को नेत्रहीन मान के कन्या देने में झिझके, परन्तु कुरु वंश की प्रसिद्धि, आचार आदि के विषय में विचार कर गान्धारी का वाग्दान उसने धृतराष्ट्र के लिए स्वीकार कर लिया। इधर गान्धारी ने भी जब यह सुना कि उसके पति नेत्रहीन हैं और पिता जी उसे उनके लिए देना चाहते हैं, तब उसने भी रेशमी वस्त्र की कई तह करके पट्टी बना कर अपनी आंखों पर बांध ली। गान्धार राजकुमार शकुनि अपनी बहन को अपने साथ हस्तिनापुर में ले आये। वहां उसने आदर पूर्वक अपनी बहन को धृतराष्ट्र के लिए सौंप दिया। वहीं पर धृतराष्ट्र का नियम पूर्वक विवाह कर दिया गया। अपनी बहन का विवाह कर राजकुमार शकुनी वापिस अपने देश में गये। गान्धारी ने अपने उत्तम व्यवहार से अपने पति को सर्वथा सन्तुष्ट किया। वे व्रतशीला और पतिपरायण नारी थी।

दुर्वासा योगसिद्ध ऋषि थे। पिता कुन्तिभोज ने पुत्री पृथा को देवपूजन और अतिथि सेवा का काम सौंपा हुआ था। एक बार दुर्वासा राजा कुन्तिभोज के यहां आये। पृथा ने मनोयोग से उनकी सेवा की। कठोर स्वभाव वाले दुर्वासा उसकी सेवा से बहुत सन्तुष्ट हुए। पृथा पर आने वाले भावी संकट को अपने योगबल से दुर्वासा ने जानकर, उसके धर्म की रक्षा के लिए उसे एक वशीकरण मन्त्र दिया। उस मन्त्र के प्रयोग की विधि भी ऋषि ने उसे बतलाई। उसने उससे कहा कि हे पुत्री ! इस मन्त्र द्वारा जिस देवता का तुम आहवान करोगी उसी देव की शक्ति के अनुरूप वैसे ही गुण वाला पुत्र तुमको अवश्य प्राप्त होगा।

कुन्ती ने उस मन्त्र की परीक्षा करने के लिए सूर्यनामक देवी गुण सम्पन्न पुरुष का चिन्तन किया। वह पुरुष उसी समय उसके सामने प्रकट हो गया। उसके सम्बन्ध से कुमारी अवस्था में ही कुन्ती के गर्भ से एक बलवान् पुत्र हुआ। कुमारी अवस्था में पृथा ने कुटुम्बी जनों के भय तथा लोक लाज के कारण उत्पन्न होते ही एक मञ्जूषा में रख, नदी के जल में उसको छोड़ दिया। जल में बहते हुए उस बालक को सूतपुत्र अधिरथ ने बाहर निकाल कर अपनी पत्नी राधा को पालने के लिए दिया। वही पुत्र कर्ण और वसुषेण नाम से प्रसिद्ध हुआ।

(क्रमशः)

कायर और कमजोरों को जीने का अधिकार नहीं

—राज सिंह भनवाला
कासेन्ढ़ी (सोनीपत)

★

किसने कहा पाप है, समुचित स्वत्व-प्राप्ति हित लड़ना ?
उठा न्याय का खड्ग समर में, अभय मारना मरना ?

—दिनकर

कायर और कमजोर पुरुषों का जीवन बेकार है। उन्हें जीने का अधिकार नहीं। ये शब्द किसी ने उस समय कहे थे जब बाहरी आक्रमणों ने भारत माता की स्वतन्त्रता छीन ली थी। भारत माता के सम्मान को खण्डित किया जा रहा था। शिशुओं को कत्ल किया जा रहा था और माताओं के सतीत्व को भंग करने की कुचेष्टाओं का बाजार गर्म था। जब भारतीय नौजवान ने ऐसे समय में तलवार फेंक कर अपमानित और पददलित जीवन की भिक्षा मांगने का उपक्रम किया था। वीरों के हृदय में कम्पन, हाथों में निष्क्रियता और मन पर दुर्बलता मण्डराने लगी। भारत माता की छाती पर यवनों की विशाल वाहिनी दाल दल रही थी। एक तरफ भारत माता को उसकी सन्तानों के लोहू से रंगा जा रहा था दूसरी ओर कुछ लोग शान्ति——शान्ति——का जप आंखें मून्द कर रहे थे। चित्तौड़ में चौदह हजार (14000) रानियों की चिता के अंगार क्रोध से धधक रहे थे, तभी एक देवी ने अपनी सखियों से कहा था—

'भल्ला हुआ जो मारिया बहिणि म्हारा कंतु।
लज्जेज तु वयंसिग्रहु जइ भग्गा घरु एन्तु॥'

ऐसी विकट परिस्थिति में वीरों को जन्म देने वाली माताओं ने अपनी गोद के फूल से सुकुमार लालों को रणक्षेत्र में भेजकर उन्हें यह मंत्र दिया था कि संसार में कुत्तों, कौवों और गीदड़ों की जिन्दगी से तो मरना भला है। एक बार टीपू सुलतान ने कहा था—

यदि जीना है तो शेर जिएं, चाहे दो दिन भले ही जीवें।
भेड़िये की तरह सौ बरस (वर्ष) जीना बेकार है॥

अगर क्षत्रिय इस गौरव शाली मां की वाणी को जीवन का मूल मन्त्र मानकर धारण कर लेते, तो क्या दिल्ली के बाजारों में नादिरशाह खून की नदी बहा सकता ? क्या दिल्ली में हत्याकाण्ड और अग्निकाण्ड होते और विदेशी विजेता बनने का दम्भ करते ?

यदि क्षत्रिय किसी काम के होते, उनमें पौरुष होता तो अत्याचारी यमपुरी में अपने घोर अपराध के लिए क्षमा न मांगते, पश्चात्ताप करते और भविष्य में ऐसा जघन्य पाप कर्म न करने की प्रतिज्ञा करते।

पर दशा इसके विपरीत थी। क्षत्रिय देखकर भी आंखें बन्द कर रहे थे, उनका शरीर सिकुड़ रहा था और लोहे की तलवार पिघल कर मोम बन रही थी। मरने वाले बाल, वृद्ध और महिला जन कायर पुरुषों को मौत के कुएं का पानी पी-पी कोस रहे थे। क्या मर्दों का यही धर्म है? क्या इसी दिन के लिए तुमने माताओं के पेट को फाड़ा था। इसी दारुण दृश्य को देखकर तो वीर राजपूत के खून में शौर्य की चिनगारी फूंकते हुए जगनिक भाट ने कहा था—

'बारह बरिस लौं कूकर जियें,
औ, तेरह बरिस लौं जियें सियार।
बरिस अठारह छत्री जियें,
आगे जीवन को धिक्कार॥'

पाठको! इतिहास इस बात का साक्षी है कि कोई भी मनुष्य गरीब दीन बनकर जीवित नहीं रह सकता।

क्या हम महाभारत के महायुद्ध की बात भूल गए? दुर्योधन ने स्पष्ट कहा था कि हे कृष्ण! क्या कभी मांगने से राज्य मिलता है? तुम तो पांच गांव मांगते हो, और मैं तुम्हें मामूली सी भी धरती देने को तैयार नहीं इस अवस्था में आप ही बताइए कि पाण्डवों को न्याय कब मिला। राजनीतिज्ञ श्रीकृष्ण युधिष्ठिर से कहते हैं—

'क्षमा, दया, तप, तेज, मनोबल,
की दे वृथा दुहाई।
धर्म राज, व्यंजित करते,
मानव की कदराई॥' (कुरुक्षेत्र दिनकर)

किन्तु विनय की अधिकता को कृष्ण जी ने कायरता बताया। पाण्डवों के अन्तर के पट खुले। गीता में उपदेश देते हुए और अर्जुन के मोह का अन्त करते हुए वे कहते हैं—

'हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गम्,
जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।'

हे अर्जुन! कायरता को छोड़ो और सोचो कि यदि तुम युद्ध में मर गए तो स्वर्ग में जाओगे और यदि जीवित रहकर विजयी होगे तो पृथ्वी के राजा बनोगे। क्योंकि वीरभोग्या वसुन्धरा अर्थात् वसुन्धरा वीरों द्वारा भोगने योग्य है। पाण्डव मर्द थे और मर्द मरना मिटना जानता है, अतः उन्होंनें शस्त्र उठाया। अगर अर्जुन के गाण्डीव धनुष की टंकार कुरुक्षेत्र के मैदान में कौरवों का काल बनकर न आती, तो वे अपना अधिकार

हरगिज न पाते। पाण्डवों ने एक ही बार कायरता दिखलाई थी, जिसका दुष्परिणाम द्रौपदी का चीरहरण। हुआ क्षमा की भी कोई सीमा होती है अन्यथा —

'जहां नहीं सामर्थ्य शोध की,
वहां क्षमा निष्फल है।
गरल घूंट पी जाने का,
मिस है, वाणी का छल है॥' — दिनकर

अगर हम श्रेष्ठ और सुन्दर जीवन बिताना चाहते हैं तो हमें शक्तिशाली बनना चाहिए। कमजोर मनुष्य को तो बीमारियां और मक्खियां ही नहीं जीने देतो, वह उसे वश में कर लेती है। यदि जीवन में नाम दाम और धाम चाहते हो तो हिमालय की भांति दृढ़, कठोर और अचल-अटल बन जाइए वरना तुम्हारी भी वही हालात होगी कि 'तुम्हारी दास्तां भी नहीं होगी दास्तानों में।' इससे निस्सन्देह यह भासित होता है कि इस संसार का एक ही सिद्धान्त है, और वह है करो या मरो।

आज हम आजाद देश के नागरिक हैं, विश्व में हमारा भाल उन्नत है। लेकिन यह आजादी बिना बलिदान दिए मिल गई? जो आदमी आजादी को शान्ति एवं अहिंसा का पुरस्कार कहते हैं, उनके लिए अब भी मैं 'गुलाम अथवा गद्दार' का शब्द बरतूं तो इसमें बुरा ही क्या है।

उन महापुरुषों (जैसे — भक्त सिंह, सुभाष चन्द्र बोस और चन्द्र शेखर आजाद आदि) के इस महान बलिदान का पुरस्कार हम देंगें, देंगे और अवश्य देंगे और उसका रूप होगा —

'शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मिटने वालों का बाकी यही निशां होगा॥

अतः यह स्वतन्त्रता हमें अपनी शक्ति, भुजाबल तथा कर्म कौशल से मिली है। अगर हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते तो हमें आजादी कब नसीब थी।

इसी प्रकार पंजाब तथा हरियाणा के किसान और मजदूर भी दुःखी थे। किन्तु उनको मुक्ति दिलाने वाले भक्त फूल सिंह (संस्थापक गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां तथा कन्या गुरुकुल खानपुर कलां, जिला सोनीपत) तथा सर चौधरी छोटू राम भी पूरे कर्मवीर थे।

भक्त फूल सिंह ने अन्याय और अत्याचार की नींव पर बने महलों की मशाल गुल कर दी। इस युग की ढहती हुई दीवारों को मजबुती दी। सर चौधरी छोटू राम ने कई क्रान्तिकारी भूमिसुधार किए। उन्होंने हमें यह पाठ दिया कि तगड़े, मजबूत और लोहे की दीवार बनो। इकबाल के शब्दों में उन्होंने कहा था—

'खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले,
खुदा बन्दे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है।'

सत्य प्रेम

—स्वामी सुमेधानन्द

१- काम वासना प्रेम नहीं है ! काम प्रेम की मृत्यु है !

२- अहम् प्रेम की मृत्यु है !

पूर्व इसके कि इस सन्त उक्ति पर कुछ लिखा जाये, प्रेम क्या है इस पर ठीक-ठीक विचार करना चाहिए। संसार में मनुष्य एक दूसरे के मधुर स्वभाव और सद्‌व्यवहार से परस्पर आकर्षित होते हैं और आपस में प्रिय सम्बन्ध स्थापित करते हैं। दुःख में, आपत्ति में एक दूसरे की सहायता करने की प्रतिज्ञा करते हैं। सुख सम्पदा में एक दूसरे को विद्या और ज्ञान की दृष्टि से, धर्म अर्थ की दृष्टि से, कार्य और व्यवसाय की दृष्टि से मानवजीवन के प्रत्येक कार्यक्षेत्र में बढ़ा-चढ़ा देखना चाहते हैं। सद्‌भावों, शुभ इच्छाओं से जीवन सुख सम्पदा से सुभूषित देखने में आनन्द अनुभव करते हैं। यह है वास्तव में प्रेम का सच्चा परिचय। यदि इसमें स्वार्थ लेश मात्र भी नहीं हो तो यह प्रेम का सच्चा स्वरूप और दिग्दर्शन है। जहां जरा भी स्वार्थ ने इसमें प्रवेश किया कि प्रेम का स्वरूप विकृत होकर स्वार्थमय प्रेम का स्वांग भरा जाना आरम्भ हो गया। प्रेम वास्तव में है नहीं ! दिखावे में प्रेम-प्रेम का आडम्बर रचाया जाता है। जिस समय से मानव इतिहास आरम्भ हुआ है, ऐसे सौभाग्यशाली अनेक व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने अपने सच्चे त्याग और बलिदान निःस्वार्थ सेवा से यह सप्रमाण सिद्ध किया कि उनके हृदय में सच्चे निःस्वार्थ प्रेम की सद्‌भावना कार्य कर रही थी।

मानव इतिहास में ऐसे ज्वलन्त उदाहरणों का अभाव नहीं जिन्होंने अपने बन्धुओं की, जाति की, राष्ट्र की और विशाल रूप से मनुष्य मात्र को सच्चे प्रेम से न ही केवल सेवा की अपितु उनके दुःख दूर किये, दासत्व व गरीबी के बन्धनों से मुक्त भी किया। सत्यज्ञान से उनके मन, बुद्धि को प्रकाशित कर उनका अज्ञान-अन्धकार दूर किया। जीवन-ज्योति से उनके तन, मन को देदीप्यमान किया। यह तो हैं सच्चे प्रेम के प्रमाण।

परन्तु इसके विपरीत विश्व के अन्दर अनेकों प्रेमी-प्रेमिकाओं के काम-वासनाओं से भरपूर ऐसे उदाहरण पढ़ने को और सुनने को मिलते हैं जिन्होंने एक दूसरे की

त्वचा के सौन्दर्य, धन या सम्पत्ति के प्रलोभन पर, उच्च पद के प्रलोभन पर मोहित होकर प्रेम का राग अलापना आरम्भ कर दिया है। परन्तु जब त्वचा सौन्दर्य चला गया, हाड मांस की कोमलता चली गई, धन, सम्पदा, पद नष्ट हो गये, प्रेम घृणा में बदल गया। वे जीवन जो मधुमय प्रेम के केन्द्र बने हुए थे विनष्ट हो गए। कटु भावनाएं उत्पन्न हो गई, मधुर सम्बन्ध बिगड़ गए। माधुर्य समाप्त ! हृदय का आह्लाद समाप्त !

वास्तव में अनुभव ये बताता है कि काम प्रेम की मृत्यु ही है। इस विषय का जरा विशेष विशाल रूप से और गहराई से अध्ययन करने की आवश्यकता है। आइये मिल कर अध्ययन किया जाए—दो मनुष्य एक दूसरे को देखते हैं। शारीरिक सौन्दर्य और अन्य शरीर सम्बन्धी गुणों की विशेषताओं को मालूम करके आकर्षित होते हैं। उनके मनमें वासना भरे विचार, हृदय के अन्दर वासना भरे भाव उत्पन्न होने आरम्भ हो जाते हैं। उनका मन, बुद्धि, हृदय वासनाओं से ओत-प्रोत हो जाता है। वे एक दूसरे की त्वचा के सौन्दर्य, कोमलता, भाव-उल्लास पर मोहित हो जाते हैं। काम का प्रबल वेगवान साम्राज्य उनकी शारीरिक तथा मानसिक काया माया के वातावरण पर छा जाता है। वे आवेश से एक दूसरे को बार-बार अपनी बाहुओं में भर कर आलिंगन, चुम्बन करते हैं और एक दूसरे के साथ मर्यादा और संयम की सीमा को तोड़ कर विषय भोग में फंस जाते हैं। परस्पर त्वचा के संघर्षण से उष्णता, शीतलता की अनुभूति को आनन्द मान लेते हैं। अश्लील क्रियाओं से जो-जो लाभ हानियां होती हैं वे इस प्रकार हैं:—

लाभ :—

1. परस्पर त्वचा संघर्षण से और आलिंगन से कुछ समय तक भौतिक सुख की अनुभूति होती है।
2. परस्पर हावभाव का कामासक्ति पूर्ण आदान-प्रदान होता है।
3. प्रेम सम्बन्ध की मधुर प्यार भरी कहानियों की शृंखला आरम्भ और अन्त हो जाती है। वचन, प्रतिज्ञाओं, आशाओं, प्रतिक्षाओं का सुख दुःखमय वातावरण निर्माण होता रहता है।

हानियाँ :—

1. त्वचा संघर्षण से बहुत प्रकार के भयंकर चर्म रोग उत्पन्न होते हैं।
2. बार-बार आलिंगन, चुम्बन और विषय भोग से हृदय का आशा या निराशा से बनना और बिगड़ना विचित्र क्रीड़ा का स्वरूप धारण कर लेता है।
3. मानसिक और हृदय का वातावरण विकृत और विषाक्त हो जाता है।
4. कुछ समय बाद प्रेम और सुख फीका पड़ जाता है। विषय भोग निरस और शुष्क अनुभव होने लगता है।

5. मनुष्य विवेक भ्रष्ट होकर अश्लीलता वा दुश्चरित्रता का दासत्व स्वीकार कर लेता है।

6. वीर्य शक्ति, जीवन शक्ति का सर्वनाश होना आरम्भ हो जाता है।

7- सु,ख दुःख में बदल जाता है, आशा निराशा में बदल जाती है।

8. मनुष्य अपने सच्चे मानवीय अस्तित्व को खो बैठता है।

9. मानव अपने सच्चे और शुद्धचैतन्य स्वरूप को भूल कर शारीरिक सुख की प्राप्ति की दौड़-धूप में सत्यज्ञान, नित्यानन्द, सच्चे प्रेम के सौभाग्यशाली आशीर्वाद से वंचित हो जाता है।

10. अन्त में शारीरिक रोगों और मानसिक व्यथाओं से दुःखी और व्यथित होकर रोता है।

अतः स्वामी विवेकानन्द के ये वचन कि 'काम प्रेम की मृत्यु है' सत्य ही प्रतीत होते हैं। यद्यपि ये तीन शब्द हैं, परन्तु मनुष्य मात्र के लिए इसमें अत्यन्त उत्तम शिक्षा दी गई है। हमने ऊपर की पंक्तियों में देखा कि काम वासना प्रेम नहीं है क्यों कि वह तो केवल वासना ही है। वासना, वासना की तृप्ति की मांग करती है। वासना प्रेम के शुद्ध स्वरूप से विपरीत एक अश्लील आचरण की ओर आकर्षित होने की प्रेरणा करता है। वासना का अन्तिम परिणाम घृणा और दुःख होता है। अतः यह सिद्ध हो गया कि काम प्रेम की मृत्यु है। सब भौतिक प्राणी नश्वर हैं। क्योंकि लोग कामवश विषयभोग में फंसते हैं, केवल इसलिए कि काया माया के द्वारा कुछ सुख प्राप्त हो सके और इसी उद्देश्य से वे प्रेम की वार्ता मधुर शब्दों में बोलते हैं। परन्तु हृदय में वासना की सन्तुष्टि और तृप्ति की चाह जोश मार रही है। जहां वासना की क्षणिक तृप्ति हुई प्रेम के मनमोहक दृश्य भस्मसा्‌ हो गए। नश्वर और क्षणिक जोवन नाश होने से सब मधुर स्वप्न नष्ट हो गये। वास्त। मे काम ही प्रेम की मृत्यु है।

●

अहम भी प्रेम की मृत्यु है

अहम का क्या अर्थ है ?

अहम का अर्थ है 'मैं'! जब मनुष्य अपने आप को यह शरीर समझता है तो 'अहम' शरीर के लिए प्रयुक्त होता है। उस समय निज के शारीरिक सुख के लिए प्रत्येक मनुष्य संघर्ष करता है। निज के भौतिक अस्तित्व की गर्वपूर्ण घोषणा करता है अहम की इस पर छाप या मोहर लागू हो जाती है। यह अहम अपने शरीर तक ही सीमित रहता है। इसका आकर्षण और प्रेम निज की आवश्यकताओं की पूर्ति की ओर होता है। जब स्वार्थपरता का आरम्भ हो जाता है, अपने शरीर से और अपनों से मोह हो जाता है।

कहता प्रेम-प्रेम है परन्तु आचार व्यवहार में अहमभाव के तीव्र प्रभाव होने के कारण से अन्य मनुष्यों ने घृणा ! उपेक्षा वृत्ति और स्वार्थ का व्यवहार करता है। यहां सच्चे मानव प्रेम की इतिश्री हो जाती है। अता अहम प्रेम की मृत्यु है।

अहम का संकेत जिस समय शरीर की ओर होता है उस समय स्वार्थ, मोह, अहंकार, काम, क्रोध, लोभ आदि का प्रभाव प्रबल होता है। इसके ठीक विपरीत जिस समय अहम का संकेत आत्मा की ओर होता है तो सत्य ज्ञान, आनन्द, पवित्रता और ईश प्रेम का प्रभाव प्रबल होता है।

अहम शरीर और मन के लिए प्रयोग करते समय शंका, सन्देह और भय उत्पन्न करता है अर्थात् जब मानव अपने आपको शरीर समझता है तो वो अपने आत्म शुद्ध चैतन्य स्वरूप को भूल जाता है। क्योंकि पार्थिव काया नश्वर है इसलिए आपत्तियों में शारीरिक कष्टों, ज्वर आदि का और मृत्यु का भय सताता है परन्तु जब अहम का प्रयोग शुद्ध चैतन्य आत्मा के लिए होता है तो मानव निर्भय हो जाता है।

मैं ये नश्वर शरीर नहीं हूँ, परन्तु अविनाशी नित्य आत्मा हूँ। मैं ये साकार पञ्च तत्वों की मूर्ति नहीं हूँ, मैं तो निराकार निर्विकार आत्मा हूँ। जन्म और मृत्यु मुझे नहीं सता सकते। जन्म और मृत्यु इस शरीर के ही होते रहते हैं। मेरा सच्चा स्वरूप तो शुद्ध चैतन्य है प्रेम स्वरूप परमपिता परमात्मा का अमृत पुत्र आत्मा मृत्यु, रोग, शोक, अज्ञान के भय से पूर्णतया मुक्त रहता है।

भला निराकार को क्या रोग, क्या शोक, क्या काम, क्या क्रोध, क्या लोभ, क्या मोह, क्या अहंकार हो सकता है ? यह सब साकार के ही भागीदार हैं। अमृतशक्ति, परम पवित्र, पवित्रता सत्य प्रेम का नित्य स्रोत आनन्द रूप, ज्ञान रूप शुद्ध चैतन्य निराकार आत्मा के भागीदार नहीं हो सकते।

आत्मा में तो अहम का स्थान लेशमात्र भी नहीं होना चाहिए। आत्मा सर्वत्र आत्मा ही है। शरीरों के रूप, शरीरों के आकार, मन की मनोवृत्ति, अलग-अलग शरीरों की शक्ति, मन के गुण अलग-अलग हैं, बुद्धि का विकास अलग-अलग है परन्तु शुद्ध चैतन्य आत्मा का न तो कोई रूप है, ना कोई आकार है सर्वत्र आत्मा निराकार है उसका कोई विकास नहीं, कोई ह्रास नहीं। आत्मा सर्वत्र एक रस है और अमृत स्वरूप है।

अहम निश्चय ही सत्य प्रेम की वास्तव में मृत्यु ही है जितसे द्विन्द्ध, जितने झगड़े, जितने फसाद, स्वार्थ, घृणा, भ्रष्टाचार, व्यभिचार, अनाचार, अत्याचार नजर आते हैं, वो संकुचित अहम भाव के कारण से सीमित, संकीर्ण, भौतिक क्षेत्र के अन्दर ही आते हैं शुद्ध चैतन्य आत्मा के क्षेत्र के अन्दर नित्य आनन्द, नित्य प्रेम, नित्य ज्ञान, नित्य शान्ति का अविनाशी साम्राज्य नित्य से ही स्थापित होता चला आ रहा है।

प्रेमचन्द की—कर्मभूमि

संकलन कर्ता :—
जे० पी० मलिक 'प्रभाकर'
रा० उ० वि०, भैंसवाल

1. काम करके उपार्जन करना शर्म की बात नहीं, दूसरों का मुंह ताकना शर्म की बात है।
2. कठिनाइयों पर विजय पाना पुरुषार्थी मनुष्यों का काम है, मगर कठिनाइयों की सृष्टि करना, अनायास पांवों में कांटे चुभाना कोई बुद्धिमानी नहीं।
3. आदमी को जीवन क्यों प्यारा होता है, इसलिए नहीं कि वह सुख भोगता है। जो सदा दुःख भोगते हैं, रोटियों के लिए तरसा करते हैं, उन्हें जीवन कुछ कम प्यारा नहीं होता। हमें जीवन इसलिए प्यारा होता है कि हमें अपनों का प्रेम और दूसरों का आदर मिलता है। जब इन दोनों में से किसी एक की भी मिलने की आशा नहीं, जीना वृथा है ?
4. आदमी वह है जो जीवन का लक्ष्य बना ले और जिन्दगी भर उसके पीछे पड़ा रहे। कभी कर्त्तव्य से मुंह न मोड़े। यह क्या कि कटे हुए पतंग की तरह जिधर हवा उड़ा ले जाये, उधर चला जाये।
5. बच्चे मार से जिद्दी होते हैं। बूढ़ों की प्रकृति कुछ बच्चों ही सी होती है। बच्चों की भांति उन्हें भी तुम सेवा और भक्ति से अपना सकते हो।
6. कलंकित होकर जीने से मर जाना कहीं अच्छा है।
7. जीवन को सफल बनाने के लिए शिक्षा की जरूरत है, डिग्री की नहीं।
8. कायरता की भांति वीरता भी संक्रामक होती है। शुभ उद्योग संक्रामक होता है। भय की भांति साहस भी संक्रामक होता है।
9. मनुष्य पर जब प्रेम का बन्धन नहीं होता, तभी वह व्यभिचार करने लगता है। भिक्षुक द्वार-द्वार इसीलिए जाता है कि एक द्वार से उसकी क्षुधा-तृप्ति नहीं होती।
10. सब्र का फल मीठा होता है।
11. रोने के लिए हम एकान्त ढूंढ़ते हैं, हंसने के लिए अनेकान्त।

12. स्त्रियों को संसार अबला कहता है। कितनी बड़ी मूर्खता है। मनुष्य जिस वस्तु को प्राणों से भी प्रिय समझता है, वह स्त्री की मुट्ठी में है।

13. पुरुषार्थ वह है, जो समय को अनुकूल बनावे।

14. जो विवाह को धर्म का बन्धन नहीं समझता है, उसे केवल वासना की तृप्ति का साधन समझता है, वह पशु है।

15. विष मधु के साथ भी अपना असर करता है।

16. बच्चों को गमलों के पौधे बनाने की जरूरत नहीं, जिन्हें लू का एक झोंका भी सुखा सकता है। इन्हें तो जंगल के वृक्ष बनाना चाहिए, जो धूप और वर्षा, ओले और पाले किसी की परवाह नहीं करते।

17. प्रेम के अभाव में सुख कभी नहीं मिल सकता।

18. धर्म की क्षति जिस अनुपात से होती है, उसी अनुपात से आडम्बर की वृद्धि होती है।

19 दुःखी आशा से ईश्वर में भक्ति रखता है, सुखी भय से। दुःखी पर जितना ही अधिक दुःख पड़े, उसकी भक्ति बढ़ती जाती है, सुखी पर दुःख पड़ता है तो वह विद्रोह करने लगता है। वह ईश्वर को भी अपने धन के आगे झुकाना चाहता है।

20. जब मौत आती है आदमी मर जाता, जानबूझ कर आग में नहीं कूदा जाता है।

शोक समाचार

गुरुकुल के भूतपूर्व अध्यापक श्री वैद्य देवदत्त जी की मृत्यु तथा श्री जयपाल जी आर्योपदेशक के बड़े पुत्र के आकस्मिक निधन पर समाज सन्देश परिवार गहरी चिन्ता व्यक्त करता है।

भगवान से प्रार्थना है कि दोनों परिवारों को यह असह्य दुःख सहन करने की शक्ति तथा मृतात्माओं को सद्गति प्रदान करें।

—सम्पादक
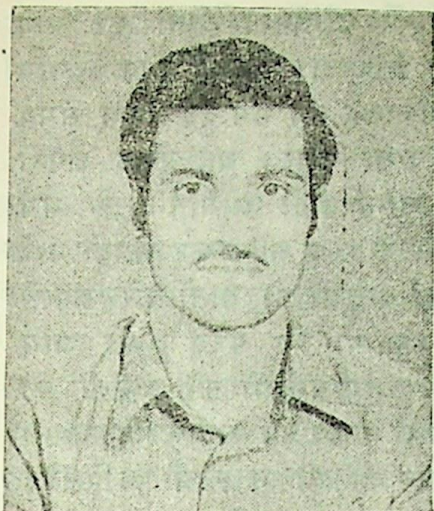
दयानन्द मठ का विवाद

लेखकः - सत्यवीर सिंह मलिक
236 आर, मॉडल टाउन,
रोहतक

●

पाठकों से निवेदन है कि मैं यह लेख किसी व्यक्तिगत लगाव या द्वेष के कारण नहीं लिख रहा हूँ। 18 मार्च 1979 को दयानन्द मठ में मैंने जो दृश्य देखा और नए पदाधिकारियों को मनोनीत करते समय जो संकीर्णता बरती गई उससे मुझे हार्दिक दुःख हुआ। जो आर्यजन उस दिन उपस्थित नहीं थे उन तक निषपक्ष रूप से वहां की झांकी प्रदर्शित करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं।

—लेखक

★

18 मार्च 1979 को मुझे दयानन्द मठ में हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव देखने का अवसर मिला। पहले मैं आर्य जनता को यह बता देना चाहता हूँ कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की स्थापना 'पंजाब प्रतिनिध सभा में फूट के परिणाम स्वरूप हुई थी। इस लिए मैं सोचता था कि जो वर्ग-विशेष 'हरयाणा प्रतिनिधि सभा' का निर्माता है उसमें सौहार्द और प्रेम का वातावरण देखने को मिलेगा; लेकिन मेरी सभी आशाएं धूमिल हो गईं।

यज्ञशाला के अन्दर चुनाव की व्यवस्था की गई थी। द्वार (दरवाजे) के सामने झज्जर गुरुकुल के दो होनहार युवकों को तैनात किया गया था जो प्रवेश-पत्र देख कर ही यज्ञशाला में प्रवेश करने देते थे, लेकिन मुझे उनकी ईमानदारी पर उस समय शक हुआ जब एक गोहाना कालेज के प्रोफेसर सदस्य न होने पर भी अन्दर बैठे हुए देखे गये और एक भालौट गांव के शास्त्री के पास मैंने श्री बलबीर सिंह जी भापड़ौदा का प्रवेश-पत्र देखा। इसी प्रकार अन्य अनेकों व्यक्तियों को दूसरे व्यक्तियों के प्रवेश-पत्र देकर अन्दर बैठा दिया गया था।

स्वामी रामेश्वरा नन्द भूतपूर्व प्रधान और स्वामी ओमानन्द दोनों को आगे चौकियों पर बैठाया गया था। स्वामी रामेश्वरानन्द बार-बार शान्ति पूर्वक चुनाव सम्पन्न करने की अपील कर रहे थे, लेकिन यह शान्ति अचानक तब भंग हुई जिस समय एक अज्ञात नवयुवक ने दयानन्द मठ को ट्रस्ट होने का दावा किया। यह युवक अपनी बात समाप्त भी नहीं कर पाये थे कि तभी धीर, वीर, शान्त योगी ओमानन्द के धैर्य का बांध टूट गया और उन्होंने उस युवक को बड़ी स्फूर्ति के साथ लपक कर झपट्टा मार बैठाना चाहा। इस सनसनीखेज समाचार से अनेकों आर्य बन्धुओं को दांतों तले ऊंगली दबा कर पछताना पड़ा। उन्हें यह विश्वास ही नहीं हो रहा था कि परम पूजित आर्य नेता इतने स्वार्थ-पतन की ओर अग्रसर हो सकते हैं कि आर्य बन्धुओं की बपौती को व्यक्तिगत कब्जे में कर लेंगे। सभा में धक्कम-धक्का तथा तानव का वातावरण उत्पन्न हो गया। बजट की बजाय इस सभा में मुख्य मुद्दा चुनाव का ही था। श्री कपिलदेव शास्त्री ने स्वामी रामेश्वरानन्द का नाम प्रधान पद के लिए रखा जिसका अनुमोदन प्रो० सी० डी० वर्मा ने तुरन्त बाद कर दिया। श्री रघुवीर शास्त्री, स्वामी ओमानन्द को सर्वेसर्वा बनाने के पक्ष में थे, जिसका आर्य बन्धुओं ने जोरदार विरोध किया और श्री रघुबीर जी की दाल नहीं गल सकी। आर्य बन्धुओं का विरोध स्वामी ओमानन्द सहन नहीं कर सके और 'खिसियानो बिल्ली खम्भा नोचे' की भांति इस असहायवस्था में लाला दलीप सिंह का नाम न चाहते हुए भी प्रधान पद के लिए रखना पड़ा। लेकिन तुरन्त उठकर लाला जी ने अपने गुरु स्वामी रामेश्वरानन्द जी के समर्थन में अपना नाम वापिस ले लिया। अब स्वामी रामेश्वरानन्द अकेले ही बचे थे, लेकिन उनका प्रधान बनना स्वामी ओमानन्द को सहन नहीं हुआ, इसलिए वे आंखों में मगरमछ के आंसू भर कर हरियाणा छोड़ने की बात अलापने लगे। तभी प्रो० शेरसिंह लाऊड स्पीकर पर आये और कुछ कहना ही चाहते थे कि एक नवयुवक ने उनके खिलाफ "किसानों का दुश्मन" जैसे नारे लगाये और वह सभास्थल से बहिर्गमन कर गया।

स्वामी ओमानन्द के बड़े-बूढ़े अन्धे भक्त अनेकों हैं जो उनका विरोध सहन नहीं कर सकते। अतः झगड़ा होना स्वाभाविक ही था और वे अन्धे आर्य सज्जन स्वामी ओमानन्द को खरी-खोटी कहने वालों से भिड़ गये, लेकिन कुछ ही क्षणों बाद प्रो० शेर सिंह के बीच-बचाव से आर्य भाइयों के सिर फूटने से बच गये और फैसले का भार दोनों उक्त स्वामियों पर डाल अपने-अपने घरों की ओर प्रस्थान कर गये।

इस चुनाव से यह बात स्पष्ट हो गई कि हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्माण स्वार्थपूर्ति और पद-लिप्सा के कारण किया गया था जिसका स्पष्ट उदाहरण 18 मार्च का यह चुनाव, चुनाव न होकर मात्र ढकोसला था। झगड़े का मूल कारण वही बातें थीं जिनके पूर्ण न होने पर हरियाणा प्रतिनिधि सभा का गठन किया गया था। आर्य समाज के तथाकथित नेताओं को इस चुनाव से यह सबक लेना चाहिए कि अब

उनकी कली खुलने लगी है और वे अब रंगे सियारों की भांति आर्य जनता को अधिक दिन तक धोखे में नहीं रख सकते।

सभी आर्य बन्धुओं, नेताओं, सन्यासियों से मैं अपील करता हूँ कि यदि दयानन्द मठ के ट्रस्ट होने की बात में कुछ सच्चाई है तो वे इसे किन्हीं दो चार व्यक्तियों की की जागीर न बनने दें, इसका स्वामीत्व तो प्रतिनिधि सभा के हाथों में ही होना चाहिए। यह समाज की धरोहर है। अतः सार्वजनिक हित के लिए इसका प्रयोग करना अपेक्षित है।

यदि ये सन्यासी आर्यसमाज के हितैषी हैं तो वे स्वार्थ, लोभ, मोह को त्याग कर एक आदर्श स्थापित करें और नये होनहार आर्य नवयुवकों को आर्यसमाज की बागडोर सम्भलवा दें वरना युवा शक्ति उन्हें अधिक दिन तक मनमानी नहीं करने देगी।

अनमोल वचन

1. गीत की मिठास रचने वाले पर है।
2. मनुष्य, आशा निराशा के चक्कर में फंसा है।
3. उत्तेजना और गुस्से में कोई काम न करो।
4. महानता भविष्य की धरती से सर उठा कर, ऊपर को साफ़ नजर आ जाती है।
5. जब तक मनुष्य लोभ आदि से मुक्त न होगा, परम पद न पायेगा।
6. सुनो सब की, करो मन की।
7. आत्मशक्ति के सामने कोई शक्ति नहीं चलती।
8. जो आप चाहें यदि वह प्राप्त नहीं कर पाते तो आप उसे मनसे चाहते ही नहीं।
9. लोग जो आपके पीछे आपके बारे में कहते हैं उसी रूप में वे आपको जानते हैं।
10. स्वावलम्बी पुरुष अवश्य उन्नति प्राप्त करता है।

पुत्र जन्मोत्सव—
गीतों भरे वातावरण में

—श्री धीरेन्द्र विद्यालंकार
(हिन्दी विभाग)
दिल्ली वि० वि०, दिल्ली

हरियाणवी बोली में व्रज या अवधी के समान वह सरसता या मधुरता तो नहीं मिलती लेकिन फिर भी इस प्रदेश की जातियों, जो काफी सम्पन्न हैं तथा हिम्मतवर, की वाणी में प्रत्येक स्वर और व्यजन लगता है कि बल के साथ निकल रहे हैं और इसी कारण कर्कश होते हुए यह काफी आकर्षक है। डा० ग्रियर्सन ने तो मौजूदा हरियाणवी को ही खड़ी बोली माना था। लेकिन यह वह खड़ी बोली तो हो नहीं सकती जिसका मौजूदा रूप साहित्य में प्रचलित है।

हरियाणवी एक अकेली बोली नहीं है। यह कई बोलियों का समूह है - बांगड़ू, जाटू' चमरवा आदि। असल में हरियाणा के बोली के हिसाब से दो टुकड़े किये जा सकते हैं—बांगड़ और दूसरा ठेठ हरियाणवी। जाति के नाम पर भी जाटू या चमरवा बोली नाम दे दिया है वैसे मैं चौदह साल हरियाणा में रहा किन्तु इस आधार पर बोली में मैंने कोई अन्तर नहीं पाया।

हरियाणा में लोक-साहित्य बड़ी मात्रा में मिलता है। बात-बात पर आप कहावतों का ढेर तो सहज में ही प्राप्त कर लेंगे। यहां के लोक गीत—मत पूछिए कोई भी ऐसा पर्व या व्यवहार नहीं है जिसके लिए लोक-गीत न गाया जाता हो। काव्य शास्त्री बेशक उनमें शास्त्रीय गहनता न ढूंढ पाएं किन्तु लोक-जगत् का हर पक्ष इनमें अवश्य मिलेगा—इन गीतों में मुग्ध कर देने वाला जादू है। आइये हम इन गीतों को तीन भागों में बांट कर रसग्रहण कर लें।

पहले प्रकार के गीत हैं संस्कार सम्बन्धी। हम पायेंगे कि हरियाणवी लोकगीत षोडष (सोलह) संस्कारों में से कुछ को ही विषय बनाता है। बच्चे के जन्म से पहले के

गीतों में भावी माता जी के गर्भावस्था का चित्र नौ महीने के पूर्ण विवरण के साथ मिलता है। जरा सी झलक देखिए :—

"जी पहला मास जै लागिया दूध दही मन जाय,
मेरे अंगणा में अमला बो दिया।
दूजा मास जै लाग्यां मेरा निबुआं में मन जाय,
मेरे अंगणा में........
पांचवा मास जै लाग्या मेरा खीर पूड़ में मन जाय,
मेरे आंगणा में........
छठा मास जै लाग्या मेरा गूंद गिरी मन जाए,
मेरे अगणा में........ ॥

दूसरे गीत की झलक मात्र देखिए :—
कौड़ी कौड़ी बगड़ बुहारूं दर्द उठा सै कमर में।
हो राजीड़ा, इब ना रहूँगी तेरे घर में॥

ओजणा (इच्छा) के लिए भी गीत मिल जायेंगे—
"ससुरै तैं अरज करूं थी, मन्ने हरी हरी दाख मंगा दयो।"

और अब वह दिन आता है जब नया आगमन होता है। यदि पुत्र है तो गीतों के क्या कहने ... झरने बह निकलते हैं और यदि लड़की पैदा हो जाए—खुद लड़की ही रोती है :—

"म्हारे जनम में बाजें ठेकरे, भाई के मैं थाली।
बुड्ढा भी रोवै बुड्डिया भी रोवै रोवै हाली पाली॥

और पुत्र जन्मोत्सव पर गृहपति खूब खर्च करता है। ननद और भाभी में जो लेन-देन पर मजाक चलता है वह भी माधुर्य से भरा हुआ रहता है। छठी के दिन 'बिहाई' गाया जाता है और तो और उस पुत्र के माध्यम से नए साल पर परिहास भी किया जाता है—

चल नाना के दरबार लाला तन्नै बनड़ी बिहवाद्यां जी।
एक नानी दूजी मामी तीजी तन्नं मौसी बिहवाद्यां जी॥

छठी के दिन पिता को पुत्रोत्पत्ति की सूचना भेजने की उतावली इस कुलवधू कितनी जबर्दस्त है :—

'जीवा नाई का चालैगा ठुपरी चाल।
परेवा चालैगा तावला जी॥

पुत्र जन्म के बाद कई प्रकार के आचार बरते जाते हैं। उनके साथ 'नेग' की झड़ी सी लग जाती है। यों 'नेग' तो सभी को दिए जाते हैं परन्तु गीतों का अध्ययन कीजिए, पता चलेगा कि ननद के लिए पहले से ही निश्चितीकरण हो जाता है, जिसे वह गा गा कर मांगती है। और यदि उन्हें लगता है कि विलम्ब हो रहा है, उलाहने प्रारम्भ करने में उन्हें देर नहीं लगती है।

कुछ गीतों का अध्ययन और कीजिए, पाइएगा कि यहां दृष्टिहत (नज़र लगने) की शंका से पहले ही किसी वैद्य को बुला कर झाड़ा दिया जाता है। यहां एक बात मैं स्पष्ट कर दूं कि नज़र लगने की आशंका महज अन्धविश्वास नहीं है। हां सभ्यता के तगाजे में पढ़े लिखे लोग इस ओर से भले ही नाक भौं सिकोड़ कर मुंह फेर लें। हमारा सारा परिवार पढ़ा लिखा है—कालिज, यूनिवर्सिटी वगैरह में नियुक्ति सम्पन्न हैं—हमारी दीदी (लेक्चरर) को एक दिन अचानक बुखार पड़ गया—सब परेशान थे - बड़ी दवाईयां की गईं—पर कोई सुधार नहीं—मां, जो स्वयं काफी पढ़ी लिखी हैं—कुछ सरसों के दाने, लाल साबुत मिर्चें और चार पांच तीखी चीजें और भी लीं दीदी के माथे पर मन्त्र पढ़ते हुए घुमाया और जलते कोयले पर डाल दीं—ऐसा सात बार किया—मगर आश्चर्य की बात किसी भी प्राणी को छींक तक नहीं आई—यहां तक कि आग के पास बैठे छः साल के बच्चे को भी—बाद में मां ने बताया कि जब नज़र लगती है तभी ऐसा होता है—चूंकि मन्त्र पढ़ दिया गया था—वह जल्दी ठीक होने लगी—जो काम हफ्ते की दवाइयों ने नहीं किया—वह दो मिनट के मन्त्रों ने कर दिखाया। खैर, जो वैद्य इस वक्त आता है - फ़ीस कम नहीं ऐंठता है :—

"तू रे वैद्य का बेटा, बहुत ठगोरिया जी।
भोले हाकिम नै ठग लिया पति प्यारा जी॥"

अगर बच्चा 'मूल नक्षत्र' में पैदा हुआ है तो मूल शान्ति भी की जाती है। 'मूल' में उत्पन्न पुत्र का पिता इसकी शान्ति तक उसका मुंह नहीं देखता। 'शान्ति' की प्रक्रिया भी अजीब है। वह 27 खेड़ों की कंकड़ी इकट्ठी करता है— 27 कुओं का पानी लाकर 27वें दिन हल की हलस पर बैठ उसी पानी से वह नहाता है, फिर तेल में परछाई देख कर बच्चे के मुंह को देखता है, पीछे फूस की गोल कुण्डल के आकार की बनाई गई टाटो से उस बच्चे को निकाला जाता है। पिता जलघट (जधड़) पर मूमन्त मार कर भागता है, जो सामने आ जाता है 'मूल' उसी पर चढ़ जाते हैं और 'पहले' के शान्त हो जाते हैं। ऐसी शान्ति इस लिए की जाती है कि इसके बिना बच्चे के क्रोधी होने या उसके अनिष्ट की भी शंका रहती है।

देखा आपने कितने चालाक होते हैं ये हरियाणवी !

ॐ ओ३म् ॐ

जिन्हें हम भुला न सकेंगे :—

(गुरुकुल भैंसवाल के पहले आचार्य)

धुन के धनी
आचार्य युधिष्ठिर

(वर्तमान स्वामी व्रतानन्द जी महाराज)
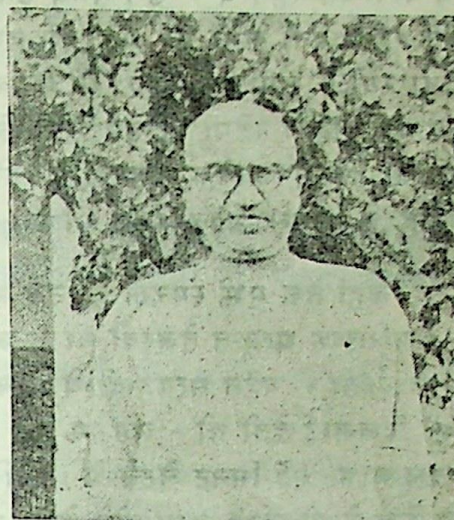
हरियाणा के सन्त महात्मा भक्त फूल सिंह जी ने 23 मार्च, 1920 में गुरुकुल भैंसवाल जिला रोहतक की स्थापना भैंसवाल गांव के जंगलों में की, परन्तु उनको उस गुरुकुल के संचालन के लिए 1922 तक कोई योग्य आचार्य न मिल सका।

गुरुकुल के लिए आचार्य की प्राप्ति के लिए वे स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के पास गये तथा अपनी इच्छा उनके सामने प्रकट की। स्वामी जी ने अपने परम योग्य शिष्य बाल ब्रह्मचारी युधिष्ठिर को आज्ञा दी कि वे गुरुकुल भैंसवाल में जा के वहां पर आचार्य पद को सम्भाले।

भक्त जी की उत्कट इच्छा को जान तथा अपने परम गुरु स्वामी श्रद्धानन्द के आदेश को प्राप्त कर ब्रह्मचारी युधिष्ठिर जी स्नातक गुरुकुल कांगड़ी, सन् 1923 में गुरुकुल भैंसवाल के आचार्य बने और वे 1925 तक ही इस पुण्य भूमि में रहे

इस थोड़े से समय में ही उन्होंने गुरुकुल भैंसवाल की काया पलट दी। "शाखा गुरुकुल भैंसवाल" से "गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा" यह नाम उन्हीं का रखा हुआ है यहां आके आचार्य युधिष्ठिर जी ने आचार शिक्षा और आर्य शिक्षा पद्धति पर विशेष ध्यान दिया।

उस समय के छात्र उनके जीवन से अत्यन्त प्रभावित थे। प्रात: काल से लेके सायंकाल तक वे ब्रह्मचारियों को किसी न किसी काम में लगाये रखते थे। ब्रह्मचारी भी उस समय यह अनुभव करते थे कि शायद हमारा काम जीवन निर्माण करना ही है। वस्तुत: वह काल दैवीकाल या ऋषि काल कहा जाता था।

चरित्र को ओर उनका बड़ा ध्यान रहता था। वे छात्रों की प्रत्येक गतिविधि से स्वयं परिचित रहते थे। उस समय उनकी ताड़ना कभी कभी बड़ी कठोर हो जाती थी, परन्तु वह ताड़ना कभी भी क्रोधवश होके न होती थी, वे उस समय उस ताड़ना को ब्रह्मचारियों के सुधार के लिए आवश्यक मानते थे। चाहे वह उचित रही हो या अनुचित परन्तु यह मानना पड़ेगा वे उसे छात्र हितकारी मान कर ही करते थे। उनकी यह इच्छा रहती थी कि मैं प्रत्येक ब्रह्मचारी को ऋषि दयानन्द का अनुयायी बना दूं। वे ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त आज भी हैं।

जहां तक मुझे स्मरण है उस समय 1923 में वे तेतीस वर्ष की आयु के थे। उनका मस्तिष्क अत्यन्त तेजस्वी था। जो कोई उनको प्रथम बार देखता प्रभावित हुए बिना न रहता। बहुत सत्यवादी थे। कई बार अत्यन्त सत्य बोलने के कारण हानि होती हुई सी दिखलाई देती थी। लगभग उन दिनों वे रात्रि में पांच घंटे शयन करते थे। दिन में केवल मात्र 15 मिनट लेटते थे। प्रति समय लिखना, पढ़ना, ब्रह्मचारियों को उत्तम शिक्षा देना ये ही उनके काम होते थे। उनको उस समय कभी रोगी नही देखा गया।

उनके समय जो अध्यापक गुरुकुल में आये वे भी प्राय: ब्रह्मचारी से दिखलाई देते थे। लोक व्यवहार में निपुण न थे अतः इस विषय में उनकी कभी-कभी भूल हो जाती थी।

वे कभी-कभी अपने प्रवचनों में बतलाया करते थे कि उनकी माता उनको विवाहित करने का बहुत प्रयत्न करती थी, पिता जी की भी इच्छा ऐसी ही थी परन्तु वे अपनी उत्कट अभिलाषा से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन ही करते रहे।

जब तक गुरुकुल भैंसवाल में रहे ऐसा प्रतीत होता था कि वे सदा यहीं रहेंगे। जब गये अनासक्त की तरह एकदम गुरुकुल को छोड़ कर 1926 में चित्तौड़ में गुरुकुल खोल दिया। जिसका वे इस वृद्धावस्था में भी संचालन कर रहे हैं।

महात्मा नारायण स्वामी से उन्होंने ब्रह्मचर्याश्रम समाप्त कर सन्यास लिया। उस समय से युधिष्ठिर के स्थान पर 'व्रतानन्द' नाम से प्रसिद्ध हुए हैं। इनके पिता ला० केदारनाथ लाहौर निवासी 16 वर्ष तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री रहे। इनके दो भाई जगदीश तथा डा० विद्यासागर थे। डाक्टर विद्या सागर बहुत अच्छे पीयूष-पाणि वैद्य थे।

गुरुकुल भैंसवाल से जाने पर गुरुकुल चित्तौड़गढ़ के लिए इन्होंने सारे पंजाब में घूम-घूम कर चन्दा किया, प्रचार किया।

प्रचार करने में, बच्चों को समझाने में इतने लवलीन हो जाते थे कि अपना खाना पीना भी भूल जाते थे। यौवन काल में स्वयं भी आसन करते थे, जो कोई इनको मिल जाता उसे आसन सिखाते थे।

'ओ३म्' नाम के बड़े दीवाने थे। बड़े ईश्वर विश्वासी थे। किसी भी काम को करने में घबराहट अनुभव नहीं करते थे और न अब ही अनुभव करते हैं। सारे संसार को महर्षि दयानन्द का अनुयायी बनाने का स्वप्न लेते रहते हैं।

गुरुकुल कांगड़ी ने जो अनेक रत्न उत्पन्न किए हैं, उन रत्नों में सर्वोत्तम रत्न इनको समझना चाहिए।

ये अत्यन्त निष्ठावान लगन वाले महा पुरुष हैं। सारे गुरुकुलों से इनको प्रेम है। महर्षि दयानन्द से प्रतिपादित पाठ्य-प्रणाली से अतिरिक्त किसी भी पाठ्य-प्रणाली को उत्तम नहीं मानते हैं।

आज भी ये दाधिया, नरेला गुरुकुलों के कुलपति हैं, जोकि कन्याओं के लिए खोला गई है।

यद्यपि अब चलने फिरने में असमर्थ हो चुके हैं और नेत्र ज्योति भी बहुत कम रह गई है, इस अवस्था में भी यदि कोई नवीन गुरुकुल खोलने के लिए कहे तो अपनी सेवायें देने के लिए सदा उद्यत रहते हैं। प्रति समय इनके चेहरे पर प्रसन्नता छाई रहती है। यह इनके महात्मपन का चिह्न है। खाली समय भगवान् के स्मरण में व्यतीत रहते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज इनके आचरण से गुरुकुल कांगड़ी में इनके पढ़ने के समय भी प्रभावित थे।

उन्होंने केवलमात्र ब्रह्मचारी युधिष्ठिर को ही छोटे ब्रह्मचारियों के आश्रम में जाकर उनको उत्तम शिक्षा देने की आज्ञा दी हुई थी, यह इनके यौवन काल से ही सदाचारी होने का परम प्रमाण है।

एक बार जब ये पढ़ते थे इनके साथी छात्रों ने इनके सम्मान की ईर्ष्या मे इनको पीटना चाहा परन्तु आत्मिक शक्ति से ओत-प्रोत होके इन्होंने कहा कि हे प्रभो ! मेरे इन भाइयों की बुद्धि में सुधार हो, इससे सारे प्रभावित हुए तथा इनसे क्षमा-याचना करने लगे।

लिखने का भाव यह है कि इनका जन्म ही गुरुकुलों के उत्थान के लिए हुआ है। गुरुकुल भैंसवाल या उस समय के इनके शिष्य जिन्होंने इनसे शिक्षा प्राप्त की है वे कभी भी स्वामी जी की ऊत्तम शिक्षा को भुला नहीं सकेंगे।

ये आर्य समाज के गुरुकुलों के जगमगाते हीरे हैं। इनका सारा जीवन उपकार में अर्पित हुआ है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि स्वामी जी ने अपने जीवन की सुरक्षा के लिए, सुख के लिए कभी चिन्तन भी नहीं किया है।

मेरी परम प्रभु से बार-बार यही प्रार्थना है कि अमूल्य जीवन वाले महान् तपस्वी महर्षि को प्रभु शतायु बनावे।

—सम्पादक

भारतीय धर्म स्वातन्त्र्य विधेयक बिल और आर्यसमाज

भारत के ईसाइयों में असन्तोष क्यों ?

श्री ला० रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता में आर्यसमाज दीवानहाल द्वारा चांदनी चौक दिल्ली में सार्वजनिक सभा

●

दिल्ली 6 मई—आर्य समाज अपने जीवनकाल में अन्याय-अनाचार पाखण्ड के प्रति संघर्षशील रहा है। श्री ओमप्रकाश त्यागी, एम० पी० का धर्म स्वातन्त्र्य विधेयक लोकसभा में प्रस्तुत होने पर सम्पूर्ण भारत में व्यापक चर्चा का विषय बन चुका है। विधेयक के पक्ष में चारों धाम के जगद्गुरु शंकराचार्यों ने भी एक स्वर से समर्थन किया है। विरोध में केवल ईसाई सम्प्रदाय ही अपने लिए खतरा समझ रहा है, ऐसा क्यों ?

श्री बा० सोमनाथ जी एडवोकेट सुप्रीमकोर्ट ने विधेयक के कानूनी पहलू पर प्रकाश डाला है।

श्री त्यागी जी ने अपने विधेयक को स्पष्ट करते हुए घोषणा की, कि यह बिल किसी धर्म सम्प्रदाय समाज या व्यक्ति के विपरीत न होकर जन कल्याण की भावना से लाया गया है।

श्री लाला रामगोपाल जी शाल वाले ने विधेयक का समर्थन करते हुए ईसाई-समाज की बौखलाहट पर सरकार द्वारा नियुक्त नियोगी कमेटी की रिपोर्ट का वर्णन कर उनकी भारत विरोधी राजनैतिक गतिविधियों की चर्चा की। साथ ही भारत सकार को चेतावनी भी दी, यदि निकट भविष्य में सरकार सावधान न हुई तो विदेशी पादरियों की करोड़ों रुपयों की विदेशी मदद से सारा देश ईसा की जमात बन जायेगा और ये बहुमत के आधार पर देश में अपना शासन बनायेंगे। अतः यह विधेयक जोर-जबर, लोभ-लालच, बलात् धर्म परिवर्तन का विरोधी है।

आज सारा राष्ट्र अराष्ट्रीय गतिविधियों से चिन्तित है। यह विधेयक बहुत पहले ही सरकार को देशव्यापी बनाकर पास कराना चाहिए था।

अतः आवश्यकता है कि सारा हिन्दू (आर्य) जगत् इस विधेयक का समर्थन कर राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री को तार-पत्र द्वारा अपनी आवाज पहुँचाकर श्री त्यागी जी को शक्ति प्रदान करें।

—सच्चिदानन्द शास्त्री,
वरिष्ठ उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा

रोहतक की जाट संस्थाएं और उनका भविष्य ?

—धर्मवीर सिंह मलिक, एडवोकेट
रोहतक

सड़सठ वर्ष पहले सन् 1913 में मास्टर बलदेव सिंह ने आर्यसमाज की विश्व-विख्यात संस्थाओं गुरुकुल कांगड़ी और डी० ए० वी० कालेज लाहौर की नकल करते हुए, रोहतक शहर से तीन मील पूर्व में जाट-ऐंग्लो वैदिक संस्कृत हाई स्कूल की स्थापना की। इस संस्था ने हरियाणा, पंजाब और भारत को अनेक राजनीतिज्ञ, पुलिस और प्रशासनिक सेवाओं के उच्च पदों पर काम करने वाले अधिकारी तथा रणक्षेत्र में अपनी छाप छोड़ने वाले अनेक शूरवीर दिए। उदाहरण के तौर पर 1962 में चीन के विरुद्ध अरुणाचल-प्रदेश की सेला पहाड़ियों में शहीद होने वाले ब्रिगेडियर होशियार सिंह तथा स्यालकोट सैक्टर में उत्कृष्टतम शौर्य प्रदर्शन के लिए परमवीर चक्र प्राप्त करने वाले मेजर होशियार सिंह आदि।

सन् 1944 में स्वर्गीय चौ० छोटू राम ने जाट कालेज रोहतक की स्थापना की। उस समय के अम्बाला डिवीजन में यह सबसे पहला प्राइवेट कालेज था। उस समय तक हरियाणा के अधिकांश छात्र बी० ए० करने के लिए दिल्ली के रामजस कालेज या लाहौर के डी० ए० वी० कालेज में जाते थे।

9 जनवरी 1945 को सर छोटू राम स्वर्गवास हो गए, और संस्थाओं का कार्य-भार संभाला चौ० लालचन्द ने। 1947 में देश विभाजन हो गया तथा पंजाब से उखड़ कर आए हुए लोग बड़ी संख्या में मुसलमानों के स्थान पर हरियाणा में आबाद हुए, इसके साथ ही राज्य के हर बड़े-छोटे शहर में अनेकों कालेज स्थापित हुए, परन्तु तत्कालीन पंजाब में जाट कालेज रोहतक का अपना महत्व था।

मार्च 1954 में जाट कालेज रोहतक के प्रधान बने श्री उदय सिंह मान और सेक्रेटरी चौ० माडूसिंह मलिक। इन दोनों ने अपने कार्य काल में आठ वर्ष तक संस्था के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा छोटूराम कालेज ऑफ एजूकेशन और छोटूराम

पोलिटेकनीक की स्थापना की। संस्थाओं के लिए बहुत धन इकट्ठा करके तीन छात्रावास और दो कालेज भवन बनवाये। सन् 1954 से 1961 तक का काल इन संस्थाओं का स्वर्णिम काल कहा जाता है। 8 साल के अन्तराल के बाद 1968 में चौ० माडू सिंह इन संस्थाओं के प्रधान निर्वाचित हुए। अपने कार्यकाल में उन्होंने छोटूराम कालेज ऑफ एज्जूकेशन को हरियाणा राज्य का सबसे बड़ा ट्रेनिंग संस्थान बना दिया। चारों संस्थाओं में पांच हजार के लगभग छात्र शिक्षा ग्रहण करते थे।

8 जून 1976 को इन संस्थाओं का बृहत् वार्षिक अधिवेशन तत्कालीन हरियाणा के मुख्य मन्त्री श्री बनारसीदास गुप्त की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिसमें भूतपूर्व रक्षामन्त्री चौ० बन्सीलाल भी सम्मिलित हुए। उस समय के संस्थाओं के प्रधान और हरियाणा के भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री चौ० माडूसिंह के कहने पर, उस समय के मुख्यमन्त्री श्री बनारसीदास गुप्त ने हरियाणा के दोनों प्राइवेट पोलिटेकनीकों (छोटूराम पोलिटेकनीक और वैश्य पोलिटेकनीक रोहतक) का 95% खर्च हरियाणा राज्य सरकार द्वारा वहन करना स्वीकार कर लिया।

उसी दिन 8 जून 1976 को श्री चौधरी रामनरायण जाट संस्थाओं के प्रधान नियुक्त हुए। उस समय देश में आपातकालीन स्थिति लागू थी। इन संस्थाओं का भी आपातकाल शुरू हुआ। श्री रामनारायण ने 21 सदस्यों के स्थान पर संस्थाओं के विधान के विरुद्ध कार्यकारिणी के पचासों आदमियों को सदस्य नियुक्त किया और सबके इस्तीफे भी पहले ही ले लिए तथा कार्यकारिणी की दो बैठकों में सदस्यों को इस प्रकार धमकाया जैसे कि थानेदार किन्हीं अपराधियों को धमकाता है। श्री रामनारायण उस समय जिला सोनीपत के डिप्टी कमिश्नर थे। वे बेलगाम तो हैं ही बदजबान भी हैं। उनके इस व्यवहार से क्षुब्ध होकर अधिकांश सदस्य कमेटी की सदस्यता से त्याग-पत्र दे गए। जैसे—श्री प्रियव्रत ठेकेदार, श्री मनफूल सिंह भूतपूर्व एम० एल० ए०, श्री मेहरसिंह राठी (वर्तमान हरियाणा के निर्माण मन्त्री) आदि।

श्री रामनाराण ने प्रधान बनते ही इस राज्य की बेहतरीन संस्थाओं के लगभग स्टाफ के सभी सदस्यों से इस्तीफे तलब कर लिए और इस्तीफे भी ऐसे, जिन पर कोई तारीख नहीं देश में तो आपातकाल था ही इन संस्थाओं में भी श्री रामनारायण ने आपातकाल की घोषणा करते हुए 65 व्यक्तियों को बिना कसूर बेवजह निकाल बाहर किया। जिनमें तीन प्रिंसिपल भी थे, अनेकों प्राध्यापक, अध्यापक, क्लर्क, चपड़ासी, चौकीदार तक थे। उस समय संस्थाओं को स्थापित हुए 65 वर्ष हुए और इस लम्बे समय में कभी किसी कर्मचारी को विकट परिस्थियों में भी संस्थाओं से निकाला नहीं गया था। श्री रामनारायण ने एक ही झटके में प्रतिवर्ष एक व्यक्ति के हिसाब से 65 व्यक्तियों को बाहर सड़कों पर निकाल कर फेंक दिया।

देश में आपातकाल (एमरजेंसी) लागू होने के कारण इन बेसहारा व्यक्तियों के लिए अदालतों के दरवाजे भी बन्द थे। उन पर जो अत्याचार किए गये वह करुण-कहानी किसी के भी हृदय को द्रवित कर सकती है। छोटू राम कालेज आफ एज्जूकेशन के अकाऊटेन्ट श्री बनवारी लाल को सोनीपत हवालात में लेजा कर आठ दिन तक पीटा गया और उनसे एक ही बात कही गई कि तुम यह लिख कर दो कि संस्था के प्रधान चौ० माडूसिंह और सैक्रेटरी श्री चन्द्र सिंह तुम्हारे पास से एक लाख रुपया ले गए हैं। श्री बनवारी लाल ने अनेक यातना सहने के बाद भी यह लिख कर देने से इन्कार कर दिया। उनका कहना था कि जब वे मेरे पास से एक छोटा पैसा भी नहीं ले गये तब मैं असत्य क्यों बोलूं।

यह निकालने का क्रम वहीं समाप्त नहीं हो गया। 22 अगस्त 1976 को जो 65 व्यक्ति निकाले गये थे उनके अतिरिक्त मार्च 1978 में जाट स्कूल के अध्यापक श्री महेश्वर सिंह मलिक को 55 वर्ष की अवस्था में यह कह कर रिटायर कर दिया कि तुम प्रसन्नी देवी के भाई हो तथा कन्या गुरुकुल खानपुर और गुरुकुल भैंसवाल का काम करते हो। अच्छा शिक्षक होने के कारण स्टेट ने उन्हें अवार्ड दे रखा है और वे 62 वर्ष की अवस्था तक काम कर सकते हैं। उसके साथ ही जाट स्कूल के हैडमास्टर श्री अमराव सिंह तथा रणधीर सिंह की सेवाएं समाप्त करके उनकी पुनर्नियुक्ति की गई। 19 अक्टूबर 1978 को जाट स्कूल रोहतक के श्री सत्यवीर सिंह को बिना कारण बताये बर्खास्त कर दिया। चार अन्य अध्यापकों को नोटिस दे दिये गये. छोटूराम कालेज आफ एज्जूकेशन तथा जाट कालेज रोहतक के छः प्राध्यापकों के वेतन कम कर दिए गये। इन सारे अत्याचारों से हैरान-परेशान होकर रोहतक की जाट संस्थाओं के सभी कर्मचारियों ने महासंघ बनाया और हड़ताल करने का निश्चय किया। इस हड़ताल में चारों संस्थाओं के छात्र भी सम्मिलित हो गए। एक बड़ा जलूस श्री रामनारायण की कोठी पर पहुँचा और उनसे त्याग-पत्र मांगा। श्री रामनारायण ने जाट संस्थाओं के महासंघ के प्रधान श्री कर्ण सिंह राठी का त्याग-पत्र देते हुए बताया कि 19 मई 1977 को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के उपकुलपति और कुलाधिपति गवर्नर हरियाणा को त्याग-पत्र भेज चुका हूँ। इसकी पुष्टि में उन्होंने दूसरा त्याग-पत्र लिखकर दिया। संस्थाओं के सेक्रेट्री श्री बिशन सिंह भी सन् 1977 में ही त्याग-पत्र दे चुके थे। श्री रामनारायण ने सन् 1976 में प्रधान बनने के बाद जो 21 सदस्य कार्यकारिणी के नियुक्त किये थे उनमें से 19 त्याग-पत्र दे चुके हैं केवल दो सदस्य बचे हैं। मई 1977 को त्याग-पत्र देने के बाद भी इन जाट सस्थाओं की नाम निहाद कार्यकारिणी की बैठकें रोहतक शहर में उनकी कोठी पर होती रही हैं। श्री रघुबीर सिंह बलहारा, श्री करतार सिंह आदि कुछ वकील जो कभी कार्यकारिणी के सदस्य भी न चुने गये थे, न कनोनीत किये गये थे, असंवैधानिक रूप में अनेक प्रकार की गलत कार्रवाहियां करते रहे हैं। इन लोगों में कभी साहस नहीं हुआ कि जाट संस्थाओं में बैठकर कोई उचित निर्णय ले सकें।

25 फरवरी 1979 को जाट स्कूल रोहतक के प्रांगण में महासंघ की अपील पर चुनाव किया गया। चौ. बलदेव सिंह 'प्रधान' तथा वैद्य किताब सिंह को 'मन्त्री' सर्वसम्मति से निर्वाचित किया गया। लेकिन 5 व्यक्तियों के विरुद्ध कोर्ट द्वारा नोटिस जारी किया गया था जिस कारण श्री किताब सिंह को कोर्ट की दृष्टि से कानून सम्मत नहीं ठहराया जा सकता था अतःएव उनकी इच्छानुसार श्री नरेन्द्र सिंह एडवोकेट को मन्त्री का कार्यभार सौंप दिया गया है। इस कमेटी की एक विशेष बैठक 26 मई 19 9, शनिवार को जाट कालेज में हुई जिसमें आगामी तीन वर्ष के लिए 30 जून 1979 को कमेटी का नया चुनाव कराने का महत्वपूर्ण फैसला किया गया है।

उधर हरियाणा सरकार ने बी० एड० ट्रैनिंग बन्द करने का निर्णय लिया है। जिस कारण 'सी० आर० कालेज ऑफ एज्यूकेशन' के अस्तित्व और स्टाफ के भविष्य का प्रश्न भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। 'सी० आर० पोलिटेकनीक कालेज' में भी प्रिंसिपल के बारे में विवाद चल रहा है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि संस्थाओं में अब भी विद्रोह की चिंगारी सुलग रही है और वह किसी भी हवा के झोंके के साथ अचानक उग्ररूप धारण कर सकती है।

मैं कमेटियों के विवाद में न पड़ कर जिन व्यक्तियों के हाथ में अब संस्थाएं हैं और भविष्य में आयेंगी उन सब से अपील करता हूँ कि वे परमात्मा के नाम पर 'मनसा, वाचा, कर्मणा' इन संस्थाओं को बर्बाद होने से बचायें। पारस्परिक द्वेष एवं दलगत भावना से ऊपर उठ कर संस्था में काम करें। कोई भी अधिकारी आन्तरिक या बाह्य बहकावे व दबाव में आकर कोई गलत काम न करे। वे अपनी जिम्मेवारी को समझें तथा एक एक कदम फूंक-फूंक कर रखें! इन सस्थाओं को राजनीति का अखाड़ा न बनायें!

अन्त में मैं हरियाणा सरकार से भी आशा करता हूँ कि इन संस्थाओं की व्यवस्था सुधारने के लिए शीघ्र ही यथोचित कदम उठाए ताकि पूर्वजों द्वारा संस्थापित ये शिक्षण संस्थाएं बर्बाद होने से बच सकें।

❀ ओ३म् ❀

1654, कूचा दखनीराय,
दरिया गज, दिल्ली

"धन्यवाद प्रकाश"

इस वर्ष मेरी 'हीरक जयन्ती' (75 वर्ष पूर्ण होने पर) के शुभावसर पर देश-विदेश के हजारों बहन-भाइयों ने एवं बहुत सी आर्य समाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं, आर्य कुमार समाजों, सन्यासी महात्माओं, उपदेशकों तथा गणमान्य व्यक्तियों ने अपनी-अपनी शुभ कामनाएं तथा आशीर्वाद भेजे हैं। उन सभी का मैं सच्चे हृदय से धन्यवाद करता हूँ। ईश्वर मुझे सामर्थ्य तथा आयु देवें कि मैं आर्य जगत की पहले से अधिक सेवा कर सभी की कृपा का पात्र बन सकूं।

—देवव्रत धर्मेन्दु आर्योपदेशक

❀ ओ३म् ❀

आर्यसमाज के ओजस्वी नेता

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु

की

हीरक जयन्ती के शुभ अवसर पर

लेखक—मूलचन्द गुप्त

संयोजक, पं० देवव्रत धर्मेन्दु हीरक जयन्ती समारोह, दिल्ली

●

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु :—

श्री पण्डित देवव्रत जी धर्मेन्दु जिनकी आज हीरक जयन्ती मनाई जा रही है देखने में एक व्यक्ति हैं। वह आर्य समाज के अनथक नेता और उपदेशक हैं। लेखक, ओजस्वी वक्ता, समाज-सुधारक और देश-भक्त हैं। वह सभी के मित्र हैं। परन्तु इन सबसे भी बढ़ कर आप हैं :—

त्याग और सेवा की मूर्त्ति—

त्याग, तपस्या और उदारता की साक्षात मूर्ति हैं। इस समारोह में सम्मिलित होकर श्री पण्डित जी के प्रति श्रद्धा के फूल भेंट करना मेरे लिए सौभाग्य का अवसर है।

श्री पण्डित जी का सम्बन्ध आर्यसमाज से है। आर्य जाति की सेवा करना आपका उद्देश्य है परन्तु गरीबों और दीन-दुखियों के लिए उनकी महान् सेवाओं को भी कोई भूल नहीं सकता।

श्री पण्डित जी की सहायता और आशीर्वाद से कितने ही निर्धन बच्चे शिक्षा प्राप्त करके अपने पांव पर खड़े हुए और कितनी ही अबलाओं की आपने खामोशी से सहायता की। इसका अनुमान करना कठिन ही नहीं, असम्भव भी है। आज के संसार में जहां प्राय: मनुष्य पैसे और यश की प्राप्ति के लिए लड़ते-झगड़ते दिखाई देते हैं श्री पण्डित देवव्रत जी का जीवन त्याग और निस्वार्थ सेवा के लिए एक शानदार उदाहरण है।

देश सेवक ग्रौर समाज-सुधारक के रूप में—

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु देश के उस भाग में 13 अप्रैल 1904 को पैदा हुए जो ग्राज पाकिस्तान के नाम से विख्यात है। जलालपुर कीकना जिला जेहलम का एक ग्राम है ग्रौर यह वह जिला है जहां के लोग ग्रपनी वीरता ग्रौर देशभक्ति के लिए समस्त देश में प्रसिद्ध हैं।

श्री पण्डित जी बचपन में ही स्वतन्त्रता ग्रान्दोलन से प्रभावित हुए थे। शिक्षा प्राप्त करने के बाद ग्राप रेलवे में भरती हुए। इन्होंने ग्रपने विभाग में भ्रष्टाचार के विरुद्ध ग्रावाज उठाई। उन्हीं दिनों प्रिन्स ग्राफ वेल्ज भारत ग्राये थे। कांग्रेस ने उनका पूर्ण बहिष्कार करने की घोषणा की। श्री पण्डित जी ने उस समय सरकारी नौकरी को लात मार दी ग्रौर खुल कर देश के स्वतन्त्रता ग्रान्दोलन में शामिल हो गये। सर्वप्रथम ग्राप "नेहरू स्वयं सेवक दल" में प्रविष्ट हुये। बाद में ग्राप ग्रपनी क्रियाशीलता एवं कार्य-निष्ठा से दल के कप्टन हो गये। 1920 के राष्ट्रीय ग्रान्दोलन में ग्राप जगह जगह जाकर सार्वजनिक सभाग्रों में भाषण देते थे। देश सेवा की यह भावना ग्राप में पहले की भान्ति ग्राज भी है। ग्रापका कहना है कि मुझे महर्षि स्वामी दयानन्द की शिक्षा ने देश सेवा के लिए प्रभावित किया।

समाज-सुधारक :—

श्री पं० देवव्रत जी को इस बात का श्रेय मिलना चाहिए कि जब ग्रारम्भ में लक्ष्मीनारायण मन्दिर के प्रबन्धकों ने यह निश्चय किया था कि मन्दिर में केवल स्वर्ण हिन्दू ही प्रवेश कर सकेंगे तो श्री धर्मेन्दु जी ने सनातन धर्म के नेता पं० मालवीय जी ग्रौर गोस्वामी गनेशदत्त जी से मिल कर उन्हें इस बात के लिए प्रेरित किया कि हरिजनों के लिए मन्दिर के द्वार बन्द न किये जायें।

शिमला के सनातन धर्म मन्दिर में भी ग्रापने हरिजनों को यही ग्रधिकार दिलाया। ग्रापने महात्मा गांधी के हरिजनोद्धार ग्रान्दोलन में निर्भयता से भाग लिया। इस कार्य के लिए ग्राप शिमला से दिल्ली ग्रा गये ग्रौर लाला लाजपतराय जी द्वारा दलितोद्धार सभा में उपदेशक पद पर सक्रिय रूप से कार्य करने लगे। ग्रापने श्रमजीवी ग्राश्रम के संचालन का भार भी सम्भाला ग्रौर जंगपुरा एवं नई दिल्ली में दो हरिजन पाठशालाएं खोलने में भाग लिया। इसी तरह ग्रापने नांगलोई में हरिजनों को कुए पर चढ़ने का ग्रधिकार दिलाया।

रामपुर स्टेट के शासक का भाई दो हजार हरिजनों को मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र रच रहा था। धर्मेन्दु जी तुरन्त वहां पहुँचे ग्रौर ग्रपने जीवन को खतरे में डाल कर भी ग्रापने मुकाबला किया ग्रौर यह षड्यन्त्र विफल कर दिया।

आर्यसमाज और शिक्षा के क्षेत्र में :—

श्री पण्डित देवव्रत जी का कहना है कि मैंने समाज सेवा और देशभक्ति का पाठ आर्यसमाज से पढ़ा है। 1915 में आपने अपनी सेवा पूर्ण रूप से आर्यसमाज को समर्पित कर दी थी। उस समय से आज तक आपने :—

आर्यसमाज की अनेक संस्थाओं में अध्यापक, उपदेशक, प्रचारक और प्रबन्धक के रूप में काम किया है और कर रहे हैं। आपका विश्वास है कि शिक्षा द्वारा ही हिन्दू जाति का उत्थान करके उसकी रक्षा की जा सकती है और यह शिक्षा भी सार्थक रूप से ठीक होनी चाहिए। युवकों को हिन्दी और संस्कृत पढ़ कर वेद आदि धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए और अपनी प्राचीन संस्कृति और इतिहास पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।

अध्यापक के रूप में आप अपने विद्यार्थियों में जाति, धर्म, संस्कृति और देशप्रेम की भावना जागृत करते रहे हैं। शिमला मे आप डी० ए० वी० स्कूल ठियोग व पच्छाद के प्रधान अध्यापक रहे। दिल्ली के डी० ए० वी० स्कूल मे धार्मिक शिक्षा के पद पर काम करते रहे। 1935 से 1964 तक आपका सम्बन्ध डी० ए० वी० हायर सेकेण्डरी स्कूल चित्रगुप्त रोड़ से रहा। इसके साथ-साथ आप धर्म प्रचार का कार्य भी करते रहे। 1925 में महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी मथुरा, 1933 में अर्ध शताब्दी उत्सव अजमेर, हैदराबाद धर्म युद्ध (1939), सिन्ध सत्याग्रह (1945–46), सार्वदेशिक आर्य महा-सम्मेलन (1944–61) आदि की सफलताओं में आपका उल्लेखनीय योगदान रहा।

निःस्वार्थ और त्याग :—

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु सार्थक रूप से निःस्वार्थ सेवा और त्याग की जीती-जागती मूर्ति हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य कुमार परिषद्, आर्य बालगृह, हिन्दी साहित्य सम्मेलन और अन्य कई संस्थाओं म आपका घनिष्ठ सम्बन्ध रहा और है। इन संस्थाओं की गति-विधियों मे सक्रिय भाग लेने के कारण आपको देश और समाज के महान् व्यक्तियों के निकट आने और उनके साथ मिलकर काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इन महान् व्यक्तियों में श्री घनश्याम दास गुप्त, महाशय कृष्ण, स्वामी चिदानन्द जी, डा० श्याम प्रसाद मुखर्जी, आचार्य विश्वबन्धु जी, प० रामचन्द्र देहलवी शामिल हैं।

सर्वश्री पुरुषोत्तम टन्डन, महात्मा नारायण स्वामी, पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति, पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय, महात्मा आनन्द स्वामी, डा० भगवान दास, डा० युद्धवीरसिंह जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, श्रद्धेय एव महात्मा हंसराज जी आज के महान् नेता श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी और श्री रामगोपाल जी शालवाले आपकी सेवाओं की प्रशंसा

करते हैं। आर्य अनाथालय के अध्यक्ष और भूतपूर्व महापौर दिल्ली नगर निगम चौधरी देशराज जी भी आपके त्यागमयी जीवन से सदा प्रभावित रहे हैं। श्री पं० देवव्रत जी ने युवकों में समाज सेवा की भावना पैदा करने के लिए आर्य युवक परिषद् की स्थापना की। श्री पं० जी और उनकी धर्मपत्नी ने इस संस्था को हजारों रुपये दिए हैं। आर्य कुमार सभा नई दिल्ली को भवन निर्माण के लिए भी आपने सहायता की।

दान का व्यसन :—

श्री पण्डित धर्मेन्दु जी प्रारम्भ से ही इस विचार के हैं कि द्रव्य का सदुपयोग सत्पात्रों एवं अच्छी संस्थाओं की सहायता करना ही है। आप सदैव स्वअर्जित राशि से संस्थाओं एवं व्यक्तियों को सहायता देते रहे हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य बालगृह, आर्य कन्या सदन, चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर, चन्द्रवता स्मारक ट्रस्ट, आर्य कुमार सभा नई दिल्ली, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, आर्य युवक परिषद्, आर्य समाज कन्या विद्यालय चावड़ी बाजार, आदर्श धमार्थ ट्रस्ट तथा श्री राम दरबार आदि संस्थाओं को हजारों रुपये दान दे चु । आपने अपने निजी पुस्तकालय से सैंकड़ों अमूल्य धर्म ग्रन्थ चारों वेद (भाष्य सहित), सारी उपनिषदें, रामायण (दशों भाग), महाभारत. दर्शन आदि ग्रन्थ आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा मन्दिर मार्ग नई दिल्ली को उपदेशकों को स्वाध्याय करने के लिए पुस्तकालयार्थ दान में दे दिये हैं। बच्चों को उत्साहित करने के लिए आप सदैव उन्हें पुस्तकें आदि देते रहते हैं। महात्मा हंसराज शिक्षा बोर्ड नई दिल्ली, हिन्दी साहित्य सम्मेलन दरियागंज, दिल्ली साहित्य आर्य संगम तथा युवक परिषद् को भाषण तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता कराने के लिए धर्मेन्दु चल वैजयन्ति भी दे रखी है। इससे बढ़कर और त्याग क्या हो सकता है कि आपने अपनी समस्त सम्पत्ति की वसीयत सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए कर दी है।

इस महान् व्यक्ति की हीरक जयन्ती के अवसर पर हम उन्हें श्रद्धा के फूल भेंट करते हुए परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उन्हें दीर्घायु प्रदान करें जिससे कि वह देश और समाज की सदा सेवा करते रहें।

—मूलचन्द गुप्त

चिन्गारी सुलग रही है :—

ऐतिहासिक कंझावला आन्दोलन

—नरेन्द्र कुमार विद्यालंकार

●

कंझावला गांव दिल्ली शहर से उत्तर की ओर बस के रास्ते अठारह मील है। गांव की आबादी 5000 के लगभग है, जो 600 घरों में रहती है। यह गांव डबास गोत्र के जाटों का सबसे बड़ा ठिकाना है। जब कभी पंचायत के लिए डबास की खाप का (कबीला) इकट्ठा होता है, तो उसकी चिट्ठी कझावला मे जारी की जाती है। कंझावला में सन् 1945 से हायर सैकेण्ड्री स्कूल है। जिसमें 1200 छात्र पढ़ते हैं। लड़कियों के लिए अलग से हाई स्कूल है, जहां कझावला और निकटवर्ती गांव की 1000 (एक हजार) लड़कियां शिक्षा ग्रहण करती हैं। सेठ रामरूप का बनवाया हुआ हास्पिटल है, जिसमें चौबीस सीटें हैं। गांव में प्रातः साढ़े चार बजे से रात साढ़े दस बजे तक दिल्ली नरेला, बहादुरगढ़, औचन्दी के लिए हर दस मिनट बाद बसें चलती रहती हैं। गांव की अधिक आबादी पढ़े-लिखे लोगों की है। जो प्रायः नौकरी पेशा है।

इस गांव में माल-विभाग दिल्ली की ओर से 1952 में चकबन्दी हुई। 1952 तक के किसान विवादास्पद भूमि का लगान देते रहे। गाव की सर्वसम्मत राय पर 130 एकड़ जमीन छत्तीस जात की सर्वसम्मति से चरागाह छोड़ी गई। शेरशाह सूरी से लेकर आज तक लगातार पांच सौ वर्ष से यह भूमि चरागाह रही है। दिल्ली राज्य के माल-विभाग के रिकार्ड पर दर्ज है। इस भूमि में न केवल कझावला गांव के; अपितु आस-पास के अन्य गांवों के किसान भी अपने पशु चराते रहे हैं। चरागाह छुड़वाने के लिए हरिजन भी सदा सहमत रहे हैं; क्योंकि हरिजन इस बात को सदा जानते रहे हैं, कि गांव का समृद्ध-वर्ग जब कभी उनके पशुओं का अपने खेतों में जाना रोकते थे तब यह चरागाह ही उनकी शरण-स्थल होते थे।

पंजाब हाई कोर्ट का निर्णय —

सन् 1959 में गांव के कुछ किसानों ने यह निश्चय किया कि इस जमीन को भाई-चारे से बांट कर बो लिया जाये, परन्तु गांव के छोटे किसान और हरिजन इस बात के लिए सहमत नहीं हुए, तब कुछ किसानों ने एक किसान रूपचन्द सुपुत्र स्यालीराम

द्वारा इस चरागाह की कुछ भूमि पर अनधिकृत कब्जा करवा दिया। अब हरिजनों सहित गांव के सभी लोगों ने रूपचन्द के विरुद्ध चण्डीगढ़ हाईकोर्ट में अपील दायर की। कई साल मुकद्दमा चलने के बाद पंजाब हाईकोर्ट ने दिल्ली सरकार के माल-विभाग के रिकार्ड को देख कर अपना निर्णय देते हुए लिखा कि "यह जमीन सदा से चरागाह रही है और चराहगाह रहेगी।" इस निर्णय के बाद श्री ख्यालीराम ग्राम शामलात भूमि से खारिज कर दिये। ग्राम सभा को पंजाब हाई कोर्ट में इसलिए जाना पड़ा था; क्योंकि तब तक दिल्ली में उच्च न्यायालय नहीं बना था, तब से सन् 1970 तक यह भूमि चरागाह ही रही।

दिल्ली उच्च-न्यायालय का निर्णय :—

सन् 1970 में दिल्ली प्रशासन पर जनसंघ का कब्जा था और श्री विजयकुमार मलहोत्रा दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद थे। अगले चुनावों की सम्भावनाओं को देखते हुए वोट प्राप्ति के लिए हरिजनों को प्रसन्न करने के लिए श्री विजय कुमार मलहोत्रा ने ग्राम सभा की इच्छा के विरुद्ध ग्राम सभा के प्रधान को अपने प्रभाव में लेकर आर्जी तौर पर पांच वर्ष के लिए (सन् 1970 से 1975 तक) पट्टे पर दे दी।

सन् 1975 में कंझावला को पट्टे पर दी हुई भूमि की मियाद खत्म हुई और उसी समय देश में एमरजेंसी लागू हो गई।

सन् 1970 में कंझावला ग्राम की जो 120 एकड़ जमीन दिल्ली प्रशासन ने अपने दबाव से गैर-भूमिहीनों को बांटी थी, उनमें 67 हरिजन और 53 गैर-हरिजन थे। जिन परिवारों को यह भूमि बांटी गई उनमें चौरानवें परिवार ऐसे थे जिनकी मासिक आमदनी 500 रुपये या उससे अधिक थी। छब्बीस व्यक्ति ही ऐसे बनते थे जो असल में गरीब थे। कुछ अत्यन्त गरीब परिवार इस भूमि के आबंटन से वंचित रह गए क्योंकि उनका जन्म ऊंची जातियों में हुआ था। इस जमीन को एमरजेंसी लागू होने के बाद भी दिल्ली प्रशासन की इच्छा के विरुद्ध ग्राम सभा ने पट्टे पर नहीं देने दिया। ग्राम सभा ने कहा कि सन् 1975 में जब पुराना पट्टा समाप्त हो गया, तब पट्टा देने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। इस भूमि पर ग्राम-सभा का अधिकार है। ग्राम पचायत का नहीं। ग्राम सभा ही इसकी देखरेख करती है; तत्कालीन दिल्ली प्रशासन ने इसकी मियाद अगले पांच वर्ष के लिए पट्टे पर बढ़वाने की बहुत कोशिश की, परन्तु ग्राम-सभा ने नए आबंटन के विरुद्ध दिल्ली हाईकोर्ट से 'स्टे' ले लिया था। जनवरी सन् 1976 में श्री राधारमण मुख्य कार्यकारी पार्षद महानगर निगम दिल्ली ने एक बार फिर इस भूमि के आबंटन के लिए प्रयत्न किया, परन्तु ग्राम प्रधान श्री बलबीर सिंह ने इन्कार कर दिया।

जब सन् 1970 में दिल्ली सरकार ने ग्राम सभा की इच्छा के विरुद्ध इस चरागाह भूमि का बटवारा कर दिया था तब उस पांच वर्ष के पट्टे के, विरुद्ध गांव के एक

किसान खजान सिंह की मार्फत ग्राम सभा ने 27 जुलाई 1971 को दिल्ली उच्च-न्यायालय में ग्राम पंचायत के आबंटन के विरुद्ध मुकद्दमा दायर कर दिया। 14 अप्रैल 1977 को उच्च न्यायालय के जस्टिस न्यायमूर्ति श्री दलीप के० कपूर ने पुराने रिकार्ड के आधार पर अपना निर्णय गांव सभा के पक्ष में दिया और दिल्ली प्रशासन के आबंटन को रद्द करके गांव सभा को इस शामलात भूमि का संरक्षक माना। सन् 1975 के अन्त से सन् 1978 के जुलाई तक यह भूमि बिल्कुल खाली पड़ी रही और इस पर ग्राम सभा का कब्जा रहा, तथा ग्राम सभा ने ही इस जमीन का लगान दिया जो दिल्ली सरकार के रिकार्ड में मौजूद है, तब दिल्ली प्रशासन ने ग्राम सभा और ग्राम पचायत को सस्पेंड करके दो हाई कोर्टों के निर्णय के विरुद्ध (पंजाब और दिल्ली उच्च न्यायालय) कानून का उल्लंघन करके दो हरिजन अफसरों की मदद से (डिप्टी डायरेक्टर पंचायत दिल्ली प्रशासन श्री कामरा और बी० डी० ओ० नांगलोई ब्लाक में) बोगस हलफनामों की आड़ लेकर पिछली तारीखों से अर्थात् 1-1-76 से सन् 80 तक पट्टे पर उन्हीं पुराने 120 पट्टेदारों के नाम चालू कर दिए, जबकि असलियत यह है कि सन् 76-77 और 78 के जून तक पूरे अढ़ाई वर्ष यह भूमि बिना बोई खाली पड़ी रही जिसका इन्दराज महकमा माल के कागजात में दर्ज है।

1977 में जनता सरकार बनने के बाद इस चरागाह के झगड़े ने नया रूप ले लिया जब दिल्ली प्रशासन ने ग्राम पंचायत और ग्राम सभा के अधिकार छीन लिए, तब गांव वालों का एक शिष्टमण्डल 21 नवम्बर 1977 को उपराज्यपाल दिल्ली से मिला और उसमें पांच सूत्री समझौता हुआ जिसमें निश्चय किया गया कि यह जमीन ग्राम-सभा की ही रहेगी, परन्तु सरकार ने समझौता तोड़ कर हजारों पुलिस वालों की मदद से इस भूमि को जुतवाने का प्रयास किया। कंझावला के ग्रामीणों ने इसका भारी विरोध किया, जिस पर गांव के किसान, महिला और पुरुषों पर पुलिस ने लाठियां बरसाई। अनेक लोगों को गिरफ्तार किया गया। इस पर किसान भड़क उठे, उन्होंने सत्याग्रह चालू किया जो दस दिन चलता रहा। लगभग 400 किसान जेल गये और पुलिस प्रयत्न करके भी जमीन को न जुतवा सकी न बुवा सकी।

11 दिसम्बर 1977 को 360 गांवों की पंचायत हुई जिसमें एक 41 व्यक्तियों की छोटी कमेटी बनाई गई जिसमें सोलह हरिजन थे। इस समिति ने 2 जनवरी 1978 को निर्णय किया कि उक्त भूमि चरागाह ही रहेगी और इसके लिए सत्याग्रह जारी रखा जाएगा। जब यह मामला बढ़ने लगा तो इसका असर दिल्ली प्रशासन पर भी हुआ और दिल्ली के चारों ओर बसे सभी वर्गों के ग्रामवासियों पर भी।

15 जनवरी 1978 को कंझावला में दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश के ग्रामीण समुदाय का सर्वाधिक प्रतिनिधित्व करने वाली "सर्वखाप पंचायत" का, अधिवेशन हुआ,

(क्रमशः)

Approved for Libraries by D. P. I'S Memo No. 3/44—1961—B. Dated 8-1-62

Approved by the Chairman, Central Library Committee, Panjab Vide their Memo No. PRD-Lib.-258-61/1257-639 dated Chandigarh, the 8th Jan. 1962.

For—

1. The Secretary to Government, Punjab, Housing and Local Government Department, Chandigarh.
2. The Director of Panchayats, Chandigarh.
3. The Director of Public Instruction, Panjab Chandigarh.
4. The Deputy Director Evaluation, Development Department Panjab Chandigarh.
5. The Assistant Director, Young Farme and Village Leaders, Development Department, Panjab Chandigarh.
6. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Jullundur.
7. The Assistant Director of Panchayats, Rohtak.
8. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Patiala.
9. All Local Bodies in the Panjab.
10. All District Development and Panchayat Officers in the State.
11. All Block Development and Panchayat Officers in the State.
12. All District Public Relations Officers in the State.

व्यवस्थापक श्री धर्मभानु गुरुकुल भैंसवाल ने नेशनल प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर कार्यालय समाज सन्देश गुरुकुल भैंसवाल (सोनीपत) से मुद्रित तथा प्रकाशित किया।

ॐ

(हिन्दी मासिक-पत्र)

सांस्कृतिक, सामाजिक व साहित्यिक लेखों का संगम

प्रकाशन तिथि। 25 जून, 1979

वर्ष 20 जुलाई, 1979 अंक 3

सम्पादक-मण्डल :

व्यवस्थापक :
धर्मभानु जी

सम्पादक :
आचार्य हरिश्चन्द्र

सह सम्पादिका :
आचार्या सुभाषिणी

स्वर्गीय श्री भक्त फूल सिंह जी

अरूरुचदुषस: पृश्निरग्रिय उक्षा मिमेति भुवनेषु वाजयुः।
मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमादधुः॥

आगे उषा प्रकाश दे रवि है चमक रहा।
अन्नाद्य हेतु लोक में बादल गरज रहा॥
इस सूर्य की क्रिया सभी जन हैं निहारते।
पालक नृचक्ष मेघ भू में गर्भ धारते॥

—'निधि'

मूल्य : एक प्रति 1-25 रु० वार्षिक चन्दा 10 रुपये

इस अंक में—

क०सं०	विषय		लेखक		पृष्ठ सं०

समाज सन्देश में छपे विचारों से हमारा सहमत होना या न होना आवश्यक नहीं। समाज सन्देश में हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी मत से सम्बन्ध रखता हो अपने लोकहितकारी विचार अथवा लेख प्रकाशनार्थ भेज सकता है। उसकी मौलिकता का लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा।

— सम्पादक

❀

लेख भेजने तथा अन्य विषयक पत्र व्यवहार का पता :—

देवराज विद्यालंकार

प्रकाशन प्रबन्धक

गुरुकुल भैंसवाल कलां (सोनीपत)

सम्पादकीय :

पुलिस आन्दोलन

★

हमारे देश में प्रत्येक महकमे के अन्दर असन्तोष की प्रकृति नजर आती है। कार्यालयों, विश्वविद्यालयों, अध्यापकों, कारखानों के कर्मचारियों तथा अन्य अनेकों सभी लोगों को अपनी मांगें मनवाने के लिए हड़ताल करते और शान्ति पूर्वक जलूस निकालते देखा जा रहा है और इन शान्तिपूर्वक जलूसों पर पुलिस ने निरन्तर निरीह मनुष्यों पर अमानुसिक अत्याचार अनेकों बार किये हैं।

किसी देश का सारा शासन-तन्त्र पुलिस और सेना के आधार पर सुचारु रूप से चलाया जा सकता है, लेकिन उस समय किसी देश का दुर्भाग्य होता है जब अनुशासन की रक्षक पुलिस और सेना ही आन्दोलन का रास्ता अपनाये।

हमारी सरकार के बड़े नेता आपस में प्रान्तीय सरकारों में अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए सारे देश में अराजकता का वातावरण स्वत: पैदा कर रही है तो फिर ऐसी स्थिति में पुलिस ने मौका पा आन्दोलन का सहारा लिया तो यह कोई ज्यादा ताज्जुब की बात तो नहीं, लेकिन हां यह एक कठिन और खतरनाक अवश्य है।

पिछले दिनों पञ्जाब प्रान्त से इस आन्दोलन की शुरुआत हुई जिसका प्रभाव दूसरे सभी राज्यों पर भी पड़ा और हरियाणा के दो स्थानों रोहतक और मधुवन में तो बात मार-पिटाई तक भी बढ़ी जहां पुलिस के पहलवानों द्वारा पुलिस के विद्रोही अधिकारियों को बेइज्जत किया गया जिस कारण हरियाणा के पुलिस कर्मचारियों का आन्दोलन कुछ ढीला पड़ गया।

अभी कुछ दिन हुए बोकारो केन्द्रीय औद्यौगिक सुरक्षा दल तथा सेना के बीच हिंसक वारदातें हो गईं और चिन्ता तो इसलिए बढ़ी क्योंकि इस टकराव में दोनों ओर से पुलिस कर्मचारी मारे गये। इसके सिवाय कोई रास्ता भी न था कि पुलिस विद्रोह को दबाने के लिए सेना न बुलाई जाये। इस टकराव से और पुलिस के अनुशासन तोड़ने से नागरिकों में असुरक्षा की भावना बढ़ी है। जब कानून और व्यवस्था कायम करने वाली पुलिस ही आन्दोलन करे तो सैनिक हस्तक्षेप आवश्यक हो जाता है, लेकिन सेना तभी बुलाई जानी चाहिए, जब अन्य कोई भी रास्ता बाकी न हो। विचारणीय बात यह है कि जब पुलिस ही सरकार के विरोध में सड़कों पर प्रदर्शन करके सरकारी आदेशों

का उल्लंघन करे, कानून और व्यवस्था कायम करने वाले स्वयं कानून तोड़ने लग जायें तो उनके साथ सख्ती से निपटे जाने के सिवाय अन्य कोई चारा नहीं रह जाता।

लेकिन 6 जून को गृह मन्त्री की उपस्थिति में दिल्ली में राज्यों के मुख्यमन्त्रियों के सम्मेलन में पुलिस की सेवा शर्तों में सुधार का फैसला होने के बाद भी केन्द्र और राज्य पुलिस वालों में पूर्ववत् असन्तोष क्यों है ? दिल्ली फैसले में सशस्त्र और नागरिक पुलिस की सेवा शर्तों में सुधार करने का फैसला कर लिया था, लेकिन इसके बाद भी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस और जम्मू की पुलिस ने भी अनेकों जगह जोरदार प्रदर्शन किये। आन्दोलन-कारियों को मालूम था कि उनके काम और परिस्थितियों में सुधार के लिए कदम उठाए जा रहे हैं, लेकिन फिर भी आन्दोलन का जारी रहना इस बात की पुष्टि करता है कि इस आन्दोलन में बाह्य राजनैतिक प्रभाव और विदेशी शक्तियां काम कर रही हैं।

मैं राजनैतिक शक्तियों और पुलिस कर्मचारियों को आन्दोलन का दोषी कहने के बजाय केन्द्र और राज्य सरकारों को इसका जिम्मेवार मानता हूँ। जनता सरकार ने अभी दो ही वर्ष पूर्ण किये हैं और इन दो वर्षों में हमारे प्रतिष्ठित नेताओं ने राजनीतिक अखाड़े में अपने-अपने लंगोटे बांध कर निरन्तर कुश्तियां की हैं। जो एक बार चित्त हुआ मौका आते ही वह दूसरे को चित्त कर बैठा। केन्द्र और राज्य सरकारों में स्थायित्व नाम की कोई चीज ही नहीं दिखाई देती। घटकवाद की बीमारी निरन्तर बढ़ती ही चली जा रही है, और जनता-पार्टी में किसी प्रकार का भी अनुशासन नहीं दिखाई देता। प्रतिदिन कोई नया राजनीतिक तमाशा देखते-देखते जनता के दो वर्ष पूरे हो गए। जब सरकार में अनुशासन हीनता है तो फिर पुलिस को हम किस मुंह से दोषी कहें। मैं पुलिस आन्दोलन को जनता-सरकार की असफलता का ही एक मुख्य कारण मानता हूँ।

—देवराज विद्यालंकार

(क्रमशः ३)

* महाभारत *

(आदि पर्व)

लेखक :

आचार्य विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड

●

पृथा द्वारा पाण्डुवरण, माद्री के साथ पाण्डु का दूसरा विवाह, पाण्डु की दिग्विजय

कुन्तिभोज ने स्वयम्बर रच कर पृथा का विवाह पाण्डु से किया। वहां पर उपस्थित राजाओं में पृथा ने पाण्डु का वरण किया। पाण्डु के गले में लजाती हुई पृथा ने जयमाला डाल दी। उसके पिता ने पाण्डु के साथ शास्त्रोक्त विधि से पृथा का विवाह किया। और पाण्डु उसे विवाह के बाद अपने नगर में ले आए।

इसके बाद भीष्म ने पाण्डु का दूसरा विवाह भी कराने का निश्चय किया। वे अपनी चतुरंगिणी सेना के साथ मद्रराज की राजधानी में गये। वाहीक शिरोमणी राजा राजा शल्य भीष्म के आगमन को सुनकर उसके स्वागत के लिए सामने आये। और शल्य ने भीष्म से अपने राज्य में आने का कारण पूछा। भीष्म ने कहा कि मैं तुम्हारी बहिन को पाण्डु के विवाह के लिए लेने आया हूँ। मैंने सुना है कि तुम्हारी बहिन बड़े उत्तम स्वभाव की और धर्म परायण है।

शल्य ने कहा—महाराज! हमारे कुल की एक परम्परा है जो शुल्क लेने की है, वह अच्छी है या बुरी मैं नहीं जानता। हम सारे उस परम्परा का पालन करते हैं। यदि इस शुल्क देने की प्रथा को पूरा करें तो मुझे अपनी बहन देने में कोई आपत्ति नहीं है।

शल्य की बातों को सुनकर भीष्म बोले—शल्य, जिस कुल की जो परम्परा होती है वह धर्मानुकूल मानी जाती है। मैं भी उस परम्परा का पालन करूंगा। ऐसा कह कर

भीष्म ने सोना, सोने के गहने, बहुत से हाथी घोड़े, रथ, वस्त्र अलंकार, मणि, मोती, मूंगे शल्य को दिए। धन को ग्रहण कर शल्य ने प्रसन्नता से अपनी बहिन पाण्डु को सौंप दी। विवाह के बाद साथ लेकर भीष्म पाण्डु के साथ हस्तिनापुर में आ गए। एक मास तक उसके साथ विहार कर पाण्डु दिग्विजय के लिए राजधानी से बाहर निकल गए।

पाण्डु ने राजधानी से चलकर दशार्णों (विन्ध्य पर्वत के पूर्व दक्षिण की ओर स्थित उस प्रदेश का प्राचीन नाम दशार्ण है), जिससे धसान नदी बहती है। विदिशा (आधुनिक भिलसा), इस प्रदेश की राजधानी थी) पर धावा करके उन्हें युद्ध में परास्त किया। तदनन्तर पाण्डु दिग्विजय के लिए राजगृह में आए और वहां का अभिमानी राजा उनके हाथों मारा गया। फिर वहां से महान् कोष लेकर उसने मिथिला पर चढ़ाई की। वहां के क्षत्रियों को भी परास्त किया। तदनन्तर काशी, सुहम,-पुण्ड्र देशों पर विजय पाते हुए, उन्होंने अपने कुरुकुल के यश का विस्तार किया। सभी राजाओं ने पाण्डु को प्रसन्न करने के लिए अनगिनत धन दिया। जब पाण्डु दिग्विजय करके हस्तिना पुर आए तो भीष्म के साथ सारा नगर पाण्डु के स्वागत के लिए उपस्थित हो गया। पाण्डु का जय-जयकार किया गया। पाण्डु ने भीष्म के चरणों में नमस्कार किया। उसके बाद मंगला-चरण के साथ पाण्डु ने हस्तिनापुर में प्रवेश किया।

राजा पाण्डु का रानियों समेत वन निवास, विदुर का विवाह, धृतराष्ट्र की पत्नी से तथा कुन्ती, माद्री से पुत्र उत्पत्ति, पाण्डु का स्वर्ग गमन।

जो धन दिग्विजय में पाण्डु को प्राप्त हुआ था, वह उसने निर्धनों तथा पूज्यों में बाँट दिया। उधर पाण्डु के पराक्रम से धृतराष्ट्र ने हस्तिनापुर में अनेक अश्वमेघ यज्ञ किए। कुन्ती माद्री दोनों की प्रेरणा से राजा पाण्डु महलों के निवास को त्याग कर वन में वास करने लगे। सुन्दर वनों उपवनों, पहाड़ों पर रानियों समेत भ्रमण करने लगे। धृतराष्ट्र भी वन में महाराज पाण्डु के लिए इच्छानुसार भोग सामग्री पहुँचाते रहे।

भीष्म ने शूद्र जातीय स्त्री के गर्भ से ब्राह्मण द्वारा उत्पन्न हुई कन्या से विदुर का विवाह किया। कुरु नन्दन विदुर ने उस स्त्री के गर्भ से अपने ही समान गुणवान् विनयशील अनेक पुत्र उत्पन्न किये।

गान्धारी के गर्भ से भी अनेक गुणवान् पुत्र उत्पन्न हुए। उनमें दुर्योधन सब से बड़ा था। दुर्योधन की उत्पत्ति पर लक्षणज्ञ विदुर ने महाराज धृतराष्ट्र को कहा कि यह लड़का बड़ा होने पर कुलान्तकारी होगा। अतः इसे छोड़ दें। लेकिन पुत्र मोह के कारण धृतराष्ट्र ने उनकी बात नहीं मानी। दुःशला नाम की पुत्री भी गान्धारी के गर्भ से उत्पन्न हुई। धृतराष्ट्र से युयुत्सु वैश्या से उत्पन्न हुए। इस प्रकार धृतराष्ट्र अपने आपको अनेक पुत्रों से सुरक्षित मानने लगा। (क्रमशः)

कहानी

रोशनी के दायरे

—रायचन्द जैन, रोहतक

●

लगभग कोई एक माह से बुखार नीरू का पीछा नहीं छोड़ रहा था। प्रतिदिन उसकी हालत बिगड़ती जा रही है। कभी-कभी तो सांस उसके तन से निकलने को होती है, लेकिन किसी की ममता उसको अपनी बाहों में कस कर जकड़ लेती है और फिर से वह उसी देह में लौट जाती है। फिर उसकी हृदय गति घड़ी की सुई की भाति टक-टक करके चलने लगती है। आखिर ऐसी कौनसी ममता है जो बुझते दीपक में तेल का काम कर रही है। यह ममता है या कोई दैवी शक्ति। यह उसकी पांच वर्षीय बेटी राधा की ममता है जो दैवी शक्ति के रूप में उसके सामने आ खड़ी हुई है। भला, उसका इस संसार में मां के सिवा है कौन ?

बलवन्त इस गांव का एक युवक है। देखने में अति सुन्दर। जितना सुन्दर उसका तन है उससे कहीं अधिक सुन्दर है उसका मन। कोई एक माह पूर्व ही वह किसी बड़े शहर से बी० ए० पास करके लौटा है। तभी से वह नीरू की सेवा सुश्रूषा कर रहा है। सम्भवतः नीरू उसी के सहारे पर जी रही है। चाहे बलवन्त ने शहर में 4 वर्ष तक शिक्षा पाई है, लेकिन वह शहर की हवा से सदैव ही बचा रहा है। उसका स्वभाव बिल्कुल वैसा ही है, जैसा कि एक ग्रामीण का—वही सादगी, वही भोलापन, उसी तरह दूसरों के दुःख सुख में जी जान से हाथ बटाना।

रात्रि के दस बजे हैं। बरसात के दिन हैं। काले काले मेघ आकाश पर छा गये हैं। चांद सितारे—सभी ने मानो काले रंग की चुनरिया से अपने मुखड़े को छिपा लिया है। कहीं कुछ दिखाई नहीं पड़ता। सभी ओर घनघोर अन्धेरा छा गया है। हां, कभी कभी बिजली कड़क उठती है, तभी पल भर के लिये कुछ दिखाई पड़ जाये तो सही, अन्यथा नहीं।

वैसे तो दिन प्रतिदिन नीरू की हालत खराब होती जा रही थी, परन्तु आज उस का बुखार चरम सीमा पर पहुँच गया था। नीरू बेहोश हो गई। उसकी बेटी राधा 'मां, मां' कहकर अपनी नन्हीं नन्हीं हथेली से उसके माथे को इधर से उधर करती। कोई उत्तर न पाकर, वह और भी जोर जोर से चीखने चिल्लाने लगती। ऐसा जान पड़ता जैसे छोटी सी मुन्नी को यह अहसास हो रहा है कि उसकी मां को उससे कोई छीने जा रहा

है। वह इसके विरोध में चीख और चिल्ला ही सकती है— और उस बेचारी के पास है भी क्या ? उसकी चीख पुकार सुन कर कोई कठोर हृदय भी मोम का बने बिना न रह सकता था।

बलवन्त उसके समीप बैठा धीरे धीरे पंखा कर रहा था, हवा बिल्कुल बन्द थी। गर्मी के मारे दम सा घुटा जा रहा था। उससे जैसा भी हो सका, नीरू को होश में लाने का प्रयत्न किया, लेकिन सब व्यर्थ।

नीरू के घर के पास ही पांच सात और घर थे कुछ पक्के तो कुछ कच्चे। आस पास के पड़ौसी भी कुछ बुरे न थे। उन्हें भी नीरू के साथ सहानुभूति थी। कभी कभी नीरू की जैसी भी होती, देखभाल करते रहते थे। बलवन्त को नीरू की सेवा सुश्रूषा में इन लोगों से कुछ न कुछ सहायता मिलती रहती थी। नीरू की बेहोशी को देखकर, अपने को असहाय पाकर, उसने जोर जोर से दो चार आवाजें लगाई "अरे भोला भाई, यहां आना, मदन दादा, जरा जल्दी करना।"

उसकी आवाज सुनकर, भोला, मदन और गांव के दो चार आदमी जल्दी ही वहां आ पहुँचे। भोला ने पूछा, "क्यों रे बलवन्त क्या बात है ? क्या नीरू की हालत ज्यादा खराब है ?"

"हां, तुम्हारा ख्याल बिल्कुल ठीक है। बेचारी काफी देर से बेहोश पड़ी है। देखते हो ना, राधा भी किस तरह से रो रही है। इस नन्हीं मुन्नी को देखकर तो रह-रह कर दिल भर रहा है। मदन दादा, बुरा मत मानना, ऐसी अवस्था में राधा को अकेले छोड़ कर जाना मेरे बस की बात नहीं थी। इसीलिए तुम लोगों को आवाजें लगानी पड़ी।" बलवन्त ने कहा।

मदन दादा ने कहा, "बेटा, कोई बात नहीं। यह काम केवल तुम अकेले का थोड़े ही है। जैसा पड़ौसी तू, वैसे पड़ौसी हम। एक पड़ौसी दूसरे पड़ौसी के काम नहीं आवेगा तो, भला कौन आवेगा—इतना तो हम भी जानैं सैं। यह तो तूने अच्छा ही किया है। अच्छा बेटा, जल्दी बोल, अब के करना सै।

गांव में ऐसा कोई डाक्टर भी न था जिस पर चिन्ताजनक अवस्था में भरोसा किया जा सके। केवल एक दो मामूली से वैद्य थे। वही छोटी मोटी बिमारियों का इलाज करते थे, लेकिन आज नीरू की हालत खतरनाक थी। महीने भर से उन्हीं का ईलाज चल रहा था। भला, नीरू शहर के किसी बड़े डाक्टर का ईलाज कहां से करा सकती थी ? उस बेचारी का न तो कोई कमाने वाला था, न खिलाने वाला। थोड़ी बहुत मेहनत मजदूरी करके बड़ी मुश्किल से अपना और अपनी बच्ची का पेट भरती थी। जबसे वह बिमार पड़ी थी, उसका यह सहारा भी जाता रहा था। बलवन्त और गांव के कुछ दूसरे लोगों की सहायता से ही उसका काम चल पाता था।

आज जब उसकी हालत नाजुक हो गई और उसके बचने की कोई आशा न रही तो किसी बड़े डाक्टर की उपस्थिति आवश्यक हो गई। बलवन्त ने साहस किया, "दादा, अपने गांव से दो कोस दूर जो भार्गव डाक्टर हैं ना, मैं उन्हीं को बुलाकर लाता हूँ। बड़े मशहूर हैं। बड़े से बड़े सेठ को उनका दरवाजा खटखटाना पड़ता है। एक बार वे आ गये तो बस, समझ लो, इसकी जिन्दगी को कोई डर नहीं। मुझे उन पर पूरा भरोसा है, दादा। सौ फी सदी।"

"बेटा! बड़े डाक्टर की बड़ी फीस। भला कोन देगा? तुम तो सब कुछ जानो हो।"

"अरे दादा, तुमने भी आज क्या घटिया बात कर दिखाई। मैं दूंगा, तुम दोगे, भोला देगा, और लोग देंगे। ठीक है न?"

"हां, भई ठीक है।" मदन तथा गांव के दो चार दूसरे व्यक्ति जो उस समय वहां पर उपस्थित थे, उन सभी ने बलवन्त की बात का समर्थन कर दिया।

"अच्छा, तो मैं चलूं।"

"इतने, गांव के अपने वैद्य को ही बुला लिया जाए तो क्या हर्ज है" एक ने कहा।

"कोई हर्ज नहीं।" बलवन्त ने उत्तर दिया।

"अरे भोला, चल मेरे साथ। दोनों भाई इस बेचारी के लिए डाक्टर को बुलाकर लावें सें।" बलवन्त ने भोला का हाथ पकड़ा और दोनों उस छोटे से घर से बाहर आ गये। बलवन्त जाते जाते कह गया "मदन चौधरी, जरा ध्यान रखना। हम जल्दी ही आये।"

उत्तर मिला, "कोई चिन्ता न कर, बेटा।"

मदन का घर नीरू के घर से कोई दो फर्लांग दूरी पर था। उसने सोचा रात काफी हो चुकी है, मां से कहता चलूं तो अच्छा है, न जाने कब से बाट देख रही होगी।"

पांच सात मिनट में ही बलवन्त अपने घर की ड्योढ़ी पर आ पहुँचा। उसने दरवाजा खटखटाया। अन्दर से आवाज आई "कौन है?"

"मैं हूँ, मां।"

"बलवन्त! आई बेटा।"

मां ने दरवाजा खोल दिया। उसके हाथ में लालटेन थी। गांव अभी तक पिछड़ा हुआ था। बिजली यहां तक न पहुंची थी। मां ने लालटेन को जरा सी ऊपर करते हुए कहा "इतनी देर से लौटा है, कुछ खाने पीने की भी सुध है। चल अन्दर।"

'माँ, यह समय खाने का नहीं किसी की जान बचाने का है। आज तो बेचारी नीरू की हालत बहुत ही खराब है। दो घण्टे से बेहोश पड़ी है। जो दो कोस पर गांव से बाहर डाक्टर साहब हैं ना, बड़े डाक्टर साहब, मैं उन्हीं को बुलाने जा रहा हूँ। सोचा

तुमसे कहता चलूं ।

"पागल हो गया है। भला, इतनी रात गये कौन डाक्टर आवे सै। वो जमाना गया जिसकी तू बात करे।"

बलवन्त कुछ क्षण तो स्तब्ध सा खड़ा रहा। मां की बात कुछ ठीक तो है, लेकिन एक अच्छे पड़ोसी होने के नाते उसे नीरू से बड़ी सहानुभूति है। वह उसके लिए बड़ी से बड़ी मुसीबत उठाने को तैयार है। नीरू तो एक पड़ोसी है, दुःख तकलीफ में तो किसी के भी काम आना इन्सानी फर्ज है। चाहे डाक्टर आये या न आये, वह अपने कर्तव्य का अवश्य ही पालन करेगा। नीरू के लिए एक बार शहर अवश्य ही जायेगा।

'मां, अब तो मुझे चलने दे। समय बड़ा नाजुक है, देख उस बेचारी को कुछ हो न जाए।'

'मेंह आने वाला है। रास्ता उबड़ खाबड़ है। मत जा' मां ने कहा।

"अरी मां, तू फिकर क्यों करती है? देखती नहीं भोला मेरे साथ है।"

मां ने हर कोशिश की, लेकिन बलवन्त जरा भी न माना। वह भोला को साथ ले अपनी मंजिल की ओर बढ़ गया। उसके एक हाथ में लाठी तो भोला ने मां के हाथ से लालटेन ले ली थी। रास्ते में आंधी आई, वर्षा आई, लेकिन ये दोनों साहसी आगे बढ़ते ही गये और आखिर वे दोनों अपनी मन्जिल तक पहुंच ही गए।

रात के करीब साढ़े ग्यारह बज चुके हैं। डाक्टर भार्गव की कोठी के बाहर दरवाजे पर चौकीदार पहरा दे रहा है। किसी अनजाने आदमी को कोठी के अन्दर जाने की इजाजत नहीं है। बलवन्त और भोला दोनों ही मेन गेट पर आकर रुक गए हैं।

"क्यों, क्या बात है?" चौकीदार ने पूछा।

"मरीज की हालत बड़ी खराब है, डाक्टर साहब को बुलाना है।"

बलवन्त ने बिनती करते हुए कहा।

"जाओ, वे नहीं आ सकते। उनकी बीबी बड़ी सख्त बिमार है।"

पूरे दो दिन हो गये हैं, उन्हें सोये हुए।

बलवन्त तथा भोला दोनों उलझन में पड़ गए। ऐसे समय में डाक्टर को बुलाना उचित तो न था लेकिन तुलनात्मक दृष्टि से नीरू का जीवन अधिक आवश्यक था। बलवन्त ने सोचा एक बार चौकीदर से फिर से प्रार्थना कर ली जाये तो अच्छा ही रहेगा, हो सकता है कुछ बात बन ही जाए, बेचारी नीरू का जीवन किसी प्रकार बच जाना चाहिए।

"भाई, केवल एक बार डाक्टर साहब से हमें मिला दो, तुम्हारे पांव पड़ां सें। किसी की जान बच जायेगी, तुम्हारा भला होगा।"

चौकीदार की कठोरता कुछ नरम पड़ी "डाक्टर साहब से कुछ कहते हुए लगता तो डर है, लेकिन तुम कहते हो तो एक बार हो आता हूं। अच्छा, तुम यहीं पर ठहरो।"

चौकीदार ने उनकी बात का उत्तर देते हुये कहा ।

डाक्टर साहब अभी तक सोये हुये नहीं थे । अभी तक उनकी पत्नी की हालत में कोई सुधार न हुआ था । उनकी माता तथा घर के दूसरे लोग सभी जाग रहे थे । चौकीदार आज्ञा पाकर अन्दर कमरे में प्रविष्ट हुआ ।

"क्यों कौन है ?" डाक्टर साहब ने पूछा ।

"कोई गांव के दो आदमी जान पड़ते हैं । कहते हैं मरीज की हालत बहुत खराब है । आपसे मिलना चाहते हैं ।"

डाक्टर साहब को बड़ी झुंझलाहट सी हुई 'समय देखते नहीं हैं, चले आते हैं । कहदो, मेरे पास टाईम नहीं है और किसी को बुला लें ।'

चौकीदार 'अच्छा साहब' कहकर वापिस चल पड़ा । तभी डाक्टर भार्गव के मन में आई, इस हालत में किसी की बद दुआ लेना अच्छा नहीं ।

चौकीदार अभी कुछ ही कदम आगे बढ़ा था कि डाक्टर साहब ने उसे वापिस बुला लिया 'अच्छा, उनसे कहो हमसे मिल लें ।' भार्गव ने कहा ।

'बहुत अच्छा साहब' चौकीदार ने अपने कदम जल्दी-जल्दी बाहर प्रतीक्षा कर रहे उन युवकों की ओर बढ़ा दिये । उसे लग रहा था जैसे उसने कोई महान् विजय पा ली है ।

"क्यों भाई, कुछ बात बनी ?" बलवन्त ने बड़ी उत्सुकता से पूछा ।

"हां, हां आओ मेरे साथ" चौकीदार ने बड़ी प्रसन्नता से कहा । उसे ऐसा अनुभव हो रहा था कि वह अपने जीवन में पहली बार कोई नेक कार्य करने जा रहा है । वह उन्हें अपने साथ लेकर कुछ ही क्षण में डाक्टर साहब के पास पहुँच गया ।

"कहां से आये हो तुम ?" डाक्टर भार्गव ने पूछा ।

"पास ही गांव बहू से" बलवन्त ने हाथ जोड़कर उत्तर दिया ।

"क्या तकलीफ है ?"

"साहब मरीज की हालत बहुत खराब है । पहले तो कोई एक माह से बुखार आता था, आज सायं से वह बेहोश पड़ी है ।"

"उम्र ?"

"कोई तीस वर्ष ।"

"अच्छा, यह दवाई की शीशी लो । जाते ही उसके मुंह में पांच सात बूंदे डाल दो । भगवान ने चाहा तो होश आ जायेगा । हां इसके दो घण्टे बाद यह दूसरी खुराक उसे दे देना" डाक्टर भार्गव ने अपने बैग में से दवाई की दोनों शीशियां बलवन्त के हाथ में पकड़ाते हुए कहा ।

बलवन्त सोच में पड़ गया। इससे पहले वह डाक्टर से कुछ कहता, भोला ने जो कुछ कहना था, वह कह दिया। उसकी आवाज हृदयस्पर्शी थी।'' डाक्टर हम तो हाथ जोड़ कर दया की भीख मांगां सैं। तुम्हारे चले बिना बात ना बने। देखना, उस बेचारी को कुछ हो गया तो छोटी बिटिया का इस भरी दुनिया में कोई ना रह जायेगा।''

डाक्टर का हृदय पिघलने लगा। उसके भी एक छोटी सो बेटी है उसे लगा जैसे वह कह रही है 'डैडो', मेरी मम्मी की तरह इसकी मां का भी जीवन बचा लो।

'क्या लगती है वह तुम्हारी ?' डाक्टर ने बड़ी सादगी से उन दोनों युवकों से प्रश्न किया।

बलवन्त ने उत्तर दिया ''रिश्ते नाते में तो कुछ नहीं लगती, हां, एक पड़ौसी के कारण हम उसे अपनी बहन से बढ़कर माने हैं। डाक्टर साहब, एक बार उसकी छोटी बिटिया राधा को अपनी मां के लिये रोता देख लोगे ना किस प्रकार वह मां-मां कहकर तुम से अपनी मां के जीवन के लिये संघर्ष कर रही है, तुम भी रोये बिना न रहोगे। उसके लिये अब जो कुछ भो है, तुम्हीं हो। उसकी मां का जीवन बचा लो। उसकी आत्मा तुम्हें दुआएं देगी।''

भोला और बलवन्त का एक एक शब्द डाक्टर भार्गव के हृदय पर मंडराने लगा। उसे अब अपनी बेटी और किसी दूसरे की बेटी में, अपने जीवन और किसी दूसरे के जीवन में कोई अन्तर दिखाई नहीं पड़ रहा था। उसका हृदय इतना पिघल चुका था कि मानो सारी दुनिया के दुःखों ने उसके हृदय में अपना घर बना लिया है और वह उन्हें उखाड़ फैंकने के लिये बेचैन है।

''तुम अभी बाहर ठहरो, मैं अपना बैग लेकर आ रहा हूँ।'' डाक्टर भार्गव ने कहा ''मैं उसका जीवन बचाने की हर सम्भव कोशिश करूंगा। जहां कहोगे वहां चलूंगा।

ऐसा सुनकर बलवन्त और भोला की खुशी का कोई ठिकाना ना रहा। डाक्टर भार्गव अपने कमरे में वापिस चले गये। मां बैठी हुई अपनी बहू को दवा पिला रही थी। ''मां देखना, एक मरीज की हालत बहुत खराब है। मैं पास ही गांव में जा रहा हूं।'' भार्गव ने अपने बैग में इन्जैक्शन और कुछ दूसरी दवाईयां डालते हुए कहा।

''पगला हो गया है रे तू, बहू कितनी बिमार है। तुझे दूसरों की पड़ी हैं। तेरी बला से कोई मरे कोई जीये।''

''मां, आज तक तो मैं भी ऐसा ही समझता था, लेकिन जीवन में पहली बार इन्सानियत का अंकुर फूटा है। अपने लिये तो इन्सान हमेशा ही मरता है और हमेशा ही जीता है, लेकिन दूसरों के लिए मरने जीने का अवसर उसे कभी ही हाथ लगता है। मैं इसे खोना नहीं चाहता। गांव के छोकरे निःस्वार्थ भावना से किसी के लिये दुःख उठा रहे हैं, गिड़गिड़ा रहे हैं। मैं तो एक डाक्टर हूं। किसी का जीवन बचाना तो मेरा इन्सानी कर्त्तव्य भी है।

''बेटा, बहू को कुछ हो गया तो ? अपनी छोटी मुन्नी'' मां का दिल भर आया।

"मां, विश्वास करो। मुन्नी की मां को कुछ न होगा। भगवान न करे, यदि कुछ हो भी गया तो एक बाप के दिल में मां का दिल छिपा हुआ है, उसके जीवन में अन्धकार न होने दूंगा। लेकिन जिस छोटी बच्ची का भरी दुनिया में मां के सिवाय कोई नहीं है, यदि उसे कुछ हो गया तो जुल्म हो जाएगा। मेरी आत्मा मुझे धिक्कारती रहेगी, मैं पल भर भी चैन से न बैठ सकूंगा।"

मां कुछ बोल न सकी। डाक्टर भार्गव की छोटी सी बिटिया सो रही थी। उन्होंने प्यार से उसके सिर पर हाथ रखा, प्यार भरी आंखों से अपनी पत्नी की ओर देखा, हाथ में अपना बैग ले कमरे से बाहर आ गए।

डाक्टर भार्गव के पास कार थी। वह इसके बिना कहीं आते जाते न थे। लेकिन आज वह दो मील तो क्या, किसी के लिये दो सौ मील भी पैदल चलने को उत्सुक थे। ये तीनों नेक इन्सान अपनी मन्जिल की ओर बढ़ लिए। चाहे रास्ता कितना ही खराब था, चाहे रात्रि कितनी ही अन्धियारी थी, परन्तु इनके कदम बड़ी तेजी से उठ रहे थे। आखिर नीरू का घर आ पहुँचा। रात के ढ़ाई बज चुके थे। राधा रोती रोती सो गई थी। मदन तथा गांव के दो चार अन्य लोग सायं से ही नीरू के घर पर थे। उन्हें नीरू तथा छोटी बिटिया राधा की बड़ी चिन्ता थी। वे डाक्टर की इसी प्रकार प्रतीक्षा कर रहे थे जैसे सूखे खेत मेंह की बाट देख रहे हों। ज्योंहि बलवन्त तथा भोला ने डाक्टर के साथ घर में प्रवेश किया, मदन तथा अन्य उपस्थित दो तीन लोगों के मन को कुछ राहत मिली।

डाक्टर भार्गव ने मुंह में दवाई डाली, लेकिन कुछ असर न हुआ, एक के बाद दूसरी दवाई दी लेकिन सब निष्फल। बलवन्त तथा दूसरे लोग घबराये हुए दिखाई पड़ रहे थे। उनके चेहरे पर आई हुई आशा की झलक, निराशा में परिवर्तित सी होती हुई दिखाई पड़ने लगी।

"डाक्टर साहब ·····" मदन ने घबराई हुई आवाज में कहा।

"घबराओ मत, मैंने अभी हिम्मत नहीं हारी है। मैं इसे इन्जैक्शन दिए देता हूं। भगवान् ने चाहा तो अवश्य ही होश आ जाएगा।"

डाक्टर भार्गव के तीन घण्टे के अनथक परिश्रम के बाद नीरू ने अपनी आंखें खोल दीं। सभी के चेहरों पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। भार्गव का हृदय खुशी से नाच उठा।

"राधा बिटिया", नीरू ने बड़ी आहिस्ता से पुकारा। उसमें तेज बोलने की शक्ति न थी।

"लाया बहन, वह साथ के कमरे में सो रही है" प्रसन्नता से बलवन्त उसे जगाने के लिए साथ के कमरे में पहुँच गया।

"उठ बिटिया उठ। देख, तेरी मां तुझे बुला रही है। आज घर में साक्षात् भगवान् आये है। आ चल, दर्शन कराऊं।" ऐसा कहते हुए बलवन्त ने उसे एक दो बार हाथ से हिलाते हुए जगा लिया। वह उसे अपनी गोदी में उठा कर ले आया और नीरू के पास छोड़ दिया। राधा बिटिया 'मां, मां' कहते हुए अपनी मां से चिमट गई। मां ने उसे प्यार से चूम लिया।

बलवन्त ने डाक्टर भार्गव की ओर संकेत करते हुए कहा, "बहन, यह डाक्टर भार्गव हैं, बड़े नेक, इन्होंने ही तुम्हारा जीवन बचाया है।"

नीरू ने इसके उत्तर में अपने दोनों हाथ जोड़ दिये।

सूर्य निकले काफी देर हो चुकी थी। नीरू की हालत सुधर रही थी। डाक्टर भार्गव ने सभी को विश्वास दिलाया कि जब तक नीरू बिल्कुल स्वस्थ न हो जायेगी, वह चैन से नहीं बैठेगें। कल ही उसको अपने हस्पताल में बुलायेंगे। सभी का हृदय प्रसन्नता की लहरों में डूबा जा रहा था। डाक्टर भार्गव जाने के लिये उठ खड़े हुये। बलवन्त ने दस रुपए का नोट डाक्टर भार्गव को देते हुए कहा, "डाक्टर साहब आपकी फीस।

डाक्टर भार्गव चुप रहे।

बलवन्त ने हाथ जोड़कर कहा' "डाक्टर साहब हम जाने हैं, आज आपको दस तो क्या, दस हजार भी दिए जायें तो कम हैं। लेकिन क्या करें गरीब हैं, आप इन्हें ले लीजिये।" आवाज में बड़ा दर्द था।

डाक्टर भार्गव के चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान बिखर गई, आज मैंने किसी दूसरे के जीवन का मूल्य जाना है। नि:स्वार्थ भाव से किसी का जीवन बचाने में हृदय को कितना आनन्द मिलता हैं, आज पहली बार अनुभव हुआ है। आज तक न जाने मैंने कितने लोगों का जीवन बचाया, लेकिन दिल को कभी इतनी खुशी न हुई। इसमें मेरा अपना स्वार्थ छुपा हुआ था। एक हाथ से मैं उनसे जी भर पैसे लेता, तो मानो दूसरे हाथ से इसके बदले उनका जीवन वापिस लौटा देता। न कोई अमीर देखा, न कोई गरीब। यह कोई डाक्टरी न थी। मेरे हृदय पर पड़ा हुआ स्वार्थ का पर्दा हट गया है। आज से मैं दूसरों के जीवन को अपना जीवन समझकर अपने मार्ग पर आगे बढ़ूंगा। यही मेरी सबसे बड़ी फीस है।" वहां पर उपस्थित सभी लोगों ने डाक्टर भार्गव का धन्यवाद किया। उन्होंने चलने के लिए अपना कदम आगे बढ़ा दिया। तभी नीरू ने राधा से कहा, "बिटिया, डाक्टर साहब के पांव छूओ।"

छोटी बिटिया राधा ने डाक्टर भार्गव के पांव अपने छोटे छोटे हाथों से पकड़ लिए। डाक्टर भार्गव रुक गए।

राधा बिटिया ने अपना प्यारा सा मुखड़ा ऊपर उठा दिया। उसके चेहरे पर एक सुन्दर सी मुस्कान बिखर गई जैसे वह सब कुछ समझती हो। उसकी आंखों से प्रसन्नता के दो आंसू लुढ़क आये। डाक्टर भार्गव को लगा जैसे वह कह रही हो, "डाक्टर साहब, तुमने मेरी मां की जान बचाई है ना, अपने साथ मेरी आंखों से निकले हुए प्रसन्नता के दो आँसू लेते जाओ। ये तुम्हारा घर खुशियों से भर देंगे। तुम अपनी बिटिया को मेरी ही तरह मां की गोद में खेलते पाओगे।"

डाक्टर साहब ने नीचे झुककर प्यार से राधा बिटिया के माथे को चूम लिया और चल पड़े। बलवन्त और भोला डाक्टर को छोड़ आने के लिए उनके पीछे पीछे चल रहे थे।

काश्मीर को जैसा मैंने देखा तथा समझा

—आचार्य विष्णुमित्र विद्यामार्त्तण्ड

काश्मीर के विषय में पुस्तकों में पढ़ता रहा हूँ तथा सुनता रहा हूँ कि यह भारत का मनोरम तथा आकर्षक स्थल है। इसको देखने की बहुत दिन से इच्छा बनी हुई थी परन्तु परिस्थितियों के कारण मैं अपनी इस इच्छा को अब तक पूर्ण न कर सका था।

अपने गुरुकुल खानपुर के प्रशिक्षण विभाग की छात्राओं का भ्रमण का प्रोग्राम बना। छात्राओं के साथ बहन सुभाषिणी आचार्य कन्यागुरुकुल खानपुर कलां का उनके साथ जाना आवश्यक था। बहन जी ने मुझे भी साथ चलने के लिए कहा। मैं यद्यपि अपने गुरुकुल के छात्रों की समय पर परीक्षा न होने से चिन्तित था तो भी बहन जी की आज्ञा को न टाल सका।

8-5-1979 को छात्राओं की भ्रमण पार्टी प्रातः बस में कन्यागुरुकुल से चली। बस में सवार हो पानीपत, करनाल, अम्बाला होते हुए राजपुरा में मध्याह्न में सब ने भोजन किया। छात्रायें मस्त हो कर प्रसन्नता से सुन्दर धार्मिक गीतों को गाती हुई चल रही थीं। लुधियाना, जालन्धर को पार कर हमारी गाड़ी पठानकोट पहुँची। वहां से सड़क के दोनों ओर छोटी-छोटी पहाड़ियां हरे-भरे वृक्षों से मण्डित दिखलाई दे रही थीं। कुछ आगे बढ़ कर सतलुज को रोक कर बनाई हुई नहर के दर्शन किये। जितना-जितना हम आगे बढ़ते जाते थे उतनी-उतनी सुन्दरता भी बढ़ती जाती थी। ऊंचे पर्वत, ऊंचे वृक्ष एक दूसरे से आगे बढ़ने के लिए होड़ सी लगा रहे थे। लखनपुर में बस का टौलटैक्स देने के लिए वहां हम को घण्टा भर रुकना पड़ा।

वहां पर बने पुल पर से रेलगाड़ी तथा बसें गुजरती हैं। उन दोनों के लिए एक ही मार्ग बना हुआ है। तदनन्तर हमारी पार्टी जम्मु नगर की ओर बढ़ी। जब हम बस में बैठे जा रहे थे उस समय सर्वत्र अन्धकार फैल चुका था तो भी बस की झांकियों से विशाल पर्वत वृक्षावली समेत अस्पष्ट रूप में दर्शन दे रहे थे। दस बजे हम सब जम्मू में जाके एक रेस्टोरेन्ट में ठहरे। मार्ग में वर्षा होती रही। उसी स्थान पर हमने ठहरने

का तथा भोजन का प्रबन्ध किया। उस दिन वहां बड़ी गर्मी थी। मैंने मिस्टर वोगू से कहा कि आप लोग कहते थे कि काश्मीर में बड़ी सर्दी होती है, यहां तो हमारे शरीर पसीने में तरबतर हो रहे हैं। इस पर उन्होंने कहा कि जब श्रीनगर आवेगा तब आपको ठण्डक की प्रतीति होगी। जम्मू नगर तो हरियाणा जैसा ही गर्म है।

जम्मू का बस स्टैंड स्टेडियम के प्रकार का है। उसके दोनों ओर की पहाड़ियों पर मकान बने हुए हैं। उनके बीच में लगभग 250 या 300 बसें खड़ी दिखाई देती हैं। यह काश्मीर का इन्टर नेशनल बस स्टैण्ड है। प्रातःकाल बस स्टंण्ड के भवन पर चढ़ कर देखने से यह दृश्य बहुत ही सुन्दर प्रतीत होता है। जम्मू में रघुनाथ जी का बहुत प्राचीन तथा सुन्दर मन्दिर है। काश्मीर के राजा रणवीर सिंह द्वारा इसकी कुछ रचना तथा मरम्मत कराई गई है। यह मन्दिर दर्शनीय है। भक्तगण प्रातःकाल ही नंगे पांव पूजा के लिए इस मन्दिर में आते दिखाई देते हैं। इस मन्दिर में आने वालों में स्त्रियां अधिक हैं क्योंकि वे पुरुषों के मुकाबले में अधिक श्रद्धा वाली होती हैं।

इस मन्दिर में शिव, हनुमान की विशाल मूर्तियां विद्यमान हैं। अन्य राजाओं, देवों की मूर्तियां बनी हुई हैं, पर वे आकर्षक नहीं हैं। मन्दिरों के उन्नीस गुम्मज हैं।

9 मई को प्रातः हमारी पार्टी ने जम्मू से काश्मीर के लिए प्रस्थान किया। सड़क के दोनों ओर एक से एक बड़ा पहाड़ दिखलाई देने लगा। बड़े-बड़े विशाल पत्थर पहाड़ पर अलग हुए से दिखलाई देते थे, ऐसा प्रतीत होता था कि मानों ये थोड़ी सी ठेस लगते ही सड़क पर आ गिरेंगे।

इस प्रकार के मार्ग पर गाड़ी दौड़ाते हुए मदन लाल ड्राईवर की बस चालन की कुशलता भी दिखलाई देती थी कि किस कुशलता से वह सड़क के तंग मार्ग से गाड़ी को दौड़ा रहा था। सड़क के बाईं ओर के पहाड़ से झरने झर-झर कर नाले की शकल में तेजी से बहते दिखाई दे रहे थे। जो बड़े सुन्दर तथा भयानक भी प्रतीत होते थे। जब सड़क से नीचे की ओर हमारी दृष्टि जाती थी तो भय सा लगता था। बार-बार उस ओर देखने का साहस न होता था। मैं बहन सुभाषिणी को तथा वे मुझको नीचे की ओर देखने के लिए कहते थे। यह दृश्य बहुत सुन्दर तथा विचित्र था।

जब हम चलते-चलते 'कुद' पहुँचे वहां पर हमको ठण्डक का आभास हुआ। हमको बतलाया गया कि यहां से ठण्डक प्रारम्भ होती है वहां पर देवदारु के सीधे तथा ऊंचे वृक्ष पर्वत पर खड़े थे।

'पत्नीटाप' काश्मीर का सब से ऊंचा स्थान है। वहां की सुन्दरता तथा ऊंचाई को देख कर प्रभुसत्ता का नास्तिक को भी आभास होता है। वहां से 'बटौत' की ओर

जाया जाता है। वहां से बस पहाड़ के नीचे की ओर उतरती है। सड़क के मार्ग में उचित स्थानों पर चाय तथा भोजन आदि का भी सुप्रबन्ध है। उन पहाड़ों पर पहाड़ियों के बालक निर्भय हो कर इधर उधर घूमते दिखाई देते हैं। उन विशाल पर्वतों पर कहीं पर दो, कहीं पर चार-चार मकान पहाड़ी लोगों के बने हुए हैं। कहीं कहीं पर अधिक घर भी बने हुए हैं। उनके पशु भी निर्भय होकर वहां चरते दिखाई देते हैं। जो मार्ग हमारे लिए कठिन है वह उनके लिए सरल है। यह अभ्यास या आदत के कारण है।

रामबन से बानीहाल का मार्ग 60 कीलो मीटर लम्बा है। इस मार्ग में पहाड़ बहुत ऊंचे हैं। बीच में चिनाब नदी कहीं पर तीन सौ कहीं पर चार सौ फीट नीचे बहती दिखाई देती है। जब हम नीचे की ओर देखते थे तब हम को घबराहट सी होती थी।

मदनलाल ड्राईवर आगे से आने वाली और पीछे से आने वाली गाड़ियों को पार करता हुआ योग्यता से आगे बढ़ रहा था। उसकी गाड़ी की गति कभी कभी तेज हो जाती थी तो बहन सुभाषिणी मुझे कहती थी कि भाई मदनलाल को कहो कि यह गाड़ी को तेज न चलावे।

काश्मीर के पहाड़ पथरीले भी रेतीले भी हैं रेतीले पहाड़ों की मिट्टी सड़क पर वर्षा से गिर जाती है उसे दूर करने के लिए मजदूर नियुक्त किये हुए हैं। बानीहाल से काश्मीर की कमीपूनरो प्रारम्भ होती है। वहां से आगे 'जवाहर टनल' बनी है जो डेढ़ मील लम्बी है। जो भारत की बड़ी टनल मानी जाती है। यहां पर दो टनल (सुरंग) बनी हैं। एक गाड़ियों के जाने के लिए तथा दूसरी आने के लिए। यहां हर समय बिजली का प्रकाश रहता है। इसके बनने से काश्मीर की यात्रा में बाईस मील की यात्रा कम हो जाती है। काजू कुण्ड में हमारी पार्टी ने भोजन किया। वहां से कुछ दूर चल कर मैदानी भाग आया परन्तु अन्धकार होने से कुछ भी दिखाई न दिया। काजू कुण्ड से श्री नगर तक पहुँचने में हमको दो घण्टे लगे। श्री नगर में दस बजे एक रेस्टो-रेन्ट में ठहरे। वहीं पर हम 16 मई तक रहे। वहां का सुप्रबन्ध था। भोजन व्यवस्था का प्रबन्ध बहन वीणा प्राध्यापिका ने किया। वह सबकी संभाल करती रही।

9 मई के दस बजे हम श्रीनगर के सुन्दर तथा ऐतिहासिक स्थानों को देखने चले। सब से प्रथम हमने डल झील के दर्शन किये। वह पांच मील लम्बी तथा अढ़ाई मील चौड़ी है। इस पर एक फूलों का पार्क है जो मिट्टी भर के तैयार कराया गया है उसे नेहरू पार्क कहते हैं। इस झील में हाऊस बोटों तथा शिकारों में जल विहार किया जाता है। हमने भी आठ-आठ की संख्या में बैठ कर उस झील में जल विहार का आनन्द लिया। 'डल' का अर्थ है जल की अधिकता। अर्थात् इस झील में बहुत अधिक जल है अतः इसे 'डल' झील कहते हैं। यहां पर बहुत से हाऊस बोट हैं जो जल में ही खड़े रहते

हैं। रात्रि के समय उन पर लगे बिजली के बल्बों का प्रकाश जब झील में पड़ता है तो वहां की शोभा अद्भुत हो जाती है। इस झील में जेहलम (वितस्ता) नदी का तथा झरनों का जल आके इकट्ठा होता है। जेहलम नदी जो श्रीनगर के बीच से बहती है उसमें तो किनारों पर हाऊस बोटों की लाइन लगी रहती है। महाराजा हरिसिंह का महल भी जेहलम नदी के किनारे खड़ा है जो अब सरकार की सम्पत्ति है।

डल झील के दर्शन कर उसमें विहार कर हमारी पार्टी शंकराचार्य के मन्दिर पर गई। यह मन्दिर श्रीनगर से 1000 फुट की ऊंचाई पर है। यह दर्शनीय स्थल है। ऐतिहासिकों का मत है यह शिव मन्दिर सन्धिमान ने ईसा से 2564 वर्ष पूर्व बनाया था। उस समय यहां तीन सौ सोने की मूर्तियां थीं। गोपादित्य ने ईसा से 365 वर्ष पूर्व इसकी मरम्मत कराई और 376 ई० में ललितादित्य ने इसका जीर्णोद्धार कराया। कुछ का अनुमान है कि पुराने मन्दिर के स्थान पर यह नवीन मन्दिर राजा गोपादित्य ने बनवाया। जिस समय हिन्दू और बौद्ध धर्म में वाद-विवाद चल रहा था तो शंकराचार्य काश्मीर में बौद्धों को नीचा दिखाने आये थे। हिन्दू इसे पाश पहाड़ और मुसलमान तख्ते सुलेमान कहते हैं। इस पर्वत पर चढ़ कर काश्मीर घाटी तथा श्रीनगर की शोभा देखी जा सकती है। श्रीनगर के सारे भवन बर्फ के कारण टीन के बने हैं। बस से उतर कर कुछ दूर सड़क पर पैदल चल कर पौड़ियों द्वारा जो कि 240 हैं मन्दिर में जा सकते हैं। जो मन्दिर बड़े-बड़े पत्थरों से बना है। इतने भारी भारी पत्थरों को उठा कर ईंट की तरह लगाने की योग्यता का वहां दर्शन होता है। वहां एक पुजारी रहता है जिसकी दृष्टि चढ़ावे को प्राप्त करने की रहती है। हमारी छात्राओं ने भी भक्तिप्रवण होके मन्दिर पर अनेक रुपये चढ़ाये। इस पहाड़ को 'गोपाद्रि' भी कहते हैं। यहां चढ़ कर सांप की तरह श्रीनगर में घूमती हुई जेहलम नदी के भी दर्शन होते हैं।

अन्य बातों को लिखने से पूर्व काश्मीर की स्थापना के विषय में भी लिखना उचित प्रतीत होता है। काश्मीर को ही नन्दन वन कहा जावे तो अतिशयोक्ति न होगी। यहां पर कल-कल करती हुई शीघ्रगामिनी नदियां, झर-झर करते झरने, जल-प्रपात तथा स्रोतों को देख कर मनुष्य प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता है। इसमें चारों ओर लहलाते खेत, देवदार, चीड़, चिनारों की शोभा दर्शनीय है। काश्मीर हिमालय पर्वत श्रेणियों के चट्टानों के हृदय में जुड़ा हुआ है। यह 84 मील लम्बा तथा 25 मील चौड़ा है।

इतिहासकारों का मत है कि आधुनिक काश्मीर घाटी पहले काल में महान् जल खण्ड या झील के रूप में थी। दक्ष कन्या सती के नाम पर इसका पुराना नाम 'सतीसर' था। यहां पर कश्यप मुनि आये और उन्होंने बारहमूला पर्वत को कटवा कर यहां पर इकट्ठा हुआ सारा जल इस घाटी से बाहर निकाला। कश्यप मुनि ने सब से

प्रथम इस नगर की स्थापना की। उन्होंने आर्यव्रत या भारत में जाकर वहां से ब्राह्मणों तथा अन्य लोगों को यहां बसने की प्रेरणा दी। अतः कश्यप मुनि के नाम पर इसका नाम कश्यप मरु कहलाया। कालान्तर में यह नाम बिगड़ते-बिगड़ते काश्मीर हो गया।

जम्मू प्रदेश के विषय में कहावत है कि महाराज रामचन्द्र के वंशज जाम्बुलोचन नाम के कोई राजा यहां आये। यहां के मनोरम स्थल को देख कर, यहां की शान्ति को देख कर बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने ही इस नगर की यहां नींव डाली। उन्हीं के नाम पर इस नगर का नाम जम्बू नगर हुआ

सर्वप्रथम काश्मीर मौर्य वंश के राजा अशोक के अधिकार में रहा। फिर यहां पर तातार जाति का राज्य हुआ फिर सम्राट् कनिष्क ने यहां पर शासन किया। बौद्ध धर्म की चौथी धर्म सभा यहीं बुलाई गई थी। उसी काल में बौद्धों के महान् पण्डित नागार्जुन भी काश्मीर के हारवन गांव में रहा करते थे। फिर हूण जाति के फिहरगुल राजा ने यहां शासन किया। यहां की प्रजा पर उसने बड़े अत्याचार किये। उसकी मृत्यु के पश्चात् फिर हिन्दू राज्य की स्थापना हुई। आठवीं शताब्दी में ललितादित्य नाम के पराक्रमी हिन्दु राजा हुए। उनके राज्य में काश्मीर की उन्नति हुई। इस प्रकार चौदहवीं शताब्दी तक यहां हिन्दु राज्य रहा। तदनन्तर यहां पर मुस्लिम बादशाहों का का राज्य हुआ।

सिन्धदेव राजा की मृत्यु के पश्चात् उसका सेनापति रामचन्द्र यहां का राजा बन बैठा। सिन्धदेव के दूसरे सेनापति रेंचन शाह ने रामचन्द्र की हत्या कर डाली और उसकी पुत्री कीटा से उसने विवाह कर लिया।

रेंचनशाह ने ब्राह्मणों से हिन्दु बना लेने की प्रार्थना की परन्तु उन्होंने रेंचन शाह की प्रार्थना पर ध्यान नहीं दिया। अन्त में निराश होकर उसने मुस्लिम फकीर बुलबुल शाह से इस्लाम मजहब ग्रहण किया। सुलतान जैनुल आब्दीन नाम ने 1420 में वे अपनी लोक प्रियता के कारण सम्राट् पद से स्मरण किये जाने लगे।

1586 में बादशाह अकबर ने अन्तिम शिया शासक याकूब शाह को पराजित कर काश्मीर पर अधिकार किया। उसके पश्चात् उसके पुत्र जहांगीर और पौत्र शाहजहां काश्मीर पर शासन करते रहे। उन्होंने अनेक उद्यान तथा भवन बनवाये, जिनमें डल-झील के आप-पास के शालीमार, नसीम, निशात प्रसिद्ध हैं। औरंगजेब के शासनकाल में हिन्दुओं पर जजिया कर लगाया गया। इससे वहां पर अनेक हिन्दु मुसलमान हो गये। 1851 में काश्मीर अफगा अहमद शाह दुर्रानी के अधिकार में आ गया। 1845 तक यह प्रदेश सिक्खों के अधीन रहा।

इसके पश्चात् अंग्रेजों ने काश्मीर पर महाराजा गुलाब सिंह की सहायता से अधिकार कर लिया। फिर अंग्रेजों ने पचहत्तर लाख रुपये में महाराजा गुलाब सिंह को बेच दिया। 1846 में महाराजा गुलाब सिंह का इस पर अधिकार हो गया। महाराज गुलाब सिंह की मृत्यु के पश्चात् 1847 में उनके पुत्र रणजीत सिंह गद्दी पर बैठे। 1865 में महाराज प्रताप सिंह यहां के शासक बने। 1925 में उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके भतीजे हरिसिंह गद्दी पर बैठे। 1947 में पाकिस्तान की सहायता से कबालियों ने काश्मीर पर आक्रमण किया। तब राजा हरिसिंह ने काश्मीर को भारत सरकार के सुपुर्द कर दिया। तब से काश्मीर भारत का अटूट अंग है। यह संक्षिप्त इसका पूर्ववृत्त है।

श्रीनगर काश्मीर की राजधानी है। चिनार के विशालकाय वृक्ष सड़कों पर पंक्ति में लगे श्रीनगर की शोभा बढ़ा रहे हैं। यहां के मनुष्य बड़े निर्धन हैं उनका खाना-पीना भी उत्तम नहीं कहा जा सकता है। दुकानों पर बोर्डों पर आपको उर्दू या अंग्रेजी लिखी मिलेगी। केवल मात्र बैंकों के बोर्डों पर आपको कहीं-कहीं देवनागरी लिपि के दर्शन होंगे। पुरुषों से अधिक पुरुषार्थ स्त्रियां करती हैं। पुरुष प्रायः एक ऊनी चोगा सा पहने रहते हैं। पाजामा भी पिण्डियों तक पहना हुआ मिलेगा।

मैंने यह अनुभव किया वहां का मुस्लिम शरारती नहीं है। उसे अपनी आजीविका अर्जन की ही चिन्ता है। अतः उत्पात करने का प्रश्न ही नहीं उठता। एक बात और लिख दूं जो मुझे समझ में आई है। कांग्रेस सरकार ने और जनता सरकार ने जो 370 धारा को न तोड़ने का निर्णय लिया है वह बुद्धिमत्तापूर्ण है। यदि इस धारा को तोड़ दिया जावेगा तो भारत का धनी वर्ग अपने धन के बल स सारी जमीन को खरीद कर उस पर बड़े-बड़े महल बना कर काश्मीर की वास्तविक सुन्दरता को नष्ट-भ्रष्ट कर देगा, जो कि नितान्त अनुचित होगा।

'चश्माशाही' नाम का श्रीनगर से 8 किलो मीटर दूर मीठे जल का सुन्दर चश्मा है, जिसे मुगल गवर्नर अली मर्दन खां ने 1632 में बनवाया था। उसका जल बहुत शीतल तथा पाचक है। हमने वहां की शोभा भी देखी, जल भी पीया। उसके समीप विशाल पर्वत भी खड़ा है जिसको धूमे के आकार के बादल घेरे रहते हैं।

'परी महल' नाम से प्रसिद्ध एक भवन है, जो पहले कभी बौद्ध बिहार था। शाहजहां के बड़े पुत्र दारा शिकोह ने जिसकी मरम्मत कराई थी। उन्होंने यहां पर अपने गुरु आखून मल्लशाह से दर्शन शास्त्रों पर अनेक वाद-विवाद किया था। उसको देखकर मेरे दिल में अनेक प्रकार की भावनायें आई कि काल के विशाल गाल में प्रत्येक वस्तु लय हो जाती है।

चश्माशाही से 32 किलोमीटर दूर निशात बाग स्थित है। जहां पर सायंकाल

चार बजे हम पहुँचे। बाहर जो दीवार है, वह सुन्दर नहीं है। पता नहीं इतने सुन्दर स्थान को दीवार को सुन्दर क्यों नहीं बनाया गया। इसे नूरजहां के भाई आसफखां ने बनाया था। यहां पर चिनार के विशाल वृक्ष आकाश को छूते दिखाई देते हैं। यह बाग पहाड़ के ढलाव पर बनाया गया है। यह बाग फव्वारों समेत दस चबूतरों में एक के ऊपर एक ढलवां पंक्तियों में बनाया गया है। यहां खड़ा होकर डल झील का सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। हम यहां घूम कर बड़े प्रसन्न हुए।

निशात बाग से तीन किलोमीटर दूर आपको डल झील के तट पर बादशाह जहांगीर का बनाया शालीमार बाग दिखाई देगा। जो बहुत ही सुन्दर है। वहां सुन्दर फल फूल लगे हैं। बाग में बारह दरी और फव्वारे वहां की शोभा को बढ़ा रहे हैं। चिनार के वृक्ष भी यहां शोभा को द्विगुणित कर रहे हैं। यदि यह लिख दिया जावे कि श्रीनगर के आस-पास शोभा बढ़ाने वाले चिनार के वृक्ष हैं तो यह अतिशयोक्ति न होगी। कहते हैं कभी इस बाग के चारों ओर संगमरमर का प्राचीर था परन्तु अब तो साधारण दीवार ही इसकी प्राचीर बनी हुई।

'हार्वन' यह स्थान शालो मार से पांच किलो मीटर दूर है। यहां एक कृत्रिम झील है, जिसमें पानी इक्ट्ठा होता है। फिर यहां से सारे नगर को पानी दिया जाता है। इसके समीप भी विशाल पर्वत खड़ा है।

11 मई को हमारी पार्टी बस से गुलमर्ग की ओर यात्रा के लिए चली। यह स्थान श्रीनगर से पच्चीस मील दूर है। पहले तंग मर्ग जाना होता है। वहां से तीन मील आगे गुलमर्ग है। कुछ पहले आगे टट्टुओं पर जाया जाता था परन्तु अब वहां तक बस जाने लगी है। यह मार्ग बहुत ही रमणीक है। गुलमर्ग में ठहरने के लिए उत्तम होटल भी हैं। सड़क के दोनों ओर बहुत ही सुन्दर वृक्षावली शोभित है। गुलमर्ग के मार्ग में सीधे खड़े हुए देवदारु के वृक्षों की शोभा अद्भुत है। ऐसा प्रतीत होता है मानो किसी ने एक लाईन में इन्हें खड़ा किया हो। गुलमर्ग सागर तल से 8500 फीट ऊंचाई पर स्थित है। यहां घुड़दौड़ और पोलो का मैदान है। प्राचीन काल में इस स्थान को गौरी मार्ग कहते थे। सोलहवीं शताब्दी में शाह यूसफ ने इसका नाम गुलमर्ग रख दिया। इसके नाम से ही प्रतीत होता है कि यह एक पुष्पवाटिका है। यह स्थान वर्णन का विषय न होकर दर्शनीय है। देखने से ही प्रतीत होता है कि प्रभु ने इसे कैसा सुन्दर बनाया है। यहीं पर दो पहर में हमारी पार्टी ने भोजन किया। गुलमर्ग से चार मील आगे खिलन मर्ग है। गुल मर्ग से उसकी ऊंचाई दो हजार फीट है। गुलमर्ग से पैदल या टट्टू पर जाने के कई मार्ग हैं। खिलन मर्ग ऊंची-ऊंची पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यहां पर बर्फीली हवाओं का आनन्द लिया जाता है।

मैं तथा बहन सुभाषिणी पैदल ही खिलन मर्ग की ओर चले। हमको पैदल चलते

देख कर, हमारे सफेद बालों को देख कर यात्रियों ने कहा कि यदि खिलन मर्ग जाना है तो टट्टुओं पर ही बैठो, वैसे आप लोगों का जाना कठिन होगा परन्तु हम उस ऊबड़-खाबड़, पथरीले, रेतीले, ऊंचे-नीचे मार्ग से पैदल ही चल पड़े। वहां बड़ी ठंडक थी। रास्ते में एक तेज धार वाला झरना दिखाई दिया। उसको पार करना हमारे लिए कठिन लगता था। उसी समय दो नवयुवकों ने सहारा देके हमको उस झरने से पार किया। हम फिर साहस करके ऊपर की ओर बढ़े। कुछ दूर चलने पर श्वास चढ़ जाते थे। हम दोनों पहाड़ मार्ग पर ही बैठ जाते थे। फिर साहस करके उस पहाड़ के नीचे के भाग में बैठ गये जिसकी शिखर पर बर्फ फैली हुई थी।

आगे चलें या न चलें इसका चिन्तन कर रहे थे। फिर दोनों साहस करके ऊपर चढ़ने लगे। बीस पग बढ़ते ही श्वास चढ़ जाते थे तो भी हम उठते बैठते आगे बढ़ते ही रहे। हमारी छात्रायें भी हमारी सहायता कर रही थीं। इस प्रकार साहस करके हम उस बर्फीले पहाड़ पर चढ़ ही गये। इसी पहाड़ के दूसरे भाग पर पाकिस्तानी सेना ने चढ़ कर काश्मीर पर 1947 में आक्रमण किया था। इस स्थान को प्राप्त करने पर हमको बहुत प्रसन्नता हुई। यहां पर बर्फीली पहाड़ियों में बैठ कर बर्फ की यात्रा भी की। यहां से मीलों तक चारों ओर वर्फ ही बर्फ दिखाई देती थी। जब हम बर्फ से बाहर आये चक्कर से आने लगे तथा सोचने लगे कि कहीं पहाड़ से नीचे न गिर जावें परन्तु थोड़ी ही देर में वे चक्कर शान्त हो गये और उस पहाड़ से उतर कर गुल मर्ग पैदल जा पहुँचे जहां हमारी बस खड़ी थी। वहीं पर हम सब ने जलपान आदि किया।

12 मई को हम नगीन झील पर पहुँचे। यहां पर बादाम और अखरोट के वृक्षों की अधिकता है। यहां पर यात्रिगण नौका विहार का आनन्द भी लेते हैं। इसकी बारह दरी में खड़ा होकर पहाड़ का तथा झील का सुन्दर दृश्य देखा जा सकता है। कुछ मुसलमान युवक मेरे पास आये, उन्होंने टूटी-फूटी हिन्दी में पूछा कि क्या आप सदा इसी प्रकार से धोती बांधते हो। मैं अपने स्वभाव के अनुसार उनसे आमोद-प्रमोद करने लगा। वे बोले आपका बोलना हमको बहुत ही अच्छा लगता है। आप हमारे शाल खरीदो। मैंने कहा कि हमारी छात्राओं ने तो शोपिंग कर ली है अब उनके पास लेने-देने को कुछ नहीं है। तुम हमारा पिण्ड छोड़ो। इस प्रकार थोड़ी देर बातें करके हम वहां से चले आये।

नसीम बाग हजरत बल से थोड़ी दूर है। इसे मुगल बादशाह अकबर ने बारह सौ चिनार के वृक्ष लगवा कर बनवाया था। वहां पर अभी तक तीन सौ साढ़े तीन सौ वर्षों से लगे विशाल तथा बहुत मोटे चिनार के वृक्ष दिखाई देते हैं। इस बाग में एक सुन्दर चश्मा (स्रोत) है। उसके समीप ही ऊंचा पहाड़ है। उस दिन वर्षा हो रही थी। इन्द्रधनुष वहां इस प्रकार दिखाई दे रहा था मानो वह झील के दोनों ओर से बन कर तैयार हुआ हो। वस्तुतः सुन्दर स्थान है। (क्रमशः)

चिन्गारी सुलग रही है :—

ऐतिहासिक कंझावला आन्दोलन

—नरेन्द्र कुमार विद्यालंकार

[गतांक से आगे]

जिसमें दिल्ली के चारों ओर बसने वाले सभी जातियों के कई हजार लोग एकत्रित हुए। जब दिल्ली प्रशासन ने यह देखा कि यह झगड़ा पता नहीं क्या रूप लेले तब दिल्ली के उपराज्यपाल श्री दिलीप कोहली ने दिल्ली के डिप्टी कमिश्नर और एस० पी० को एक पत्र देकर उपरोक्त सर्व जातीय "सर्वखाप पंचायत" में भेजा। जिस में उन्होंने लिखा कि ग्राम सभा के सभी अधिकार विशेष कर भूमि सम्बन्धी ग्राम सभा को प्राप्त हो गये हैं। इस पर आन्दोलन स्थगित हो गया। इसी बीच दिल्ली प्रदेश में ग्राम पंचायतों के नए चुनाव हो गए। नई पंचायत ने 21 मार्च 1978 तथा 24 अप्रेल 1978 को सम्बन्धित अधिकारियों एवं भारत सरकार के मन्त्रियों को पत्र लिखे, परन्तु ग्राम पंचायत को न किसी सरकारी अधिकारी ने उत्तर दिया और न ही केन्द्र सकार के किसी मन्त्री ने।

29 जून 1978 को ग्रामसभा ने सर्वसम्मत प्रस्ताव द्वारा निर्णय किया कि यह भूमि चरागाह ही रहेगी। किसी भी कीमत पर किसी को पट्टे पर नहीं दी जायेगी। साथ ही यह भी निर्णय हुआ कि गैर बिस्वेदारों को विशेषकर हरिजनों को मुफ्त प्लाट दिए जायेंगे। इसकी सूचना दिल्ली प्रशासन को भी दे दी गई। इस पर दिल्ली प्राशासन ने चुप्पी साध ली।

2 जुलाई 1978 को दिल्लो प्रशासन ने ग्राम पंचायत एवं ग्राम सभा को विश्वास में लिए बिना इस चरागाह भूमि की भारी पुलिस संरक्षण में ट्रैक्टरों द्वारा जुताई करवा दी।

7 जुलाई 1978 को जब किसानों ने हरिजनों को भूमि जोतने से रोका तो छोटा-मोटा झगड़ा हो गया। भारी संख्या में पुलिस वहां मौजूद थी। दोनों पक्षों को

चोटें आईं। पुलिस ने किसानों की रपट लिखने से इन्कार कर दिया। हरिजनों की झूठी रिपोर्ट लिखो और किसानों को यह कहकर चालान कर दिए कि उन्होंने खेतों से हरिजनों की फसल लूट ली जबकि यह बात जग-जाहिर है कि जुलाई के महीने में उत्तर भारत के खेतों में विशेषकर दिल्ली के आस-पास कोई फसल काटने लायक नहीं होती और तब जबकि यह जमीन पिछले अढ़ाई वर्ष से बिना बोई खाली पड़ी थी। इस मामले में 27 किसानों पर आजकल मुकद्दमे चल रहे हैं और वे बिना मतलब की पेशियां भुगत रहे हैं।

इस जमीन (चरागाह) की मालगुजारी अब भी गांव देता है। कंझावला गांव के माल के कागजात में नक्शा नम्बर एक और दो के लिहाज से आज भी ग्राम सभा इस जमीन की मालिक है। खाली पड़ी 1976–77 में इस जमीन की गिरदावरी ग्राम सभा के नाम होती रही है जो रिकार्ड में दर्ज है। जिस जमीन पर आपात् काल के दौरान "इन्दिरा सरकार" कब्जा न कर सकी, उसी जमीन पर "मोरार जी सरकार" ने दो हाईकोर्टों के निर्णय के विरुद्ध सरकारी कब्जा करवा दिया और इस झगड़े ने ऐसा रूप ले लिया है कि इसके दूरगामी परिणाम होंगे और इसके सहारे दिल्ली के चारों ओर के किसान संगठित हो रहे हैं तथा यह सत्याग्रह धीरे-धीरे वर्ग-संघर्ष का रूप धारण कर गया है।

जब 7 जुलाई को दिल्ली प्रशासन ने इस भूमि पर कब्जा कर लिया तब कंझावला के किसानों ने जनता सरकार के मन्त्रियों के पास भाग-दौड़ शुरू की। जब उनकी कहीं भी सुनवाई नहीं हुई तब वे हजारों की संख्या में इकट्ठा हो 13 अगस्त सन् 1978 को प्रधान मन्त्री मोरार जी की कोठी पर सफदरजंग रोड़, नई दिल्ली पहुँचे। किसानों का डेपुटेशन प्रधान मन्त्री से मिला। मोरार जी का किसानों को उत्तर था कि "हमने जिस जमीन पर कब्जा करना था कर लिया, अब तुम्हारी बात नहीं सुनेंगे" इस पर बोखलाये हुए किसानों ने बाहर आकर अपने साथियों को कह दिया कि प्रधान मन्त्री हमारी किसी बात को सुनने के लिए तैयार नहीं हैं। इस पर बाहर खड़े सर्वखाप के लोग भड़क उठे और मोरार जी के विरुद्ध भयानक नारेबाजी शुरु हो गई तथा किसानों ने पुलिस का घेरा तोड़ कर मोरार जी की कोठी में घुसना चाहा।

इस पर सी० आर० पी० के सिपाहियों ने किसानों पर लाठी चार्ज किया और अश्रुगैस के गोलों की वर्षा की। इस पर महिलाओं की गोद में बच्चे बिलख उठे। सैंकड़ों वृद्ध किसान सड़कों पर लुढ़कते नजर आए। अनेक किसान पुलिस के घोड़ों की टाप और लाठियों से घायल हुए। उस दिन पुलिस लाठी चार्ज से 807 पुरुष, 106 महिलायें तथा 29 बच्चे बुरी तरह घायल हुए। पुलिस ने 1165 किसानों को गिरफतार करके जेल भेज दिया।

15 अगस्त 1978 को लालकिले की ऐतिहासिक प्राचीर से प्रधान मन्त्री ने कंझावले के किसान आन्दोलन का अपने भाषण में बड़ी तलखी के साथ जिक्र किया। बस यहीं से कंझावला के किसान-आन्दोलन की नींव पड़ गई।

2 अक्टूबर को महात्मा गांधी के जन्म दिन पर भी जब किसान राजघाट पर भूख हड़ताल के लिए गए, तब पुलिस ने कई हजार किसानों को गिरफ्तार किया और उन्हें महात्मा गांधी की समाधि के नजदीक नहीं फटकने दिया। पुलिस अत्याचारों से एक किसान सत्याग्रही की मृत्यु हुई। इस प्रकार इस सत्याग्रह ने "अखिल भारतीय किसान सत्याग्रह" का रूप ले लिया है तथा यह सत्याग्रह इसी प्रकार चलता रहा तो यह धीरे-धीरे जिन किसानों के वोट के सहारे 'जनता पार्टी' सत्ता में आई उसकी जड़ों को खोखली कर देगा। इस सत्याग्रह में अब तक 80 हजार किसान अपनी गिरफ्तारियां दे चुके हैं जिनमें 70 हजार पुरुष तथा 10525 स्त्रियां हैं। गिरफ्तारी देने वालों में बड़ी संख्या हरियाणा, दिल्ली, उत्तर-प्रदेश, पंजाब और राजस्थान के किसानों की है। गुजरात, बिहार, बंगाल, हिमाचल और जम्मू कश्मीर तक के कुछ किसान भी यहां अपनी गिरफ्तारियाँ दे चुके हैं।

नेता विहीन सत्याग्रह—

इस सत्याग्रह की सब से बड़ी खूबी यह है कि इसका कोई भी नेता नहीं है। यह सत्याग्रह विशुद्ध रूप से पंचायत द्वारा चलाया गया है। इस सत्याग्रह की संचालक 'सर्वखाप पंचायत' है जिसका कोई नेता नहीं होता। सब निर्णय चौपाल में बैठ कर ग्राम सहमति से किये जाते हैं। चौपाल में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी राय देने और बात कहने का हक होता है। वहां कोई बड़ा छोटा नहीं। सब बराबर होते हैं। इस लिए कंझावले का सत्याग्रह फैलता जा रहा है। सत्याग्रहियों को लेने बुलाने कोई नहीं जाता। प्रत्येक गांव में लोग चौपाल में इकट्ठे होते हैं और पैसा इकट्ठा करते हैं जिससे सत्याग्रहियों के रास्ते का खर्चा चले और सत्याग्रहियों को कंझावला या दिल्ली भेज दें।

जो लोग इस सत्याग्रह के साथ चौ० चरणसिंह या श्री राजनारायण का नाम जोड़ते हैं वे किसानों के साथ अन्याय करते हैं; क्योंकि उपरोक्त दोनों नेताओं का इस 'किसान सत्याग्रह' से दूर का भी वास्ता नहीं। इसका स्पष्ट कारण है किसान अपने सत्याग्रह में राजनीति की पुट नहीं आने देना चाहते। जब मैं 12 अप्रैल की शाम को कंझावला पहुँचा तो हजारों लोग अगले दिन 13 तारीख की गिरफ्तारी के लिए तैयारियां कर रहे थे, जिन में कुछ पञ्जाब के सिक्ख थे। कुछ हरियाणा के दूर-दराज के देहात से आए हुए ब्राह्मण, रोड़, अहीर, जाट आदि किसान जातियों के सत्याग्रही थे। उत्तर प्रदेश से भी कुछ लोग आये हुए थे। जब उनसे पूछा कि आप लोग (सत्याग्रह के व्यवस्थापक) चौ० चरण सिंह से मिले? तब इन लोगों का उत्तर था कि न हम चौ०

चरण सिंह से मिले, न मिलने की इच्छा है। हमारा सत्याग्रह जनता-जनार्दन का सत्याग्रह है किसी व्यक्ति विशेष का नहीं। चौ० चरणसिंह कंझावले के साथ अपना नाम जोड़े जाने से डरते हैं, तब हम उनके पास क्यों जायें। भारत की केन्द्रीय सरकार हमारे सत्याग्रह को जाटों का सत्याग्रह कहती है, क्योंकि इससे उसका स्वार्थ सिद्ध होता है।

दिल्ली अन्तर्राष्ट्रीय शहर है। यहां से देश के हिन्दी, अंग्रेजी में कई बड़े समाचार-पत्र निकलते हैं। नित्यप्रति कंझावला में किसान गिरफ्तारियां देते हैं। प्रधान मन्त्री मोरार जी के भय से कोई समाचार-पत्र हमारी गिरफ्तारियों के समाचार प्रकाशित नहीं करता। उन्होंने मुझे कहा कि आप स्वयं देखें यहां दो जगह पुलिस छावनी पड़ी हुई है, जिनमें कई सौ सिपाही दिन-रात हमारा पहरा देते हैं। क्या हम चोर, उचक्के और डाकू हैं।

मुझे उपरोक्त सब जानकारी देने वालों में उस समय वहां उपस्थित व्यक्ति थे—अखिल भारतीय किसान संघर्ष सिमिति के उप-प्रधान बाबू रामगोपाल चार मन्त्रियों में से एक कर्नल भरतसिंह, कार्यालय मन्त्री राजसिंह उर्फ लीलू राम, देवी सिंह नम्बरदार, मास्टर दीप चन्द और रणजीत सिंह नम्बरदार। श्री प्रताप सिंह रात को देर से आने वाले सत्याग्रहियों के लिए सोने, खाने की व्यवस्था कर रहे थे। कुछ नवयुवक सत्याग्रहियों को चाय पिला रहे थे। वातावरण में काफी गर्मी थी। चारों ओर चहल-पहल थी। सारा वातावरण उल्लासमय और जोश से भरा हुआ था; कंझावले के सत्याग्रह की आड़ में उत्तर भारत के किसानों ने इस लड़ाई को विशुद्ध रूप में आर्थिक युद्ध का रूप दे दिया है और वे अपनी पैदावार के उचित मूल्य की प्राप्ति के अपने सत्याग्रह को आगे बढ़ा रहे हैं। वहीं पर मुझे बताया गया कि श्री रत्नसिंह शांडिल्य जो उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के निवासी हैं और दिल्ली के किसी हिन्दी दैनिक पत्र में काम करते हैं, उनका ईख चार रुपये क्विटल में बिका। वे अपने समाचार-पत्र में इस समाचार को प्रकाशित नहीं करवा सके; क्योंकि पत्र के स्वामियों ने उनसे कहा कि भारत सरकार ऐसा नहीं चाहती।

अखिल भारतीय किसान संघर्ष समिति ने भारत के राष्ट्रपति श्री नीलम संजीवा रेड्डी को जो मांग-पत्र दिया था वह निम्न प्रकार है (और इसी मांग-पत्र को लेकर यह सत्याग्रह विस्तार प्राप्त कर रहा है:—

भारत के प्रत्येक गांव में चराहगाह रखी जायें। स्वतन्त्रता के पश्चात् गांव में गोचर भूमि नष्ट की जा रही है। पशु धन का ह्रास हो रहा है। बिना दूध देश का युवक शक्तिशाली नहीं बन रहा। अतः चरागाहें रखना अनिवार्य है।

यदि भारत सरकार चाहती है कि देश से जातिवाद समाप्त हो जाय, तो उसे

सर्वप्रथम जातीय आधार पर दी जाने वाली सरकारी सुविधाओं को बदलकर गरीबी के आधार पर करना चाहिए। नौकरियों में जाने के बाद उन्नति उस व्यक्ति को देनी चाहिए जो वरिष्ठ है या जिसने अपनी योग्यता को बढ़ा लिया है। देश में प्रत्येक व्यक्ति को जीने का अधिकार मिलना चाहिए। सम्पन्न व्यक्ति जाति के आधार पर सुविधायें प्राप्त करें और भूखा, नंगा व्यक्ति जातीय आधार पर सुविधायें प्राप्त न कर सके, यह न्यायोचित नहीं है।

दुनियां में सम्भवतः ऐसा कोई उत्पादक नहीं होगा, जो अपने उत्पादित माल को घाटे में बेचता हो, परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि भारत का किसान अपनी उत्पादित जिन्स को घाटे में बेचता है, फिर किसान का विकास कैसे होगा ? प्रत्येक उत्पादक अपनी लागत निकाल कर स्वयं अपना लाभ जोड़ कर अपने माल का भाव निश्चित करता है। अतः किसान भी जो जिन्स पैदा करता है, उसका भाव लागत निकाल कर, लाभ जोड़ कर तय किया जाना चाहिए। हमारी यह मांग न्याय संगत है।

आपात काल में सरकार द्वारा की गई सभी ज्यादतियों को वापिस लेने का सरकार ने दावा किया था और ज्यादतियां वापिस भी ली गईं, परन्तु किसानों की दर खरीद 1975 में दस गुणा तक बढ़ा दी गई। हमारी मांग है कि आबियाना की दर खरीद 1975 से पूर्व के अनुसार की जाए।

कृषि उपयोगी वस्तुओं की महगाई घटाई जाए। पांच वर्ष पूर्व कृषि उपयोगी वस्तुओं का जो मूल्य था, आज उन वस्तुओं का मूल्य पांच गुणा तक बढ़ा दिया गया है। इस महंगाई को नियन्त्रत किया जाए।

भूमि सुधार अधिनियमों को लागू किया जाए और जो कृषि फालतू है उसका वितरण उन किसानों में किया जाए जिनके पास अलाभकारी जोत है।

भूमिहीनों तथा गरीबों को कृषि भूमि न देकर आवासीय भूमि दी जाए और उन्हें लघु-उद्योग दिए जायें। उद्योग का प्रशिक्षण दिया जाए, मशीन आदि खरीदने के लिए उन्हें रुपया दिया जाए और उत्पादित माल की बिक्री के लिए मण्डी का प्रबन्ध किया जाए, तथा बड़े उद्योगों पर सीमा लगाई जाए, जिससे लघु उद्योग पनप सकें और बड़े उद्योगों का एकाधिकार समाप्त हो।

उपजाऊ भूमि का अधिग्रहण न किया जाए, इस अधिग्रण से एक ओर किसान उजड़ता है तो दूसरी ओर देश की पैदावार घटती है।

श्री रामधन आदि ने इस आन्दोलन को जाट और चमार का रूप देने का प्रयत्न किया, पर इसमें उन्हें सफलता नहीं मिली; क्योंकि सत्याग्रह के संचालकों ने "सर्वखाप पंचायत" के नेतृत्व में प्राय: सभी जातियों के किसानों को इस सत्याग्रह में स्वेच्छा से जेल जाने के लिए तैय्यार किया है। राष्ट्रपति को जो मांग-पत्र दिया गया है वह सारे राष्ट्र के किसानों की उचित मांगों को प्रकट करता है, किसी जाति विशेष की मांग को नहीं। इस सत्याग्रह के कारण भारत का किसान अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए संगठित हुआ है, परन्तु दिल्ली के जनसंघ प्रशासन ने तथा भारत के प्रधान मन्त्री श्री मोरार जी देसाई ने किसानों के विरुद्ध जो रुख लिया है उसके कालान्तर में दूरगामी परिणाम अवश्य निकलेंगे। संघर्ष जीवन की निशानी है और कंझावले का सत्याग्रह किसान वर्ग में जो बेदारी पैदा कर रहा है उसे सत्ताधीश देर तक नजरन्दाज नहीं कर सकेंगे। देश का भबिष्य किसानों के भविष्य पर निर्भर है। जिन किसानों ने करोड़ों मन अन्न पैदा करके देश का पेट भरा और अरबों रुपया (जो बाहर से अन्न मंगाने पर व्यय होता था) बचाया है, उसे कोई कृतघ्न ही भुला सकता है। कृतज्ञ राष्ट्र यदि अपने अन्न-दाताओं का सत्कार नहीं करता तो राष्ट्र का भविष्य धूमिल होते देर नहीं लगेगी। क्या देश की 60 करोड़ जनता राष्ट्र की रीढ़ किसान को उसके परिश्रम का उचित देने से इन्कार कर सकती है, जबकि यह देश कृषि प्रधान है और इसकी जन्ता अस्सी प्रतिशत गांव में बसती है। देश के संसद सदस्य बहुत देर तक अन्धे और बहरे बन कर किसान का बिना कुछ भला किए उसका वोट भविष्य में प्राप्त करने में असफल रहेंगे। यही कंझावले के ऐतिहासिक सत्याग्रह का वह स्वरूप है जो भले ही समाचार पत्रों के द्वारा प्रचार न पा सका हो, परन्तु किसान वर्ग की रग-रग में इसका सन्देश समाया हुआ है।

किसानों के नेता

(चौ० चरण सिंह)

—महेन्द्र सिंह उत्साही
रा०उ०वि० बराह खुर्द (जीन्द)

★

(१)

जन्मे थे जिस दिन चरणसिंह
सूरज ने गस खाई थी ।
चन्द्र का आदेश सुन,
किरणें बुलाने आई थीं ।

(२)

प्रसाद बांटा सितारों ने,
ध्रुव ने गान सुनाया था ।
अभिषेक किया था मेघों ने,
द्युति ने छन्द सुनाया था ।

(३)

इन्द्र - धनुष ने सतरंग लेकर,
श्रृंगार किया था अम्बर पर ।
देख चरण सिंह की सूरत,
आया था भाग्य अवसर पर ।

(४)

आज भी इस उर में देखो,
निःस्वार्थ की तड़प भरी ।
पतझर के प्रांगण में भी,
रही मानस की कलि हरी ।

(५)

किसान, मजदूर भाइयों का,
जिसने पूरा साथ निभाया ।
होगी मेहनत की ही पूजा,
यह मन्त्र जिसने गाया ।

(६)

अपनी सौम्य गन्ध से जिसने,
कांटों को फूल बनाया ।
अपने परार्थ ओज से जिसने,
जुगनू को चांद बनाया ।

(७)

फल की न कभी इच्छा की,
उपकार में ध्यान लगाया ।
सेवा में ही मेवा होती,
इस नारे से हिन्द जगाया ।

(८)

हे परमार्थी मेरी तरफ से,
तुझे लाखों बार नमन है ।
आपकी इस अद्वितीय सेवा से,
हुआ आज यह चयन है ।

हिन्दी का मसीहा : आचार्य द्विवेदी

वाचस्पति 'कुलवन्त'
M.A., M Phil.
कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी

हिन्दी साहित्य के मनीषी विद्वान आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इस दुनिया में नहीं रहे, सुनकर यह बहुत अटपटा लगा। द्विवेदी जी का कृतित्व और व्यक्तित्व ही कुछ ऐसा था, जो रह रहकर बिजली की तरह कौंध उठता है। द्विवेदी जी मस्तमौला, फक्कड़ एवं हंसी के अवतार थे। साहित्य के मर्मज्ञ पण्डित द्विवेदी जी का जन्म 19 अगस्त 1907 को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के 'आरत छपरा' नामक ग्राम में हुआ। इनके कुल की बहुत प्रतिष्ठा थी। इनके दादा आरत दूबे ज्योतिष के महान् पण्डित यशस्वी व्यक्ति थे। इसलिए गांव का नाम भी 'आरत दूबे का छपरा' पड़ गया। आचार्य द्विवेदी जी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से ज्योतिष आचार्य एवं शास्त्राचार्य की उपाधि प्राप्त की और शान्ति निकेतन में अध्यापक हो गए। यहीं पर उन्होंने बंगला भाषा और साहित्य का गहन अध्ययन किया। लगभग बीस वर्षों तक शान्ति निकेतन में रहने के बाद आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद पर नियुक्त हुए। आपने सात वर्ष तक चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय में रहकर पुनः काशी विश्वविद्यालय के डायरेक्टर के पद को सुशोभित किया। जो भी द्विवेदी जी से मिला उसने उन्हें हिमालय की तरह धवल अट्ठाहास करते हुए पाया।

हिन्दी साहित्य में कबीर के माध्यम से प्रवेश करके आप शीघ्र एक महान् इतिहासकार, उपन्यासकार, निबन्धकार और समीक्षक के रूप में प्रसिद्ध हो गए। आप मूलतः संस्कृत के पण्डित थे। व्यवहार ऐसा था कि पहली ही भेंट में व्यक्ति यह सोचता जैसा पण्डित जी का और मेरा युगों - युगों का साथ है। डा० विद्यानिवास मिश्र लिखते हैं कि उनका भाषण सुनते समय लगता था कि पण्डित जी ऊंचे और ऊंचे शिखर हैं। 15 मिनट गरमाने में लगते, व्योम-केश शास्त्री के केश व्योम में लहरा उठते। बाहें ऊर्ध्वगं शिखा बन जातीं। उनका व्याख्यान सुनना एक हिमधौत शिखर के प्रथम साक्षात् का अनुभव होता था।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के संसर्ग में आकर आचार्य जी ने बंगला साहित्य की भी सेवा की। उन्होंने शान्ति निकेतन में दो पत्रिकाओं का सम्पादन किया। इसके साथ-

साथ आचार्य जी ने हिन्दी को अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में प्रचारित और प्रसारित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। द्विवेदी विशुद्ध मानव थे, जाति-पाति, ऊंच, नीच का भेदभाव उन्हें स्वीकार न था। उनके प्रसिद्ध शब्द हैं "इस देश में हिन्दू हैं, मुसलमान हैं, ब्राह्मण हैं, धनी हैं, गरीब हैं—विरोधी, स्वार्थी और विरुद्ध संस्कारों की विराट् वाहिनी है। इसमें पद-पद पर गलत समझे जाने का अन्देशा है .... मनुष्य की भलाई के लिए आप अपने आप को निःशेष भाव से देखकर ही सार्थक हो सकते हैं" इस प्रकार हम देखते हैं कि आचार्य जी सच्चे अर्थों में मानव थे और वे भारतीय मनीषा के सच्चे प्रतीक थे। भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया। भारतीय संस्कृति के महान् चिन्तक द्विवेदी जी ने राज भाषा आयोग, राष्ट्रीय प्रसारण समिति, राष्ट्रीय शिक्षा परिषद्, साहित्य अकादमी आदि में कार्य करते हुये, हिन्दी साहित्य को विश्वव्यापी यश दिलाया। आपने 1947 में मंगलाप्रसाद पुरस्कार, टैगोर पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त किए। साहित्य वाचस्पति और डी. लिट् की उपाधि भी प्राप्त की। 'बाणभट्ट की आत्मकथा' उनका पहला उपन्यास था। पढ़ने पर ऐसा लगता है जैसे कादम्बरी की समासयुक्त पदावली हिन्दी में बड़ी सहजता के साथ अवतरित हो गई है।

द्विवेदी जी ने हिन्दी साहित्योतिहास, उपन्यास, निबन्ध एवं समालोचना में अपनी चलाई। 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' और 'हिन्दी-साहित्य' इनके प्रसिद्ध इतिहास ग्रन्थ हैं। 'अशोक के फूल' इनका सुन्दर सा निबन्ध है। 'अनाम दास का पौधा' और 'बाणभट्ट की आत्मकथा' प्रसिद्ध उपन्यास हैं। हिन्दी की मध्यकालीन पृष्ठभूमि को स्पष्ट करने में आचार्य जी का अप्रतिभ योगदान है।

आचार्य जी का सम्बन्ध क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। कहीं का बढ़ई, किसी प्रान्तीय भाषा का कवि, गरीब व्यक्ति या अमीर व्यक्ति, राजनीतिज्ञ या पण्डित, ब्राह्मण या हरिजन सभी से आचार्य जी की दोस्ती थी। वे सच्चे अर्थों में संस्कृति के प्रतीक थे।

आज द्विवेदी जी हमारे मध्य नहीं हैं लेकिन उनका यशःकाय शरीर अब भी जीवित है, जीवित था और जीवित रहेगा। हिन्दी के इस महान् रक्षक की साहित्य सेवा को साहित्य जगत् कभी न भुला सकेगा। सचमुच वह हिन्दी का मसीहा था।

गुरु हनुमान से मुलाकात

—महावीर 'अधिकारी'

मैं 27 मई 1979 की मध्याह्न में बिड़ला व्यायाम शाला देहली पहुँचा। मैंने प्रवेश करते ही देखा कि गुरु हनुमान जी अपने कमरे में बैठे हुए थे, मेरे को देखते ही कहा कि इस समय सब पहलवान सोये हुए हैं, यदि आप किसी से मिलना चाहें तो सायंकाल के समय आयें। मैंने कहा गुरु जी! मैं तो आपसे ही मिलना चाहता हूँ। यहां की कुछ जानकारी भी प्राप्त करना चाहता हूँ और आपका भी परिचय लेना चाहूँगा। गुरु जी ने बैठाया और वार्ता प्रारम्भ हो गई।

गुरु जी ने बताया कि मेरा बचपन का नाम विजय था। माता पिता बचपन में ही स्वर्ग सिधार चुके थे। हनुमान नाम तो लोगों ने प्रेमवश बाद में कहना प्रारम्भ कर दिया। मैं जो कुछ बन सका हूँ वह सब आर्य समाज की देन है। दिल्ली के नये बाजार में मैं स्वामी श्रद्धानन्द जी के पास उपदेश तथा शिक्षा प्राप्ति के लिए आता जाता रहता था। मैंने बचपन से ही (9 वर्ष की अवस्था से) कुश्ती सीखना प्रारम्भ कर दिया था। भगवान सिंह तथा खलीफाओं से भी मैंने कुश्ती प्रशिक्षण तथा काफी प्रेरणा ली है।

बात सन् 1933 की है, गुरु जी प्रातः सैर को जा रहे थे, ये नहा धो कर सन्ध्या करने बैठे ही थे कि इन्होंने किसी अबला की चीख पुकार सुनी। ये तुरन्त दौड़ कर उस स्थान पर पहुँचे और देखा कि एक तांगे वाला एक स्त्री के साथ छीना-झपटी कर रहा था। उस समय उन्होंने वही परिचय दिया जो कि ऐसे समय पर क्षत्रिय लोग दिया करते हैं। वहां पहुँच कर तांगे वाले को मार-मार कर बेहोश बना दिया और तांगे में ही डाल कर तीन-चार चाबुक घोड़े को जड़ दिये। घोड़ा तांगे समेत बन की खामोशी में लीन हो गया। संयोगवश बिड़ला जी इस घटना को देख रहे थे, उन्होंने इस विजय नामक युवक को बुलाया तथा तुरन्त ही अपनी व्यायामशाला का कार्य भार इन्हें सौंप दिया।

मैंने पूछा कि गुरु जी! आपके यहां की दिन चर्या तथा नियम किस प्रकार के हैं? तो गुरु जी ने कहा—हमारा यह एक छोटा सा गुरुकुल ही है। गुरुकुलों में जो दिनचर्या और नियम हैं वही हमारे यहां पर हैं। बाद में मेरे को ब्रह्मचारी दिलबाग तथा रोहतास आदि से पूछने पर मालूम हुआ कि गुरु जी भी 4 बजे ही अपने पहलवानों को उठा देते हैं। उनकी आज्ञा के बगैर कोई बाहर नहीं जा सकता, कोई फिल्म नहीं देख सकता। अनुशासन कायम करने के लिए गुरु जी की कठोर जबान तथा डंडा तैयार रहता है। इसी अनुशासन तथा पद्धति द्वारा गुरु जी अपने शिष्यों को महान बना सके हैं।

इनके मुकाबले मैंने मास्टर चन्दगी राम तथा परशराम अखाड़ा देखा तो वहां पर पहलवानों की देखरेख करने वाला कोई नहीं था न उत्तम प्रबन्ध था।

गुरु हनुमान जी की प्रारम्भ से ही अच्छे कार्यों में हिस्सा लेने की रुचि रही है। 1931 - 32 में नेता जी द्वारा रोशनारा बाग में होने वाले उत्सवों में विशेष सहयोग दिया।

जमना जी में स्नान करने वाली हिन्दू स्त्रियों को गुण्डे तंग किया करते थे तो उस समय गुरु जी के वालटियर बाहर रह कर ड्यूटी देते थे। उनके भय से किसी की भी हिम्मत गलत हरकत करने की न होती थी। गुरु जी इस समय 78 वर्ष के हो चुके हैं। उन्होंने अपनी सारी आयु गरीबों की मदद और पहलवानों के निर्माण में लगाई है। उनके अनेकों शिष्य प्रसिद्ध पहलवान हो चुके हैं जो इस प्रकार हैं:—

श्री रामधन जी (कोच) कल्हावड़, सूरजभान जी ग्राम सेरिया, सत्यवीर जी नाहरी, महावीर जी नाहरी, श्री सत्यपाल जी बुआणा (महाभारत केसरी), रूप चन्द जी बामला आदि। श्री रामधन जी और सत्यपाल जी को आज सारा हिन्दुस्तान जानता है।

23 मई से जबलपुर में जो राष्ट्रीय दंगल हुआ था उसमें भी पहलवान अनूप रोहणा, महासिंह जुलाणा, सुखबीर चमारियां, सत्यप्रकाश जगरतपुर, जय किशन मन्डोरी, महावीर नाहरी प्रथम रहे, और स्वर्णपदक प्राप्त किए। ये सब गुरु हनुमान जी के आशीर्वाद और श्री रामधन जी के कठोर परिश्रम का फल है।

गुरु हनुमान जी का कहना है कि बुराइयों से दूर रह कर विद्यार्थी यदि कठोर परिश्रम करें और ब्रह्मचर्य की रक्षा करते रहें तो उनके सामने कोई टिक नहीं सकता। बच्चों को प्रातः 4 बजे अवश्य उठना चाहिए। चरित्र ऊंचा बनाना चाहिए, दोनों समय व्यायाम अवश्य करना चाहिए।

अन्त में गुरु जी द्वारा प्रदत्त एक कटोरा दूध पीकर तथा बड़ी खुशी और प्रेरणाओं से परिपूर्ण होकर मैं आगे के कार्यक्रम पर चल पड़ा। आज भी उस अखाड़े का दृश्य तथा पहलवानों की याद आती है तो दिल उत्साह से भर जाता है।

अन्त में हम केन्द्रीय सरकार तथा हरियाणा सरकार (वहां पर 99% पहलवान हरियाणा से हैं) प्रार्थना करते हैं कि देश के नवयुवकों को रास्ता दिखाने के लिए दुनिया में भारत का नाम रोशन करने के लिए गामा और राममूर्ति जैसे विश्वप्रसिद्ध पहलवान तैयार करने के लिए इन अखाड़ों को ज्यादा से ज्यादा सहायता दें। कम से कम हरियाणा सरकार को तो अपने यहां सर्वोत्तम अखाड़े कायम करने चाहिएं। यदि इन पहलवानों को सभी सुविधायें सुलभ करवाई जायें तो फिर से संसार के अन्दर ये भारत का नाम उज्ज्वल कर सकते हैं।

बाल वर्ष :
सिक्के के दो पहलू

– रवीन्द्र सिंह मलिक
कनिष्ठ अभियन्ता, कुरुक्षेत्र

पण्डाल सजा है। अनगिनत गुब्बारे चारों ओर छाए हुए हैं। बच्चे हजारों की तादाद में इधर-उधर चहकते फिर रहे हैं। सुन्दर-सुन्दर पोशाकें, प्यारे-प्यारे चेहरे, हंसते हुए फूलों की तरह। कुछ बड़ी उम्र के लोग भी एकत्रित हैं। स्कूलों के बेन्ड बाजे और बच्चों की ड्रिल की तैयारियां। पूछता हूँ किसी से, "यह सब क्या है भैया ?" जवाब मिलता है, "मंत्री जी आने वाले हैं।"

"कोई उद्घाटन वगैरा है क्या ?"

"हां।"

"कैसा उद्घाटन है ?"

इस बार महाशय कुछ गर्म निगाहों से मेरी ओर देखते हैं, तो मैं आगे पूछना मुनासिब नहीं समझता। घड़ी की ओर देखता हूं। अरे ! दस बजने में पांच मिनट केवल। दफ्तर के समय की फिक्र से कुछ मायूस सा हो जाता हूँ। लेकिन फिर भी इस रंगीन मौसम और खूबसूरत तैयारी को पूरी तरह से देखने का लोभ मन पर विजय पा ही लेता है। मैं खड़ा रहता हूं, उन्हीं लोगों के बीच जो शायद मेरी ही तरह खड़े हों मंत्री की प्रतीक्षा में। आखिर मुझे अभी तक यह भी तो मालूम नहीं कि कैसा उद्घाटन है ? और उस पर यहां किसे फुर्सत है मुझे बत्ताने की। इतने में बच्चे बैंड पर मधुर धुन बजाते सुनाई देते हैं और साथ ही किसी की अस्पष्ट सी 'जय' के नारे भी सुन रहे हैं। यहां भीड़ इतनी है कि सब कुछ सुनकर ही सब्र करना पड़ रहा है। दिखाई नहीं दे सकता केवल मंच के सिवाय। लो अब मंच तक खद्दरधारी मन्त्री पहुँच ही गए। बिल्कुल बगुले भक्त जैसे स्टेज के बीचों-बीच दोनों हाथ बांधे, बच्चों का अभिवादन स्वीकार करते हुए। मैं भी अपना रूमाल हिलाता हूं। शायद उन्हें नजर आ ही जाए।

फिर आरम्भ होती हैं बच्चों की विभिन्न प्रकार की शारीरिक ड्रिलें और गाना-बजाना। कितना मनमोहक है यह समां। लेकिन अचानक ही कोई महाशय खड़े होकर,

मंच पर कहते हैं, "अब मैं प्रार्थना करूंगा, आदरणीय मन्त्री महोदय से, कि बाल वर्ष के उपलक्ष में आयोजित इस समारोह में अपने शुभ वचनों का योगदान दें।"

अब समझा! यह बाल वर्ष का उद्‌घाटन था। कितनी अच्छी है हमारी सरकार, सबका ख्याल रखती है। धीरे-धीरे इस बार बच्चों की भी बारी आई है। जो देश के कल के नेता और कर्णधार होंगे। इन विचारों की शृंखला तब टूटी जब तालियों की गड़गड़ाहट मेरे कानों के आर-पार जाने लगी। मैंने ध्यान से सुनना आरम्भ किया। मन्त्री जी कह रहे थे, "मैं इस नगर के बालकों के लिए एक बड़े पार्क व खेलने की सारी सुविधाओं की समुचित व्यवस्था के लिए 50000/- रुपये अनुदान की घोषणा करता हूं। इस समय जो स्कूल हैं वह इन बच्चों के लिए कम पड़ रहे हैं. इसलिए आवश्यकतानुसार दो प्राथमिक और एक माध्यमिक विद्यालय नये खोलने की घोषणा भी करता हूं। इन स्कूलों में बच्चों को राज्य की ओर से दोपहर का पौष्टिक भोजन और दूध की मुफ्त व्यवस्था होगी। बच्चों को तकलीफ ना हो इसलिये एक स्कूल बस चलाई जाएगी, जिसमें आसपास के उपनगरों के बच्चे स्कूल तक यात्रा कर सकें।" और सबका धन्यवाद करते हुए मन्त्री महोदय बैठ जाते हैं। एक संभ्रांत से नागरिक अपने इलाके के बच्चों के लिए कुछ और सुविधाओं का मांग पत्र उनके सामने पेश करते हैं।

मुझे यहां से साफ नजर आ रहा है कि मंत्री जी कुछ गम्भीर से होकर फिर मुस्कराते हुये सिर हिलाने लगते हैं। शायद बच्चों के लिए बाल वर्ष में सब कुछ करने की कसम खाकर आए हैं मन्त्री जी आज, जो सब कुछ स्वीकारते चले जा रहे हैं।

अब भीड़ कुछ घटने लगी है। मन्त्री जी चले गये हैं। लेकिन बच्चों की भीड़ ज्यों की त्यों है क्योंकि उनकी प्रतियोगिताएं होनी बाकी हैं। कुछ देर खड़ा देखता रहता हूं, फिर अनायास ही दफ्तर का ध्यान हो आता है और मैं घड़ी की ओर देखता हुआ दफ्तर की राह पर लम्बे-लम्बे डग भरने लगता हूँ। अभी डेढ़ घण्टा भर ही देर हुई है। शायद मेरे विशुद्ध भारतीय साहब भी ना आए हों दफ्तर अभी तक। और सौ प्रतिशत मुमकिन है, उनके रास्ते में भी ऐसे बाल मेले लगे होंगे और वह भी कहीं खड़े देख रहे होंगे। इन्हीं विचारों में खोया-खोया मैं न जाने कब दफ्तर पहुँच गया और मैंने देखा, मेरी सारी वैचारिक सम्भावनाएं मेरे साहब को अपनी कुर्सी पर बैठा देखकर चारों खाने चित्त पड़ी हैं। शायद वे आज भी प्रतिदिन की तरह केवल एक घंटा भर ही देर से आए होंगे। और बाल वर्ष तो उनके यहां हर रोज मनाया जाता है। ग्यारह बच्चों के पिता हैं वह उनकी मांगें आज से बीस साल पहले पूरी करने लगे थे और मन्त्री जी से अधिक उदारता के साथ आज तक करते आ रहे हैं। इसी लिए किसी बाल मेले में खड़े होना उनके लिए फिजूल की बात रही होगी।

मैं धीरे-धीरे उनके सामने से होता हुआ अपनी सीट की ओर निकलने ही वाला

था कि उनका चिरपरिचित रुखा स्वर मुझे उनकी ओर बढ़ने के लिए बाध्य करने लगा। मेरे मन में खुशी और गम का द्वन्द्व सा छिड़ रहा था। फिर मैं निर्भीक होकर आखिर खुल ही बैठा - साहब! आज तो बाल वर्ष का आरम्भ है और इस वर्ष के पहले ही दिन आप इतने गुस्से में हैं। बच्चे तो मिठास का प्रतीक होते हैं। आपके बच्चों को तो मैं कई बार चहकते देख चुका हूँ। जब मुझे रास्ते में मिलते हैं तो प्यार से कहते हैं अंकल टॉफी दो। कितनी मीठी होती है टॉफी, मुझे बचपन से पसन्द है। आओ हम भी आज से प्रतीज्ञा करें कि बाल वर्ष में बच्चों की तरह मीठे बोल बोलेंगे।'

मैं नाटकीय मुद्रा में सब कुछ कह गया और फिर असर होता देखा मैंने। साहब नरमाए, मुस्काए, फिर बोले—यह तो मैं भूल ही गया था आज बाल वर्ष शुरु है। खैर बच्चे तो हर वर्ष पैदा भी होते रहते हैं और खुश भी रहते हैं। उन्हें कौनसा नौकरी का फिक्र होता है। या मेरी तरह दफ्तर की व्यवस्था के बोझ से दबे रहते हैं। वे सगर्व इधर-उधर देखते हुए बोलते रहे— मैंने तुम्हें इसलिए बुलाया था कि एक आवश्यक कार्य से तुम्हें यहां से 20 कीलो मीटर दूर एक गांव में भेजना चाहता था। सुबह से तीन बार पूछ चुका हूँ आखिर तुम आते हुए नज़र आ ही गए।

मैंने आज्ञाकारी सेवक की तरह कार्य को भली भांति समझा और अपने साथ एक सहायक लेकर चल पड़ा, लक्ष्य की ओर। कागजों का एक पूरा पुलिंदा मेरे सहायक के हाथ में था और बैग मेरे हाथ में। बस का सफर तय करके आखिर हम गांव तक पहुँच ही गए। लेकिन अभी अपने गन्तव्य तक पहुँचने के लिए गांव की गलियों से गुजरना और आगे खेतों को पार करते हुए लगभग दो किलो मीटर पैदल चलना था।

सर्दी के दिन थे। सुनहरी धूप निकली हुई थी। दोपहर का समय था। पूरी चुस्ती के साथ मैं आगे-आगे और सहायक पीछे-पीछे चल रहा था। सामने एक तालाब था। जो ज्योमितीय गणित के किसी वर्ग के अनुरूप न था। टेढ़ा-मेढ़ा, कटा-फटा किनारा। कहीं ऊंचा, कहीं नीचा मैदान। पीछे कुछ पक्के मकान, कुछ कच्चे और तालाब के किनारे से सटी हुई कुछ हल्की फुल्की झोंपड़ियां। तालाब, बल्कि इसे जोहड़ कहना अधिक उपयुक्त होगा, में कुछ पालतू पशु पानी भी पी रहे थे और जल-मल का निवारण भी कर रहे थे। कुछ बच्चे पशुओं के ऊपर बैठ कर और कुछ जोहड़ में पानी के अन्दर अटखेलियां करके अपना जी बहला रहे थे। पानी को मैंने नजदीक से देखा। कोई सभ्य कहलाने वाला प्राणी इसे छूना भी बीमारी को बुलावा देना समझेगा। लेकिन ये बच्चे तो इसमें खिलखिलाते हुए खेल रहे हैं जैसे गंगा के पानी में देवता स्नान कर रहे हों। उन्हें आभास नहीं है कि इस पानी से बीमारियां भी फैल सकती हैं। क्योंकि पूर्वजों का पीढ़ी दर पीढ़ी यही क्रीड़ा-स्थल रहा है, यही 'स्वीमिंग पूल' रहा है।

पगडन्डी जोहड़ का पूरा चक्कर लगाकर झोंपड़ियों के पास से गांव में प्रवेश करती है और इसका अनुसरण करते हुए मैं भी गांव में प्रविष्ट हो गया। गांव की गली

कच्ची थी। घरों का गन्दा पानी गली में सांप की तरह टेढ़ा और गहरा रास्ता बनाते हुए जोहड़ में निर्वाण प्राप्त कर रहा था। कुछ छोटे बच्चे जो शायद अभी जोहड़ में खेलने लायक नहीं हुए थे, पूर्णतया दिगम्बर, रूखे बाल, चेहरा मेरी ओर ऐसे देखता हुआ जैसे धरती वाले मंगल ग्रहवासियों को देख रहे हों। शरीर पर जहां तहां कीचड़ लिपटी हुई, दीन दुनिया से बेखबर उन्हीं नालियां में खेल रहे थे। साथ ही झोंपड़ी में बैठी उन्हीं में से एक की जननी, शायद उन सब की भी रही हो, खुश हो रही थी उनके करतब देख कर।

अचानक उनमें से किसी ने दांव बदला था और मेरे कीमती माने जाने वाले स्वच्छ कपड़ों पर नाली का कीचड़ यों आन बिराजा जैसे चरखा कातती हुई बुढ़िया चन्द्रमा पर बैठी नानी की कहानियों में सुनी थी। मैं गुस्से से भर उठा और शायद उस उद्दण्ड बालक को कान से पकड़ कर डांटता भी। लेकिन इतने में मुझे याद हो आया आज तो बाल वर्ष का पहला दिन है और अभी कुछ घण्टे पहले ही तो कसम खाई थी कि इस बाल वर्ष बच्चों को प्यार देंगे। बल्कि प्रतीक वश सिर के बाल भी नहीं कटवायेंगे वर्ना बाल वर्ष की अवहेलना हो जायेगी। मैं गुस्से को जहां का तहां पीकर, चेहरे पर बनावटी मुस्कुराहटें बिखेरता हुआ बच्चे की मां से, जो तब तक उसे सम्भालने पहुँच चुकी थी बोला—कोई बात नहीं बच्चे ने अनजाने में ऐसा किया है।

मेरे मन का सारा उत्साह जो सवेरे के बाल मेले को देख कर चौगुना हो रहा था अब बिल्कुल समाप्त प्रायः हो चुका था। मैंने विचारा आज का ही दिन कितनी धूम-धाम से साफ-सुथरे, सुन्दर बच्चों में मनाया जा रहा था। उनकी हर इच्छा पूरी करने की कसमें खाई जा रहीं थीं। उन्हें परमात्मा के बाद दूसरा विशिष्ट स्थान दिया जा रहा था। उनकी सेहत पढ़ाई-लिखाई, वर्तमान-भविष्य आदि पर चिन्ता व्यक्त की जा रही थी और यहां।

इसके बिल्कुल विपरीत, किसी को परवाह नहीं है इनकी। पढ़ाई-लिखाई तो दूर सफाई-सुथराई का भी ध्यान नहीं है। जैसे ब्रह्मा ने इन्हें धरती पर उतार दिया उसी रूप में ये पनप रहे हैं।

मैं सह न सका। आखिर मैं भी गांव का जन्मा था। अपना राजकीय कार्य बीच में ही छोड़ कर गांव के कुछ लोगों से मिला। बच्चों के बारे में कुछ बातें कीं। लेकिन वे बाल वर्ष के नाम से पूर्णतया अनभिज्ञ थे। उन्होंने तो सदियों से इसी रिवाज को निभाया था कि बच्चे भगवान की देन हैं और वही इनका पालन करता है। उनके भविषय के बारे में क्या चिन्ता थी उन्हें ? जिसने पैदा किया है वही दो जून की रोटी का जुगाड़ भी करेगा।

पढ़-लिख कर क्या बनेंगे बाबू जी ? कोई अफसर तो बनने से रहा। अफसर तो शहरों में पैदा होते हैं, यहां नहीं।

मैं अन्दाजा लगा रहा था, कितनी सच्चाई है इन शब्दों में।

फिर अगर इनको स्कूल भेज दें तो घर के छोटे-मोटे काम-काज कौन करेगा ?

पशुओं को पानी कौन पिला कर लाएगा ?

खेत पर मजदूरी में कौन हाथ बंटायेगा ?

ये छोटे बच्चे बेशक हैं लेकिन हमारे काम में खूब हाथ बंटाते हैं। अगर इन्हें पढ़ने के चक्कर में डाल दिया जाये तो फिर हम क्या कमायेंगे ? क्या खायेंगे ?

रही सफाई-सुथराई की बात सो हमारा काम ही ऐसा है इसमें साफ रहा नहीं जा सकता। जब रहते गांव में हैं, गलियों में हैं तो खेलने के लिए पार्कों में कहां से जायेंगे ? ऐसे ही जवान हो जायेंगे और हमारे धन्धे को आगे बढ़ायेंगे।

मैं सोचता रह जाता हूँ, यह समारोहों का ढ़ोंग, झूठे नारे, दिखावा ही दिखावा, आखिर हमारा समाज कब तक ओढ़े रहेगा यह ऊपर से चमकीला मगर अन्दर से गन्दा लिबास ?

हमारी वही सरकार जो कुछ घन्टे पहले बड़ी भली प्रतीत हो रही थी, दोहरे मुखौटे में छुपी नज़र आने लगी। बांग देकर यह ढिंढोरा पीटा जा रहा था कि बच्चे गांव के हों या शहर के, बाल वर्ष सब के लिए समान महत्व का है। लेकिन यहां तक उस बांग की भनक तक नहीं पहुँच सकी। यह बाल वर्ष वहीं तक सीमित रहता नज़र आता है जहां तक पंडाल में लगे लाउडस्पीकरों की गूंज जाती है।

बगुले भक्त वे मन्त्री अब नजर आने लगे मानों ताक में हों कि चुनाव के समय किस मछली को फांसा जाए और फिर एक टांग पर चन्द वर्षों के लिए तपस्या का ढोंग।

जिनके मतों से निर्वाचित हुए; उन्हीं का शोषण ?

आखिर कब तक ?

इस वर्ष लाखों, करोड़ों रुपये समारोहों, सेमिनारों और देश विदेश में आवागमन पर खर्च किया जाएगा। अभिनन्दन सभारोहों, उदघाटनों आदि पर लाखों रुपये बर्बाद किए जायेंगे।

लेकिन इस सब से इन ग्रामीण गरीब बच्चों को क्या लाभ ?

स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज

श्री स्वामी जी का जन्म सम्वत् वि० 1925 (ई० सन् 1868) में बिहार प्रान्त के जिला शाहाबद के अन्तर्गत डुमरां नामक ग्राम में श्री राम गुलाम लाल के घर हुआ। स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज पुराने सभा आर्योपदेशक थे। महर्षि दयानन्द के कार्य को हमेशा पूर्ण करने के लिए आपने सतत् प्रयत्न किया।

1925 में उन्होंने मथुरा शताब्दी पर श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी से सन्यास ग्रहण किया। वे निर्भीक, दयालु, अतिथि परायण, करुणा व प्रेम की साक्षात् मूर्ति, पक्षपात शून्य एवं सरल स्वभाव के व्यक्ति थे।

1913 के पश्चात् स्वामी जी का सारा जीवन आर्यसमाज की सेवा में ही बीता। विशेषतः हरियाणा को उन्होंने अपना अपना कार्यक्षेत्र बनाया। श्री स्वामी जी श्री पं० बस्तीराम जी, भक्त फूल सिंह जी महाराज आदि कुछ उत्साही आर्य सज्जनों ने सनातनियों के गढ़ में आर्य समाज का झण्डा गाड़ दिया। सहस्रों मुसलमान-व्यक्तियों की शुद्धि की गई, हजारों को यज्ञोपवीत धारण करवाया गया तथा जगह-जगह पर गुरुकुलों का निर्माण किया गया। उदाहरण के तौर पर गुरुकुल मटिण्डु तथा गुरुकुल भैंसवाल का नाम लिया जा सकता है।

हरियाणा राज्य के अतिरिक्त भारत में भी अन्यत्र स्थान-स्थान पर श्री स्वामी जी ने आर्यसमाज का बहुत प्रचार किया। देहली, गुजरात और बिहार में उनके भक्तों का एक बहुत बड़ा समूह था। विदेशों में भी आर्य धर्म के प्रचार के लिए उन्होंने बहुत कुछ किया।

आर्यसमाज के कार्य में संलग्न रहते हुए भी श्री स्वामी जी महाराज ने संस्कृत भाषा के अध्ययन-अध्यापन के लिए भी अथक परिश्रम किया। प्रायः उन्हें सभी ग्रन्थों के अध्ययन का शौक था। आयुर्वेद चिकित्सा पर वे अत्यन्त श्रद्धावान् थे।

श्री स्वामी जी को श्रद्धेय अमर हुतात्मा भक्त फूलसिंह जी महाराज अपना धर्म गुरु मानते थे। स्वामी जी सन् 1930 में गुरुकुल भैंसवाल की पवित्र भूमि में आये तथा सन् 1935 तक निरन्तर गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता पद एवं आचार्य पद को सुशोभित करते हुए गुरुकुल की यथाशक्ति सेवा की। प्रारम्भ में भक्त जी का विचार उपदेशक विद्यालय खोलने का था किन्तु गुरु की प्रेरणा से भक्त जी ने गुरुकुल की स्थापना की। भक्त जी को कन्या गुरुकुल स्थापित करने की प्रेरणा भी श्री स्वामी जी महाराज ने ही दी थी। गुरुकुल स्थापित हो जाने पर स्वामी ब्रह्मानन्द जी गुरुकुल भैंसवाल से आकर कन्या गुरुकुल खानपुर में सेवारत हो गये। भक्त जी महाराज के दाहिना हाथ के रूप में स्वामी जी ने कार्य किया। सन् 1935 से निरन्तर आजीवन स्वामी जी महाराज ने कन्या गुरुकुल की मन, वचन और कर्म से सेवा की। दोनों ही संस्थाओं को आगे उन्नति के पथ पर बढ़ाने में श्री स्वामी जी महाराज का विशेष प्रयत्न रहा। हरियाणा की जनता एवं इन संस्थाओं के प्रियजन स्वामी जी महराज को एवं उनके कार्य को कभी भी नहीं भुला सकते।

स्वामी जी महाराज ऐसे समय में गुरुकुल में आये थे जबकि किसी सुलझे हुए मनुष्य की आवश्यकता थी। उनके आने से भक्त जी महाराज को उचित सुझाव देने वाला साथी मिल गया।

अन्त में उनके प्रति अगाध श्रद्धा प्रकट करते हुए हम कह सकते हैं कि वे आर्य समाज की एक महान् विभूति एवं कर्मठ कार्यकर्ता थे। सन् 1948 की 11 दिसम्बर को सायंकाल के समय गुरुकुल कांगड़ी में उनका देहावसान हुआ।

—सम्पादक

चुटकला—

एक अध्यापक अपनी कक्षा में गए और बोले—मुझे तुम सारे मूर्ख लगते हो जो अपने आप को मूर्ख मानता है वह खड़ा हो जाए। यह सुन कर कोई भी बच्चा खड़ा नहीं हुआ। अध्यापक जी बोले कोई भी मूर्ख नहीं है। यह सुन कर तुरन्त एक बच्चा खड़ा हो गया। अध्यापक जी देखकर बोले—बस तू ही अपने आप को मूर्ख मानता है। तपाक से बच्चे ने जवाब दिया नहीं मैं तो आपको अकेला देख कर खड़ा हो गया था।

गणित के जादूगर पेश करते हैं—

गणित के चमत्कार

श्री कर्णसिंह 'तोमर' वैश्य हाई स्कूल, रोहतक

1. 16 दूनी 8 $(16 \times 2 = 8)$

उदाहरण के लिए— $(12)^2 = 144$ —(1)

$(-12)^2 = 144$ —(2)

दोनों की तुलना करने पर—

$(12)^2 = (-12)^2$

दोनों ओर से वर्ग हटाने पर :—

$12 = -12$

या $16 - 4 = 4 - 16$

या $16 + 16 = 4 + 4$

या $32 = 8$

$\because$ हम जानते हैं $16 \times 2 = 32$

परन्तु $32 = 8$ (सिद्ध कर चुके हैं)

$\therefore$, $16 \times 2 = 8$

❀ ❀ ❀ ❀

2. वर्ग करना : : वैसे तो $(a+b)^2$ के सूत्र से भी वर्ग करते हैं परन्तु कुछ संख्याओं के वर्ग आसानी से हो जाते हैं जैसे :—

ऐसी संख्या जिनमें इकाई का अंक 5 है।

जैसे 15, 25, 35, 125 ....

तरीका पहले $(5)^2$ 25 लिखो

फिर 3 5 $3+1$ करो $=4$ (और उसे गुणा करके 25 के आगे लिखो)

3 5 $4\times3=12$

————

12 25

उदाहरण— 8 5

8 5 $8+1=9$

————

72 25 $9\times8=72$

❀ ❀ ❀ ❀

3. ऐसी संख्या जिसमें सभी एक हों।

1. $(1)^2=1$
2. $(11)^2=121$
3. $(111)^2=12321$
4. $(1111)^2=1234321$
5. $(11111)^2=123454321$
6. $(111111)^2=12345654321$
7. $(1111111)^2=1234567654321$
8. $(11111111)^2=123456787654321$
9. $(111111111)^2=12345678987654321$

नोट :—जितने इक्के हो उतनी ही संख्या लिख कर फिर उसका अन्तिम अक्षर छोड़ कर उल्टा क्रम कर दो।

Approved for Libraries by D. P. I'S Memo No. 3/44—1961—B. Dated 8-1-62

Approved by the Chairman, Central Library Committee, Panjab Vide their Memo No. PRD-Lib-258-61/1257-639 dated Chandigarh, the 8th Jan. 1962.

For—

1. The Secretary to Government, Punjab, Housing and Local Government Department, Chandigarh.
2. The Director of Panchayats, Chandigarh.
3. The Director of Public Instruction, Panjab Chandigarh.
4. The Deputy Director Evaluation, Development Department Panjab Chandigarh.
5. The Assistant Director, Young Farme and Village Leaders, Development Department, Panjab Chandigarh.
6. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Jullundur.
7. The Assistant Director of Panchayats, Rohtak.
8. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Patiala.
9. All Local Bodies in the Panjab.
10. All District Development and Panchayat Officers in the State.
11. All Block Development and Panchayat Officers in the State.
12. All District Public Relations Officers in the State.

'समाज सन्देश'—डाक घर गुरुकुल भैंसवाल कलां

Regd. No. P/RTK-21

सदस्य संख्या

नाम

स्थान

पत्रालय

जिला

व्यवस्थापक श्री धर्मभानु गुरुकुल भैंसवाल ने नेशनल प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर कार्यालय समाज सन्देश गुरुकुल भैंसवाल (सोनीपत) से मुद्रित तथा प्रकाशित किया।

समाज सन्देश

(हिन्दी मासिक-पत्र)

सांस्कृतिक, सामाजिक व साहित्यिक लेखों का संगम

प्रकाशन तिथि : 25 जून, 1979

वर्ष 20 | जुलाई, 1979 | अंक 3

स्वर्गीय श्री भक्त फूल सिंह जी

अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय उक्षा मिमेति भुवनेषु वाजयुः ।
मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमादधुः ॥

आगे उषा प्रकाश दे रवि है चमक रहा ।
अन्नाद्य हेतु लोक में बादल गरज रहा ॥
इस सूर्य की क्रिया सभी जन हैं निहारते ।
पालक नृचक्ष मेघ भू में गर्भ धारते ॥

—'निधि'

मूल्य : एक प्रति 1-25 रु० ● वार्षिक चन्दा 10 रुपये

इस अंक में–

समाज सन्देश में छपे विचारों से हमारा सहमत होना या न होना आवश्यक नहीं। समाज सन्देश में हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी मत से सम्बन्ध रखता हो अपने लोकहितकारी विचार अथवा लेख प्रकाशनार्थ भेज सकता है। उसकी मौलिकता का लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा।

—सम्पादक

लेख भेजने तथा अन्य विषयक पत्र व्यवहार का पता :—

देवराज विद्यालंकार

प्रकाशन प्रबन्धक

गुरुकुल भैंसवाल कलां (सोनीपत)

सम्पादकीय :

पुलिस आन्दोलन

★

हमारे देश में प्रत्येक महकमे के अन्दर असन्तोष की प्रकृति नजर आती है। कार्यालयों, विश्वविद्यालयों, अध्यापकों, कारखानों के कर्मचारियों तथा अन्य अनेकों सभी लोगों को अपनी मांगें मनवाने के लिए हड़ताल करते और शान्ति पूर्वक जलूस निकालते देखा जा रहा है और इन शान्तिपूर्वक जलूसों पर पुलिस ने निरन्तर निरीह मनुष्यों पर अमानुसिक अत्याचार अनेकों बार किये हैं।

किसी देश का सारा शासन-तन्त्र पुलिस और सेना के आधार पर सुचारु रूप से चलाया जा सकता है, लेकिन उस समय किसी देश का दुर्भाग्य होता है जब अनुशासन की रक्षक पुलिस और सेना ही आन्दोलन का रास्ता अपनाये।

हमारी सरकार के बड़े नेता आपस में प्रान्तीय सरकारों में अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए सारे देश में अराजकता का वातावरण स्वत: पैदा कर रही है तो फिर ऐसी स्थिति में पुलिस ने मौका पा आन्दोलन का सहारा लिया तो यह कोई ज्यादा ताज्जुब की बात तो नहीं, लेकिन हां यह एक कठिन और खतरनाक अवश्य है।

पिछले दिनों पञ्जाब प्रान्त से इस आन्दोलन की शुरुआत हुई जिसका प्रभाव दूसरे सभी राज्यों पर भी पड़ा और हरियाणा के दो स्थानों रोहतक और मधुवन में तो बात मार-पिटाई तक भी बढ़ी जहां पुलिस के पहलवानों द्वारा पुलिस के विद्रोही अधिकारियों को बेइज्जत किया गया जिस कारण हरियाणा के पुलिस कर्मचारियों का आन्दोलन कुछ ढीला पड़ गया।

अभी कुछ दिन हुए बोकारो केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा दल तथा सेना के बीच हिंसक वारदातें हो गई और चिन्ता तो इसलिए बढ़ी क्योंकि इस टकराव में दोनों ओर से पुलिस कर्मचारी मारे गये। इसके सिवाय कोई रास्ता भी न था कि पुलिस विद्रोह को दबाने के लिए सेना न बुलाई जाये। इस टकराव से और पुलिस के अनुशासन तोड़ने से नागरिकों में असुरक्षा की भावना बढ़ी है। जब कानून और व्यवस्था कायम करने वाली पुलिस ही आन्दोलन करे तो सैनिक हस्तक्षेप आवश्यक हो जाता है, लेकिन सेना तभी बुलाई जानी चाहिए, जब अन्य कोई भी रास्ता बाकी न हो। विचारणीय बात यह है कि जब पुलिस ही सरकार के विरोध में सड़कों पर प्रदर्शन करके सरकारी आदेशों

का उल्लंघन करे, कानून और व्यवस्था कायम करने वाले स्वयं कानून तोड़ने लग जायें तो उनके साथ सख्ती से निपटे जाने के सिवाय अन्य कोई चारा नहीं रह जाता।

लेकिन 6 जून को गृह मन्त्री की उपस्थिति में दिल्ली में राज्यों के मुख्यमन्त्रियों के सम्मेलन में पुलिस की सेवा शर्तों में सुधार का फैसला होने के बाद भी केन्द्र और राज्य पुलिस वालों में पूर्ववत् असन्तोष क्यों है ? दिल्ली फैसले में सशस्त्र और नागरिक पुलिस की सेवा शर्तों में सुधार करने का फैसला कर लिया था, लेकिन इसके बाद भी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस और जम्मू की पुलिस ने भी अनेकों जगह जोरदार प्रदर्शन किये। आन्दोलन-कारियों को मालूम था कि उनके काम और परिस्थितियों में सुधार के लिए कदम उठाए जा रहे हैं, लेकिन फिर भी आन्दोलन का जारी रहना इस बात की पुष्टि करता है कि इस आन्दोलन में बाह्य राजनैतिक प्रभाव और विदेशी शक्तियां काम कर रही हैं।

मैं राजनैतिक शक्तियों और पुलिस कर्मचारियों को आन्दोलन का दोषी कहने के बजाय केन्द्र और राज्य सरकारों को इसका जिम्मेवार मानता हूँ। जनता सरकार ने अभी दो ही वर्ष पूर्ण किये हैं और इन दो वर्षों में हमारे प्रतिष्ठित नेताओं ने राजनीतिक अखाड़े में अपने-अपने लंगोटे बांध कर निरन्तर कुश्तियां की हैं। जो एक बार चित्त हुआ मौका आते ही वह दूसरे को चित्त कर बैठा। केन्द्र और राज्य सरकारों में स्थायित्व नाम की कोई चीज ही नहीं दिखाई देती। धटकवाद की बीमारी निरन्तर बढ़ती ही चली जा रही है, और जनता-पार्टी में किसी प्रकार का भी अनुशासन नहीं दिखाई देता। प्रतिदिन कोई नया राजनीतिक तमाशा देखते-देखते जनता के दो वर्ष पूरे हो गए। जब सरकार में अनुशासन हीनता है तो फिर पुलिस को हम किस मुंह से दोषी कहें। मैं पुलिस आन्दोलन को जनता-सरकार की असफलता का ही एक मुख्य कारण मानता हूँ।

—देवराज विद्यालंकार

(क्रमशः ३)

* महाभारत *

(आदि पर्व)

लेखक :
आचार्य विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड

●

पृथा द्वारा पाण्डुवरण, माद्री के साथ पाण्डु का दूसरा विवाह, पाण्डु की दिग्विजय

कुन्तिभोज ने स्वयम्बर रच कर पृथा का विवाह पाण्डु से किया। वहां पर उपस्थित राजाओं में पृथा ने पाण्डु का वरण किया। पाण्डु के गले में लजाती हुई पृथा ने जयमाला डाल दी। उसके पिता ने पाण्डु के साथ शास्त्रोक्त विधि से पृथा का विवाह किया। और पाण्डु उसे विवाह के बाद अपने नगर में ले आए।

इसके बाद भीष्म ने पाण्डु का दूसरा विवाह भी कराने का निश्चय किया। वे अपनी चतुरंगिणी सेना के साथ मद्रराज की राजधानी में गये। वाहीक शिरोमणी राजा राजा शल्य भीष्म के आगमन को सुनकर उसके स्वागत के लिए सामने आये। और शल्य ने भीष्म से अपने राज्य में आने का कारण पूछा। भीष्म ने कहा कि मैं तुम्हारी बहिन को पाण्डु के विवाह के लिए लेने आया हूँ। मैंने सुना है कि तुम्हारी बहिन बड़े उत्तम स्वभाव की और धर्म परायण है।

शल्य ने कहा—महाराज! हमारे कुल की एक परम्परा है जो शुल्क लेने की है, वह अच्छी है या बुरी मैं नहीं जानता। हम सारे उस परम्परा का पालन करते हैं। यदि इस शुल्क देने की प्रथा को पूरा करें तो मुझे अपनी बहन देने में कोई आपत्ति नहीं है।

शल्य की बातों को सुनकर भीष्म बोले—शल्य, जिस कुल की जो परम्परा होती है वह धर्मानुकूल मानी जाती है। मैं भी उस परम्परा का पालन करूंगा। ऐसा कह कर

भीष्म ने सोना, सोने के गहने, बहुत से हाथी घोड़े, रथ, वस्त्र अलंकार, मणि, मोती, मूंगे शल्य को दिए। धन को ग्रहण कर शल्य ने प्रसन्नता से अपनी बहिन पाण्डु को सौंप दी। विवाह के बाद साथ लेकर भीष्म पाण्डु के साथ हस्तिनापुर में आ गए। एक मास तक उसके साथ विहार कर पाण्डु दिग्विजय के लिए राजधानी से बाहर निकल गए।

पाण्डु ने राजधानी से चलकर दशार्णों (विन्ध्य पर्वत के पूर्व दक्षिण की ओर स्थित उस प्रदेश का प्राचीन नाम दशार्ण है), जिससे धसान नदी बहती है। विदिशा (आधुनिक भिलसा), इस प्रदेश की राजधानी थी) पर धावा करके उन्हें युद्ध में परास्त किया। तदनन्तर पाण्डु दिग्विजय के लिए राजगृह में आए और वहां का अभिमानी राजा उनके हाथों मारा गया। फिर वहां से महान् कोष लेकर उसने मिथिला पर चढ़ाई की। वहां के क्षत्रियों को भी परास्त किया। तदनन्तर काशी, सुहम, पुण्ड्र देशों पर विजय पाते हुए, उन्होंने अपने कुरुकुल के यश का विस्तार किया। सभी राजाओं ने पाण्डु को प्रसन्न करने के लिए अनगिनत धन दिया। जब पाण्डु दिग्विजय करके हस्तिना पुर आए तो भीष्म के साथ सारा नगर पाण्डु के स्वागत के लिए उपस्थित हो गया। पाण्डु का जय-जयकार किया गया। पाण्डु ने भीष्म के चरणों में नमस्कार किया। उसके बाद मंगला-चरण के साथ पाण्डु ने हस्तिनापुर में प्रवेश किया।

राजा पाण्डु का रानियों समेत वन निवास, विदुर का विवाह, धृतराष्ट्र की पत्नी से तथा कुन्ती, माद्री से पुत्र उत्पत्ति, पाण्डु का स्वर्ग गमन।

जो धन दिग्विजय में पाण्डु को प्राप्त हुआ था, वह उसने निर्धनों तथा पूज्यों में बाँट दिया। उधर पाण्डु के पराक्रम से धृतराष्ट्र ने हस्तिनापुर में अनेक अश्वमेघ यज्ञ किए। कुन्ती माद्री दोनों की प्रेरणा से राजा पाण्डु महलों के निवास को त्याग कर वन में वास करने लगे। सुन्दर वनों उपवनों, पहाड़ों पर रानियों समेत भ्रमण करने लगे। धृतराष्ट्र भी वन में महाराज पाण्डु के लिए इच्छानुसार भोग सामग्री पहुँचाते रहे।

भीष्म ने शूद्र जातीय स्त्री के गर्भ से ब्राह्मण द्वारा उत्पन्न हुई कन्या से विदुर का विवाह किया। कुरु नन्दन विदुर ने उस स्त्री के गर्भ से अपने ही समान गुणवान् विनयशील अनेक पुत्र उत्पन्न किये।

गान्धारी के गर्भ से भी अनेक गुणवान् पुत्र उत्पन्न हुए। उनमें दुर्योधन सब से बड़ा था। दुर्योधन की उत्पत्ति पर लक्षणज्ञ विदुर ने महाराज धृतराष्ट्र को कहा कि यह लड़का बड़ा होने पर कुलान्तकारी होगा। अतः इसे छोड़ दें। लेकिन पुत्र मोह के कारण धृतराष्ट्र ने उनकी बात नहीं मानी। दुःशला नाम की पुत्री भी गान्धारी के गर्भ से उत्पन्न हुई। धृतराष्ट्र से युयुत्सु वैश्या से उत्पन्न हुए। इस प्रकार धृतराष्ट्र अपने आपको अनेक पुत्रों से सुरक्षित मानने लगा। (क्रमशः)

कहानी

रोशनी के दायरे

—रायचन्द जैन, रोहतक

लगभग कोई एक माह से बुखार नीरू का पीछा नहीं छोड़ रहा था। प्रतिदिन उसकी हालत बिगड़ती जा रही है। कभी-कभी तो सांस उसके तन से निकलने को होती है, लेकिन किसी की ममता उसको अपनी बाहों में कस कर जकड़ लेती है और फिर से वह उसी देह में लौट जाती है। फिर उसकी हृदय गति घड़ी की सुई की भाति टक-टक करके चलने लगती है। आखिर ऐसी कौनसी ममता है जो बुझते दीपक में तेल का काम कर रही है। यह ममता है या कोई दैवी शक्ति। यह उसकी पांच वर्षीय बेटी राधा की ममता है जो दैवी शक्ति के रूप में उसके सामने आ खड़ी हुई है। भला, उसका इस संसार में मां के सिवा है कौन ?

बलवन्त इस गांव का एक युवक है। देखने में अति सुन्दर। जितना सुन्दर उसका तन है उससे कहीं अधिक सुन्दर है उसका मन। कोई एक माह पूर्व ही वह किसी बड़े शहर से बी० ए० पास करके लौटा है। तभी से वह नीरू की सेवा सुश्रूषा कर रहा है। सम्भवत: नीरू उसी के सहारे पर जी रही है। चाहे बलवन्त ने शहर में 4 वर्ष तक शिक्षा पाई है, लेकिन वह शहर की हवा से सदैव ही बचा रहा है। उसका स्वभाव बिल्कुल वैसा ही है, जैसा कि एक ग्रामीण का—वही सादगी, वही भोलापन, उसी तरह दूसरों के दुःख सुख में जी जान से हाथ बटाना।

रात्रि के दस बजे हैं. बरसात के दिन हैं। काले काले मेघ आकाश पर छा गये हैं। चांद सितारे—सभी ने मानो काले रंग की चुनरिया से अपने मुखड़े को छिपा लिया है। कहीं कुछ दिखाई नहीं पड़ता। सभी ओर घनघोर अन्धेरा छा गया है। हां, कभी कभी बिजली कड़क उठती है, तभी पल भर के लिये कुछ दिखाई पड़ जाये तो सही, अन्यथा नहीं।

वैसे तो दिन प्रतिदिन नीरू की हालत खराब होती जा रही थी, परन्तु आज उस का बुखार चरम सीमा पर पहुँच गया था। नीरू बेहोश हो गई। उसकी बेटी राधा 'मां, मां' कहकर अपनी नन्हीं नन्हीं हथेली से उसके माथे को इधर से उधर करती। कोई उत्तर न पाकर, वह और भी जोर जोर से चीखने चिल्लाने लगती। ऐसा जान पड़ता जैसे छोटी सी मुन्नी को यह अहसास हो रहा है कि उसकी मां को उससे कोई छीने जा रहा

है। वह इसके विरोध में चीख ग्रौर चिल्ला ही सकती है—ग्रौर उस बेचारी के पास है भी क्या ? उसकी चीख पुकार सुन कर कोई कठोर हृदय भी मोम का बने बिना न रह सकता था।

बलवन्त उसके समीप बैठा धीरे धीरे पंखा कर रहा था, हवा बिल्कुल बन्द थी। गर्मी के मारे दम सा घुटा जा रहा था। उससे जैसा भी हो सका, नीरू को होश में लाने का प्रयत्न किया, लेकिन सब व्यर्थ।

नीरू के घर के पास ही पांच सात ग्रौर घर थे कुछ पक्के तो कुछ कच्चे। ग्रास पास के पड़ौसी भी कुछ बुरे न थे। उन्हें भी नीरू के साथ सहानुभूति थी। कभी कभी नीरू की जैसी भी होती, देखभाल करते रहते थे। बलवन्त को नीरू की सेवा सुश्रूषा में इन लोगों से कुछ न कुछ सहायता मिलती रहती थी। नीरू की बेहोशी को देखकर, ग्रपने को ग्रसहाय पाकर, उसने जोर जोर से दो चार ग्रावाजें लगाई "ग्ररे भोला भाई, यहां ग्राना, मदन दादा, जरा जल्दी करना।"

उसकी ग्रावाज सुनकर, भोला, मदन ग्रौर गांव के दो चार ग्रादमी जल्दी ही वहां ग्रा पहुँचे। भोला ने पूछा, "क्यों रे बलवन्त क्या बात है ? क्या नीरू की हालत ज्यादा खराब है ?"

"हां, तुम्हारा ख्याल बिल्कुल ठीक है। बेचारी काफी देर से बेहोश पड़ी है। देखते हो ना, राधा भी किस तरह से रो रही है। इस नन्हीं मुन्नी को देखकर तो रह-रह कर दिल भर रहा है। मदन दादा, बुरा मत मानना, ऐसी ग्रवस्था में राधा को ग्रकेले छोड़ कर जाना मेरे बस की बात नहीं थी। इसीलिए तुम लोगों को ग्रावाजें लगानी पड़ी।" बलवन्त ने कहा।

मदन दादा ने कहा, "बेटा, कोई बात नहीं। यह काम केवल तुम ग्रकेले का थोड़े ही है। जैसा पड़ौसी तू, वैसे पड़ौसी हम। एक पड़ौसी दूसरे पड़ौसी के काम नहीं ग्रावेगा तो, भला कौन ग्रावेगा—इतना तो हम भी जानैं सैं। यह तो तूने ग्रच्छा ही किया है। ग्रच्छा बेटा, जल्दी बोल, ग्रब के करना सै।

गांव में ऐसा कोई डाक्टर भी न था जिस पर चिन्ताजनक ग्रवस्था में भरोसा किया जा सके। केवल एक दो मामूली से वैद्य थे। वही छोटी मोटी बिमारियों का इलाज़ करते थे, लेकिन ग्राज नीरू की हालत खतरनाक थी। महीने भर से उन्हीं का ईलाज चल रहा था। भला, नीरू शहर के किसी बड़े डाक्टर का ईलाज कहां से करा सकती थी ? उस बेचारी का न तो कोई कमाने वाला था, न खिलाने वाला। थोड़ी बहुत मेहनत मजदूरी करके बड़ी मुश्किल से ग्रपना ग्रौर ग्रपनी बच्ची का पेट भरती थी। जबसे वह बिमार पड़ी थी, उसका यह सहारा भी जाता रहा था। बलवन्त ग्रौर गांव के कुछ दूसरे लोगों की सहायता से ही उसका काम चल पाता था।

आज जब उसकी हालत नाजुक हो गई और उसके बचने की कोई आशा न रही तो किसी बड़े डाक्टर की उपस्थिति आवश्यक हो गई। बलवन्त ने साहस किया, "दादा, अपने गांव से दो कोस दूर जो भार्गव डाक्टर हैं ना, मैं उन्हीं को बुलाकर लाता हूँ। बड़े मशहूर हैं। बड़े से बड़े सेठ को उनका दरवाजा खटखटाना पड़ता है। एक बार वे आ गये तो बस, समझ लो, इसकी जिन्दगी को कोई डर नहीं। मुझे उन पर पूरा भरोसा है, दादा। सौ फी सदी।"

"बेटा! बड़े डाक्टर की बड़ी फीस। भला कोन देगा? तुम तो सब कुछ जानो हो।"

"अरे दादा, तुमने भी आज क्या घटिया बात कर दिखाई। मैं दूंगा, तुम दोगे, भोला देगा, और लोग देंगे। ठीक है न?"

"हां, भई ठीक है।" मदन तथा गांव के दो चार दूसरे व्यक्ति जो उस समय वहां पर उपस्थित थे, उन सभी ने बलवन्त की बात का समर्थन कर दिया।

"अच्छा, तो मैं चलूं।"

"इतने, गांव के अपने वैद्य को ही बुला लिया जाए तो क्या हर्ज है" एक मे कहा।

"कोई हर्ज नहीं।" बलवन्त ने उत्तर दिया।

"अरे भोला, चल मेरे साथ। दोनों भाई इस बेचारी के लिए डाक्टर को बुलाकर लावें सैं।" बलवन्त ने भोला का हाथ पकड़ा और दोनों उस छोटे से घर से बाहर आ गये। बलवन्त जाते जाते कह गया "मदन चौधरी, जरा ध्यान रखना। हम जल्दी ही आये।"

उत्तर मिला, "कोई चिन्ता न कर, बेटा।"

मदन का घर नीरू के घर से कोई दो फर्लांग दूरी पर था। उसने सोचा रात काफी हो चुकी है, मां से कहता चलूं तो अच्छा है, न जाने कब से बाट देख रही होगी।"

पांच सात मिनट में ही बलवन्त अपने घर की ड्योढ़ी पर आ पहुँचा। उसने दरवाजा खटखटाया। अन्दर से आवाज आई "कौन है?"

"मैं हूँ, मां।"

"बलवन्त! आई बेटा।"

मां ने दरवाजा खोल दिया। उसके हाथ में लालटेन थी। गांव अभी तक पिछड़ा हुआ था। बिजली यहां तक न पहुंची थी। मां ने लालटेन को जरा सी ऊपर करते हुए कहा "इतनी देर से लौटा है, कुछ खाने पीने की भी सुध है। चल अन्दर।"

'माँ, यह समय खाने का नहीं किसी की जान बचाने का है। आज तो बेचारी नीरू की हालत बहुत ही खराब है। दो घण्टे से बेहोश पड़ी है। जो दो कोस पर गांव से बाहर डाक्टर साहब हैं ना, बड़े डाक्टर साहब, मैं उन्हीं को बुलाने जा रहा हूँ। सोचा

तुमसे कहता चलूं ।

"पागल हो गया है। भला, इतनी रात गये कौन डाक्टर आवे सै। वो जमाना गया जिसकी तू बात करे।"

बलवन्त कुछ क्षण तो स्तब्ध सा खड़ा रहा। मां की बात कुछ ठीक तो है, लेकिन एक अच्छे पड़ौसी होने के नाते उसे नीरू से बड़ी सहानुभूति है। वह उसके लिए बड़ी से बड़ी मुसीबत उठाने को तैयार है। नीरू तो एक पड़ौसी है, दुःख तकलीफ में तो किसी के भी काम आना इन्सानी फर्ज है। चाहे डाक्टर आये या न आये, वह अपने कर्तव्य का अवश्य ही पालन करेगा। नीरू के लिए एक बार शहर अवश्य ही जायेगा।

'मां, अब तो मुझे चलने दे। समय बड़ा नाजुक है, देख उस बेचारी को कुछ हो न जाए।'

'मेंह आने वाला है। रास्ता उबड़ खाबड़ है। मत जा' मां ने कहा।

"अरी मां, तू फिकर क्यों करती है ? देखती नहीं भोला मेरे साथ है।"

मां ने हर कोशिश की, लेकिन बलवन्त जरा भी न माना। वह भोला को साथ ले अपनी मंजिल की ओर बढ़ गया। उसके एक हाथ में लाठी तो भोला ने मां के हाथ से लालटेन ले ली थी। रास्ते में आंधी आई, वर्षा आई, लेकिन ये दोनों साहसी आगे बढ़ते ही गये और आखिर वे दोनों अपनी मन्जिल तक पहुंच ही गए।

रात के करीब साढ़े ग्यारह बज चुके हैं। डाक्टर भार्गव की कोठी के बाहर दरवाजे पर चौकीदार पहरा दे रहा है। किसी अनजाने आदमी को कोठी के अन्दर जाने की इजाजत नहीं है। बलवन्त और भोला दोनों ही मेन गेट पर आकर रुक गए हैं।

"क्यों, क्या बात है ?" चौकीदार ने पूछा।

"मरीज की हालत बड़ी खराब है, डाक्टर साहब को बुलाना है।"

बलवन्त ने बिनती करते हुए कहा।

"जाओ, वे नहीं आ सकते। उनकी बीबी बड़ी सख्त बिमार है।"

पूरे दो दिन हो गये हैं, उन्हें सोये हुए।

बलवन्त तथा भोला दोनों उलझन में पड़ गए। ऐसे समय में डाक्टर को बुलाना उचित तो न था लेकिन तुलनात्मक दृष्टि से नीरू का जीवन अधिक आवश्यक था। बलवन्त ने सोचा एक बार चौकीदर से फिर से प्रार्थना कर ली जाये तो अच्छा ही रहेगा, हो सकता है कुछ बात बन ही जाए, बेचारी नीरू का जीवन किसी प्रकार बच जाना चाहिए।

"भाई, केवल एक बार डाक्टर साहब से हमें मिला दो, तुम्हारे पांव पड़ां सैं। किसी की जान बच जायेगी, तुम्हारा भला होगा।"

चौकीदार की कठोरता कुछ नरम पड़ी "डाक्टर साहब से कुछ कहते हुए लगता तो डर है, लेकिन तुम कहते हो तो एक बार हो आता हूँ। अच्छा, तुम यहीं पर ठहरो।"

चौकीदार ने उनकी बात का उत्तर देते हुये कहा।

डाक्टर साहब अभी तक सोये हुये नहीं थे। अभी तक उनकी पत्नी की हालत में कोई सुधार न हुआ था। उनकी माता तथा घर के दूसरे लोग सभी जाग रहे थे। चौकीदार आज्ञा पाकर अन्दर कमरे में प्रविष्ट हुआ।

"क्यों कौन है ?" डाक्टर साहब ने पूछा।

"कोई गांव के दो आदमी जान पड़ते हैं। कहते हैं मरीज की हालत बहुत खराब है। आपसे मिलना चाहते हैं।"

डाक्टर साहब को बड़ी झुंझलाहट सी हुई 'समय देखते नहीं हैं, चले आते हैं। कहदो, मेरे पास टाईम नहीं है और किसी को बुला लें।'

चौकीदार 'अच्छा साहब' कहकर वापिस चल पड़ा। तभी डाक्टर भार्गव के मन में आई, इस हालत में किसी की बद दुआ लेना अच्छा नहीं।

चौकीदार अभी कुछ ही कदम आगे बढ़ा था कि डाक्टर साहब ने उसे वापिस बुला लिया 'अच्छा, उनसे कहो हमसे मिल लें।' भार्गव ने कहा।

'बहुत अच्छा साहब' चौकीदार ने अपने कदम जल्दी-जल्दी बाहर प्रतीक्षा कर रहे उन युवकों की ओर बढ़ा दिये। उसे लग रहा था जैसे उसने कोई महान् विजय पा ली है।

"क्यों भाई, कुछ बात बनी ?" बलवन्त ने बड़ी उत्सुकता से पूछा।

"हां, हां आओ मेरे साथ" चौकीदार ने बड़ी प्रसन्नता से कहा। उसे ऐसा अनुभव हो रहा था कि वह अपने जीवन में पहली बार कोई नेक कार्य करने जा रहा है। वह उन्हें अपने साथ लेकर कुछ ही क्षण में डाक्टर साहब के पास पहुँच गया।

"कहां से आये हो तुम ?" डाक्टर भार्गव ने पूछा।

"पास ही गांव बहू से" बलवन्त ने हाथ जोड़कर उत्तर दिया।

"क्या तकलीफ है ?"

"साहब मरीज की हालत बहुत खराब है। पहले तो कोई एक माह से बुखार आता था, आज सायं से वह बेहोश पड़ी है।"

"उम्र ?"

"कोई तीस वर्ष।"

"अच्छा, यह दवाई की शीशी लो। जाते ही उसके मुंह में पांच सात बूंदे डाल दो। भगवान ने चाहा तो होश आ जायेगा। हां इसके दो घण्टे बाद यह दूसरी खुराक उसे दे देना" डाक्टर भार्गव ने अपने बैग में से दवाई की दोनों शीशियां बलवन्त के हाथ में पकड़ाते हुए कहा।

बलवन्त सोच में पड़ गया। इससे पहले वह डाक्टर से कुछ कहता, भोला ने जो कुछ कहना था, वह कह दिया। उसकी आवाज हृदयस्पर्शी थी।" डाक्टर हम तो हाथ जोड़ कर दया की भीख मांगां सें। तुम्हारे चले बिना बात ना बने। देखना, उस बेचारी को कुछ हो गया तो छोटी बिटिया का इस भरी दुनिया में कोई ना रह जायेगा।"

डाक्टर का हृदय पिघलने लगा। उसके भी एक छोटी सी बेटी है उसे लगा जैसे वह कह रही है 'डैडो', मेरी मम्मी की तरह इसकी मां का भी जीवन बचा लो।

'क्या लगती है वह तुम्हारी ?' डाक्टर ने बड़ी सादगी से उन दोनों युवकों से प्रश्न किया।

बलवन्त ने उत्तर दिया "रिश्ते नाते में तो कुछ नहीं लगती, हां, एक पड़ौसी के कारण हम उसे अपनी बहन से बढ़कर माने हैं। डाक्टर साहब, एक बार उसकी छोटी बिटिया राधा को अपनी मां के लिये रोता देख लोगे ना किस प्रकार वह मां-मां कहकर तुम से अपनी मां के जीवन के लिये संघर्ष कर रही है, तुम भी रोये बिना न रहोगे। उसके लिये अब जो कुछ भी है, तुम्हीं हो। उसकी मां का जीवन बचा लो। उसकी आत्मा तुम्हें दुआएं देगी।"

भोला और बलवन्त का एक एक शब्द डाक्टर भार्गव के हृदय पर मंडराने लगा। उसे अब अपनी बेटी और किसी दूसरे की बेटी में, अपने जीवन और किसी दूसरे के जीवन में कोई अन्तर दिखाई नहीं पड़ रहा था। उसका हृदय इतना पिघल चुका था कि मानो सारी दुनिया के दुःखों ने उसके हृ य में अपना घर बना लिया है और वह उन्हें उखाड़ फैंकने के लिये बेचैन है।

"तुम अभी बाहर ठहरो, मैं अपना बैग लेकर आ रहा हूँ।" डाक्टर भार्गव ने कहा "मैं उसका जीवन बचाने की हर सम्भव कोशिश करूंगा। जहां कहोगे वहां चलूंगा।

ऐसा सुनकर बलवन्त और भोला की खुशी का कोई ठिकाना ना रहा। डाक्टर भार्गव अपने कमरे में वापिस चले गये। मां बैठी हुई अपनी बहू को दवा पिला रही थी। "मां देखना, एक मरीज की हालत बहुत खराब है। मैं पास ही गांव में जा रहा हूं।" भार्गव ने अपने बैग में इन्जैक्शन और कुछ दूसरी दवाईयां डालते हुए कहा।

"पगला हो गया है रे तू, बहू कितनी बिमार है। तुझे दूसरों की पड़ी है। तेरी बला से कोई मरे कोई जीये।"

"मां, आज तक तो मैं भी ऐसा ही समझता था, लेकिन जीवन में पहली बार इन्सानियत का अंकुर फूटा है। अपने लिये तो इन्सान हमेशा ही मरता है और हमेशा ही जीता है, लेकिन दूसरों के लिए मरने जीने का अवसर उसे कभी ही हाथ लगता है। मैं इसे खोना नहीं चाहता। गांव के छोकरे निःस्वार्थ भावना से किसी के लिये दुःख उठा रहे हैं, गिड़गिड़ा रहे हैं। मैं तो एक डाक्टर हूं। किसी का जीवन बचाना तो मेरा इन्सानी कर्त्तव्य भी है।

"बेटा, बहू को कुछ हो गया तो ? अपनी छोटी मुन्नी" मां का दिल भर आया।

"मां, विश्वास करो। मुन्नी की मां को कुछ न होगा। भगवान न करे, यदि कुछ हो भी गया तो एक बाप के दिल में मां का दिल छिपा हुआ है, उसके जीवन में अन्धकार न होने दूंगा। लेकिन जिस छोटी बच्ची का भरी दुनिया में मां के सिवाय कोई नहीं है, यदि उसे कुछ हो गया तो जुल्म हो जाएगा। मेरी आत्मा मुझे धिक्कारती रहेगी, मैं पल भर भी चैन से न बैठ सकूंगा।"

मां कुछ बोल न सकी। डाक्टर भार्गव की छोटी सो बिटिया सो रही थी। उन्होंने प्यार से उसके सिर पर हाथ रखा, प्यार भरी आंखों से अपनी पत्नी की ओर देखा, हाथ में अपना बैग ले कमरे से बाहर आ गए।

डाक्टर भार्गव के पास कार थी। वह इसके बिना कहीं आते जाते न थे। लेकिन आज वह दो मील तो क्या, किसी के लिये दो सौ मील भी पैदल चलने को उत्सुक थे। ये तीनों नेक इन्सान अपनी मन्जिल की ओर बढ़ लिए। चाहे रास्ता कितना ही खराब था, चाहे रात्रि कितनी ही अन्धियारी थी, परन्तु इनके कदम बड़ी तेजी से उठ रहे थे। आखिर नीरू का घर आ पहुँचा। रात के ढ़ाई बज चुके थे। राधा रोती रोती सो गई थी। मदन तथा गांव के दो चार अन्य लोग सायं से ही नीरू के घर पर थे। उन्हें नीरू तथा छोटी बिटिया राधा की बड़ी चिन्ता थी। वे डाक्टर की इसी प्रकार प्रतीक्षा कर रहे थे जैसे सूखे खेत मेंह की बाट देख रहे हों। ज्योंहि बलवन्त तथा भोला ने डाक्टर के साथ घर में प्रवेश किया, मदन तथा अन्य उपस्थित दो तीन लोगों के मन को कुछ राहत मिली।

डाक्टर भार्गव ने मुंह में दवाई डाली, लेकिन कुछ असर न हुआ, एक के बाद दूसरी दवाई दी लेकिन सब निष्फल। बलवन्त तथा दूसरे लोग घबराये हुए दिखाई पड़ रहे थे। उनके चेहरे पर आई हुई आशा की झलक, निराशा में परिवर्तित सी होती हुई दिखाई पड़ने लगी।

"डाक्टर साहब ·····" मदन ने घबराई हुई आवाज में कहा।

"घबराओ मत, मैंने अभी हिम्मत नहीं हारी है। मैं इसे इन्जैक्शन दिए देता हूं। भगवान् ने चाहा तो अवश्य ही होश आ जाएगा।"

डाक्टर भार्गव के तीन घण्टे के अनथक परिश्रम के बाद नीरू ने अपनी आंखें खोल दीं। सभी के चेहरों पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। भार्गव का हृदय खुशी से नाच उठा।

"राधा बिटिया", नीरू ने बड़ी आहिस्ता से पुकारा। उसमें तेज बोलने की शक्ति न थी।

"लाया बहन, वह साथ के कमरे में सो रही है" प्रसन्नता से बलवन्त उसे जगाने के लिए साथ के कमरे में पहुँच गया।

"उठ बिटिया उठ। देख, तेरी मां तुझे बुला रही है। आज घर में साक्षात् भगवान् आये है। आ चल, दर्शन कराऊं।" ऐसा कहते हुए बलवन्त ने उसे एक दो बार हाथ से हिलाते हुए जगा लिया। वह उसे अपनी गोदी में उठा कर ले आया और नीरू के पास छोड़ दिया। राधा बिटिया 'मां, मां' कहते हुए अपनी मां से चिमट गई। मां ने उसे प्यार से चूम लिया।

बलवन्त ने डाक्टर भार्गव की ओर संकेत करते हुए कहा, "बहन, यह डाक्टर भार्गव हैं, बड़े नेक, इन्होंने ही तुम्हारा जीवन बचाया है।"

नीरू ने इसके उत्तर में अपने दोनों हाथ जोड़ दिये।

सूर्य निकले काफी देर हो चुकी थी। नीरू की हालत सुधर रही थी। डाक्टर भार्गव ने सभी को विश्वास दिलाया कि जब तक नीरू बिल्कुल स्वस्थ न हो जायेगी, वह चैन से नहीं बैठेगें। कल ही उसको अपने हस्पताल में बुलायेंगे। सभी का हृदय प्रसन्नता की लहरों में डूबा जा रहा था। डाक्टर भार्गव जाने के लिये उठ खड़े हुये। बलवन्त ने दस रुपए का नोट डाक्टर भार्गव को देते हुए कहा, "डाक्टर साहब आपकी फीस।

डाक्टर भार्गव चुप रहे।

बलवन्त ने हाथ जोड़कर कहा' "डाक्टर साहब हम जाने हैं, आज आपको दस तो क्या, दस हजार भी दिए जायें तो कम हैं। लेकिन क्या करें गरीब हैं, आप इन्हें ले लीजिये।" आवाज में बड़ा दर्द था।

डाक्टर भार्गव के चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान बिखर गई, आज मैंने किसी दूसरे के जीवन का मूल्य जाना है। निःस्वार्थ भाव से किसी का जीवन बचाने में हृदय को कितना आनन्द मिलता हैं, आज पहली बार अनुभव हुआ है। आज तक न जाने मैंने कितने लोगों का जीवन बचाया, लेकिन दिल को कभी इतनी खुशी न हुई। इसमें मेरा अपना स्वार्थ छुपा हुआ था। एक हाथ से मैं उनसे जी भर पैसे लेता, तो मानो दूसरे हाथ से इसके बदले उनका जीवन वापिस लौटा देता। न कोई अमीर देखा, न कोई गरीब। यह कोई डाक्टरी न थी। मेरे हृदय पर पड़ा हुआ स्वार्थ का पर्दा हट गया है। आज से मैं दूसरों के जीवन को अपना जीवन समझकर अपने मार्ग पर आगे बढ़ूंगा। यही मेरी सबसे बड़ी फीस है।" वहां पर उपस्थित सभी लोगों ने डाक्टर भार्गव का धन्यवाद किया। उन्होंने चलने के लिए अपना कदम आगे बढ़ा दिया। तभी नीरू ने राधा से कहा, "बिटिया, डाक्टर साहब के पांव छूओ।"

छोटी बिटिया राधा ने डाक्टर भार्गव के पांव अपने छोटे छोटे हाथों से पकड़ लिए। डाक्टर भार्गव रुक गए।

राधा बिटिया ने अपना प्यारा सा मुखड़ा ऊपर उठा दिया। उसके चेहरे पर एक सुन्दर सी मुस्कान बिखर गई जैसे वह सब कुछ समझती हो। उसकी आंखों से प्रसन्नता के दो आंसू लुढ़क आये। डाक्टर भार्गव को लगा जैसे वह कह रही हो, "डाक्टर साहब, तुमने मेरी मां की जान बचाई है ना, अपने साथ मेरी आंखों से निकले हुए प्रसन्नता के दो आँसू लेते जाओ। ये तुम्हारा घर खुशियों से भर देंगे। तुम अपनी बिटिया को मेरी ही तरह मां की गोद में खेलते पाओगे।"

डाक्टर साहब ने नीचे झुककर प्यार से राधा बिटिया के माथे को चूम लिया और चल पड़े। बलवन्त और भोला डाक्टर को छोड़ आने के लिए उनके पीछे पीछे चल रहे थे।

काश्मीर को जैसा मैंने देखा तथा समझा

—आचार्य विष्णुमित्र विद्यामार्त्तण्ड

काश्मीर के विषय में पुस्तकों में पढ़ता रहा हूँ तथा सुनता रहा हूँ कि यह भारत का मनोरम तथा आकर्षक स्थल है। इसको देखने की बहुत दिन से इच्छा बनी हुई थी परन्तु परिस्थितियों के कारण मैं अपनी इस इच्छा को अब तक पूर्ण न कर सका था।

अपने गुरुकुल खानपुर के प्रशिक्षण विभाग की छात्राओं का भ्रमण का प्रोग्राम बना। छात्राओं के साथ बहन सुभाषिणी आचार्य कन्यागुरुकुल खानपुर कलां का उनके साथ जाना आवश्यक था। बहन जी ने मुझे भी साथ चलने के लिए कहा। मैं यद्यपि अपने गुरुकुल के छात्रों की समय पर परीक्षा न होने से चिन्तित था तो भी बहन जी की आज्ञा को न टाल सका।

8-5-1979 को छात्राओं की भ्रमण पार्टी प्रात: बस में कन्यागुरुकुल से चली। बस में सवार हो पानीपत, करनाल, अम्बाला होते हुए राजपुरा में मध्याह्न में सब ने भोजन किया। छात्रायें मस्त हो कर प्रसन्नता से सुन्दर धार्मिक गीतों को गाती हुई चल रही थीं। लुधियाना, जालन्धर को पार कर हमारी गाड़ी पठानकोट पहुँची। वहां से सड़क के दोनों ओर छोटी-छोटी पहाड़ियां हरे-भरे वृक्षों से मण्डित दिखलाई दे रही थीं। कुछ आगे बढ़ कर सतलुज को रोक कर बनाई हुई नहर के दर्शन किये। जितना-जितना हम आगे बढ़ते जाते थे उतनी-उतनी सुन्दरता भी बढ़ती जाती थी। ऊंचे पर्वत, ऊंचे वृक्ष एक दूसरे से आगे बढ़ने के लिए होड़ सी लगा रहे थे। लखनपुर में बस का टोलटैक्स देने के लिए वहां हम को घण्टा भर रुकना पड़ा।

वहां पर बने पुल पर से रेलगाड़ी तथा बसें गुजरती हैं। उन दोनों के लिए एक ही मार्ग बना हुआ है। तदनन्तर हमारी पार्टी जम्मु नगर की ओर बढ़ी। जब हम बस में बैठे जा रहे थे उस समय सर्वत्र अन्धकार फैल चुका था तो भी बस की झांकियों से विशाल पर्वत वृक्षावली समेत अस्पष्ट रूप में दर्शन दे रहे थे। दस बजे हम सब जम्मू में जाके एक रेस्टोरेन्ट में ठहरे। मार्ग में वर्षा होती रही। उसी स्थान पर हमने ठहरने

का तथा भोजन का प्रबन्ध किया। उस दिन वहां बड़ी गर्मी थी। मैंने मिस्टर बोगू से कहा कि आप लोग कहते थे कि काश्मीर में बड़ी सर्दी होती है, यहां तो हमारे शरीर पसीने में तरबतर हो रहे हैं। इस पर उन्होंने कहा कि जब श्रीनगर आवेगा तब आपको ठण्डक की प्रतीति होगी। जम्मू नगर तो हरियाणा जैसा ही गर्म है।

जम्मू का बस स्टैंड स्टेडियम के प्रकार का है। उसके दोनों ओर की पहाड़ियों पर मकान बने हुए हैं। उनके बीच में लगभग 250 या 300 बसें खड़ी दिखाई देती हैं। यह काश्मीर का इन्टर नेशनल बस स्टैण्ड है। प्रातःकाल बस स्टंण्ड के भवन पर चढ़ कर देखने से यह दृश्य बहुत ही सुन्दर प्रतीत होता है। जम्मू में रघुनाथ जी का बहुत प्राचीन तथा सुन्दर मन्दिर है। काश्मीर के राजा रणवीर सिंह द्वारा इसकी कुछ रचना तथा मरम्मत कराई गई है। यह मन्दिर दर्शनीय है। भक्तगण प्रातःकाल ही नंगे पांव पूजा के लिए इस मन्दिर में आते दिखाई देते हैं। इस मन्दिर में आने वालों में स्त्रियां अधिक हैं क्योंकि वे पुरुषों के मुकाबले में अधिक श्रद्धा वाली होती हैं।

इस मन्दिर में शिव, हनुमान की विशाल मूर्तियां विद्यमान हैं। अन्य राजाओं, देवों की मूर्तियां बनी हुई हैं, पर वे आकर्षक नहीं हैं। मन्दिरों के उन्नीस गुम्मज हैं।

9 मई को प्रातः हमारी पार्टी ने जम्मू से काश्मीर के लिए प्रस्थान किया। सड़क के दोनों ओर एक से एक बड़ा पहाड़ दिखलाई देने लगा। बड़े-बड़े विशाल पत्थर पहाड़ पर अलग हुए से दिखलाई देते थे, ऐसा प्रतीत होता था कि मानों ये थोड़ी सी ठेस लगते ही सड़क पर आ गिरेंगे।

इस प्रकार के मार्ग पर गाड़ी दौड़ाते हुए मदन लाल ड्राईवर की बस चालन की कुशलता भी दिखलाई देती थी कि किस कुशलता से वह सड़क के तंग मार्ग से गाड़ी को दौड़ा रहा था। सड़क के बाईं ओर के पहाड़ से झरने झर-झर कर नाले की शकल में तेजी से बहते दिखाई दे रहे थे। जो बड़े सुन्दर तथा भयानक भी प्रतीत होते थे। जब सड़क से नीचे की ओर हमारी दृष्टि जाती थी तो भय सा लगता था। बार-बार उस ओर देखने का साहस न होता था। मैं बहन सुभाषिणी को तथा वे मुझको नीचे की ओर देखने के लिए कहते थे। यह दृश्य बहुत सुन्दर तथा विचित्र था।

जब हम चलते-चलते 'कुद' पहुँचे वहां पर हमको ठण्डक का आभास हुआ। हमको बतलाया गया कि यहां से ठण्डक प्रारम्भ होती है वहां पर देवदारु के सीधे तथा ऊंचे वृक्ष पर्वत पर खड़े थे।

'पत्नीटाप' काश्मीर का सब से ऊंचा स्थान है। वहां की सुन्दरता तथा ऊंचाई को देख कर प्रभुसत्ता का नास्तिक को भी आभास होता है। वहां से 'बटौत' की ओर

जाया जाता है। वहां से बस पहाड़ के नीचे की ओर उतरती है। सड़क के मार्ग में उचित स्थानों पर चाय तथा भोजन आदि का भी सुप्रबन्ध है। उन पहाड़ों पर पहाड़ियों के बालक निर्भय हो कर इधर उधर घूमते दिखाई देते हैं। उन विशाल पर्वतों पर कहीं पर दो, कहीं पर चार-चार मकान पहाड़ी लोगों के बने हुए हैं। कहीं कहीं पर अधिक घर भी बने हुए हैं। उनके पशु भी निर्भय होकर वहां चरते दिखाई देते हैं। जो मार्ग हमारे लिए कठिन है वह उनके लिए सरल है। यह अभ्यास या आदत के कारण है।

रामबन से बानीहाल का मार्ग 60 कीलो मीटर लम्बा है। इस मार्ग में पहाड़ बहुत ऊंचे हैं। बीच में चिनाब नदी कहीं पर तीन सौ कहीं पर चार सौ फीट नीचे बहती दिखाई देती है। जब हम नीचे की ओर देखते थे तब हम को घबराहट सी होती थी।

मदनलाल ड्राईवर आगे से आने वाली और पीछे से आने वाली गाड़ियों को पार करता हुआ योग्यता से आगे बढ़ रहा था। उसकी गाड़ी की गति कभी कभी तेज हो जाती थी तो बहन सुभाषिणी मुझे कहती थी कि भाई मदनलाल को कहो कि यह गाड़ी को तेज न चलावे।

काश्मीर के पहाड़ पथरीले भी रेतीले भी हैं रेतीले पहाड़ों की मिट्टी सड़क पर वर्षा से गिर जाती है उसे दूर करने के लिए मजदूर नियुक्त किये हुए हैं। बानीहाल से काश्मीर की कमीपूनरो प्रारम्भ होती है। वहां से आगे 'जवाहर टनल' बनी है जो डेढ़ मील लम्बी है। जो भारत की बड़ी टनल मानी जाती है। यहां पर दो टनल (सुरंग) बनी हैं। एक गाड़ियों के जाने के लिए तथा दूसरी आने के लिए। यहां हर समय बिजली का प्रकाश रहता है। इसके बनने से काश्मीर की यात्रा में बाईस मील की यात्रा कम हो जाती है। काजू कुण्ड में हमारी पार्टी ने भोजन किया। वहां से कुछ दूर चल कर मैदानी भाग आया परन्तु अन्धकार होने से कुछ भी दिखाई न दिया। काजू कुण्ड से श्री नगर तक पहुँचने में हमको दो घण्टे लगे। श्री नगर में दस बजे एक रेस्टो-रेन्ट में ठहरे। वहीं पर हम 16 मई तक रहे। वहां का सुप्रबन्ध था। भोजन व्यवस्था का प्रबन्ध बहन वीणा प्राध्यापिका ने किया। वह सबकी संभाल करती रही।

9 मई के दस बजे हम श्रीनगर के सुन्दर तथा ऐतिहासिक स्थानों को देखने चले। सब से प्रथम हमने डल झील के दर्शन किये। वह पांच मील लम्बी तथा अढ़ाई मील चौड़ी है। इस पर एक फूलों का पार्क है जो मिट्टी भर के तैयार कराया गया है उसे नेहरू पार्क कहते हैं। इस झील में हाऊस बोटों तथा शिकारों में जल विहार किया जाता है। हमने भी आठ-आठ की संख्या में बैठ कर उस झील में जल विहार का आनन्द लिया। 'डल' का अर्थ है जल की अधिकता। अर्थात् इस झील में बहुत अधिक जल है अतः इसे 'डल' झील कहते हैं। यहां पर बहुत से हाऊस बोट हैं जो जल में ही खड़े रहते

हैं। रात्रि के समय उन पर लगे बिजली के बल्बों का प्रकाश जब झील में पड़ता है तो वहां की शोभा अद्भुत हो जाती है। इस झील में जेहलम (वितस्ता) नदी का तथा झरनों का जल आके इकट्ठा होता है। जेहलम नदी जो श्रीनगर के बीच से बहती है उसमें तो किनारों पर हाऊस बोटों की लाइन लगी रहती है। महाराजा हरिसिंह का महल भी जेहलम नदी के किनारे खड़ा है जो अब सरकार की सम्पत्ति है।

डल झील के दर्शन कर उसमें विहार कर हमारी पार्टी शंकराचार्य के मन्दिर पर गई। यह मन्दिर श्रीनगर से 1000 फुट की ऊंचाई पर है। यह दर्शनीय स्थल है। ऐतिहासिकों का मत है यह शिव मन्दिर सन्धिमान ने ईसा से 2564 वर्ष पूर्व बनाया था। उस समय यहां तीन सौ सोने की मूर्तियां थीं। गोपादित्य ने ईसा से 365 वर्ष पूर्व इसकी मरम्मत कराई और 376 ई० में ललितादित्य ने इसका जीर्णोद्धार कराया। कुछ का अनुमान है कि पुराने मन्दिर के स्थान पर यह नवीन मन्दिर राजा गोपादित्य ने बनवाया। जिस समय हिन्दू और बौद्ध धर्म में वाद-विवाद चल रहा था तो शंकराचार्य काश्मीर में बौद्धों को नीचा दिखाने आये थे। हिन्दू इसे पाश पहाड़ और मुसलमान तख्ते सुलेमान कहते हैं। इस पर्वत पर चढ़ कर काश्मीर घाटी तथा श्रीनगर की शोभा देखी जा सकती है। श्रीनगर के सारे भवन बर्फ के कारण टीन के बने हैं। बस से उतर कर कुछ दूर सड़क पर पैदल चल कर पौड़ियों द्वारा जो कि 240 हैं मन्दिर में जा सकते हैं। जो मन्दिर बड़े-बड़े पत्थरों से बना है। इतने भारी भारी पत्थरों को उठा कर ईंट की तरह लगाने की योग्यता का वहां दर्शन होता है। वहां एक पुजारी रहता है जिसकी दृष्टि चढ़ावे को प्राप्त करने की रहती है। हमारी छात्राओं ने भी भक्तिप्रवण होके मन्दिर पर अनेक रुपये चढ़ाये। इस पहाड़ को 'गोपाद्रि' भी कहते हैं। यहां चढ़ कर सांप की तरह श्रीनगर में घूमती हुई जेहलम नदी के भी दर्शन होते हैं।

अन्य बातों को लिखने से पूर्व काश्मीर की स्थापना के विषय में भी लिखना उचित प्रतीत होता है। काश्मीर को ही नन्दन वन कहा जावे तो अतिशयोक्ति न होगी। यहां पर कल-कल करती हुई शीघ्रगामिनी नदियां, झर-झर करते झरने, जल-प्रपात तथा स्रोतों को देख कर मनुष्य प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता है। इसमें चारों ओर लहलाते खेत, देवदार, चीड़, चिनारों की शोभा दर्शनीय है। काश्मीर हिमालय पर्वत श्रेणियों के चट्टानों के हृदय में जुड़ा हुआ है। यह 84 मील लम्बा तथा 25 मील चौड़ा है।

इतिहासकारों का मत है कि आधुनिक काश्मीर घाटी पहले काल में महान् जल खण्ड या झील के रूप में थी। दक्ष कन्या सती के नाम पर इसका पुराना नाम 'सतीसर' था। यहां पर कश्यप मुनि आये और उन्होंने बारहमूला पर्वत को कटवा कर यहां पर इकट्ठा हुआ सारा जल इस घाटी से बाहर निकाला। कश्यप मुनि ने सब से

प्रथम इस नगर की स्थापना की। उन्होंने आर्यव्रत या भारत में जाकर वहां से ब्राह्मणों तथा अन्य लोगों को यहां बसने की प्रेरणा दी। अतः कश्यप मुनि के नाम पर इसका नाम कश्यप मरु कहलाया। कालान्तर में यह नाम बिगड़ते-बिगड़ते काश्मीर हो गया।

जम्मू प्रदेश के विषय में कहावत है कि महाराज रामचन्द्र के वंशज जाम्बुलोचन नाम के कोई राजा यहां आये। यहां के मनोरम स्थल को देख कर, यहां की शान्ति को देख कर बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने ही इस नगर की यहां नींव डाली। उन्हीं के नाम पर इस नगर का नाम जम्बू नगर हुआ

सर्वप्रथम काश्मीर मौर्य वंश के राजा अशोक के अधिकार में रहा। फिर यहां पर तातार जाति का राज्य हुआ फिर सम्राट् कनिष्क ने यहां पर शासन किया। बौद्ध धर्म की चौथी धर्म सभा यहीं बुलाई गई थी। उसी काल में बौद्धों के महान् पण्डित नागार्जुन भी काश्मीर के हारवन गांव में रहा करते थे। फिर हूण जाति के फिहरगुल राजा ने यहां शासन किया। यहां की प्रजा पर उसने बड़े अत्याचार किये। उसकी मृत्यु के पश्चात् फिर हिन्दू राज्य की स्थापना हुई। आठवीं शताब्दी में ललितादित्य नाम के पराक्रमी हिन्दु राजा हुए। उनके राज्य में काश्मीर की उन्नति हुई। इस प्रकार चौदहवी शताब्दी तक यहां हिन्दु राज्य रहा। तदनन्तर यहां पर मुस्लिम बादशाहों का का राज्य हुआ।

सिन्धदेव राजा की मृत्यु के पश्चात् उसका सेनापति रामचन्द्र यहां का राजा बन बैठा। सिन्धदेव के दूसरे सेनापति रेंचन शाह ने रामचन्द्र की हत्या कर डाली और उसकी पुत्री कीटा से उसने विवाह कर लिया।

रेंचनशाह ने ब्राह्मणों से हिन्दु बना लेने की प्रार्थना की परन्तु उन्होंने रेंचन शाह की प्रार्थना पर ध्यान नहीं दिया। अन्त में निराश होकर उसने मुस्लिम फकीर बुलबुल शाह से इस्लाम मजहब ग्रहण किया। सुलतान जैनुल आब्दीन नाम ने 1420 में वे अपनी लोक प्रियता के कारण सम्राट् पद से स्मरण किये जाने लगे।

1586 में बादशाह अकबर ने अन्तिम शिया शासक याकूब शाह को पराजित कर काश्मीर पर अधिकार किया। उसके पश्चात् उसके पुत्र जहांगीर और पौत्र शाहजहां काश्मीर पर शासन करते रहे। उन्होंने अनेक उद्यान तथा भवन बनवाये, जिनमें डल-झील के आप-पास के शालीमार, नसीम, निशात प्रसिद्ध हैं। औरंगजेब के शासनकाल में हिन्दुओं पर जजिया कर लगाया गया। इससे वहां पर अनेक हिन्दु मुसलमान हो गये। 1851 में काश्मीर अफगा अहमद शाह दुर्रानी के अधिकार में आ गया। 1845 तक यह प्रदेश सिक्खों के अधीन रहा।

इसके पश्चात् अंग्रेजों ने काश्मीर पर महाराजा गुलाब सिंह की सहायता से अधिकार कर लिया। फिर अंग्रेजों ने पचहत्तर लाख रुपये में महाराजा गुलाब सिंह को बेच दिया। 1846 में महाराजा गुलाब सिंह का इस पर अधिकार हो गया। महाराज गुलाब सिंह की मृत्यु के पश्चात् 1847 में उनके पुत्र रणजीत सिंह गद्दी पर बैठे। 1865 में महाराज प्रताप सिंह यहां के शासक बने। 1925 में उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके भतीजे हरिसिंह गद्दी पर बैठे। 1947 में पाकिस्तान की सहायता से कबालियों ने काश्मीर पर आक्रमण किया। तब राजा हरिसिंह ने काश्मीर को भारत सरकार के सुपुर्द कर दिया। तब से काश्मीर भारत का अटूट अंग है। यह संक्षिप्त इसका पूर्ववृत्त है।

श्रीनगर काश्मीर की राजधानी है। चिनार के विशालकाय वृक्ष सड़कों पर पंक्ति में लगे श्रीनगर की शोभा बढ़ा रहे हैं। यहां के मनुष्य बड़े निर्धन हैं उनका खाना-पीना भी उत्तम नहीं कहा जा सकता है। दुकानों पर बोर्डों पर आपको उर्दू या अंग्रेजी लिखी मिलेगी। केवल मात्र बैंकों के बोर्डों पर आपको कहीं-कहीं देवनागरी लिपि के दर्शन होंगे। पुरुषों से अधिक पुरुषार्थ स्त्रियां करती हैं। पुरुष प्राय: एक ऊनी चोगा सा पहने रहते हैं। पाजामा भी पिण्डियों तक पहना हुआ मिलेगा।

मैंने यह अनुभव किया वहां का मुस्लिम शरारती नहीं है। उसे अपनी आजीविका अर्जन की ही चिन्ता है। अत: उत्पात करने का प्रश्न ही नहीं उठता। एक बात और लिख दूं जो मुझे समझ में आई है। कांग्रेस सरकार ने और जनता सरकार ने जो 370 धारा को न तोड़ने का निर्णय लिया है वह बुद्धिमत्तापूर्ण है। यदि इस धारा को तोड़ दिया जावेगा तो भारत का धनी वर्ग अपने धन के बल स सारी जमीन को खरीद कर उस पर बड़े-बड़े महल बना कर काश्मीर की वास्तविक सुन्दरता को नष्ट-भ्रष्ट कर देगा, जो कि नितान्त अनुचित होगा।

'चश्माशाही' नाम का श्रीनगर से 8 किलो मीटर दूर मीठे जल का सुन्दर चश्मा है, जिसे मुगल गवर्नर अली मर्दन खां ने 1632 में बनवाया था। उसका जल बहुत शीतल तथा पाचक है। हमने वहां की शोभा भी देखी, जल भी पीया। उसके समीप विशाल पर्वत भी खड़ा है जिसको धूमे के आकार के बादल घेरे रहते हैं।

'परी महल' नाम से प्रसिद्ध एक भवन है, जो पहले कभी बौद्ध बिहार था। शाहजहां के बड़े पुत्र दारा शिकोह ने जिसकी मरम्मत कराई थी। उन्होंने यहां पर अपने गुरु आखून मल्लशाह से दर्शन शास्त्रों पर अनेक वाद-विवाद किया था। उसको देखकर मेरे दिल में अनेक प्रकार की भावनायें आई कि काल के विशाल गाल में प्रत्येक वस्तु लय हो जाती है।

चश्माशाही से 32 किलोमीटर दूर निशात बाग स्थित है। जहां पर सायंकाल

चार बजे हम पहुँचे। बाहर जो दीवार है, वह सुन्दर नहीं है। पता नहीं इतने सुन्दर स्थान को दीवार को सुन्दर क्यों नहीं बनाया गया। इसे नूरजहां के भाई आसफखां ने बनाया था। यहां पर चिनार के विशाल वृक्ष आकाश को छूते दिखाई देते हैं। यह बाग पहाड़ के ढलाव पर बनाया गया है। यह बाग फव्वारों समेत दस चबूतरों में एक के ऊपर एक ढलवां पंक्तियों में बनाया गया है। यहां खड़ा होकर डल झील का सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। हम यहां घूम कर बड़े प्रसन्न हुए।

निशात बाग से तीन किलोमीटर दूर आपको डल झील के तट पर बादशाह जहांगीर का बनाया शालीमार बाग दिखाई देगा। जो बहुत ही सुन्दर है। वहां सुन्दर फल फूल लगे हैं। बाग में बारह दरी और फव्वारे वहां की शोभा को बढ़ा रहे हैं। चिनार के वृक्ष भी यहां शोभा को द्विगुणित कर रहे हैं। यदि यह लिख दिया जावे कि श्रीनगर के आस-पास शोभा बढ़ाने वाले चिनार के वृक्ष हैं तो यह अतिशयोक्ति न होगी। कहते हैं कभी इस बाग के चारों ओर संगमरमर का प्राचीर था परन्तु अब तो साधारण दीवार ही इसकी प्राचीर बनी हुई।

'हार्वन' यह स्थान शालो मार से पांच किलो मीटर दूर है। यहां एक कृत्रिम झील है, जिसमें पानी इक्ट्ठा होता है। फिर यहां से सारे नगर को पानी दिया जाता है। इसके समीप भी विशाल पर्वत खड़ा है।

11 मई को हमारी पार्टी बस से गुलमर्ग की ओर यात्रा के लिए चली। यह स्थान श्रीनगर से पच्चीस मील दूर है। पहले तंग मर्ग जाना होता है। वहां से तीन मील आगे गुलमर्ग है। कुछ पहले आगे टट्टुओं पर जाया जाता था परन्तु अब वहां तक बस जाने लगी है। यह मार्ग बहुत ही रमणीक है। गुलमर्ग में ठहरने के लिए उत्तम होटल भी हैं। सड़क के दोनों ओर बहुत ही सुन्दर वृक्षावली शोभित है। गुलमर्ग के मार्ग में सीधे खड़े हुए देवदारु के वृक्षों की शोभा अद्भुत है। ऐसा प्रतीत होता है मानो किसी ने एक लाईन में इन्हें खड़ा किया हो। गुलमर्ग सागर तल से 8500 फीट ऊंचाई पर स्थित है। यहां घुड़दौड़ और पोलो का मैदान है। प्राचीन काल में इस स्थान को गौरी मार्ग कहते थे। सोलहवीं शताब्दी में शाह यूसफ ने इसका नाम गुलमर्ग रख दिया। इसके नाम से ही प्रतीत होता है कि यह एक पुष्पवाटिका है। यह स्थान वर्णन का विषय न होकर दर्शनीय है। देखने से ही प्रतीत होता है कि प्रभु ने इसे कैसा सुन्दर बनाया है। यहीं पर दो पहर में हमारी पार्टी ने भोजन किया। गुलमर्ग से चार मील आगे खिलन मर्ग है। गुल मर्ग से उसकी ऊंचाई दो हजार फीट है। गुलमर्ग से पैदल या टट्टू पर जाने के कई मार्ग हैं। खिलन मर्ग ऊंची-ऊंची पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यहां पर बर्फीली हवाओं का आनन्द लिया जाता है।

मैं तथा बहन सुभाषिणी पैदल ही खिलन मर्ग की ओर चले। हमको पैदल चलते

देख कर, हमारे सफेद बालों को देख कर यात्रियों ने कहा कि यदि खिलन मर्ग जाना है तो टट्टुओं पर ही बैठो, वैसे आप लोगों का जाना कठिन होगा परन्तु हम उस ऊबड़-खाबड़, पथरीले, रेतीले, ऊंचे-नीचे मार्ग से पैदल ही चल पड़े। वहां बड़ी ठंडक थी। रास्ते में एक तेज धार वाला झरना दिखाई दिया। उसको पार करना हमारे लिए कठिन लगता था। उसी समय दो नवयुवकों ने सहारा देके हमको उस झरने से पार किया। हम फिर साहस करके ऊपर की ओर बढ़े। कुछ दूर चलने पर श्वास चढ़ जाते थे। हम दोनों पहाड़ मार्ग पर ही बैठ जाते थे। फिर साहस करके उस पहाड़ के नीचे के भाग में बैठ गये जिसकी शिखर पर बर्फ फैली हुई थी।

आगे चलें या न चलें इसका चिन्तन कर रहे थे। फिर दोनों साहस करके ऊपर चढ़ने लगे। बीस पग बढ़ते ही श्वास चढ़ जाते थे तो भी हम उठते बैठते आगे बढ़ते ही रहे। हमारी छात्रायें भी हमारी सहायता कर रही थीं। इस प्रकार साहस करके हम उस बर्फीले पहाड़ पर चढ़ ही गये। इसी पहाड़ के दूसरे भाग पर पाकिस्तानी सेना ने चढ़ कर काश्मीर पर 1947 में आक्रमण किया था। इस स्थान को प्राप्त करने पर हमको बहुत प्रसन्नता हुई। यहां पर बर्फीली पहाड़ियों में बैठ कर बर्फ की यात्रा भी की। यहां से मीलों तक चारों ओर वर्फ ही बर्फ दिखाई देती थी। जब हम बर्फ से बाहर आये चक्कर से आने लगे तथा सोचने लगे कि कहीं पहाड़ से नीचे न गिर जावें परन्तु थोड़ी ही देर में वे चक्कर शान्त हो गये और उस पहाड़ से उतर कर गुल मर्ग पैदल जा पहुँचे जहां हमारी बस खड़ी थी। वहीं पर हम सब ने जलपान आदि किया।

12 मई को हम नगीन झील पर पहुँचे। यहां पर बादाम और अखरोट के वृक्षों की अधिकता है। यहां पर यात्रिगण नौका विहार का आनन्द भी लेते हैं। इसकी बारह दरी में खड़ा होकर पहाड़ का तथा झील का सुन्दर दृश्य देखा जा सकता है। कुछ मुसलमान युवक मेरे पास आये, उन्होंने टूटी-फूटी हिन्दी में पूछा कि क्या आप सदा इसी प्रकार से धोती बांधते हो। मैं अपने स्वभाव के अनुसार उनसे आमोद-प्रमोद करने लगा। वे बोले आपका बोलना हमको बहुत ही अच्छा लगता है। आप हमारे शाल खरीदो। मैंने कहा कि हमारी छात्राओं ने तो शोपिंग कर ली है अब उनके पास लेने-देने को कुछ नहीं है। तुम हमारा पिण्ड छोड़ो। इस प्रकार थोड़ी देर बातें करके हम वहां से चले आये।

नसीम बाग हजरत बल से थोड़ी दूर है। इसे मुगल बादशाह अकबर ने बारह सौ चिनार के वृक्ष लगवा कर बनवाया था। वहां पर अभी तक तीन सौ साढ़े तीन सौ वर्षों से लगे विशाल तथा बहुत मोटे चिनार के वृक्ष दिखाई देते हैं। इस बाग में एक सुन्दर चश्मा (स्रोत) है। उसके समीप ही ऊंचा पहाड़ है। उस दिन वर्षा हो रही थी। इन्द्रधनुष वहां इस प्रकार दिखाई दे रहा था मानो वह झील के दोनों ओर से बन कर तैयार हुआ हो। वस्तुतः सुन्दर स्थान है। (क्रमशः)

चिन्गारी सुलग रही है :-—

ऐतिहासिक कंझावला आन्दोलन

—नरेन्द्र कुमार विद्यालंकार

•

[गतांक से आगे]

जिसमें दिल्ली के चारों ओर बसने वाले सभी जातियों के कई हजार लोग एकत्रित हुए। जब दिल्ली प्रशासन ने यह देखा कि यह झगड़ा पता नहीं क्या रूप लेले तब दिल्ली के उपराज्यपाल श्री दिलीप कोहली ने दिल्ली के डिप्टी कमिश्नर और एस० पी० को एक पत्र देकर उपरोक्त सर्व जातीय "सर्वखाप पंचायत" में भेजा। जिस में उन्होंने लिखा कि ग्राम सभा के सभी अधिकार विशेष कर भूमि सम्बन्धी ग्राम सभा को प्राप्त हो गये हैं। इस पर आन्दोलन स्थगित हो गया। इसी बीच दिल्ली प्रदेश में ग्राम पंचायतों के नए चुनाव हो गए। नई पंचायत ने 21 मार्च 1978 तथा 24 अप्रेल 1978 को सम्बन्धित अधिकारियों एवं भारत सरकार के मन्त्रियों को पत्र लिखे, परन्तु ग्राम पंचायत को न किसी सरकारी अधिकारी ने उत्तर दिया और न ही केन्द्र सकार के किसी मन्त्री ने।

29 जून 1978 को ग्रामसभा ने सर्वसम्मत प्रस्ताव द्वारा निर्णय किया कि यह भूमि चरागाह ही रहेगी। किसी भी कीमत पर किसी को पट्टे पर नहीं दी जायेगी। साथ ही यह भी निर्णय हुआ कि गैर बिस्वेदारों को विशेषकर हरिजनों को मुफ्त प्लाट दिए जायेंगे। इसकी सूचना दिल्ली प्रशासन को भी दे दी गई। इस पर दिल्ली प्राशासन ने चुप्पी साध ली।

2 जुलाई 1978 को दिल्लो प्रशासन ने ग्राम पंचायत एवं ग्राम सभा को विश्वास में लिए बिना इस चरागाह भूमि की भारी पुलिस संरक्षण में ट्रैक्टरों द्वारा जुताई करवा दी।

7 जुलाई 1978 को जब किसानों ने हरिजनों को भूमि जोतने से रोका तो छोटा-मोटा झगड़ा हो गया। भारी संख्या में पुलिस वहां मौजूद थी। दोनों पक्षों को

चोटें आईं। पुलिस ने किसानों की रपट लिखने से इन्कार कर दिया। हरिजनों की झूठी रिपोर्ट लिखो और किसानों को यह कहकर चालान कर दिए कि उन्होंने खेतों से हरिजनों की फसल लूट ली जबकि यह बात जग-जाहिर है कि जुलाई के महीने में उत्तर भारत के खेतों में विशेषकर दिल्ली के आस-पास कोई फसल काटने लायक नहीं होती और तब जबकि यह जमीन पिछले अढ़ाई वर्ष से बिना बोई खाली पड़ी थी। इस मामले में 27 किसानों पर आजकल मुकद्दमे चल रहे हैं और वे बिना मतलब की पेशियां भुगत रहे हैं।

इस जमीन (चरागाह) की मालगुजारी अब भी गांव देता है। कंझावला गांव के माल के कागजात में नक्शा नम्बर एक और दो के लिहाज से आज भी ग्राम सभा इस जमीन की मालिक है। खाली पड़ी 1976-77 में इस जमोन की गिरदावरी ग्राम सभा के नाम होती रही है जो रिकार्ड में दर्ज है। जिस जमीन पर आपात् काल के दौरान "इन्दिरा सरकार" कब्जा न कर सकी, उसी जमीन पर "मोरार जी सरकार" ने दो हाईकोर्टों के निर्णय के विरुद्ध सरकारी कब्जा करवा दिया और इस झगड़े ने ऐसा रूप ले लिया है कि इसके दूरगामी परिणाम होंगे और इसके सहारे दिल्ली के चारों ओर के किसान संगठित हो रहे हैं तथा यह सत्याग्रह धोरे-धीरे वर्ग-संघर्ष का रूप धारण कर गया है।

जब 7 जुलाई को दिल्ली प्रशासन ने इस भूमि पर कब्जा कर लिया तब कंझावला के किसानों ने जनता सरकार के मन्त्रियों के पास भाग-दौड़ शुरू की। जब उनकी कहीं भी सुनवाई नहीं हुई तब वे हजारों की संख्या में इकट्ठा हो 13 अगस्त सन् 1978 को प्रधान मन्त्री मोरार जी की कोठी पर सफदरजंग रोड़, नई दिल्ली पहुँचे। किसानों का डेपुटेशन प्रधान मन्त्री से मिला। मोरार जी का किसानों को उत्तर था कि "हमने जिस जमीन पर कब्जा करना था कर लिया, अब तुम्हारी बात नहीं सुनेंगे" इस पर बोखलाये हुए किसानों ने बाहर आकर अपने साथियों को कह दिया कि प्रधान मन्त्री हमारी किसी बात को सुनने के लिए तैयार नहीं हैं। इस पर बाहर खड़े सर्वखाप के लोग भड़क उठे और मोरार जी के विरुद्ध भयानक नारेबाजी शुरु हो गई तथा किसानों ने पुलिस का घेरा तोड़ कर मोरार जी की कोठी में घुसना चाहा।

इस पर सी० आर० पी० के सिपाहियों ने किसानों पर लाठी चार्ज किया और अश्रुगैस के गोलों की वर्षा की। इस पर महिलाओं की गोद में बच्चे बिलख उठे। सैंकड़ों वृद्ध किसान सड़कों पर लुढ़कते नजर आए। अनेक किसान पुलिस के घोड़ों की टाप और लाठियों से घायल हुए। उस दिन पुलिस लाठी चार्ज से 807 पुरुष, 106 महिलायें तथा 29 बच्चे बुरी तरह घायल हुए। पुलिस ने 1165 किसानों को गिरफतार करके जेल भेज दिया।

15 अगस्त 1978 को लालकिले की ऐतिहासिक प्राचीर से प्रधान मन्त्री ने कंझावले के किसान आन्दोलन का अपने भाषण में बड़ी तलखी के साथ जिक्र किया। बस यहीं से कंझावला के किसान-आन्दोलन की नींव पड़ गई।

2 अक्टूबर को महात्मा गांधी के जन्म दिन पर भी जब किसान राजघाट पर भूख हड़ताल के लिए गए, तब पुलिस ने कई हजार किसानों को गिरफ्तार किया और उन्हें महात्मा गांधी की समाधि के नजदीक नहीं फटकने दिया। पुलिस अत्याचारों से एक किसान सत्याग्रही की मृत्यु हुई। इस प्रकार इस सत्याग्रह ने "अखिल भारतीय किसान सत्याग्रह" का रूप ले लिया है तथा यह सत्याग्रह इसी प्रकार चलता रहा तो यह धीरे-धीरे जिन किसानों के वोट के सहारे 'जनता पार्टी' सत्ता में आई उसकी जड़ों को खोखली कर देगा। इस सत्याग्रह में अब तक 80 हजार किसान अपनी गिरफ्तारियां दे चुके हैं जिनमें 70 हजार पुरुष तथा 10525 स्त्रियां हैं। गिरफ्तारी देने वालों में बड़ी संख्या हरियाणा, दिल्ली, उत्तर-प्रदेश, पंजाब और राजस्थान के किसानों की है। गुजरात, बिहार, बंगाल, हिमाचल और जम्मू कश्मीर तक के कुछ किसान भी यहां अपनी गिरफ्तारियाँ दे चुके हैं।

नेता विहीन सत्याग्रह—

इस सत्याग्रह की सब से बड़ी खूबी यह है कि इसका कोई भी नेता नहीं है। यह सत्याग्रह विशुद्ध रूप से पंचायत द्वारा चलाया गया है। इस सत्याग्रह की संचालक 'सर्वखाप पंचायत' है जिसका कोई नेता नहीं होता। सब निर्णय चौपाल में बैठ कर आम सहमति से किये जाते हैं। चौपाल में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी राय देने और बात कहने का हक होता है। वहां कोई बड़ा छोटा नहीं। सब बराबर होते हैं। इस लिए कंझावले का सत्याग्रह फैलता जा रहा है। सत्याग्रहियों को लेने बुलाने कोई नहीं जाता। प्रत्येक गांव में लोग चौपाल में इकट्ठे होते हैं और पैसा इकट्ठा करते हैं जिससे सत्याग्रहियों के रास्ते का खर्चा चले और सत्याग्रहियों को कंझावला या दिल्ली भेज दें।

जो लोग इस सत्याग्रह के साथ चौ० चरणसिंह या श्री राजनारायण का नाम जोड़ते हैं वे किसानों के साथ अन्याय करते हैं; क्योंकि उपरोक्त दोनों नेताओं का इस 'किसान सत्याग्रह' से दूर का भी वास्ता नहीं। इसका स्पष्ट कारण है किसान अपने सत्याग्रह में राजनीति की पुट नहीं आने देना चाहते। जब मैं 12 अप्रैल की शाम को कंझावला पहुँचा तो हजारों लोग अगले दिन 13 तारीख की गिरफ्तारी के लिए तैयारियां कर रहे थे, जिन में कुछ पञ्जाब के सिक्ख थे। कुछ हरियाणा के दूर-दराज के देहात से आए हुए ब्राह्मण, रोड़, अहीर, जाट आदि किसान जातियों के सत्याग्रही थे। उत्तर प्रदेश से भी कुछ लोग आये हुए थे। जब उनसे पूछा कि आप लोग (सत्याग्रह के व्यवस्थापक) चौ० चरण सिंह से मिले ? तब इन लोगों का उत्तर था कि न हम चौ०

चरण सिंह से मिले, न मिलने की इच्छा है। हमारा सत्याग्रह जनता-जनार्दन का सत्याग्रह है किसी व्यक्ति विशेष का नहीं। चौ० चरणसिंह कंझावले के साथ अपना नाम जोड़े जाने से डरते हैं, तब हम उनके पास क्यों जायें। भारत की केन्द्रीय सरकार हमारे सत्याग्रह को जाटों का सत्याग्रह कहती है, क्योंकि इससे उसका स्वार्थ सिद्ध होता है।

दिल्ली अन्तर्राष्ट्रीय शहर है। यहां से देश के हिन्दी, अंग्रेजी में कई बड़े समाचार-पत्र निकलते हैं। नित्यप्रति कंझावला में किसान गिरफ्तारियां देते हैं। प्रधान मन्त्री मोरार जी के भय से कोई समाचार-पत्र हमारी गिरफ्तारियों के समाचार प्रकाशित नहीं करता। उन्होंने मुझे कहा कि आप स्वयं देखें यहां दो जगह पुलिस छावनी पड़ी हुई है, जिनमें कई सौ सिपाही दिन-रात हमारा पहरा देते हैं। क्या हम चोर, उचक्के और डाकू हैं।

मुझे उपरोक्त सब जानकारी देने वालों में उस समय वहां उपस्थित व्यक्ति थे—अखिल भारतीय किसान संघर्ष सिमिति के उप-प्रधान बाबू रामगोपाल चार मन्त्रियों में से एक कर्नल भरतसिंह, कार्यालय मन्त्री राजसिंह उर्फ लीलू राम, देवी सिंह नम्बरदार, मास्टर दीप चन्द और रणजीत सिंह नम्बरदार। श्री प्रताप सिंह रात को देर से आने वाले सत्याग्रहियों के लिए सोने, खाने की व्यवस्था कर रहे थे। कुछ नवयुवक सत्याग्रहियों को चाय पिला रहे थे। वातावरण में काफी गर्मी थी। चारों ओर चहल-पहल थी। सारा वातावरण उल्लासमय और जोश से भरा हुआ था; कंझावले के सत्याग्रह की आड़ में उत्तर भारत के किसानों ने इस लड़ाई को विशुद्ध रूप में आर्थिक युद्ध का रूप दे दिया है और वे अपनी पैदावार के उचित मूल्य की प्राप्ति के अपने सत्याग्रह को आगे बढ़ा रहे हैं। वहीं पर मुझे बताया गया कि श्री रतनसिंह शांडिल्य जो उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के निवासी हैं और दिल्ली के किसी हिन्दी दैनिक पत्र में काम करते हैं, उनका ईख चार रुपये क्विंटल में बिका। वे अपने समाचार-पत्र में इस समाचार को प्रकाशित नहीं करवा सके; क्योंकि पत्र के स्वामियों ने उनसे कहा कि भारत सरकार ऐसा नहीं चाहती।

अखिल भारतीय किसान संघर्ष समिति ने भारत के राष्ट्रपति श्री नीलम संजीवा रेड्डी को जो मांग-पत्र दिया था वह निम्न प्रकार है (और इसी मांग-पत्र को लेकर यह सत्याग्रह विस्तार प्राप्त कर रहा है:—

भारत के प्रत्येक गांव में चराहगाह रखी जायें। स्वतन्त्रता के पश्चात् गांव में गोचर भूमि नष्ट की जा रही है। पशु धन का ह्रास हो रहा है। बिना दूध देश का युवक शक्तिशाली नहीं बन रहा। अतः चरागाहें रखना अनिवार्य है।

यदि भारत सरकार चाहती है कि देश से जातिवाद समाप्त हो जाय, तो उसे

सर्वप्रथम जातीय ग्राधार पर दी जाने वाली सरकारी सुविधाओं को बदलकर गरीबी के ग्राधार पर करना चाहिए। नौकरियों में जाने के बाद उन्नति उस व्यक्ति को देनी चाहिए जो वरिष्ठ है या जिसने अपनी योग्यता को बढ़ा लिया है। देश में प्रत्येक व्यक्ति को जीने का अधिकार मिलना चाहिए। सम्पन्न व्यक्ति जाति के ग्राधार पर सुविधायें प्राप्त करें और भूखा, नंगा व्यक्ति जातीय ग्राधार पर सुविधायें प्राप्त न कर सके, यह न्यायोचित नहीं है।

दुनियां में सम्भवतः ऐसा कोई उत्पादक नहीं होगा, जो अपने उत्पादित माल को घाटे में बेचता हो, परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि भारत का किसान अपनी उत्पादित जिन्स को घाटे में बेचता है, फिर किसान का विकास कैसे होगा ? प्रत्येक उत्पादक अपनी लागत निकाल कर स्वयं अपना लाभ जोड़ कर अपने माल का भाव निश्चित करता है। अतः किसान भी जो जिन्स पैदा करता है, उसका भाव लागत निकाल कर, लाभ जोड़ कर तय किया जाना चाहिए। हमारी यह मांग न्याय संगत है।

आपात काल में सरकार द्वारा की गई सभी ज्यादतियों को वापिस लेने का सरकार ने दावा किया था और ज्यादतियां वापिस भी ली गईं, परन्तु किसानों की दर खरीद 1975 में दस गुणी तक बढ़ा दी गई। हमारी मांग है कि ग्राबियाना की दर खरीद 1975 से पूर्व के अनुसार की जाए।

कृषि उपयोगी वस्तुओं की महगाई घटाई जाए। पांच वर्ष पूर्व कृषि उपयोगी वस्तुओं का जो मूल्य था, आज उन वस्तुओं का मूल्य पांच गुणा तक बढ़ा दिया गया है। इस महंगाई को नियन्त्रत किया जाए।

भूमि सुधार अधिनियमों को लागू किया जाए और जो कृषि फालतू है उसका वितरण उन किसानों में किया जाए जिनके पास अलाभकारी जोत है।

भूमिहीनों तथा गरीबों को कृषि भूमि न देकर आवासीय भूमि दी जाए और उन्हें लघु-उद्योग दिए जायें। उद्योग का प्रशिक्षण दिया जाए, मशीन ग्रादि खरीदने के लिए उन्हें रुपया दिया जाए और उत्पादित माल की बिक्री के लिए मण्डी का प्रबन्ध किया जाए, तथा बड़े उद्योगों पर सीमा लगाई जाए, जिससे लघु उद्योग पनप सकें और बड़े उद्योगों का एकाधिकार समाप्त हो।

उपजाऊ भूमि का अधिग्रहण न किया जाए, इस अधिग्रण से एक ओर किसान उजड़ता है तो दूसरी ओर देश की पैदावार घटती है।

श्री रामधन ग्रादि ने इस ग्रान्दोलन को जाट ग्रौर चमार का रूप देने का प्रयत्न किया, पर इसमें उन्हें सफलता नहीं मिली; क्योंकि सत्याग्रह के संचालकों ने "सर्वखाप पंचायत" के नेतृत्व में प्रायः सभी जातियों के किसानों को इस सत्याग्रह में स्वेच्छा से जेल जाने के लिए तैय्यार किया है। राष्ट्रपति को जो मांग-पत्र दिया गया है वह सारे राष्ट्र के किसानों की उचित मांगों को प्रकट करता है, किसी जाति विशेष की मांग को नहीं। इस सत्याग्रह के कारण भारत का किसान ग्रपने ग्रधिकारों की प्राप्ति के लिए संगठित हुग्रा है, परन्तु दिल्ली के जनसंघ प्रशासन ने तथा भारत के प्रधान मन्त्री श्री मोरार जी देसाई ने किसानों के विरुद्ध जो रुख लिया है उसके कालान्तर में दूरगामी परिणाम ग्रवश्य निकलेंगे। संघर्ष जीवन की निशानी है ग्रौर कंझावले का सत्याग्रह किसान वर्ग में जो बेदारी पैदा कर रहा है उसे सत्ताधीश देर तक नजरन्दाज नहीं कर सकेंगे। देश का भबिष्य किसानों के भविष्य पर निर्भर है। जिन किसानों ने करोड़ों मन ग्रन्न पैदा करके देश का पेट भरा ग्रौर ग्ररबों रुपया (जो बाहर से ग्रन्न मंगाने पर व्यय होता था) बचाया है, उसे कोई कृतघ्न ही भुला सकता है। कृतज्ञ राष्ट्र यदि ग्रपने ग्रन्न-दाताग्रों का सत्कार नहीं करता तो राष्ट्र का भविष्य धूमिल होते देर नहीं लगेगी। क्या देश की 60 करोड़ जनता राष्ट्र की रीढ़ किसान को उसके परिश्रम का उचित देने से इन्कार कर सकती है, जबकि यह देश कृषि प्रधान है ग्रौर इसकी जन्ता ग्रस्सी प्रतिशत गांव में बसती है। देश के संसद सदस्य बहुत देर तक ग्रन्धे ग्रौर बहरे बन कर किसान का बिना कुछ भला किए उसका वोट भविष्य में प्राप्त करने में ग्रसफल रहेंगे। यही कंझावले के ऐतिहासिक सत्याग्रह का वह स्वरूप है जो भले ही समाचार पत्रों के द्वारा प्रचार न पा सका हो, परन्तु किसान वर्ग की रग-रग में इसका सन्देश समाया हुग्रा है।

किसानों के नेता

(चौ० चरण सिह)

—महेन्द्र सिंह उत्साही
रा०उ०वि० बराह खुर्द (जीन्द)

★

(१)

जन्मे थे जिस दिन चरणसिंह
सूरज ने गस खाई थी ।
चन्द्र का आदेश सुन,
किरणें बुलाने आई थीं ।

(२)

प्रसाद बांटा सितारों ने,
ध्रुव ने गान सुनाया था ।
अभिषेक किया था मेघों ने,
द्युति ने छन्द सुनाया था ।

(३)

इन्द्र - धनुष ने सतरंग लेकर,
शृंगार किया था अम्बर पर ।
देख चरण सिंह की सूरत,
आया था भाग्य अवसर पर ।

(४)

आज भी इस उर में देखो,
नि:स्वार्थ की तड़प भरी ।
पतझर के प्रांगण में भी,
रही मानस की कलि हरी ।

(५)

किसान, मजदूर भाइयों का,
जिसने पूरा साथ निभाया ।
होगी मेहनत की ही पूजा,
यह मन्त्र जिसने गाया ।

(६)

अपनी सौम्य गन्ध से जिसने,
कांटों को फूल बनाया ।
अपने परार्थ ओज से जिसने,
जुगनू को चांद बनाया ।

(७)

फल की न कभी इच्छा की,
उपकार में ध्यान लगाया ।
सेवा में ही मेवा होती,
इस नारे से हिन्द जगाया ।

(८)

हे परमार्थी मेरी तरफ से,
तुझे लाखों वार नमन है ।
आपकी इस अद्वितीय सेवा से,
हुआ आज यह चयन है ।

हिन्दी का मसीहा : आचार्य द्विवेदी

वाचस्पति 'कुलवन्त'
M.A., M Phil.
कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी

हिन्दी साहित्य के मनीषी विद्वान आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इस दुनिया में नहीं रहे. सुनकर यह बहुत अटपटा लगा। द्विवेदी जी का कृतित्व और व्यक्तित्व ही कुछ ऐसा था, जो रह रहकर बिजली की तरह कौंध उठता है। द्विवेदी जी मस्तमौला, फक्कड़ एवं हंसी के अवतार थे। साहित्य के मर्मज्ञ पण्डित द्विवेदी जी का जन्म 19 अगस्त 1907 को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के 'आरत छपरा' नामक ग्राम में हुआ। इनके कुल की बहुत प्रतिष्ठा थी। इनके दादा आरत दूबे ज्योतिष के महान् पण्डित यशस्वी व्यक्ति थे। इसलिए गांव का नाम भी 'आरत दूबे का छपरा' पड़ गया। आचार्य द्विवेदी जी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से ज्योतिष आचार्य एवं शास्त्राचार्य की उपाधि प्राप्त की और शान्ति निकेतन में अध्यापक हो गए। यहीं पर उन्होंने बंगला भाषा और साहित्य का गहन अध्ययन किया। लगभग बीस वर्षों तक शान्ति निकेतन में रहने के बाद आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद पर नियुक्त हुए। आपने सात वर्ष तक चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय में रहकर पुनः काशी विश्वविद्यालय के डायरेक्टर के पद को सुशोभित किया। जो भी द्विवेदी जी से मिला उसने उन्हें हिमालय की तरह धवल अट्ठाहास करते हुए पाया।

हिन्दी साहित्य में कबीर के माध्यम से प्रवेश करके आप शीघ्र एक महान् इतिहासकार, उपन्यासकार, निबन्धकार और समीक्षक के रूप में प्रसिद्ध हो गए। आप मूलतः संस्कृत के पण्डित थे। व्यवहार ऐसा था कि पहली ही भेंट में व्यक्ति यह सोचता जैसा पण्डित जी का और मेरा युगों - युगों का साथ है। डा० विद्यानिवास मिश्र लिखते हैं कि उनका भाषण सुनते समय लगता था कि पण्डित जी ऊंचे और ऊंचे शिखर हैं। 15 मिनट गरमाने में लगते, व्योम-केश शास्त्री के केश व्योम में लहरा उठते। बाहें ऊध्वर्ग शिखा बन जातीं। उनका व्याख्यान सुनना एक हिमधौत शिखर के प्रथम साक्षात् का अनुभव होता था।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के संसर्ग में आकर आचार्य जी ने बंगला साहित्य की भी सेवा की। उन्होंने शान्ति निकेतन में दो पत्रिकाओं का सम्पादन किया। इसके साथ-

साथ आचार्य जी ने हिन्दी को अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में प्रचारित और प्रसारित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। द्विवेदी विशुद्ध मानव थे, जाति-पाति, ऊंच, नीच का भेदभाव उन्हें स्वीकार न था। उनके प्रसिद्ध शब्द हैं "इस देश में हिन्दू हैं, मुसलमान हैं, ब्राह्मण हैं, धनी हैं, गरीब हैं—विरोधी, स्वार्थी और विरुद्ध संस्कारों की विराट् वाहिनी है। इसमें पद-पद पर गलत समझे जाने का अन्देशा है ···· मनुष्य की भलाई के लिए आप अपने आप को निःशेष भाव से देखकर ही सार्थक हो सकते हैं" इस प्रकार हम देखते हैं कि आचार्य जी सच्चे अर्थों में मानव थे और वे भारतीय मनीषा के सच्चे प्रतीक थे। भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया। भारतीय संस्कृति के महान् चिन्तक द्विवेदी जी ने राज भाषा आयोग, राष्ट्रीय प्रसारण समिति, राष्ट्रीय शिक्षा परिषद्, साहित्य अकादमी आदि में कार्य करते हुये, हिन्दी साहित्य को विश्वव्यापी यश दिलाया। आपने 1947 में मंगलाप्रसाद पुरस्कार, टैगोर पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त किए। साहित्य वाचस्पति और डी. लिट् की उपाधि भी प्राप्त की। 'बाणभट्ट की आत्मकथा' उनका पहला उपन्यास था। पढ़ने पर ऐसा लगता है जैसे कादम्बरी की समासयुक्त पदावली हिन्दी में बड़ी सहजता के साथ अवतरित हो गई है।

द्विवेदी जी ने हिन्दी साहित्योतिहास, उपन्यास, निबन्ध एवं समालोचना में अपनी चलाई। 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' और 'हिन्दी-साहित्य' इनके प्रसिद्ध इतिहास ग्रन्थ हैं। 'अशोक के फूल' इनका सुन्दर सा निबन्ध है। 'अनाम दास का पोथा' और 'बाणभट्ट की आत्मकथा' प्रसिद्ध उपन्यास हैं। हिन्दी की मध्यकालीन पृष्ठभूमि को स्पष्ट करने में आचार्य जी का अप्रतिभ योगदान है।

आचार्य जी का सम्बन्ध क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। कहीं का बढ़ई, किसी प्रान्तीय भाषा का कवि, गरीब व्यक्ति या अमीर व्यक्ति, राजनीतिज्ञ या पण्डित, ब्राह्मण या हरिजन सभी से आचार्य जी की दोस्ती थी। वे सच्चे अर्थों में संस्कृति के प्रतीक थे।

आज द्विवेदी जी हमारे मध्य नहीं हैं लेकिन उनका यशःकाय शरीर अब भी जीवित है, जीवित था और जीवित रहेगा। हिन्दी के इस महान् रक्षक की साहित्य सेवा को साहित्य जगत् कभी न भुला सकेगा। सचमुच वह हिन्दी का मसीहा था।

गुरु हनुमान से मुलाकात

—महावीर 'अधिकारी'

मैं 27 मई 1979 की मध्याह्न में बिड़ला व्यायाम शाला देहली पहुँचा। मैंने प्रवेश करते ही देखा कि गुरु हनुमान जी अपने कमरे में बैठे हुए थे, मेरे को देखते ही कहा कि इस समय सब पहलवान सोये हुए हैं, यदि आप किसी से मिलना चाहें तो सायंकाल के समय आयें। मैंने कहा गुरु जी! मैं तो आपसे ही मिलना चाहता हूँ। यहां की कुछ जानकारी भी प्राप्त करना चाहता हूँ और आपका भी परिचय लेना चाहूँगा। गुरु जी ने बैठाया और वार्ता प्रारम्भ हो गई।

गुरु जी ने बताया कि मेरा बचपन का नाम विजय था। माता पिता बचपन में ही स्वर्ग सिधार चुके थे। हनुमान नाम तो लोगों ने प्रेमवश बाद में कहना प्रारम्भ कर दिया। मैं जो कुछ बन सका हूँ वह सब आर्य समाज की देन है। दिल्ली के नये बाजार में मैं स्वामी श्रद्धानन्द जी के पास उपदेश तथा शिक्षा प्राप्ति के लिए आता जाता रहता था। मैंने बचपन से हो (9 वर्ष की अवस्था से) कुश्ती सीखना प्रारम्भ कर दिया था। भगवान सिंह तथा खलीफाओं से भी मैंने कुश्ती प्रशिक्षण तथा काफी प्रेरणा ली है।

बात सन् 1933 की है, गुरु जी प्रात: सैर को जा रहे थे, ये नहा धो कर सन्ध्या करने बैठे ही थे कि इन्होंने किसी अबला की चीख पुकार सुनी। ये तुरन्त दौड़ कर उस स्थान पर पहुँचे और देखा कि एक तांगे वाला एक स्त्री के साथ छीना-झपटी कर रहा था। उस समय उन्होंने वही परिचय दिया जो कि ऐसे समय पर क्षत्रिय लोग दिया करते हैं। वहां पहुँच कर तांगे वाले को मार-मार कर बेहोश बना दिया और तांगे में ही डाल कर तीन-चार चाबुक घोड़े को जड़ दिये। घोड़ा तांगे समेत बन की खामोशी में लीन हो गया। संयोगवश बिड़ला जी इस घटना को देख रहे थे, उन्होंने इस विजय नामक युवक को बुलाया तथा तुरन्त ही अपनी व्यायामशाला का कार्य भार इन्हें सौंप दिया।

मैंने पूछा कि गुरु जी! आपके यहां की दिन चर्या तथा नियम किस प्रकार के हैं? तो गुरु जी ने कहा—हमारा यह एक छोटा सा गुरुकुल ही है। गुरुकुलों में जो दिनचर्या और नियम हैं वही हमारे यहां पर हैं। बाद में मेरे को ब्रह्मचारी दिलबाग तथा रोहतास आदि से पूछने पर मालूम हुआ कि गुरु जी भी 4 बजे ही अपने पहलवानों को उठा देते हैं। उनकी आज्ञा के बगैर कोई बाहर नहीं जा सकता, कोई फिल्म नहीं देख सकता। अनुशासन कायम करने के लिए गुरु जी की कठोर जबान तथा डंडा तैयार रहता है। इसी अनुशासन तथा पद्धति द्वारा गुरु जी अपने शिष्यों को महान बना सके हैं।

इनके मुकाबले मैंने मास्टर चन्दगी राम तथा परशराम अखाड़ा देखा तो वहां पर पहलवानों की देखरेख करने वाला कोई नहीं था न उत्तम प्रबन्ध था।

गुरु हनुमान जी की प्रारम्भ से ही अच्छे कार्यों में हिस्सा लेने की रुचि रही है। 1931 - 32 में नेता जी द्वारा रोशनारा बाग में होने वाले उत्सवों में विशेष सहयोग दिया।

जमना जी में स्नान करने वाली हिन्दू स्त्रियों को गुण्डे तंग किया करते थे तो उस समय गुरु जी के वालटियर बाहर रह कर ड्यूटी देते थे। उनके भय से किसी की भी हिम्मत गलत हरकत करने की न होती थी। गुरु जी इस समय 78 वर्ष के हो चुके हैं। उन्होंने अपनी सारी आयु गरीबों की मदद और पहलवानों के निर्माण में लगाई है। उनके अनेकों शिष्य प्रसिद्ध पहलवान हो चुके हैं जो इस प्रकार हैं :—

श्री रामधन जी (कोच) कलहावड़, सूरजभान जी ग्राम सेरिया, सत्यवीर जी नाहरी, महावीर जी नाहरी, श्री सत्यपाल जी बुआणा (महाभारत केसरी), रूप चन्द जी बामला आदि। श्री रामधन जी और सत्यपाल जी को आज सारा हिन्दुस्तान जानता है।

23 मई से जबलपुर में जो राष्ट्रीय दंगल हुआ था उसमें भी पहलवान अनूप रोहणा, महासिंह जुलाणा, सुखबीर चमारियां, सत्यप्रकाश जगरतपुर, जय किशन मन्डोरी, महावीर नाहरी प्रथम रहे, और स्वर्णपदक प्राप्त किए। ये सब गुरु हनुमान जी के आशीर्वाद और श्री रामधन जी के कठोर परिश्रम का फल है।

गुरु हनुमान जी का कहना है कि बुराइयों से दूर रह कर विद्यार्थी यदि कठोर परिश्रम करें और ब्रह्मचर्य की रक्षा करते रहें तो उनके सामने कोई टिक नहीं सकता। बच्चों को प्रात: 4 बजे अवश्य उठना चाहिए। चरित्र ऊंचा बनाना चाहिए, दोनों समय व्यायाम अवश्य करना चाहिए।

अन्त में गुरु जी द्वारा प्रदत्त एक कटोरा दूध पीकर तथा बड़ी खुशी और प्रेरणाओं से परिपूर्ण होकर मैं आगे के कार्यक्रम पर चल पड़ा। आज भी उस अखाड़े का दृश्य तथा पहलवानों की याद आती है तो दिल उत्साह से भर जाता है।

अन्त में हम केन्द्रीय सरकार तथा हरियाणा सरकार (वहां पर 99% पहलवान हरियाणा से हैं) प्रार्थना करते हैं कि देश के नवयुवकों को रास्ता दिखाने के लिए दुनिया में भारत का नाम रोशन करने के लिए गामा और राममूर्ति जैसे विश्वप्रसिद्ध पहलवान तैयार करने के लिए इन अखाड़ों को ज्यादा से ज्यादा सहायता दें। कम से कम हरियाणा सरकार को तो अपने यहां सर्वोत्तम अखाड़े कायम करने चाहिएं। यदि इन पहलवानों को सभी सुविधायें सुलभ करवाई जायें तो फिर से संसार के अन्दर ये भारत का नाम उज्ज्वल कर सकते हैं।

बाल वर्ष :
सिक्के के दो पहलू

– रवीन्द्रसिंह मलिक
कनिष्ठ अभियन्ता, कुरुक्षेत्र

●

पण्डाल सजा है। अनगिनत गुब्बारे चारों ओर छाए हुए हैं। बच्चे हजारों की तादाद में इधर-उधर चहकते फिर रहे हैं। सुन्दर-सुन्दर पोशाकें, प्यारे-प्यारे चेहरे, हंसते हुए फूलों की तरह। कुछ बड़ी उम्र के लोग भी एकत्रित हैं। स्कूलों के बेन्ड बाजे और बच्चों की ड्रिल की तैयारियां। पूछता हूँ किसी से, "यह सब क्या है भैया ?" जवाब मिलता है, "मंत्री जी आने वाले हैं।"

"कोई उद्घाटन वगैरा है क्या ?"

"हां।"

"कैसा उद्घाटन है ?"

इस बार महाशय कुछ गर्म निगाहों से मेरी ओर देखते हैं, तो मैं आगे पूछना मुनासिब नहीं समझता। घड़ी की ओर देखता हूं। अरे ! दस बजने में पांच मिनट केवल। दफ्तर के समय की फिक्र से कुछ मायूस सा हो जाता हूँ। लेकिन फिर भी इस रंगीन मौसम और खूबसूरत तैयारी को पूरी तरह से देखने का लोभ मन पर विजय पा ही लेता है। मैं खड़ा रहता हूं, उन्हीं लोगों के बीच जो शायद मेरी ही तरह खड़े हों मंत्री की प्रतीक्षा में। आखिर मुझे अभी तक यह भी तो मालूम नहीं कि कैसा उद्घाटन है ? और उस पर यहां किसे फुर्सत है मुझे बत्ताने की। इतने में बच्चे बैंड पर मधुर धुन बजाते सुनाई देते हैं और साथ ही किसी की अस्पष्ट सी 'जय' के नारे भी सुन रहे हैं। यहां भीड़ इतनी है कि सब कुछ सुनकर ही सब्र करना पड़ रहा है। दिखाई नहीं दे सकता केवल मंच के सिवाय। लो अब मंच तक खद्दरधारी मन्त्री पहुँच ही गए। बिलकुल बगुले भक्त जैसे स्टेज के बीचों-बीच दोनों हाथ बांधे, बच्चों का अभिवादन स्वीकार करते हुए। मैं भी अपना रूमाल हिलाता हूं। शायद उन्हें नजर आ ही जाए।

फिर आरम्भ होती हैं बच्चों की विभिन्न प्रकार की शारीरिक ड्रिलें और गाना-बजाना। कितना मनमोहक है यह समां। लेकिन अचानक ही कोई महाशय खड़े होकर,

मंच पर कहते हैं, "अब मैं प्रार्थना करूंगा, आदरणीय मन्त्री महोदय से, कि बाल वर्ष के उपलक्ष में आयोजित इस समारोह में अपने शुभ वचनों का योगदान दें।"

अब समझा ! यह बाल वर्ष का उद्घाटन था। कितनी अच्छी है हमारी सरकार, सबका ख्याल रखती है। धीरे-धीरे इस बार बच्चों की भी बारी आई है। जो देश के कल के नेता और कर्णधार होंगे। इन विचारों की शृंखला तब टूटी जब तालियों की गड़गड़ाहट मेरे कानों के आर-पार जाने लगी। मैंने ध्यान से सुनना आरम्भ किया। मन्त्री जी कह रहे थे, "मैं इस नगर के बालकों के लिए एक बड़े पार्क व खेलने की सारी सुविधाओं की समुचित व्यवस्था के लिए 50000/- रुपये अनुदान की घोषणा करता हूं। इस समय जो स्कूल हैं वह इन बच्चों के लिए कम पड़ रहे हैं, इसलिए आवश्यकतानुसार दो प्राथमिक और एक माध्यमिक विद्यालय नये खोलने की घोषणा भी करता हूं। इन स्कूलों में बच्चों को राज्य की ओर से दोपहर का पौष्टिक भोजन और दूध की मुफ्त व्यवस्था होगी। बच्चों को तकलीफ ना हो इसलिये एक स्कूल बस चलाई जाएगी, जिसमें आसपास के उपनगरों के बच्चे स्कूल तक यात्रा कर सकें।" और सबका धन्यवाद करते हुए मन्त्री महोदय बैठ जाते हैं। एक संभ्रांत से नागरिक अपने इलाके के बच्चों के लिए कुछ और सुविधाओं का मांग पत्र उनके सामने पेश करते हैं।

मुझे यहां से साफ नजर आ रहा है कि मंत्री जी कुछ गम्भीर से होकर फिर मुस्कराते हुये सिर हिलाने लगते हैं। शायद बच्चों के लिए बाल वर्ष में सब कुछ करने की कसम खाकर आए हैं मन्त्री जी आज, जो सब कुछ स्वीकारते चले जा रहे हैं।

अब भीड़ कुछ घटने लगी है। मन्त्री जी चले गये हैं। लेकिन बच्चों की भीड़ ज्यों की त्यों है क्योंकि उनकी प्रतियोगिताएं होनी बाकी हैं। कुछ देर खड़ा देखता रहता हूं, फिर अनायास ही दफ्तर का ध्यान हो आता है और मैं घड़ी की ओर देखता हुआ दफ्तर की राह पर लम्बे-लम्बे डग भरने लगता हूँ। अभी डेढ़ घण्टा भर ही देर हुई है। शायद मेरे विशुद्ध भारतीय साहब भी ना आए हों दफ्तर अभी तक। और सौ प्रतिशत मुमकिन है, उनके रास्ते में भी ऐसे बाल मेले लगे होंगे और वह भी कहीं खड़े देख रहे होंगे। इन्हीं विचारों में खोया-खोया मैं न जाने कब दफ्तर पहुँच गया और मैंने देखा, मेरी सारी वैचारिक सम्भावनाएं मेरे साहब को अपनी कुर्सी पर बैठा देखकर चारों खाने चित्त पड़ी हैं। शायद वे आज भी प्रतिदिन की तरह केवल एक घंटा भर ही देर से आए होंगे। और बाल वर्ष तो उनके यहां हर रोज मनाया जाता है। ग्यारह बच्चों के पिता हैं वह उनकी मांगें आज से बीस साल पहले पूरी करने लगे थे और मन्त्री जी से अधिक उदारता के साथ आज तक करते आ रहे हैं। इसी लिए किसी बाल मेले में खड़े होना उनके लिए फिजूल की बात रही होगी।

मैं धीरे-धीरे उनके सामने से होता हुआ अपनी सीट की ओर निकलने ही वाला

था कि उनका चिरपरिचित रुखा स्वर मुझे उनकी ओर बढ़ने के लिए बाध्य करने लगा। मेरे मन में खुशी और गम का द्वन्द्व सा छिड़ रहा था। फिर मैं निर्भीक होकर आखिर खुल ही बैठा - साहब ! आज तो बाल वर्ष का आरम्भ है और इस वर्ष के पहले ही दिन आप इतने गुस्से में हैं। बच्चे तो मिठास का प्रतीक होते हैं। आपके बच्चों को तो मैं कई बार चहकते देख चुका हूँ। जब मुझे रास्ते में मिलते हैं तो प्यार से कहते हैं अंकल टॉफी दो। कितनी मीठी होती है टॉफी, मुझे बचपन से पसन्द है। आओ हम भी आज से प्रतीज्ञा करें कि बाल वर्ष में बच्चों की तरह मीठे बोल बोलेंगे।'

मैं नाटकीय मुद्रा में सब कुछ कह गया और फिर असर होता देखा मैंने। साहब नरमाए, मुस्काए, फिर बोले—यह तो मैं भूल ही गया था आज बाल वर्ष शुरु है। खैर बच्चे तो हर वर्ष पैदा भी होते रहते हैं और खुश भी रहते हैं। उन्हें कौनसा नौकरी का फिक्र होता है। या मेरी तरह दफ्तर की व्यवस्था के बोझ से दबे रहते हैं। वे सगर्व इधर-उधर देखते हुए बोलते रहे—मैंने तुम्हें इसलिए बुलाया था कि एक आवश्यक कार्य से तुम्हें यहां से 20 कीलो मीटर दूर एक गांव में भेजना चाहता था। सुबह से तीन बार पूछ चुका हूँ आखिर तुम आते हुए नज़र आ ही गए।

मैंने आज्ञाकारी सेवक की तरह कार्य को भली भांति समझा और अपने साथ एक सहायक लेकर चल पड़ा, लक्ष्य की ओर। कागजों का एक पूरा पुलिंदा मेरे सहायक के हाथ में था और बैग मेरे हाथ में। बस का सफर तय करके आखिर हम गांव तक पहुँच ही गए। लेकिन अभी अपने गन्तव्य तक पहुँचने के लिए गांव की गलियों से गुजरना और आगे खेतों को पार करते हुए लगभग दो किलो मीटर पैदल चलना था।

सर्दी के दिन थे। सुनहरी धूप निकली हुई थी। दोपहर का समय था। पूरी चुस्ती के साथ मैं आगे-आगे और सहायक पीछे-पीछे चल रहा था। सामने एक तालाब था। जो ज्योमितीय गणित के किसी वर्ग के अनुरूप न था। टेढ़ा-मेढ़ा, कटा-फटा किनारा। कहीं ऊंचा, कहीं नीचा मैदान। पीछे कुछ पक्के मकान, कुछ कच्चे और तालाब के किनारे से सटी हुई कुछ हल्की फुल्की झोंपड़ियां। तालाब, बल्कि इसे जोहड़ कहना अधिक उपयुक्त होगा, में कुछ पालतू पशु पानी भी पी रहे थे और जल-मल का निवारण भी कर रहे थे। कुछ बच्चे पशुओं के ऊपर बैठ कर और कुछ जोहड़ में पानी के अन्दर अटखेलियां करके अपना जी बहला रहे थे। पानी को मैंने नजदीक से देखा। कोई सभ्य कहलाने वाला प्राणी इसे छूना भी बीमारी को बुलावा देना समझेगा। लेकिन ये बच्चे तो इसमें खिलखिलाते हुए खेल रहे हैं जैसे गंगा के पानी में देवता स्नान कर रहे हों। उन्हें आभास नहीं है कि इस पानी से बीमारियां भी फैल सकती हैं। क्योंकि पूर्वजों का पीढ़ी दर पीढ़ी यही क्रीड़ा-स्थल रहा है, यही 'स्वीमिंग पूल' रहा है।

पगडन्डी जोहड़ का पूरा चक्कर लगाकर झोंपड़ियों के पास से गांव में प्रवेश करती है और इसका अनुसरण करते हुए मैं भी गांव में प्रविष्ट हो गया। गांव की गली

कच्ची थी। घरों का गन्दा पानी गली में सांप की तरह टेढ़ा और गहरा रास्ता बनाते हुए जोहड़ में निर्वाण प्राप्त कर रहा था। कुछ छोटे बच्चे जो शायद अभी जोहड़ में खेलने लायक नहीं हुए थे, पूर्णतया दिगम्बर, रूखे बाल, चेहरा मेरी ओर ऐसे देखता हुआ जैसे धरती वाले मंगल ग्रहवासियों को देख रहे हों। शरीर पर जहां तहां कीचड़ लिपटी हुई, दीन दुनिया से बेखबर उन्हीं नालियां में खेल रहे थे। साथ ही झोंपड़ी में बैठी उन्हीं में से एक की जननी, शायद उन सब की भी रही हो, खुश हो रही थी उनके करतब देख कर।

अचानक उनमें से किसी ने दांव बदला था और मेरे कीमती माने जाने वाले स्वच्छ कपड़ों पर नाली का कीचड़ यों आन बिराजा जैसे चरखा कातती हुई बुढ़िया चन्द्रमा पर बैठी नानी की कहानियों में सुनी थी। मैं गुस्से से भर उठा और शायद उस उद्दण्ड बालक को कान से पकड़ कर डांटता भी। लेकिन इतने में मुझे याद हो आया आज तो बाल वर्ष का पहला दिन है और अभी कुछ घण्टे पहले ही तो कसम खाई थी कि इस बाल वर्ष बच्चों को प्यार देंगे। बल्कि प्रतीक वश सिर के बाल भी नहीं कटवायेंगे वर्ना बाल वर्ष को अवहेलना हो जायेगी। मैं गुस्से को जहां का तहां पीकर, चेहरे पर बनावटी मुस्कुराहटें बिखेरता हुआ बच्चे की मां से, जो तब तक उसे सम्भालने पहुँच चुकी थी बोला—कोई बात नहीं बच्चे ने अनजाने में ऐसा किया है।

मेरे मन का सारा उत्साह जो सवेरे के बाल मेले को देख कर चौगुना हो रहा था अब बिल्कुल समाप्त प्रायः हो चुका था। मैंने विचारा आज का ही दिन कितनी धूम-धाम से साफ-सुथरे, सुन्दर बच्चों में मनाया जा रहा था। उनकी हर इच्छा पूरी करने की कसमें खाई जा रहीं थीं। उन्हें परमात्मा के बाद दूसरा विशिष्ट स्थान दिया जा रहा था। उनकी सेहत पढ़ाई-लिखाई, वर्तमान-भविष्य आदि पर चिन्ता व्यक्त की जा रही थी और यहां।

इसके बिल्कुल विपरीत, किसी को परवाह नहीं है इनकी। पढ़ाई-लिखाई तो दूर सफाई-सुथराई का भी ध्यान नहीं है। जैसे ब्रह्मा ने इन्हें धरती पर उतार दिया उसी रूप में ये पनप रहे हैं।

मैं सह न सका। आखिर मैं भी गांव का जन्मा था। अपना राजकीय कार्य बीच में ही छोड़ कर गांव के कुछ लोगों से मिला। बच्चों के बारे में कुछ बातें कीं। लेकिन वे बाल वर्ष के नाम से पूर्णतया अनभिज्ञ थे। उन्होंने तो सदियों से इसी रिवाज को निभाया था कि बच्चे भगवान की देन हैं और वही इनका पालन करता है। उनके भविषय के बारे में क्या चिन्ता थी उन्हें ? जिसने पैदा किया है वही दो जून की रोटी का जुगाड़ भी करेगा।

पढ़ -लिख कर क्या बनेंगे बाबू जी ? कोई अफसर तो बनने से रहा। अफसर तो शहरों में पैदा होते हैं, यहां नहीं।

मैं अन्दाजा लगा रहा था, कितनी सच्चाई है इन शब्दों में।

फिर अगर इनको स्कूल भेज दें तो घर के छोटे-मोटे काम-काज कौन करेगा ?

पशुओं को पानी कौन पिला कर लाएगा ?

खेत पर मजदूरी में कौन हाथ बंटायेगा ?

ये छोटे बच्चे बेशक हैं लेकिन हमारे काम में खूब हाथ बंटाते हैं। अगर इन्हें पढ़ने के चक्कर में डाल दिया जाये तो फिर हम क्या कमायेंगे ? क्या खायेंगे ?

रही सफाई-सुथराई की बात सो हमारा काम ही ऐसा है इसमें साफ रहा नहीं जा सकता। जब रहते गांव में हैं, गलियों में हैं तो खेलने के लिए पार्कों में कहां से जायेंगे ? ऐसे ही जवान हो जायेंगे और हमारे धन्धे को आगे बढ़ायेंगे।

मैं सोचता रह जाता हूँ, यह समारोहों का ढ़ोंग, झूठे नारे, दिखावा ही दिखावा, आखिर हमारा समाज कब तक ओढ़े रहेगा यह ऊपर से चमकीला मगर अन्दर से गन्दा लिबास ?

हमारी वही सरकार जो कुछ घन्टे पहले बड़ी भली प्रतीत हो रही थी, दौहरे मुखौटे में छुपी नज़र आने लगी। बांग देकर यह ढिंढोरा पीटा जा रहा था कि बच्चे गांव के हों या शहर के, बाल वर्ष सब के लिए समान महत्व का है। लेकिन यहां तक उस बांग की भनक तक नहीं पहुँच सकी। यह बाल वर्ष वहीं तक सीमित रहता नज़र आता है जहां तक पंडाल में लगे लाउडस्पीकरों की गूंज जाती है।

बगुले भक्त वे मन्त्री अब नजर आने लगे मानों ताक में हों कि चुनाव के समय किस मछली को फांसा जाए और फिर एक टांग पर चन्द वर्षों के लिए तपस्या का ढोंग।

जिनके मतों से निर्वाचित हुए, उन्हीं का शोषण ?

आखिर कब तक ?

इस वर्ष लाखों, करोड़ों रुपये समारोहों, सेमिनारों और देश विदेश में आवागमन पर खर्च किया जाएगा। अभिनन्दन सभारोहों, उदघाटनों आदि पर लाखों रुपये बर्बाद किए जायेंगे।

लेकिन इस सब से इन ग्रामीण गरीब बच्चों को क्या लाभ ?

स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज

★

श्री स्वामी जी का जन्म सम्वत् वि० 1925 (ई० सन् 1868) में बिहार प्रान्त के जिला शाहाबद के अन्तर्गत डुमरां नामक ग्राम में श्री राम गुलाम लाल के घर हुआ। स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज पुराने सभा आर्योपदेशक थे। महर्षि दयानन्द के कार्य को हमेशा पूर्ण करने के लिए आपने सतत् प्रयत्न किया।

1925 में उन्होंने मथुरा शताब्दी पर श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी से सन्यास ग्रहण किया। वे निर्भीक, दयालु, अतिथि परायण, करुणा व प्रेम की साक्षात् मूर्ति, पक्षपात शून्य एवं सरल स्वभाव के व्यक्ति थे।

1913 के पश्चात् स्वामी जी का सारा जीवन आर्यसमाज की सेवा में ही बीता। विशेषतः हरियाणा को उन्होंने अपना अपना कार्यक्षेत्र बनाया। श्री स्वामी जी श्री पं० बस्तीराम जी, भक्त फूल सिंह जी महाराज आदि कुछ उत्साही आर्य सज्जनों ने सनातनियों के गढ़ में आर्य समाज का झण्डा गाड़ दिया। सहस्रों मुसलमान-व्यक्तियों की शुद्धि की गई, हजारों को यज्ञोपवीत धारण करवाया गया तथा जगह-जगह पर गुरुकुलों का निर्माण किया गया। उदाहरण के तौर पर गुरुकुल मटिण्डु तथा गुरुकुल भैंसवाल का नाम लिया जा सकता है।

हरियाणा राज्य के अतिरिक्त भारत में भी अन्यत्र स्थान-स्थान पर श्री स्वामी जी ने आर्यसमाज का बहुत प्रचार किया। देहली, गुजरात और बिहार में उनके भक्तों का एक बहुत बड़ा समूह था। विदेशों में भी आर्य धर्म के प्रचार के लिए उन्होंने बहुत कुछ किया।

आर्यसमाज के कार्य में संलग्न रहते हुए भी श्री स्वामी जी महाराज ने संस्कृत भाषा के अध्ययन-अध्यापन के लिए भी अथक परिश्रम किया। प्रायः उन्हें सभी ग्रन्थों के अध्ययन का शौक था। आयुर्वेद चिकित्सा पर वे अत्यन्त श्रद्धावान् थे।

श्री स्वामी जी को श्रद्धेय अमर हुतात्मा भक्त फूलसिंह जी महाराज अपना धर्म गुरु मानते थे। स्वामी जी सन् 1930 में गुरुकुल भैंसवाल की पवित्र भूमि में आये तथा सन् 1935 तक निरन्तर गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता पद एवं आचार्य पद को सुशोभित करते हुए गुरुकुल की यथाशक्ति सेवा की। प्रारम्भ में भक्त जी का विचार उपदेशक विद्यालय खोलने का था किन्तु गुरु की प्रेरणा से भक्त जी ने गुरुकुल की स्थापना की। भक्त जी को कन्या गुरुकुल स्थापित करने की प्रेरणा भी श्री स्वामी जी महाराज ने ही दी थी। गुरुकुल स्थापित हो जाने पर स्वामी ब्रह्मानन्द जी गुरुकुल भैंसवाल से आकर कन्या गुरुकुल खानपुर में सेवारत हो गये। भक्त जी महाराज के दाहिना हाथ के रूप में स्वामी जी ने कार्य किया। सन् 1935 से निरन्तर आजीवन स्वामी जी महाराज ने कन्या गुरुकुल की मन, वचन और कर्म से सेवा की। दोनों ही संस्थाओं को आगे उन्नति के पथ पर बढ़ाने में श्री स्वामी जी महाराज का विशेष प्रयत्न रहा। हरियाणा की जनता एवं इन संस्थाओं के प्रियजन स्वामी जी महराज को एवं उनके कार्य को कभी भी नहीं भुला सकते।

स्वामी जी महाराज ऐसे समय में गुरुकुल में आये थे जबकि किसी सुलझे हुए मनुष्य की आवश्यकता थी। उनके आने से भक्त जी महाराज को उचित सुझाव देने वाला साथी मिल गया।

अन्त में उनके प्रति अगाध श्रद्धा प्रकट करते हुए हम कह सकते हैं कि वे आर्य समाज की एक महान् विभूति एवं कर्मठ कार्यकर्ता थे। सन् 1948 की 11 दिसम्बर को सायंकाल के समय गुरुकुल कांगड़ी में उनका देहावसान हुआ।

—सम्पादक

चुटकला—

एक अध्यापक अपनी कक्षा में गए और बोले—मुझे तुम सारे मूर्ख लगते हो जो अपने आप को मूर्ख मानता है वह खड़ा हो जाए। यह सुन कर कोई भी बच्चा खड़ा नहीं हुआ। अध्यापक जी बोले कोई भी मूर्ख नहीं है। यह सुन कर तुरन्त एक बच्चा खड़ा हो गया। अध्यापक जी देखकर बोले—बस तू ही अपने आप को मूर्ख मानता है। तपाक से बच्चे ने जवाब दिया नहीं मैं तो आपको अकेला देख कर खड़ा हो गया था।

गणित के जादूगर पेश करते हैं—

गणित के चमत्कार

श्री कर्णसिंह 'तोमर' वैश्य हाई स्कूल, रोहतक

●

1. 16 दूनो 8 ($16 \times 2 = 8$)

उदाहरण के लिए — $(12)^2 = 144$ —(1)

$(-12)^2 = 144$ —(2)

दोनों की तुलना करने पर—

$(12)^2 = (-12)^2$

दोनों ओर से वर्ग हटाने पर :—

$12 = -12$

या $16 - 4 = 4 - 16$

या $16 + 16 = 4 + 4$

या $32 = 8$

$\because$ हम जानते हैं $16 \times 2 = 32$

परन्तु $32 = 8$ (सिद्ध कर चुके हैं)

$\therefore$, $16 \times 2 = 8$

❀ ❀ ❀ ❀

2. वर्ग करना : : वैसे तो $(a+b)^2$ के सूत्र से भी वर्ग करते हैं परन्तु कुछ संख्याओं के वर्ग आसानी से हो जाते हैं जैसे :—

ऐसी संख्या जिनमें इकाई का अंक 5 है।

जैसे 15, 25, 35, 125 ....

तरीका पहले $(5)^2$ 25 लिखो

फिर 3 5   3+1 करो =4 (और उसे गुणा करके 25 के आगे लिखो)
3 5   4×3=12

12 25

उदाहरण— 8 5
8 5   8+1=9

72 25   9×8=72

❀ ❀ ❀ ❀

3. ऐसी संख्या जिसमें सभी एक हों।

1. $(1)^2=1$
2. $(11)^2=121$
3. $(111)^2=12321$
4. $(1111)^2=1234321$
5. $(11111)^2=123454321$
6. $(111111)^2=12345654321$
7. $(1111111)^2=1234567654321$
8. $(11111111)^2=123456787654321$
9. $(111111111)^2=12345678987654321$

नोट :—जितने इक्के हो उतनी ही संख्या लिख कर फिर उसका अन्तिम अक्षर छोड़ कर उल्टा क्रम कर दो।

गुरुकुल चाय

खांसी, जुकाम, ज्वर, इन्फ्लूएन्जा, बदहजमी तथा थकान में मादकता रहित उत्तम पेय।

च्यवनप्राश

चरक संहिता अष्टवर्ग युक्त हिमालय की दिव्य जड़ी बूटियों से तैयार, शरीर की क्षीणता तथा फेफड़ों के लिए प्रसिद्ध आयुर्वेदिक रसायन। बाल, युवक तथा वृद्ध सबके लिये हितकर।

भीमसैनी सुरमा

आंखों को निरोग व शीतल रखता है।

पायोकिल

- दांतों का दर्द व टीस
- मसूढ़ों का फूलना
- मसूढ़ों में खून व पीप आना
- पायोरिया को जड़ से मिटाने के लिए उत्तम आयुर्वेदिक औषधि

agnihotri

शाखा : चावड़ी बाजार, दिल्ली–६

Approved for Libraries by D. P. I'S Memo No. 3/44—1961—B. Dated 8-1-62

Approved by the Chairman, Central Library Committee, Panjab Vide their Memo No. PRD-Lib-258-61/1257-639 dated Chandigarh, the 8th Jan. 1962.

For—

1. The Secretary to Government, Punjab, Housing and Local Government Department, Chandigarh.
2. The Director of Panchayats, Chandigarh.
3. The Director of Public Ins[illegible]uc-tion, Panjab Chandigarh.
4. The Deputy Director Evaluation, Development Department Panjab Chandigarh.
5. The Assistant Director, Young Farme and Village Leaders, Development Department, Panjab Chandigarh.
6. The Assistant Director [illegible] Panchayats, Panjab Jullund[illegible]r.
7. The Assistant Director o[illegible] Panchayats, Rohtak.
8. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Patiala.
9. All Local Bodies in the Panjab.
10. All District Development and Panchayat Officers in the State.
11. All Block Development and Panchayat Officers in the State.
12. All District Public Relations Officers in the State.

'समाज सन्देश'—डाक घर गुरुकुल भैंसवाल कलाँ

Regd. No. P/RTK-21

सदस्य संख्या

नाम सम्पादक गुरुकुल पत्रिका

स्थान गुरुकुल कांगड़ी वि. वि.

पत्रालय हरिद्वार

जिला सहारनपुर (यू.पी.)

व्यवस्थापक श्री धर्मभानु गुरुकुल भैंसवाल ने नेशनल प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर कार्यालय समाज सन्देश गुरुकुल भैंसवाल (सोनीपत) से मुद्रित तथा प्रकाशित किया।

समाज सन्देश

(हिन्दी मासिक-पत्र)
सांस्कृतिक, सामाजिक व साहित्यिक लेखों का संगम

प्रकाशन तिथि : 25 सितम्बर, 1979

वर्ष 20 | अगस्त, सितम्बर, अक्तूबर, 1979 | अंक 4/5/6

स्वर्गीय श्री भक्त फूल सिंह जी

मूल्य : एक प्रति 1-25 रु० • वार्षिक चन्दा 10 रुपये

इस अंक में—

समाज सन्देश में छपे विचारों से हमारा सहमत होना या न होना आवश्यक नहीं। समाज सन्देश में हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी मत से सम्बन्ध रखता हो अपने लोकहितकारी विचार अथवा लेख प्रकाशनार्थ भेज सकता है। उसकी मौलिकता का लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा। —सम्पादक

लेख भेजने तथा अन्य विषयक पत्र व्यवहार का पता :—

देवराज विद्यालंकार

प्रकाशन प्रबन्धक

गुरुकुल भैंसवाल कलां (सोनीपत)

सम्पादकीय—

निर्धनता का गौरव

भारत को आजाद हुए 32 वर्ष हो गए हैं लेकिन यहां की राजनैतिक, सामाजिक आर्थिक, धार्मिक समस्याओं की ओर जब मैं विचार करता हूँ तो मन में गहरी उदासी छा जाती है। आज हमारे देश में जो राजनैतिक संक्रमण चल रहा है उसके पीछे हमारी नैतिकता का काफी बड़ा योगदान है। आधुनिक राजनैतिक अस्थिरता का सम्भवतः मध्यावधि चुनाव भी हल नहीं कर सकेंगे। इसलिए आज की इस दूषित राजनीति से परे हटकर मैं देश की वर्तमान आर्थिक समस्या पर कुछ विचार व्यक्त करना ही श्रेयस्कर समझूंगा।

आज हमारे समाज में धन का महत्व बहुत बढ़ गया है। धन के द्वारा ही जीवन-यापन की आवश्यक वस्तुएं सुख सुविधा के सभी साधन प्राप्त होते हैं। इसलिए चारों ओर धन प्राप्त करने की होड़ लगी हुई है। यह होड़ इसलिए भी बढ़ रही है कि जितना ज्यादा धन और अधिक सुख सुविधा के साधन जिसके पास हैं वह उतना ही ऊंचा माना जाता है। इस अभिजात्य की तड़क-भड़क की ओर साधारण लोग भी आकर्षित होते हैं। वे स्वयं उस अभिजात्य वर्ग में शामिल होकर मान-सम्मान पाना और ऊंचा बड़ा बनना चाहते हैं। लेकिन इसके लिए पहली शर्त है अधिक से अधिक धन—वह चाहे जिस रूप में और किसी तरह एकत्रित हो। इस चक्कर में धनी मनुष्य अधिक धनी बनना चाहता है साधन सम्पन्न होने से वह सफल भी होता है परन्तु इसके विपरीत जो साधारण लोग हैं जो धन की चमक-दमक से आकर्षित होकर धनी होना या धनी दीखना चाहते हैं वे या तो भ्रष्टाचार का सहारा लेते हैं या गलत तरीके से धनोपार्जन का यत्न करते हैं या धनाभाव में धनी की तड़क-भड़क और शान-शौकत का जीवन जीने के चक्कर में और गरीब होते जाते हैं। इस समय समाज में धनी और निर्धन दो वर्ग बन जाते हैं और उनके बीच की खाई दिन रात बढ़ती चली जाती है। जिस प्रकार धन की अधिकता सम्पन्नता को, वैसे ही धन की कमी गरीबी को जन्म देती है। इसमें सन्देह नहीं कि गरीबी असुविधा पैदा करती है लेकिन गरीब होकर ऐश्वर्य का दिखावा करना सर्वनाश को न्यौता देना है। ऐसी स्थिति आज हमारे देश में दिखाई देती है। हमारा देश निर्धन है यह सब जानते हैं।

गरीबी दु:ख जरूर पैदा करती है लेकिन उससे लज्जित बिल्कुल नहीं होना चाहिए। वास्तविक स्थिति को स्वीकार करना साहस का काम है। महात्मा गान्धी ने गरीब देश के प्रतिनिधि के रूप में अपनी आवश्यकताएं कम करके लंगोटी बांध कर रूखा-सूखा खाना खा कर गरीब को गौरव दिया था। वे ब्रिटेन के बादशाह से भी उसी रूप में मिले थे और बादशाह के शाही ठाट-बाट और तड़क-भड़क उनकी लंगोटी के सामने फीको पड़ गई थी। यह इसलिए सम्भव हुआ कि गान्धी जी में वस्तु स्थिति को स्वीकार करने का साहस था। और अपनी गरीबी में वे किसी प्रकार की हीनता अनुभव नहीं करते थे। वस्तुतः इसमें हीनता की कोई बात है भी नहीं। हीनता की बात तो यह है कि जैसी हमारी हालत नहीं है हम वैसा दीखना चाहते हैं और यह मूल भावना ही अनैतिक है और फिर अपनी वास्तविकता अलग दीखने के लिए हमें अनेकों गलत काम करने पड़ते हैं और यह अनैतिकता भ्रष्टाचार को जन्म देती है और भ्रष्टाचार का जाल फैलकर सारे समाज को अपनी गिरफ्त में ले लेता है।

देश की आजादी के समय जिन लोगों के हाथ में शासन की बागडोर आई पश्चिम की चमक-दमक ने उनकी आंखों को चकाचौंध कर दिया। उन्होंने गान्धी जी की नहीं पश्चिम की राह अपनाई और देश गलत राह पर आगे बढ़ गया। गांधी जी कहते थे कि हमारा देश गरीब है हमें उसी के अनुसार व्यवहार करना चाहिए उसी में हमारा हित है। शासन का सूत्र जिन लोगों ने सम्भाला है, वे कल जो थे, वही आज भी हैं। स्वतन्त्रता संग्राम में भी ये जनता के सेवक थे और बागडोर सम्भाल कर भी वे जनता सेवक ही बने रहें, शासक न बनें। वे आम लोगों की तरह मामूली मकानों में रहें, बसों में बैठकर दफ्तर जायें, प्रशासन का खर्च कम से कम करें, सस्ता और सुलभ न्याय दिलायें। लेकिन गान्धी जी की बात उनके पल्ले नहीं पड़ी। वे इंगलैण्ड और अमेरीका की बराबरी में खड़े होने का प्रयत्न करते रहे और दिखावटी कोशिश में आज देश की कमर कर्ज के बोझ से टूटने लगी है। हमारी तड़क-भड़क बरकरार है। जनता अभाव, बेकारी और भूख से कराह रही है और यह परिणाम इसलिए सामने आया गान्धी का रास्ता छोड़कर अन्धी दिशा की ओर हम बढ़ते चले गए। देश की रक्षा देश के निवासी ही कर सकते हैं। अगर आज गान्धी की राह पर चल कर वस्तुस्थिति को स्वीकार करने का नैतिक साहस पैदा करें और गरीबी को गौरव के साथ देखें, ईमानदारी और परिश्रम से उसका मुकाबला करें तो समाज में फैले भ्रष्टाचार के जाल से किसी हद तक छुटकारा पाया जा सकता है। वस्तुस्थिति को हमें स्वीकार करना चाहिए नहीं तो आने वाला समय इसे स्वीकार करने के लिए किसी दिन हमें अवश्य मजबूर करेगा।

—देवराज "विद्यालंकार"

❀ ओ३म् ❀ घोषणार्थ

सत्यार्थप्रकाश शताब्दी

के उपलक्ष्य में

आर्य युवक परिषद् (पंजी०) दिल्ली का सक्रिय योगदान

एक करोड़ परिवारों में स्वाध्याय की रुचि तथा वैदिक जीवन निर्माण की पावन भावानयें जागृत करने हेतु सत्यार्थप्रकाश की परीक्षाओं के माध्यम से देश के कौने-कौने से डेढ़ लाख से ऊपर युवक-युवतियां सत्यार्थ प्रकाश परीक्षाएं उत्तीर्ण कर सफलता प्राप्त कर चुके हैं। सौभाग्य से इस "सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी वर्ष 1979" में परिषद् के प्रधान श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु आर्योपदेशक की आयु के 75 वर्ष पूर्ण होने पर उनकी "हीरक जयन्ती" के उपलक्ष में राजधानी के बहुत से भागों में बड़े-बड़े सार्वजनिक अभिनन्दन सम्पन्न हो चुके हैं और अभी भी दिल्ली तथा नई दिल्ली के आर्य समाज मन्दिरों में यह क्रम चल रहा है। श्री प्रधान जी को "सत्यार्थ प्रकाश" के प्रति अब तक की गई बहूमूल्य सेवाओं के सम्मानार्थ उनकी आयु के 75 वर्ष पूर्ण होने पर बहुत से आर्य समाजों तथा आर्य स्त्री समाजों ने उन्हें 75, 75 सत्यार्थ प्रकाश भेंट किये हैं जो उन्होंने परिषद् के स्थानीय परीक्षा-केन्द्रों के पुस्तकालयों में परीक्षार्थियों के लाभार्थ दे दिये हैं। हमारी सभी से सानुरोध प्रार्थना है कि आप भी श्री प्रधान जी का अभिनन्दन कर उन्हें अपने समाज से, अथवा दानियों से संग्रह कर "सत्यार्थ प्रकाश भेंट करें"।

जिससे इस सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी के पुनीत अवसर पर इस अमर ग्रन्थ का घर-घर व जन-जन में स्वाध्याय प्रचार यज्ञ अबाध गति से चलता रहे। हमें पूर्ण विश्वास है कि सभी धनीमानी दानी बहन भाई तथा राजधानी की बड़ी-बड़ी सभायें, आर्य समाजें तथा आर्य स्त्री समाजें अधिक से अधिक सत्यार्थ प्रकाश पुस्तकें श्री प्रधान जी को भेंट कर पुण्य व यश के भागी बनें।

निवेदक :—

चमन लाल M. A.	ओ३म् प्रकाश M. Sc.	मूलचन्द गुप्ता
परीक्षा-मन्त्री	प्रधान-मन्त्री	प्रचार-मन्त्री

आर्य युवक परिषद् (पंजी०) १६५४, कूचा दखिनीराय,

दरियागंज, नई दिल्ली—११०००२

(क्रमश: ४)

* महाभारत *

(आदि पर्व)

लेखक :

आचार्य विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड

●

राजा पाण्डु भी अपनी रानियों समेत वन में विहार करने लगे। मृगया उनके विनोद का प्रधान साधन था। एक बार मृग के समान कृत्रिम रूप बनाकर किंदम नामक तपस्वी मृगी का रूप बनाई हुई अपनी पत्नी से कामक्रीड़ासक्त थे। मृगयालु राजा ने उन दोनों को मृग और मृगी मानकर बाण का प्रहार किया इससे मृग का रूप बनाये हुए किंदम मुनि की बाण से मृत्यु हो गई।

मृग लेने जब राजा पहुँचे तब किंदम मुनि ने राजा पाण्डु से कहा – राजन् ! कामासक्त हुए मुझे अपनी स्त्री से रमण करते हुए तुमको मुझे मारना नहीं चाहिए था। तुमको ब्रह्महत्या का पाप तो नहीं लगेगा क्योंकि तुमने मुझ को मृग समझ कर भूल से मारा है परन्तु तुम इस बात को स्मरण रखो तुम भी कभी इसी अवस्था में अपने प्राणों का त्याग करोगे। ऐसा कह किंदम मुनि स्वर्ग सिधार गये।

किंदम के मरने पर राजा को बहुत दुःख हुआ। राजा ने अपनी दोनों रानियों को बुलाकर सारी बातों से अवगत कराया। तदनन्तर उन्होंने अपनी दोनों रानियों से कहा – देवियो ! अब आप दोनों हस्तिनापुर चली जाओ। मैं अब सन्यासी आश्रमी होकर अपने पिता व्यास जी का अनुगामी बनूंगा।

पाण्डु राजा की बातों को सुन कर धर्मज्ञा कुन्ती ने कहा—हे महाराज ! आप सन्यासाश्रमी न बनें। वानप्रस्थाश्रम को स्वीकार करें। हम भी आपके साथ रह कर

वानप्रस्थाश्रम में तपस्या करेंगी। हम आपको छोड़ कर हस्तिनापुर नहीं जावेंगी। यदि आप हमको हस्तिनापुर भेजने का आग्रह करेंगे तो हम यहीं आपके सामने प्राण त्याग देंगी।

अपनी रानियों की दृढ़ता को देखकर राजा ने उनकी इच्छा के अनुसार वानप्रस्थाश्रम स्वीकार किया। वे रानियों समेत वन में कठोर तपस्या करने लगे। ऋषि-मुनियों के साथ भिन्न-भिन्न तीर्थों की यात्रा करने में रत रहने लगे। एक दिन कुछ मुनिगण ब्रह्मलोक (कठिन तपस्या स्थल) में जाने की तैयारी करने लगे। पाण्डु भी उनके साथ ब्रह्मलोक में चलने को उद्यत हुए। तब उन मुनियों ने पाण्डु से कहा – हे राजन्! आप इन देवियों के साथ ब्रह्मलोक में जाने के अधिकारी नहीं हैं। वह मार्ग भी बड़ा कठिन है वहां ये रानियां गमन नहीं कर सकेंगी। अभी आप पुत्रवान् भी नहीं हुए हैं अतः आप देवियों के साथ यहीं रहें। ऐसा कहकर पाण्डु को वहीं छोड़ कर ऋषि-मुनियों ने ब्रह्मलोक में गमन किया।

यह देख कर पाण्डु राजा ने तथा रानियों ने अपने कीमती गहने उतार कर ब्राह्मणों को दिये। पाण्डु ने अपने सेवकों को बुलाकर कहा कि अब आप सब हस्तिनापुर में जावें वहां जाके भीष्म आदि से कहना कि पाण्डु अपनी रानियों समेत वानप्रस्थाश्रम में प्रविष्ट हो गए हैं।

राजा की आज्ञा प्राप्त कर सेवकगण हस्तिनापुर में पहुँच गये उन्होंने वहां जाकर भीष्म और धृतराष्ट्र आदि को पाण्डु द्वारा दिया गया सन्देश कह सुनाया। उसको सुनकर धृतराष्ट्र ने अपने भाई के लिए बहुत दुःख माना। वे उठते, बैठते, सोते, खाते सदा पाण्डु को स्मरण किया करते थे। पाण्डु भी इन्द्रद्युम्न सरोवर को पाकर, हंसकूट को लांघते हुए शतश्रृङ्ग पर्वत पर कठोर तपस्या करने लगे।

एक दिन पाण्डु ने कुन्ती को बुलाया। वे उससे बोले – हे देवी! अपुत्रवान की सद्गति नहीं होती है। मैं तो सन्तान उत्पन्न करने में असमर्थ हूँ। आप तपस्या में संलग्न किसी मेरे कुल के उत्तम पुरुष से मिलकर मेरे लिए सनतान उत्पन्न करें, जिससे कल्याण हो सके। राजा की बात को सुनकर भी रानी ने परपुरुष से सन्तानोत्पादन से इन्कार किया। सन्तान की इच्छा वाले राजा के द्वारा बार-बार आग्रह करने पर कुन्ती ने कहा – हे राजन! दुर्वासा मुनि ने मुझे एक वशीकरण मन्त्र दिया था। उस मन्त्र की शक्ति से मैं किसी भी पुरुष को अपने समीप बुला कर पुत्रवती हो सकती हूँ। यदि आपकी पुत्र की बहुत ही इच्छा हो तो मैं आपकी मनोकामना को पूर्ण करूं।

कुन्ती द्वारा इस प्रकार कहने पर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कुन्ती से कहा— हे देवी! यह बड़े भाग्य की बात होगी। तब कुन्ती ने कुरुवंशज धर्म, पवन, इन्द्र संज्ञक पुरुषों को क्रमशः आहूत किया। उनके आने पर वशीकार मन्त्र का भी प्रयोग किया। जिससे उसकी बात को उन सब ने सहर्ष स्वीकार किया।

पाण्डु की आज्ञा प्राप्त कर पहले धर्म को बुला के धर्मात्मा युधिष्ठर को कुन्ती ने जन्म दिया। एक वर्ष के पश्चात् पवन के सहयोग से बलवान् भीम उत्पन्न हुए। जिसके बराबर कोई बलवान् नहीं हुआ। तदनन्तर इन्द्र की कामना से सर्वगुण सम्पन्न अर्जुन की उत्पत्ति हुई। तीनों पुत्रों में परस्पर एक-एक वर्ष का अन्तर था। तीनों ही अद्भुत वीर, धर्मात्मा तथा गुणी थे। सब ऋषि मुनिगण उन बालकों से अत्यन्त स्नेह करते थे। वे अपने पुत्रों के समान उनको मानते थे। वे तीनों सबके प्रिय हो चले थे। अर्जुन को देखकर तो ऋषि-मुनि बहुत ही प्रभावित थे।

एक दिन पाण्डु की दूसरी पत्नी माद्री ने अपने पति पाण्डु से कहा कि आप कुन्ती को कह कर मेरे लिए भी पुत्र की कामना करें। उसकी बात को मानकर पाण्डु ने एक दिन कुन्ती से माद्री के लिए भी पुत्र प्रदान करने की प्रार्थना की।

कुन्ती ने पाण्डु राजा की बात को स्वीकार किया। कुन्ती ने माद्री से कहा कि तुम किसी भी देवता का आह्वान करो।

माद्री ने अवसर जान कर अश्विनी कुमारों को बुलाया। उनकी प्रेरणा तथा संयोग से माद्री के उदर से भी नकुल, सहदेव युगल पुत्र उत्पन्न हुए। इस प्रकार पाण्डु पांच पुत्रों को प्राप्त कर बड़े प्रसन्न हुए। वे अब अपने को भाग्यशाली मानने लगे।

एक दिन द्वारका नगरी में एकत्रित होकर वृष्णी वंशी वासुदेव के साथ पाण्डु के विषय में विचार करने लगे कि कहीं पाण्डु के पुत्र संस्कार हीन न रह जावें अतः सब ने मन्त्रणा करके उनके संस्कार के लिए उन्होंने वहां पाण्डु पुत्रों के समीप पुरोहित भेजा जो उनके नियमपूर्वक संस्कार करावे। कुन्ती और माद्री के लिए भी वसुदेव ने बहुत सा उपयुक्त सामान भेजा। वसुदेव से प्रेषित काश्यप नामक पुरोहित की पाण्डु तथा कुन्ती और माद्री ने पूजा की। इससे पाण्डु तथा उसकी दोनों रानियों को बड़ी शान्ति मिली कि वसुदेव उनका इतना अधिक ध्यान रखते हैं। काश्यप ने पाण्डु पुत्रों के चूड़ाकरण संस्कार से लेकर उपनयन तक सब संस्कार कराये।

शर्याति वंशज पृषत् के पुत्र शुक ने राज्य को त्याग कर शतभृङ्ग पर्वत पर कठोर

तपस्या की। श्री राजा शुक ने श्रेष्ठ उपकरणों और शिक्षा द्वारा पाण्डवों को शिक्षित किया। राजऋषि शुक के कृपा प्रसाद से सभी पाण्डव धनुर्वेद में पारंगत हो गये।

गदा युद्ध में भीम, तोमर फेंकने में युधिष्ठिर, ढाल तलवार चलाने में नकुल, सहदेव और धनुर्वेद में अर्जुन पूर्णतः पारंगत हुए। वीर अर्जुन का चौदहवां वर्ष पूरा होने जा रहा था। उस निमित्त कुन्ती ब्राह्मणों से स्वस्ति वाचन करा रही थी। अतः उस दिन वह पाण्डु की ठीक प्रकार से देखभाल न रख सकी। सुपुष्पित वन में माद्री के साथ घूमते हुए पाण्डु काम मोहित हो गये। उस समय वन की अद्भुत शोभा थी। अनेक प्रकार के फलों और फूलों से वह वन भरपूर था। उसके पीछे पीछे सुन्दर वस्त्रों को पहने माद्री चल रही थी। उसने काम मोहित होकर बलपूर्वक उसे पकड़ लिया। उसके द्वारा बार-बार रोकने पर भी पाण्डु अपने काम के वेग को न रोक सके। वे काल प्रेरित थे। उसी अवस्था में पाण्डु की वहां मृत्यु हो गई।

माद्री ने जब अपने मृत पति को देखा तो वह बहुत घबराई। फिर उसने कुन्ती को आवाज दी और उसने कहा—हे बहन! आप बिना पुत्रों के अकेली ही यहां आओ। माद्री की आवज सुनकर कुन्ती शीघ्रता से वहां पहुंची। वहां उसने अपने पति पाण्डु को मृत पाया। यह देख कर वह दहाड़ मार कर रोने लगी। उसके रोने को सुन कर अनेक ऋषि मुनिगण वहां उपस्थित हुए। उन्होंने उन दोनों रानियों को समझा बुझा कर शान्त किया।

इसके बाद माद्री ने कुन्ती से प्रार्थना की कि बहन! आप मुझ से समझदार हैं। मेरी ऐसी इच्छा है कि मेरे साथ ही कामुक बनकर राजा स्वर्ग लोक में गये हैं अतः मैं अपने पति के साथ चित्तारोहण करूंगी। दूसरी बात यह भी है कि मैं इन बालकों का भली प्रकार पालन-पोषण भी न कर सकूंगी। आप मेरे बालकों के साथ अपने बालकों के समान व्वहार कर सकती हैं परन्तु मैं ऐसा करने में असमर्थ हूं। अतः आप मुझे चितारोहण की आज्ञा दें।

यह कह कर कुन्ती से आज्ञा प्राप्त कर माद्री ने अपने पुत्रों तथा कुन्ती के पुत्रों के शिरों को सूंघा। तदनन्तर राजा पाण्डु के साथ चिता पर बैठ कर उसके साथ स्वर्ग-वासिनी हो गई। फिर ऋषि मुनियों ने कुन्ती को और उनके पांचों पुत्रों को समझा-बुझाकर धैर्य बन्धाया।

(क्रमशः)

गुरुवर विश्वनाथ जी शास्त्री

— विष्णुमित्र विद्यामार्त्तण्ड

समय के प्रवाह को कोई नहीं रोक सकता है। वह कितनी शीघ्रता से यात्रा करता है इसका अनुमान लगाना कठिन हो जाता है। महाभारत में कथा आती है कि जब कोरवों और पाण्डुओं को कृपाचार्य शिक्षा दे चुके तब भीष्म की इच्छा हुई कि राजकुमारों को विशेष शिक्षा देने के लिए द्रोणाचार्य की आवश्यकता है, कुछ ऐसी ही घटना गुरुवर विश्वनाथ जी के गुरुकुल भैंसवाल में आने पर हुई।

हमने गुरु नान्हूराम जी से आख्यातिक, नामिक कुछ सिद्धान्त कौमुदी का भाग पढ़ लिया तब भीष्म रूपी भक्त फूल सिंह जी हमारे लिए द्रोणरूप पण्डित विश्वनाथ जी को गुरुकुल में लाये और उनसे दर्शन तथा महाभाष्य के पढ़ने का हमको सुअवसर मिला। पण्डित जी दर्शन व्याकरण के धुरन्धर विद्वान् थे। व्याकरण तथा दर्शन मानों उनकी वाणी पर प्रति समय निवास करता था। किसी विषय की शंका कीजिये आपको उत्तर ठीक प्राप्त होगा।

जैन दर्शन में आप पारंगत थे। जैनी लोग भी अपनी दार्शनिक बातों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आपकी शरण में आते थे। एक बार जैन शास्त्र के प्रसिद्ध ज्ञाता आत्मा राम जी जैन साधु से आपका शास्त्रार्थ हुआ। आपने दो घण्टे तक उन से शास्त्रार्थ कर उनको निरुत्तर कर दिया।

कभी कभी हमारे पुराने गुरु नान्हू राम जी तथा उनका व्याकरण पर वाद-विवाद हो जाता तो पण्डित जी उनको निरुत्तर कर देते और फिर हंसकर कह देते कि आगे बात चालाइये। हमारे प्राचीन गुरु निरुत्तर हो जाते। काशिका, महाभाष्य, न्याय-मुक्तावली आदि ग्रन्थ को जब पढ़ाते थे तो ऐसा प्रतीत होता था मानो इन ग्रन्थों के रचयिता आप ही हों। एक बार आपको हिसार से कुछ आर्यसमाजी सनातनी पण्डितों से सास्त्रार्थ करने के लिए ले गये। जब आपने धाराप्रवाह संस्कृत में बोल कर सनातनी पण्डित के प्रतिपाद्य विषय का खण्डन किया तब सनातनी पण्डित कहने लगे कि यह पण्डित तो संस्कृत को घोटे हुए है। ऐसे थे संस्कृत के ज्ञाता गुरुवर विश्वनाथ जी।

आपकी पढ़ाई को आपके शिष्य आज भी स्मरण करते हैं। जब पढ़ाते थे तब पढ़ने और पढ़ाने वाले पढ़ने-पढ़ाने में ऐसे तल्लीन हो जाते थे कि समय का पता ही नहीं रहता था। आजकल के गुरुओं की तरह थोड़ा सा पढ़ाने में ही उनके शिर में पीड़ा न होती थी। उनका अगाध पाण्डित्य आज भी हमको स्मरण आता है। गुरु शिष्यों की चर्चा भी पढ़ाई के विषय में होती थी। सारा ही वातावरण उस समय विद्यामय था, शास्त्र चर्चा ही गुरु शिष्यों का विषय था।

उन दिनों स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज गुरुकुल के आचार्य तथा मुख्याधिष्ठाता थे। स्वामी जी महाराज प्रायः बाहर ही प्रचार में रहते थे। बहुत कम उनको गुरुकुल में ठहरने का अवसर मिलता था अतः आचार्य तथा मुख्याधिष्ठाता के पद का काम भी प्रायः आप करते थे। पिछले दो तीन वर्ष तो आप स्वयं आचार्य बने रहे तथा बड़ी कुशलता से काम करते रहे।

पण्डित जी दण्डे का प्रयोग बहुत कम करते थे परन्तु हम सब छात्र उनसे सदा भयभीत रहते थे। हर समय ब्रह्मचारियों की शिक्षा दीक्षा का वे ध्यान रखते थे। रात्रि में आठ बजे के बाद जब हम अपने-अपने तख्तों पर बैठकर अध्ययन करते थे तो कभी-कभी बातें भी करने लगते थे। तभी पण्डित जी की यह आवाज "क्यों जी" सुनाई देती थी जिस से हम बहुत घबराते थे।

समय पर उपयुक्त शब्दों का प्रयोग करते थे। आपका क्वार्टर तालाब से परे खारे कूए के पास होता था। घण्टी चार बजे चाहे गर्मी हो चाहे जाड़ा हो बजाई जाती थी। जब घण्टी बजती तभी बरामदे में पण्डित जी के जूते की 'चर्-चर्' करती आवाज हमको सुनाई देती तो हम एकदम रजाई को दूर फेंक कर खड़े हो जाते थे। घण्टी की आवाज हमको न सुनाई दे परन्तु पण्डित जी के जूते की आवाज को सुनकर हम सब उठकर पढ़ने लगते थे।

आपको तैरने का बड़ा शौक था। हम सब को लाइन में करके कटवाल से आगे की नहर में नहाने ले जाते थे। आप भी मग्न होके स्नान करते थे हमको भी स्नान करने को कहते थे। मैंने तो वहीं पर तैरना सीखा।

1930 में गुरुकुल के कुछ ब्रह्मचारी नमक कानून को तोड़ने के लिए रात्रि को जोश में गुरुकुल से भाग कर रोहतक की ओर चले गये। जब पण्डित जी को पता लगा कि छात्रों की अवस्था अभी कच्ची है और भूल कर बैठेंगे तो वे नंगे पांव ही घुटनों तक कटिवस्त्र बांध कर रात्रि को ही उनके पीछे भागे और उनको मकड़ौली गांव में जाके

पकड़ लिया। पण्डित जी का इतना विस्तृत प्रभाव था कि कोई भी छात्र उनको देखकर उनकी बिना आज्ञा के एक भी पांव आगे न बढ़ा सका। ऐसे प्रभावशाली थे गुरुवर विश्वनाथ जी। प्रबन्ध में इतने कुशल थे कि कोई भी गुरुकुल की वस्तु उनकी आँखों से ओझल न होती थी।

आपका रंग गोरा, चौड़ा माथा, काली मूंछें बड़ी प्रभावशाली थीं। सदा खद्दर का परिधान रखते थे। कुछ समय के बाद आपने आधी बांह का कमीज पहनना प्रारम्भ कर दिया था। आज भी उनकी वह शकल मेरे आंखों के सामने धूमती है।

जब कोई हमारा आपस में झगड़ा होने लगता कोई कहता 'पण्डित जी आ गये' तुरन्त सब शान्त हो जाते थे। स्वयं सादगी पसन्द करते थे किसी भी ब्रह्मचारी को बनावट के वेष में देखते तो उसे टोकते थे। अतः ब्रह्मचारी सदा उनके सामने साधु वेष में ही उपस्थित होते थे।

जब आप गुरुकुल भैंसवाल में पढ़ाते थे तब आपके गुरु शुद्धबोध तीर्थ ने महाविद्यालय ज्वालापुर से उनको पत्र लिखा कि प्रिय विश्वनाथ! तुम महाविद्यालय ज्वालापुर को सभालो तुम्हारे बिना वह बिगड़ा जा रहा है। आप जाने को तैयार होते तभी भक्त जी महाराज पण्डित जी को रोक देते। आप अपने गुरु जी को पत्र लिखते कि मैं क्या करूं यहाँ के गुरुकुल के संस्थापक भक्त फूल सिंह जी ने मुझे अपने प्रेम में ऐसा जकड़ लिया है कि मेरा वे छुटकारा ही नहीं होने देते हैं। वस्तुतः गुरु विश्वनाथ जी को भक्त जी से, अपने छात्रों से, गुरुकुल से प्रेम हो चला था।

उनकी ही यह देन है कि विद्यानिधि, हरिश्चन्द्र, नारायण, महामुनि, विद्यारत्न, धर्मभानु आदि और मेरे जैसे स्नातक तैयार हो सके। वे छात्रों का निर्माण करते थे। उनको विद्वान् बनाने की उत्कट इच्छा थी अतः उनके बनाये छात्र भी विद्वान् हो गये। गुरुओं की इच्छा यदि शिष्यों को योग्य बनाने की होगी तो शिष्य अवश्य ही विद्वान् होंगे। जैसी नीयत होती है वैसा ही काम होता है। अच्छी नीयत से अच्छा काम और बुरी नीयत से बुरा काम होता है। गुरु विश्वनाथ की तरह के गुरु ही ससार का निर्माण कर सकते हैं। केवल मात्र नौकरी पाने वाले गुरु बनने के अधिकारी नहीं हो सकते हैं।

वे फुटबाल के बहुत अच्छे खिलाड़ी थे। जब हम खेलते थे तब गुरुजी बैक में रहते थे। पण्डित जी के पास से होकर गोल में फुटबाल का डालना बड़ा कठिन था। वे सिर पर फुटबाल को रोकते थे। पढ़ाई की तरह आप फुटबाल के खेल में भी चतुर थे।

गुरुकुल को आगे बढ़ाने में उनका हाथ रहा है। मैं अपने ऐसे गुरु को श्रद्धाञ्जलियाँ अर्पित करता हूँ।

जैसा कि मैंने पहले लिखा है कि समय का प्रवाह बड़ा तेज है। हम बालक थे गुरु हमको पढ़ाते थे। वे पढ़ाकर स्वर्गलोक में चले गये। वार्धक्य हमारी ओर भी दौड़ कर आ रहा है। रोकने का प्रयत्न किया जा रहा है परन्तु अवश्यंभावी कार्य अवश्य होता है। आज हम भी वृद्धों में गिने जाने लगे हैं परन्तु हम गुरु विश्वनाथ को कैसे भुला सकेंगे। उनके सामने तो हम बालक ही थे। ऐसे गुरु को पाकर हम अपने को भाग्यशाली मानते हैं?

भक्त फूल सिंह तथा पं० विश्वनाथ जी के साथ गुरुकुल के पहले तीन स्नातक

कितने सावन बीत गए

★

करते तेरी अरी ! प्रतीक्षा, कितने सावन बीत गए ।
आंसू जितने ढरे नयन से, प्यारे बन वे गीत गए ।।

सपनों में जिनका दम भरके,
पागल हो नाचा करता था ।
मधु आलिङ्गन जिनका करके,
मैं गीत प्रेम के गाता था ।
भोली भाली छवि वाले, उर में चुभ वे मीत गए ।।

गर्मी आयी सर्दी आली,
आकर चली गयी दीवाली ।
बसन्त और पतझड़ ने मिलकर,
खूब यहां है खेली होली ।
गिनते गिनते आह, अवधियां, भूल सभी संगीत गए ।।

जो थे मेरे प्रेम - सहारे,
प्राणों से मुझको थे प्यारे ।
मुझसे करते प्रेम सर्वदा,
और बने रहते रखवारे ।
जो थे एक प्रेरणा मेरी, बिछुड़ सभी वे प्रीत गए ।
करते तेरी अरी ! प्रतीक्षा, कितने सावन बीत गए ।।

—वाचस्पति 'कुलवन्त'

क्रमशः—

काश्मीर को जैसा मैंने देखा तथा समझा

—आचार्य विष्णुमित्र विद्यामार्त्तण्ड

●

(गतांक से आगे)

हजरतबल मुसलमानों का पवित्र स्थान है। प्रत्येक शुक्रवार को काश्मीर की घाटी से दूर-दूर से मुसलमान नमाज पढ़ने आते हैं। यहां पैगम्बर मुहम्मद साहब का बाल रखा हुआ है। कहा जाता है कि यह बाल मदीना से सन् ग्यरह सौ ग्यारह में सय्यद अब्दुल्ला यहां लाये थे। इस पवित्र बाल के दर्शन दस दिन ही वर्ष में हो सकते हैं। उन दिनों इसको देखने के लिए अनेक मुसलमान पहुँचते हैं। हम सब उस स्थान को देखने गये। एक करोड़ रुपये की लागत से यह स्थान बना है। तीन लाख की लागत से बना जैकोस्लेविया से बनकर आया हुआ एक झाड़ फनूस भी वहाँ बीचों बीच लटका हुआ है। वहां ऊपर की ओर एक झांकी बनी हुई है। वहां के मुल्ला ने बतलाया कि हजरत का पवित्र बाल यहां रखा है। वहां पर एक स्थान पर अनेक रंग के धागे बन्धे हैं, जिन्हें श्रद्धालु लोग अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए बांधते हैं। मुल्ला दर्शक यात्रियों को कुछ जल देके आचमन करने को कहता है। वह आपको कहेगा कि इससे लाभ होता है। बाहर बैठे हुए याचक पैसे मांगते दिखाई देते हैं। वहां पर मुझे कोई भी आकर्षक व्यक्ति दिखलाई नहीं दिया। यह वही स्थल है कि जहां पर मुहम्मद साहब के बाल के कारण झगड़ा खड़ा हो गया था।

पामपुर श्रीनगर से आठ मील के फासले पर है। ये जेहलम नदी के दाईं ओर है। इसके आसपास के दायरे में केसर की उत्पत्ति होती है। केवल मात्र यहीं पर भारत में केसर उपजती है।

पामपुर से दसमील पर अवन्तिपुर मन्दिरों के अवशेष हैं। इसे काश्मीर के राजा अवन्ति वर्मा ने 853 ईस्वी में बनवाया। अवन्तिपुर उसकी राजधानी थी। कुछ दूर

पर यहां दो शिवजी के मन्दिर बनवाये थे। उन पत्थरों पर ब्राह्मी लिपि में श्लोक लिखे गये हैं जिनमें उस मन्दिर के विषय में वर्णन है कि किस राजा ने किस समय इसका निर्माण किया। इन मन्दिरों के विशाल द्वार भूमिगत थे जिनको अंग्रेजी सरकार ने खोद कर बाहर निकलवाया था। अनन्त नाग श्रीनगर से 34 मील दूर है।

श्रीनगर से कोकर नाग जाते हुए 40 मील पर अच्छावल बाग है। ईसा से 427 वर्ष पूर्व राजा अक्ष यहां राज्य करते थे। उन्हीं के नाम पर अक्षावल यहां का नाम पड़ा। समय पर बिगड़ते-बिगड़ते इसका नाम अच्छावल हो गया। शाहजहां की पुत्री ने 1640 में इस बाग का निर्माण कराया। यहां पर पहाड़ की ओर जल का चश्मा (स्रोत) है। बाग के पश्चिम में पुराने हमाम (स्नान घर) के खण्डरात मौजूद हैं जहां से गर्म पानी निकलता था। यहां के सुन्दर झरने, नहरें, चश्मे आदि दर्शकों को मोहित करते हैं।

अनन्त नाग में गन्धक का चश्मा भी है जिसमें नहाने से खाज, दाद आदि दूर होते हैं। यहां की भूमि पर हिन्दु-मुस्लिम विवाद चलता रहा। अन्त में आधा भाग मुसलमानों को दिया गया, यद्यपि वह भाग हिन्दुओं का था।

कोकर नाग (कोकर चश्मा) श्रीनगर से पचास मील दूर है। बड़ा ही स्वास्थ्य-वर्धक तथा सुन्दर स्थान है। यहां के हरित वृक्षों से मण्डित पर्वतों की शोभा निराली है। यह स्थल तो देखते ही बनता है। कुदरत ने मानो सारी सुन्दरता का समावेश यहीं कर दिया है। यही पर धूप में बैठ कर झरने के समीप हमने भोजन किया। इसकी सुन्दरता को बार-बार देखने से भी नेत्र तृप्त नहीं होते थे।

अक्सूम—यह स्थान वन के मध्य में है। चारों ओर विशाल पर्वतों से घिरा हुआ है। पर्वतों पर सीधे परस्पर मिले हुए देवदारु के वृक्ष बहुत ही शोभित होते हैं। झरने यहां पर झर-झर के शब्द से ध्वनित हैं। उनका शब्द आकाश को शब्दायमान करता दिखाई देता है। यह स्थान तपोवन सा प्रतीत होता है। प्राचीन काल के तपोवनों का जैसा वर्णन हम पुस्तकों में पढ़ते हैं उससे अधिक सुन्दरता यहां पर प्रतीत होती है। अतिशय शान्ति का यह स्थान है। यहां पर सरकार की ओर से रेस्टोरेन्ट भी बनाया गया है। एक सड़क का और निर्माण हो रहा है।

सोनमर्ग—यह रमणीक सुनहरी चारागह श्रीनगर से पचास मील पर समुद्रतल से 8750 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। सोनमर्ग का रास्ता सिन्ध घाटी से जाता है। जब हम श्रीनगर से चले तो मार्ग में एक बहुत बड़ी मस्जिद दिखाई दी, जो ग्यारह सौ

वर्ष पुरानी है। उससे आगे काश्मीर के मुख्यमन्त्री श्री शेख अब्दुल्ला का गांव मिला, जो अब प्राय: श्रीनगर से मिल गया है और नगर जैसा ही हो गया है।

सिन्ध घाटी के बीच में सिन्ध नदी बड़ी तेजी से बहती दिखाई देती है। सिन्ध-घाटी कई स्थानों पर तंग तथा कई स्थानों पर विस्तृत है। घाटी में किसानों के घर तथा खेत भी थे। दोनों ओर विशाल पर्वत श्रेणी दिखलाई दे रही थी। पहाड़ों पर और नीचे छोटे-छोटे गांव बसे हुए हैं। कई गांव दो-दो घरों के ही हैं। पहाड़ों पर शहतूत और देवदारु वृक्षों के दर्शन होते हैं। जब हम सोनगढ़ के समीप आने लगे तो हमारे मार्ग के बाईं ओर सूखे पहाड़ सोने के रंग के दिखाई दिये अतः इसे सोनमर्ग भी कहते हैं। पत्थरों से टकरा कर उफनती हुई सिन्ध नदी के वहां दर्शन होते हैं।

जब हम सोनगढ़ से मील भर दूर रहे तब हमारे दोनों ओर पहाड़ों पर बर्फ का अम्बार दिखाई दिया। उस समय वर्षा भी हो रही थी। सड़क से टकरा कर सिन्ध नदी चल रही थी। बस को भी टेढ़ा मार्ग काट कर चलाना पड़ रहा था। उस समय मार्ग में हमको कठिनता तथा भय ने व्याप्त किया पर ड्राईवर बड़ी निर्भयता से उस मार्ग को पार करता रहा।

बहन सुभाषिणी ने उस मार्ग की जटिलता देख कर कहा कि गाड़ी को वापिस मोड़ लो। उस मार्ग के पार करने पर पहाड़ियों पर छोटे-छोटे बालक पशु चराते मिले। वे ड्राईवर को हाथ उठाकर नमस्कार कर रहे थे। वहां पर काली तथा लाल गायें चर रही थीं। वही सड़क लद्दाख की ओर जाती है। वे पहाड़ी भेड़ और बकरियों को लिए जा रहे थे।

सिन्ध नदी पर बने ग्लेसियर पुल का काम दे रहे थे। वे नदी को पिंघल कर जल भी दे रहे थे। पुल का भी उनसे उपयोग किया जा सकता था। दोनों ओर पर्वतों पर बर्फ का पट्टा पड़ा था। बर्फ ही बर्फ दिखाई दे रही थी। वापिस आके सब छात्रायें उतरीं उस समय प्रिंसिपल जवाहर लाल जी ने उनको ग्लेसियर के विषय में समझाया। जो जो भी वहां ऐतिहासिक बातें थीं, वे छात्राओं को समझाते जाते थे। इस प्रकार हम सोनमर्ग पहुँचे। वहां भी ऊपर चढ़ने के लिए टट्टू थे परन्तु वर्षा के कारण हमारी पार्टी का कोई भी सदस्य नीचे नहीं उतरा। फिर वहां एक मकान में बैठ के हम सब ने भोजन किया और वहां से फिर उसी देखे गये दृश्य को पुन: देखते हुए सानान्द वापिस आ गये।

पहाड़ों पर धूएं के आकार के बादल दिखलाई देते थे। ऐसा प्रतीत होता था मानो वहां घास में अग्नि लगने से धूआँ उठ रहा हो। हमारी गाड़ी के चारों ओर भी

बादल छाये हुए थे। सूखे पहाड़ कई स्थानों पर टूटे दिखाई देते थे। वे बहुत ऊंचे थे। उनको देखने के लिए हमको अपना पूरा सिर उठाना पड़ता था। सोनमर्ग के दाईं ओर का पहाड़ हरा-भरा है। पहाड़ों के बीच की बर्फ पिघल-पिघल कर सिन्ध नदी में जल की मात्रा को बढ़ा रही थी। पड़े हुए ग्लेसियर पहाड़ के समान प्रतीत होते थे। सोनगढ़ के मार्ग में एक स्थान पर सिन्ध नदी के जल को रोककर बान्ध बनाया हुआ है जिससे वहां एक नहर चालू की गई है। वहां जाने पर ऐसा प्रतीत होता है कि मानव लोक को छोड़ कर किसी और लोक में आ गये हैं। हम सारे संसार से अलग-थलग पड़ गये हैं। यह स्थल बहुत सुन्दर था। मैं उसे बार-बार स्मरण करता हूँ।

15 मई को हम पहलगांव की यात्रा के लिए चले। पहल गांव श्रीनगर से साठ मील है। समुद्र तल से 7000 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। लीदर और तानिन नदियों के संगम पर स्थित है। यह स्थान स्वास्थ्य वर्धक है। यहां पर ठहरने के लिए टूरिस्ट हट, बंगले तथा रेस्टोरेन्ट भी हैं।

हम श्रीनगर से चलकर खुनमुह (क्षणमोक्ष) गांव में पहुँचे। हमको बतलाया गया कि यह गांव कल्हण कवि का था। हमारे प्रिंसिपल जवाहरलाल जी का भी यही गांव है। मैं बस से उतर कर उनके खेत में गया, जो बादामों के वृक्षों से घिरा हुआ है। जो चालीस एकड़ खेत है। उस दिन वर्षा हो रही थी। वहां की मिट्टी जूतों पर ऐसे चिपट गई जिस प्रकार रेहिली मिट्टी जूतों को चिपटती है। वहां से आगे ज्वाला जी का मन्दिर है। जो प्राचीन मन्दिर है। यह स्थल अनन्तनाग जिले का माना जाता है।

जब हमारी बस पहल गांव की ओर चल रही थी तब सड़क के दोनों ओर बादाम और अखरोटों के वृक्ष इस प्रकार खड़े थे जिस प्रकार हरियाणे की सड़कों पर कीकर या सफेदे के वृक्ष खड़े रहते हैं। सड़क पर जो गांव मिले वे पक्के थे। मार्ग सारा मैदानी था। बीच में केसर के विशाल खेत भी हमको मिले। वहां पर विशाल भूभाग पर्वतों से दूर था। ऐसा प्रतीत होता था मांनो यहां कोई पहाड़ ही नहीं है।

वहां पर जेहलम नदी के साथ लीदर नदी के दर्शन होते हैं। यात्रा के दिन लगातार वर्षा होती रही। काश्मीर में अप्रैल तथा मई मास वर्षा का माना जाता है। मार्ग में रेतीले विशाल टीले दिखाई दे रहे थे। जिन पर वर्षा का पानी पड़ने से रेतीला जल होकर लीदर नदी में पड़ रहा था। जल के निकास के लिए सड़कों के नीचे मार्ग बनाये हुए थे।

पहल गांव के पांच छः किलो मीटर दूर रहने पर दोनों ओर विशाल पर्वत दिखलाई देने लगे। गर्दन उठाने पर भी जिनकी शिखर न दिखाई देती थी। यह स्थल

बादाम, अखरोट, नाशपाती, शहतूतों से पूर्ण है। वहां की गाय काली और लाल हैं। वहां कोई भी भैंस नहीं है। पहल गांव के चारों ओर पर्वतों पर देवदारु के वृक्ष हैं। लीदर और तानिन नदियां अपनी ध्वनि से दर्शकों के कर्ण-कुहरों को आप्लावित करती हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि विधाता ने प्रकृति का सारा सौन्दर्य यहां लाकर इकट्ठा कर दिया है।

पहाड़ों के मध्य में वर्तमान बर्फ मानो नदी के जल में मिलने के लिए आतुर हो रही हो। मैं तथा बहन सुभाषिणी एक पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गये वहां पर बैठ कर पहल गांव की शोभा को निहार कर बहुत आनन्दित हुए। अनेक यात्रिगण अपनी महिलाओं को तथा स्वयं टट्टुओं पर सवार हो पहाड़ों के ऊपर की यात्रा कर रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि यह भूलोक का स्वर्ग हो। कुछ मनचले युवा अपनी महिलाओं के गले में हाथ डाल कर या उनका हाथ पकड़ कर चल रहे थे। यह सभ्यता की दृष्टि से हम को अच्छा नहीं लगा। पहल गांव में एक ही विस्तृत बाजार है वहां बड़ी सफाई रहती है। पहाड़ी लोग यात्रियों को यात्रा कराने के लिए अपने टट्टुओं को दौड़ाते वहाँ मिलेंगे। सब ऊनी कपड़े की अलफी पहने मिलेंगे। वहां की दुकानें सजी मिलेंगी। दुकानदारों के एजेन्ट आपको बार-बार अपनी दुकान पर ले जाने का आग्रह करेंगे।

रात्रि को हम वहीं ठहरे। बड़ी ठण्ड थी। दो-दो रजाई लेने पर भी ठण्ड का आभास रहता था।

लगभग तीन बजे हम वहां से चलकर मार्तण्ड मन्दिर में पहुँचे जो कश्यप मुनि की तपस्यास्थली माना जाता है। वहां भी चश्मा है। सुन्दर तथा ऐतिहासिक मन्दिर है। मांगने वाले वहां भी पिण्ड नहीं छोड़ते हैं। फिर हम वेरी नाग पहुँचे। यह जेहलम नदी का उद्गम स्थल है। वेरी नाग चश्मे के चारों ओर एक अष्टकोण तालाब बना हुआ है। किनारे पर इसकी गहराई दस फीट है और बीच में इसकी गहराई चव्वन फीट है। तालाब के बाहर सुन्दर बाग है। इसे 1612 में जहांगीर ने बनवाया था। यह स्थल भी देखने योग्य है।

इसके बाद हम बेनीहाल में रात्रि को ठहर कर प्रातः चलकर अमृतसर ठहरे। वहां से प्रातःकाल चलकर सायंकाल आठ बजे 18 मई को खानपुर में वापिस आये।

इस यात्रा में बहन वीणा, बहन किरण आदि ने सब के भोजन आदि का सुप्रबन्ध किया। सारी व्यवस्था प्रिंसिपल जवाहर लाल द्वारा की गई थी। यह यात्रा मुझे सदा स्मरण रहेगी।

समाजवाद बनाम पूंजीवाद

— यशःपाल सिंह 'विद्यालंकार'
मतलौढ़ा (हिसार)

एक समय था जब कि भारत वर्ष में राजा और रंक एक ही पाठशाला में समान खाना खाकर एक ही गुरु से बराबर की शिक्षा पाते थे। सुदामा, कृष्ण, अश्वत्थामा, अर्जुन, द्रोणाचार्य,द्रुपद ये हमारे समक्ष कुछ उदाहरण हैं जो प्राचीन भारत वर्ष की साम्यवादी नीति को स्पष्ट उद्‌घाटित करते हैं। मेरे कहने का अभिप्राय यह नहीं कि प्राचीन काल में गरीबी नाम की कोई वस्तु थी ही नहीं, गरीबी जरूर थी, मगर आज कल की तरह अमीर गरीब के बीच की खाई, अस्पृश्यता का नामोनिशां नहीं था। मैं यह भी मानता हूँ कि भारत वर्ष में आज भी ऐसी पार्टियां, ऐसे नेता, ऐसे ग्रुप्स की कमी नहीं जो यह चाहते हैं कि सब को समान रोटी, कपड़े और मकान का अधिकार मिले। मगर क्या कारण है इतना अधिक प्रयत्न इस ओर किए जाने पर भी पूंजी वादी लोग समाज वाद की आवाज का गला घोंट रहे हैं? देश में महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, चरित्रहीनता, तस्करी, अनैतिकता, विद्रोह, चोर बाजारी, अपहरण, बदइन्तजामी दिन प्रतिदिन क्यों बढ़ती जा रही है? समाज के साथ ऐसा अन्याय क्यों हो रहा है? सरकारी तथा गैर सरकारी विभागों, कार्यालयों, कारखानों, स्कूलों, कालेजों तथा विश्व विद्यालयों में देश व्यापी हड़तालों एवं सत्याग्रहों का होना क्या इस बात का प्रमाण नहीं है कि इस लोकतन्त्र में आर्थिक और सामाजिक न्याय को समाप्त करके कुछ पूंजीपति लोग अपनी तिजोरियां भरकर विद्रोह के लिए जनता को मजबूर कर रहें हैं। आज भारतीय समाज में आर्थिक विषमता दीवार बनकर खड़ी है। जब तक इस दीवार को तोड़ा नहीं जायेगा तब तक सच्चे अर्थों में प्रजातन्त्र कायम नहीं किया जा सकता। न्याय की प्राप्ति के लिए जनता विद्रोह करे और सरकार के कानों पर जूं तक न रेंगे यह कहां के लोकतन्त्र की परिपाटी है? कंझावला के गरीब किसानों की कशमकश इसी बात का प्रत्यक्ष उदाहरण है। यदि गरीबों को जमीन देनी भी है तो क्या सरकार पूंजीपतियों के पैसे से खरीद कर नहीं दे सकती? अपने इस लोकतन्त्र के ढकोसले को और जरा नजदीकी से देखिए बेरोजगारी की समस्याएं देश के कोने कोने में दावानल की भांति धधक रही

हैं और साधनहीन व्यक्ति को अपनी आहुति न चाहते हुए भी उसमें झोंकनी पड़ती है। एक पूंजीपति के पुत्र को तो सर्विस की अपेक्षा न होते हुए भी उसे सर्विस जबरन देदी जाती है मगर एक गरीब किसान के पुत्र को, जिसका गुजारा सर्विस के बिना नहीं हो सकता, डिग्री और डिप्लोमा उठाये दर दर की ठोकरें खानी पड़ती हैं मगर फिर भी हाथ कुछ नहीं आता। इसका सबसे बड़ा तथा मुख्य कारण पब्लिक स्कूलों का प्रचालन है जिसकी फीस भी गरीब आदमी अदा नहीं कर सकते। ऊंची पोस्ट्स इसीलिए पूंजी-पतियों के हाथ लग जाती हैं। आज 30 वर्ष आजादी के बाद भी लोग इसीलिए परेशान हो रहे हैं :—

"पंछी यह समझते हैं कि चमन बदला है,
हंसते हैं सितारे कि गगन बदला है।
मगर श्मशान की खामोशी यह कहती है,
कि है लाश वही मगर कफन बदला है।।"

गरीब आदमी को ऊपर उठने में इसीलिए समय लगता है कि उसके पास पैसा नहीं होता और न हि वह किसी के झूठे गीत गाना चाहता है। वह तो उन लोगों की पोल खोलना चाहता है जो रहते हैं शीश महलों में, चाहते हैं गरीबों की झोपड़ियों पर पत्थर फेंकना, पीते हैं बीयर और जूस, प्रचार करते हैं भारत गरीब है। भूखी जनता बहकावे में आ जाती है फिर पैसे वालों के हाथों में इनकी गर्दन होती है। भुखमरी की समस्या ला इलाज होती जा रही है। इस लोकतन्त्र में गरीबों की रक्षा करने की किसी को फुर्सत नही है। भिखारी कब कहता है कि इतना दो फिर उसके बाद इतना और दो। परन्तु महान् गणतन्त्र भारत के शासकों को 'गरीबों की सहायता' का लेबल लगाकर झोली पसारे मांगने की आदत है। इन राज्यधिकारियों को स्वावलम्बन का श्रम पसन्द नहीं है। टी०वी० पर अपना चित्र दिखाने का शौक पूरा करने की नीति का और क्या परिणाम हो सकता है ? यही कारण है कि भारत की आन्तरिक स्थिति कमजोर होती जा रही है।

गणतन्त्र में जनता की इच्छाओं का पालन करने वाला, प्रतिनिधित्व करने वाला कानून होता है। क्या इस 30 वर्ष के प्रजातन्त्र में सरकार ने जनता की भावना का आदर किया है ? राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी भारत में रामराज्य का स्वप्न लिया करते थे। राम के राज्य में तो कुत्ते जैसे साधारण प्राणी को भी न्याय मिलता था। परन्तु खेद है कि आज इस देश में निरपराध तथा घी, दूध, दही, मक्खन और चमड़ा तक देकर परोपकार करने वाली करोड़ों गायों को प्रतिवर्ष मौत के घाट उतार दिया जाता है। न्याय मांगने वाली जनता तथा साधु सन्तों एवं नेताओं पर लाठीचार्ज किया जाता है, गोली वर्षा की जाती है, इतना ही नहीं जेलों में बन्द करके यातनायें दी जाती हैं।

इस प्रजातन्त्र में सामाजिक भेदभाव बढ़ता चला जा रहा है यदि गरीब आदमी सूत कातता है तो दुनियां उसे जुलाहा कहती है, मगर यदि यही काम अमीर करे तो बिरला, टाटा और मोदी के नाम से विख्यात हो जाता है। यदि गरीब आदमी जूता गांठता है तो लोग उसे चमार कहते हैं मगर यदि यही काम अमीर आदमी करे तो बाटा के नाम से प्रसिद्ध हो जाता है। क्या इसे सामाजिक न्याय कहा जा सकता है? लोकतन्त्र में इस प्रकार की ऊंच नीच, जात-पात की भावना का क्या काम? जब संविधान द्वारा सब को समान अधिकार हैं तो यह भेदभाव क्यों?

हमारे बुजुर्ग कई बार दुःखी होकर कहते हैं कि इस राज्य से तो अंग्रेजी शासन भी अच्छा था। बात चाहे कुछ भी हो लेकिन शासन के ढांचे को देख कर बड़ा दुःख होता है। कोई किसी की सुनने वाला नहीं सब को अपना पेट भरने की लगी हुई है। गरीबों के लिए न्यायालय के दरवाजे बन्द हैं। उन्हें कोई पूछने वाला नहीं क्योंकि वे कोर्ट की फीस अदा नहीं कर सकते। जिस देश में न्याय बिकने लगे उसकी जनता यदि विद्रोह न करे तो और क्या करे? साधारण व्यक्ति प्रजातन्त्र से पहले रहने के लिए मकान, पहनने के लिए कपड़ा और खाने के लिए रोटी चाहता है। परन्तु जिस देश में जनता को ओढ़ने के लिए आसमान, बिछाने के लिए जमीन, पीने के लिए आंसू और खाने के लिए ग़म मिले तो क्या वे प्रजातन्त्र को चाटेंगे? वे यह नहीं देखते कि सरकार कैसी है उसे तो गुजारा चाहिए।

आर्थिक तथा सामाजिक न्याय प्रजातन्त्र के दो आधारस्तम्भ हैं। विशेषकर इस भौतिकवादी युग में पैसे का महत्त्व बहुत बढ़ गया है। 'सर्वे गुणा। काञ्चनमाश्रयन्ति' के अनुसार जिसके पास पैसा है उसमें सब गुण माने जाते हैं। कौन चाहता है निर्धन रहना? कौन चाहता है कि उसका शोषण हो? कौन चाहता है कि समाज में उसे नीचा समझा जाये और घृणा की दृष्टि से देखा जाए? सब के लिए समान अवसर मिलना चाहिए। इसके बिना सुखी जीवन बिताना कठिन होता है:—

"जब तक मानव मानव का सुखभाग नहीं सम होगा।
शमित न होगा कोलाहल संघर्ष नहीं कम होगा॥

मैंने जो समस्याएं ऊपर प्रस्तुत की हैं मेरे ख्याल से पाठक इन से सहमत होंगे परन्तु मैं सोचता हूँ इनका समाधान क्या है? हम इनका हल नहीं निकाल सकते? क्यों नहीं? असम्भव नाम की तो कोई वस्तु इस संसार में है ही नहीं। लेकिन यह तभी हो सकता है जब कोई गरीब किसानों का मसीहा, पूंजीपति प्रधानमन्त्री की जगह लेगा। जिस नेता ने स्वयं ज्येष्ठ मास की कड़कती लूओं में खेत में पानी देकर नहीं देखा,

दिसम्बर, जनवरी की सर्दी में गेहूँ की रखवाली नहीं की, हल का मुन्ना नहीं पकड़ा, वह इन गरीबों के दु:ख को क्या समझ सकता है? यही कारण है कि जब भी जो भी नेता संसद में गरीबों की आवाज को उठाता है उसकी टांगें खींच कर उसे गिरा दिया जाता है। जनता के वोट से मन्त्रीपद पाकर नेता लोग जनता के दर्द को भूल जाते हैं।

शेष ये लोग प्रत्येक प्रान्तीय शासन में भी किसान नेताओं को गिराने की कोशिशों से बाज नहीं आ रहे। यदि रवैया इसी प्रकार चलता रहा तो गरीब तबका अपने उस मसीहे के लिए बगावत पर भी उतर आयेगा इसमें कोई सन्देह नहीं। समाजवाद को लाने के लिए किसान वर्ग का उत्थान आवश्यक है। मेरा अभिप्राय: यह नहीं कि पूंजीपतियों का पैसा लूट कर किसानों में वितरित कर दिया जाये। किसान इमानदारी का खाता है, मेहनत का खाता है, शेर की तरह वह दूसरे के शिकार से गुजारा करना पसन्द नहीं करता। उसे तो सिर्फ उसकी फसल का वाजिब दाम चाहिए। यदि उसकी मेहनत की उचित कीमत उसे मिल जाये तो मजदूर किसान तो स्वमेव पूंजीपतियों के समकक्ष आ सकते हैं। झगड़ा तो यही है कि ऊपर बैठे कुछ नेता लोग उसके साथ पक्षपात बरतते हैं। अन्त में इस विषय में मेरा तो यही कथन है कि—

"तुलसी के पत्ते सूखे हैं और कैकटस आज हरे हैं।
आज राम को भूख लगी है, रावण के गोदाम भरे हैं॥"

अत: चोरबाजरी तथा अवैध बटोरने वालों के साथ सरकार को सख्ती से पेश आना चाहिए।

उबटनों का चमत्कार—त्वचा का निखार

—डा० राजवीर, रोहतक रोड़, गोहाना

★

साबुन का प्रयोग त्वचा के सौन्दर्य के लिए घातक सिद्ध होता है। आप उबटन के प्रयोग के पश्चात साबुन न लगायें। उबटन शरीर के मैल को साफ कर रोमछिद्रों को स्वयं ही खोल देता है।

★थोड़ी-सी धुली हुई (छिलका रहित) मसूर की दाल रात्रि को इतने दूध में भिगो दें कि वह अच्छी तरह फूल जाए। प्रात:काल को पीस कर उसमें नीम्बू का रस मिलाकर उबटन करें। मुहाँसे, कील, झाइयां दूर होकर त्वचा निखरेगी।

[शेष पृष्ठ 25 पर]

नशा-बन्दी

—धर्मपाल सिंह मलिक, एडवोकेट
गोहाना (सोनीपत)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह समाज के बिना रह नहीं सकता। उसके तीन पक्ष होते हैं—सामाजिक, पारिवारिक तथा व्यक्तिगत। वह दुःखों से बचने का सतत प्रयास करता है। सांसारिक जीवन में मनुष्य को अनेक प्रकार की कुण्ठाओं तथा कठिनाओं का सामना करना पड़ता है। फलस्वरूप उसे मानसिक एवं शारीरिक क्लांति का अनुभव होता है। कभी-कभी उसका मन अत्यधिक खिन्न भी हो जाया करता है। चूंकि वह चेतन और चिन्तनशील प्राणी है। अतः वह किसी भी बात को तर्क की कसौटी पर किये बिना नहीं रहता। इसका प्रभाव उसके मन पर आवश्यक रूप से पड़ता है। प्रत्युत वह अपनी इस मानसिक क्लांति को मिटाने के लिए विह्वल हो उठता है। विभिन्न प्रकार के मनोरंजन के साधनों की ओर अग्रसर होता है। क्योंकि मनुष्य की मानसिक स्थिति कभी-कभी ऐसी हो जाती है कि वह एकान्त रूप से किसी प्रकार अपने दुःख और मानसिक वेदना को मिटाने का या भुलाने का उपाय ढूंढ़ता है। उन्हीं उपायों में नशों का सेवन भी सम्मिलित है। नशे से रक्त-संचार में एक प्रकार का धुन्धलापन सा छा जाता है जिसके परिणाम स्वरूप वह अपनी सामान्य स्थिति से अवगत न रह कुछ समय के लिए खोया सा जाता है और उसकी मानसिक शक्ति स्थिल पड़ जाती है, इससे उसे शान्ति मिलती है। यह क्रम उस में नशे की आदत डाल देता है, जिसका परिणाम यह होता है कि उसकी अवस्था अपनी सहन शक्ति से बाहर हो जाती है और समाज की सामान्य गति-विधि में व्यतिक्रम उत्पन्न होने लगता है। तब उस पर भांति-भांति के आक्षेप होने लगते हैं। समाज की दृष्टि में उस व्यक्ति का सम्मान गिर जाता है और वह समाज के लिए हानिकारक माना जाता है। समाज में "बहुजन हिताय" और "बहुजन सुखाय" कानूनों का निर्माण किया जाता है। इस लिए 'नशा बन्दी' आवश्यक मानी जाती है।

संसार में अनेक ऐसी वस्तुएं हैं जिनके सेवन से नशा हो जाता है। इसमें कुछ अधिक नशीली होती हैं तो कुछ कम। भांग, शराब, अफीम, तम्बाकू आदि सैंकड़ों वस्तुएं ऐसी हैं जिनके सेवन से नशा होता है। सरकार ने नशीली वस्तुओं के व्यापार पर

रोक लगाई है परन्तु इस विभाग से उसे पर्याप्त लाभ प्राप्ति है। यह पैसा नशा सेवन करने वालों से दुकानदारों के माध्यम से सरकार के कोष में जाता है। नशीली वस्तुओं के भाव कराधिक्यवश ऊंचे होते हैं। परिणामस्वरूप कुछ लोग चोरी-छुपे इनका व्यापार करते हैं, उन्हें सरकार 'दण्ड-विधानान्तर्गत' दण्ड पाने से वंचित नहीं रखती। तथापि यह कर्म होता ही है। नशे का सेवन करने वाले प्रारम्भ में तो उसका क्षणिक सुख लाभ पाते हैं किन्तु कालान्तर में यह उनकी आदत में परिणित हो जाता है। तदुपरान्त वे आदत से लाचार हो प्रत्येक दशा में उसको पीना चाहते हैं।

नशे की आदत से मनुष्य का विवेक कुण्ठित हो जाता है। उसकी निर्णायक शक्ति समाप्त हो जाती है और वह अधिकाधिक निरीह, आलसी और भोगलोलुप हो अपने स्वत्व पर निरन्तर कुठाराघात करता रहता है। इससे उसकी कार्यक्षमता में ह्रास होता है, पाचन शक्ति क्षीण हो जाती है एवं हृदय की शक्ति घट जाती है। नशा करते-करते एक समय ऐसा आ जाता है कि मनुष्य उस स्थिति में पहुँच जाता है कि वह उसके बिना रह ही नहीं सकता। वह अपना सब कुछ देकर भी नशा चाहता है। यद्यपि सुरापान पराचीन समय से ही, न्यूनाधिक मात्रा में, चला आ रहा है तथापि आज के युग में सभ्यता, संस्कृति एवं मानव-हितैषियों ने इसे एक कु कृत्य बताया है। यह कर्म आधुनिक समाज में निन्दनीय माना जाने लगा है। नशा-बन्दी के समर्थन में प्रत्येक धर्म-ग्रन्थ से प्रमाण प्रस्तुत किये जाते हैं। वेदों और उपनिषदों में नशों को बल एवं बुद्धि का नाशक कहा है। बाइबल में भी नशे के विरुद्ध स्थान-स्थान पर चेतावनी दी है। मोहम्मद साहब ने भी स्पष्ट किया है कि नशों में शैतान का वास है। इतिहास भी इसका साक्षी है कि महान् रोम साम्राज्य और शक्तिशाली मुगल राज्य के पतन के कारणों में मुख्य नशा रहा है। प्रत्युत आरम्भिक काल से ही नशा बन्दी की बात भी चलती आ रही है।

भारत सरकार ने जनता का सामाजिक स्तर उन्नत बनाने के लिए नशा-बन्दी के लिए कानून बनाया है, जिसके असुसार केवल कुछ लाइसेन्स प्राप्त व्यक्ति ही नशीली वस्तुओं को बेच सकते हैं। साधारण व्यक्ति नशीली वस्तुओं को यदि लिए हुए पाया जाता है तो उस पर मुकदमा चालाया जाता है। अभियोग प्रमाणित हो जाने पर उसे दण्ड दिया जाता है। इस कानून का अभिप्राय है कि जनता को नशीली वस्तुओं के प्रयोग से बचाना। यह कानून लाभकर भी हो रहा है। नशीली वस्तुओं की प्राप्ति में कठिनाइयां होने के कारण साधारणतया लोग इनके चक्कर में नहीं पड़ते। वैसे तो नशों में सत्ता का नशा, धन का नशा और अपनी शक्ति-सुख-वैभव आदि का नशा भी सम्मिलित है किन्तु मुख्य रूप से जब नशाबन्दी की बात आती है तो उसका तात्पर्य शराब-बन्दी से होता है।

नशा-बन्दी हमारे ही देश में नहीं अपितु अन्य देशों में भी चर्चा का विषय रही है। 1923 में अमरीका ने अपने देश में नशा-बन्दी लागू की थी किन्तु किन्हीं कारणों से यह असफल रही। तदुपरान्त चीन में अफीम के सेवन पर रोक लगाई किन्तु वहां पर भी यह प्रयोग सफल न हो सका। भारत वर्ष में स्वतन्त्रता से पूर्व अनेक समाज-सुधारकों ने लोगों का ध्यान इस ओर खींचने का प्रयास, किया। राजा राम मोहन राय, केशव चन्द्र सेन, डा० एनी बेशन्ट, टैगोर, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द एवं अन्य महा पुरुषों यथा महात्मा गान्धी आदि ने नशाबन्दी को आवश्यक समझा। सन् 1947 ई० में जब देश स्वतन्त्र हो गया तो विधायकों ने नशाबन्दी के लिए अनेक प्रस्तावों के प्रारूप तैयार किये। कतिपय संशोधनों के उपरान्त उन्हें विधिरूप भी प्राप्त हो गया फिर भी पूर्ण नशाबन्दी न हो सकी और अब भी असम्भव सी जान पड़ती है। इसका प्रभाव प्रथम श्रेणी की जनता से लेकर साधारण जनता तक तथा उच्चाधिकारियों से लेकर कुलियों तक में किसी न किसी रूप से व्याप्त है। बड़े-बड़े व्यवसायी धनी-रईस, बड़े-बड़े अधिकारी प्राय: नशीली वस्तुओं के सेवन से बन्धे पड़े हैं। मध्यमवर्ग के लोग अपनी परेशानियों को भुलाने के लिए इसकी शरण में जाते हैं। फिर भी शराब-बन्दी को ही यदि वास्तविक नशाबन्दी का नाम दिया जाये तो यह कोई असम्भव कार्य नहीं है। इसके लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा, नैतिकता, धार्मिक संस्थाओं और कानून का सहारा लिया जाये। वास्तव में सही अर्थों में यदि सोचा जाये तो नशाबन्दी का उचित-आन्दोलन महात्मा गान्धी ने इस कुकृत्य को संसार का सर्वाधिक घातक कर्म माना है। कहा गया है—ज्यों-ज्यों शराब अन्दर जाती है त्यों-त्यों बुद्धि बाहर आती है। मनुष्य चिन्तनशक्ति से विरहित हो किंकर्त्तव्य-विमूढ़, पाषाण, प्रतिभा से अलग कुछ नहीं रह जाता।

नशाबन्दी के मार्ग में कुछ कठिन समस्यायें भी हैं। जहां वर्तमान में गुजरात और तामिल नाडु में पूर्ण नशाबन्दी है वहीं दूसरी ओर आन्ध्र प्रदेश, बंगाल और आसाम में लाखों लोग ताड़ी निकालने के धन्धे के कारण अपनी रोटी कमाते हैं। अतः विपक्षियों का कथन है कि ये सब बेरोजगार हो जायेंगे। इसके साथ ही सरकार को नशों पर लगाये गये करों आदि से जो लाभांश प्राप्त होता है वह समाप्त हो जायेगा। फिर भी नैतिकोत्थान हेतु यह सब कुछ सहन भी किया जा सकता है और इसी के अनुकूल 1 अक्तूबर 1975 को गांधी जयन्ती दिवस 'न्यूनतम-योजना' रूप में नशाबन्दी लागू करने की उद्घोषणा की। इसके अनुसार होटलों, छात्रावासों, क्लबों आदि तक में नशाबन्दी पर आचरण किया जाना आवश्यक ठहराया। इसके साथ ही शराब सम्बन्धी विज्ञापनों पर रोक लगाई गई। प्रधान मन्त्री श्री मोरार जी देसाई ने कुछ दिनों पहले अपने एक भाषण में बलपूर्वक आग्रह किया कि नशाबन्दी के बिना

राष्ट्र को सामाजिक, नैतिक और आर्थिक विकास के पथ पर अग्रसर नहीं किया जा सकता, विशेष रूप से निम्न वर्ग के लोगों को। उन्होंने कहा कि वे नशाबन्दी के लिए कृतसंकल्प हैं और अपने अन्तिम क्षण तक इसके लिए जूझते रहेंगे। यहां तक कि उन्होंने लोगों को शराब की दुकानों के सामने, जो कि शिक्षा-संस्थाओं और धार्मिक स्थानों के समीप तक खुली हैं, सत्याग्रह करने का अनुरोध किया।

संक्षेप में यदि कहें तो कहना न होगा कि शराब पीने वाले को निम्नतम स्तर तक घसीट लाती है। यह मनुष्य को उस प्रत्येक अंश से वंचित कर देती है जिसके द्वारा वह निम्न स्तरीय श्रेणियों से उच्च कोटि का माना जाता है। अतः इस का लागू किया जाना न केवल राष्ट्र गौरव को चार चान्द ही लगायेगा अपितु संसार के दूसरे राष्ट्रों के समक्ष एक आदर्श भी प्रस्तुत करेगा।

इसके लिए सभी शिक्षा-संस्थाओं, धार्मिक संस्थाओं, राज्य सरकारों तथा केन्द्रीय सरकार का सहयोग आवयक रूप से वांछनीय है।

[पृष्ठ 21 का शेष]

★ दो चम्मच जौ का आटा, एक चम्मच बेसन, एक चम्मच सरसों का तेल थोड़ी सी हल्दी इन सबको मिलाकर इतना दूध भी मिलायें कि गाढ़ा-सा पेस्ट बन जाए। अब इस पेस्ट को त्वचा पर लेप कर दें और कुछ समय बैठी रहें। जब लेप सूखकर सख्त हो जाए तो मल कर छुटा दें।

★ चने का बेसन, हल्दी तथा सरसों के तेल को मिला कर उबटन करने से त्वचा कोमल होकर निखरती है।

★ शहद, दूध की क्रीम तथा बेसन मिला कर शरीर पर मालिश करने से त्वचा की शुष्कता, झुरियां आदि मिट जाती हैं।

★ बादाम की कुछ गिरियां दूध में भिगोकर पीस लें। इसमें थोड़ा जैतून का तेल (आलिव आयल) मिला कर उबटन करें। त्वचा स्वस्थ होकर चमक उठेगी।

(क्रमशः इसी अंक में)

****

स्वभाव की चमक-दमक

—कुमारी सुनीता मलिक

"जिन्दगी जिन्दा-दिली का नाम है।"
मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं।।

- हंस मुख जीवन के सिवा कोई असली जीवन नहीं हैं। —एडिसन
- मधुर-वाणी उस मधु के समान है जो आत्मा को मधुर लगता है और हड्डियों को स्वस्थ रखता है।

—सोलोमन

- मीठी बोली से संसार सुखी हो उठता है।
- नेकी से उतर कर मनोरंजन ही ऐसी वस्तु है जिसके बिना हमारा निर्वाह नहीं हो सकता है।

—स्ट्रोनीस स्ट्रिकलेंड

- पवित्र मजाक का मेरी दृष्टि में वही सम्मान है जो ईसाइयत के दस आदेशों का है।

—डब्ल्यु० एच० ब्ला०

- मनोहारी स्वभाव या विनोदी प्रकृति ही सफलता की आत्मा है।

—मैथ्यूज

- दो ही सर्वोत्तम वस्तुएं हैं। एक मधुरता व दूसरी चमक या नूर।

—स्विफ्ट

- खिले मुखड़े से हर भेंट स्वयं एक उत्सव बन जाती है और इसी से सम्मान का मोल बढ़ जाता है।

—मर्सिजर

- खुश दिली से केवल स्वयं ही खुशी नहीं, अपितु दूसरों को भी यह एक आमन्त्रण है।

—सी० बक्संरन

प्रसन्नचित्तता क्या है ? इसका शाब्दिक अर्थ तो मैं आपको नहीं बता सकती हां ! इतना अवश्य कह सकती हूँ कि हंसी वह तेल है जिसके बिना जीवन रूपी मशीन बिगड़ जाती है। इतना ही मेरे जीवन का अनुभव है। एक नवयुवक ने अपने एक ऐसे मित्र से, जो विकल और उदासिन रहा करता था। कहा—आप हर बात का जगमगाता पहलू देखा करें ?

उसने उदासी से कहा—'जगमाता पहलू है ही नहीं ?'

तब उसी नवयुवक ने कहा—'यदि ऐसी बात है, तो अन्धेरे पहलू को ही रोगन लगा कर जगमगा लिया करें।'

उदाहरण का संकेत यही है कि संसार श्रेष्ठतम और ज्यादा चमकदार बन सकता है। यदि लोगों को यह सिखा दिया जाये कि खुश रहना उनका कर्त्तव्य है और कर्त्तव्य की पूर्ति से क्या सुख मिलता है। स्वयं हर्षित रहने से दूसरों के हर्ष में अपार वृद्धि होती है। स्वभाव की चमक-दमक ही जीवन का असली रूप है।

"जो चाहता है कि दुनिया खुश रहे हरदम।
तो अपने दिल में खुशी की तरंग पैदा कर॥

कभी आपने बिली ब्रे का नाम सुना है ? यह व्यक्ति बड़े निराले और स्थायी चरित्र का स्वामी है उनके धर्म में सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वह हमेशा हर्षोल्लास से लबरेज रहता था कुछ लोगों को उसकी असीम आत्मिक प्रसन्नता से कुढ़न भी होती है यहां तक कि उन्होंने एक दिन उसे धमकी दी थी अगर उसने सभा-सम्मेलनों में ईश्वर का गुणगान बन्द न किया तो उसे ढोल में बन्द कर दिया जायेगा इस पर भी बि ली ब्रे ने कहा—"तो क्या हुआ ! मैं ढ़ोल के मुंह में से ईश्वर का गुणगान करता रहूँगा।"

हमें ऐसा व्यक्ति बनना है जो गाता-चहकता अपने काम में जुटा रहता है, जो थोड़े ही समय में अधिक काम निपटा लेता है गुनगुनाते अधरों के साथ किये श्रम की थकान का व्यक्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। चहकते हुए मन की शक्ति आश्चर्यजनक होती है। उसकी सहन-शक्ति का अनुमान लगाना सरल नहीं। प्रयत्नों को यदि स्थाई रूप से लाभकारी बनाना हो तो उसके लिए अनिर्णय है हर्ष भरा मन, आलोक से जगमगाता चेहरा और उमंगों से भरपूर हौंसला।

"उमर बढ़ती है सदा तबस्सुम से।
खिलखिलाएं अगर, तो क्या कहना॥"

प्रसन्न चित्त लोग, जो सदा चित्त के उजागर पहलु को देखते हैं, पराजय को विजय में बदलने के लिए सजग रहते हैं। वे लोकप्रिय बन जाते हैं और न केवल स्वयं प्रसन्न रहते हैं, अपितु दूसरों की भी प्रसन्नता का कारण सिद्ध होते हैं।

खुशमिजाजी में असीम सुख होते हैं। जब आत्मा अपनी खिड़कियों के सभी पट खोल देती है, चमक-दमक को अन्दर प्रविष्ट होने देती है हर दर्शक को प्रसन्नता का प्रमाण देती है तो वह आत्मा न केवल स्वयं प्रफुल्लित होती है अपितु उसमें दूसरों की भलाई करने की असीम शक्ति आ जाती है जितनी भी सम्पन्नतायें हैं उसमें विकास होने लगता है—"धन्य हैं ऐसे लोग जो स्वयं खुश रहते हैं। जिस तरह रोग में दवा का फायदा होता है उसी तरह हंसोड़ व्यक्ति निराशा, दुःख और विषाद को मुस्कान में बदल देता है।

"जब भी सम्भव हो, हंसो ! यह बड़ी सस्ती औषधि है।"

हे परमात्मा ! अगर मुझे उस सन्दूक का पता लग जाये जिसमें मुस्कुराहट बन्द है, फिर चाहे कुन्जी कितनी ही बड़ी हो और शृंखला कितनी ही मजबूत क्यों न हो मैं इतनी कड़ी मेहनत करूंगी कि सन्दूक खुल कर ही रहेगा। फिर मैं उसमें बन्द मुस्कराहटें खोल कर ब्रह्माण्ड में बिखेर दूंगी कि वे अपना काम करें और शिशुओं के मुखड़े उन्हें अपने में समेट लें और सदा-सदा के लिए सुरक्षित बने रहें।

"केवल एक आता जाता विचार, एक मुस्कान या हिम्मत बढ़ाने वाला एक शब्द ऐसे-ऐसे बोझ हल्के कर देता है, जिन्हें अन्य कोई शक्ति हिला भी नहीं सकती।"

"खेल समझे है जो मेहनत को वही खुशबाज है।
इससे बढ़ कर हम नहीं समझे कि खुशबाजी है क्या ?"

चरित्र–गौरव

—सुश्री कान्ता आनन्द
A-55/1, सुदर्शन पार्क,
नई दिल्ली, 110015

मानव का व्यक्तित्व उसके चरित्र में रहता है। चरित्र के कारण ही एक मानव को दूसरे से अधिक आदरणीय समझा जाता है। यह ठीक है कि मनुष्य का सम्मान उसके पद, धन, बल अथवा शिक्षा के कारण भी होता है, किन्तु ये सब एक प्रकार के बाह्य स्रोत हैं। पद अस्थायी है और यदि वह स्थायी भी हो तो भी उससे प्राप्त सम्मान में भय का समावेश रहता है। इसी प्रकार धन का आदर भी धनी से लाभ-प्राप्ति के कारण किया जाता है। बल की भी यही स्थिति है। हां, शिक्षा का सत्कार अवश्य ही इन दोनों से ऊपर है, किन्तु वह भी विनय और चरित्र के बिना चिरस्थायी नहीं होता। शिक्षा, धन, बल तथा पद के होते हुए भी रावण चरित्र के बिना निन्दा का पात्र बना। अतः मानव का सम्मान उसके चरित्र में ही निहित है, क्योंकि चरित्र ही आत्मबल का प्रतीक है। आइए, चरित्र के मूल अर्थ और स्वरूप पर विचार करें।

हमारे व्यवहारिक जीवन से सम्बन्ध रखने वाले गुण-समूह को चरित्र कहते हैं। विनय, उदारता, धैर्य, निर्भय होकर सत्य बोलना, लालच में न पड़ना, अपने कर्तव्य पर दृढ़ रहना इत्यादि ऐसे सब गुण उत्तम चरित्र के परिचायक हैं। चरित्र के अन्तर्गत और भी अनेक बातों को लिया जा सकता है, परन्तु उपर्युक्त गुणों का होना अनिवार्य है। इन्हीं उपयुक्त गुणों पर किन्चित प्रकाश डालने से चरित्र-गौरव को समझा जा सकता है।

संस्कृत-शास्त्रों में विनय पर प्रचूर मात्रा में सामग्री उपलब्ध होती है। विनय के बिना विद्या शोभा नहीं देतो। विनय से केवल विद्या का ही नहीं, बल और पद का भी गौरव बढ़ता है। इससे आत्मा शुद्धि होती है। अभिमान का विनाश होता है। इसी के कारण मानव-जाति के प्रति आदर-भाव, सहनशीलता आदि प्रवृत्तियां विद्यमान हैं। इसके अभ्यास से ही अन्य अनेक गुणों का विकास हो जाता है।

दूसरे मनुष्यों के प्रति क्षमा-भाव रखना, उनके विचारों का आदर करना, स्वयं श्रेय न लेकर दूसरों को श्रेय देना, हानि पहुँचाने वालों के प्रति भी सद्‌व्यवहार करना आदि उदारता के अंग हैं। उपकृत व्यक्ति के प्रति आदर रखने वाले, अपने सहयोगियों

को उनकी भूलों के लिए उन्हें क्षमा करने वाले और दूसरों की छोटी से छोटी बात को भी महत्व देने वाले लोग वास्तव में उदार हैं। इसी उदारता से ही मानव-जाति का गौरव बढ़ता है।

घोर कठिनाइयों में चित्त को स्थिर रखना धैर्य कहलाता है। मानव-जीवन में समय-समय पर अनेक कठिनाइयां आती हैं। इनसे विचलित न होकर कर्तव्य-मार्ग पर डटे रहने वाले ही सच्चे धीर-वीर पुरुष कहलाते हैं। कठिन से कठिन स्थिति में भी मुदित रहना धैर्य का सूचक है। इसी प्रकार प्रत्येक अवस्था में अपने मनोभावों पर टिके रहना सत्य कहलाता है। भय अथवा लालच के लिए असत्य बोलना अनुचित है। चरित्र के निर्माण में कर्तव्य-पालन का भी बहुत बड़ा भाग है। प्राय: लोग क्षणिक लोभ-लालच में पड़कर अपना आयुभर का सम्मान खो बैठते हैं। जो लोग घोर आपत्तियों में भी विचलित नहीं होते, प्रलोभन-रूपी जाल में नहीं फंसते, वे ही सच्चे कर्तव्य-परायण समझे जाते हैं और समाज में समादर प्राप्त करते हैं।

चरित्र का निर्माण करने वाले इन गुणों तथा इसी प्रकार के अन्य अनेक गुणों को अभ्यास से प्राप्त किया जा सकता है। अपने जीवन को सार्थक करने के लिए प्रत्येक मानव को चरित्रवान् बनना चहिए। यही सच्चरित्रता ही भारत के उज्वल भविष्य का आधार है। इसी के आधार पर ही भारत तुन: विश्ववन्दनीय एवं शिरोमणि बन सकता है।

महानुभावों के विचार :—

❀ जो जाति गौरव को नहीं समझती, वह कभी उन्नति नहीं कर सकती।

❀ स्वतन्त्रता केवल दूसरों द्वारा प्राप्त होने वाला एक विशेषाधिकार नहीं है, बल्कि वह स्वभाव-सुलभ गुण है, जिसका अभ्यास करना पड़ता है।

❀ जो दुष्ट होकर भी साधु होने का ढोंक करता है वह महादुष्ट है।

❀ ऐसे बुद्धिमान व्यक्ति, जो गवर्नमेन्ट के संचालन में स्वयं भाग नहीं लेते, दुष्ट मनुष्यों के शासित होने का दण्ड भोगते हैं।

❀ जनता बलवान् पुरुषों को चाहती है, वह स्त्री की तरह होती है।

आस्था व्यर्थ है—

ताले लगे जुबां पर
खोल दिए हमने,
कहा था तुमने।
हर्ष हुआ था,
क्षणिक बन गया।
इससे तो यही—
अच्छा था,
ताले लगे रहते—
जुबाँ पर, आस-पास
उटक-पटक न होती।
हिमायत थी,
रद्द न होती।
अद्यतन्त्र का इतिहास,
हास बन गया है।
पूर्व से भी बदतर,
इन्सान बन गया है !!
छीना-झपटी,
आम बात हो गई है।
मानवता की लाश पर,
दूब बो गई है !!
धर्म-कर्म, कर्त्तव्य की
आस्था व्यर्थ है।
जीना उनका,
जो समर्थ हैं।
यही है घोषणा—
मोचो मनुष्य को,
धर्म है मोचना,
बाकी सब व्यर्थ है ??

— डॉ० चन्द्र दत्त कौशिक
कन्या गुरुकुल खानपुर कलां (सोनीपत)

श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती चल बसे

आर्यजगत् की महति क्षति, हरियाणा एक नर-रत्न से वंचित

आर्यजगत् के विख्यात प्रचारक तथा शिक्षा शास्त्री श्री जगदेव सिंह जी सिद्धान्ती भू. पू संसद् सदस्य का 27–8–79 को देहावसान हो गया। सिद्धान्ती जी ने पंजाब के हिन्दी आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया था जिसके फलस्वरूप हरियाणा के नये राज्य का निर्माण हुआ। मेरठ के किरठल गुरुकुल के वर्षों से मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य रहे। वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ होने के साथ उन्होंने सम्राट साप्ताहिक का वर्षों सम्पादन एवं संचालन किया था। उनके द्वारा सम्पादित स्थूलाक्षरों वाला सत्यार्थ प्रकाश जनता में बहुत लोकप्रिय हुआ। वे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री रहे थे। यावज्जीवन कृषि एवं गोरक्षा उनके प्रिय विषय रहे हैं।

उनके देहावसान का समाचार सुनते ही गुरुकुल भैंसवाल कलां में शोक सभा का आयोजन किया गया। गुरुकुल के अधिकारियों ने श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए कहा कि—उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि यही है कि हमें उनके कदमों पर चल कर समाज की सवा करनी चाहिए।

भगवान् से प्रार्थना की गई कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा परिवार को यह असह्य दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—सम्पादक

तमुष्टवाम यं गिर इन्द्रमुक्थ्यानि वावृधुः।
पुरूण्यस्य पौंस्या सिषासन्तो वनामहे ॥८८५॥

उस इन्द्रदेव का सभी दिल से स्तवन करें।
जिस की प्रशस्त सूक्तियां सुखवृद्धि से भरें॥
उस के विशेष पौरुषों के गान से तरें।
धन दान याचनादि में उसको हृदय धरें॥

—'निधि'

आर्य समाज कलकत्ता का सन् 1979-80 का

निर्वाचन

प्रधान	:	श्री सीता राम आर्य
उप-प्रधान	:	श्री लक्ष्मण सिंह
,,	:	श्री सुख देव शर्मा
,,	:	श्रीमती विद्यावती दत्ता
मन्त्री	:	श्री श्रीनाथ दास गुप्ता
उप-मन्त्री	:	श्री श्रीराम शर्मा
,,	:	श्री अमर सिंह सैनी
,,	:	श्री गणेश प्रसाद जायसवाल
कोषाध्यक्ष	:	श्री रामयश आर्य
अधिष्ठाता आर्य वीर दल	:	श्री बनारसी दास अरोड़ा
पुस्तकालयाध्यक्ष	:	श्री राधा कृष्ण ओझा
उपपुस्तकालयाध्यक्ष	:	श्री सत्यनारायण आर्य
हिसाब परीक्षक	:	श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
अन्तरङ्ग सदस्य	:	श्री कुलभूषण आर्य
,,	:	श्री रुलिया राम गुप्त
,,	:	श्री छबील दास सैनी
,,	:	श्री ईश्वर चन्द आर्य
,,	:	श्री राम लखन सिंह
,,	:	श्री अशोक कुमार
,,	:	श्री शीतल प्रसाद आर्य
,,	:	श्रीमती रामदुलारी जायसवाल
पदेन	:	श्री कृष्णलाल खट्टर (प्रधानाचार्य रघुमल आर्य विद्यालय)
,,	:	श्रीमती सरोजिनी शुक्ला (प्रधानाचार्य आर्य कन्या महाविद्यालय)
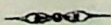
हरियाणा संस्कृत-सम्मेलन की रोहतक में स्थापना

आज दिनांक 19-8-1979 को दयानन्द मठ, रोहतक में जिला रोहतक के संस्कृत प्रेमियों एवं संस्कृत अध्यापकों की एक बैठक हरियाणा संस्कृत सम्मेलन के प्रान्तीय मन्त्री प्रो० रामेश्वर दत्त जी शर्मा की अध्यक्षता में हुई।

रोहतक जिले में सम्मेलन का कार्य सुचारु रूप से चलाने हेतु निम्न प्रकार से एक समिति का गठन किया गया।

1. प्रधान— डा० सुदर्शन देव आचार्य, रा० महिला महाविद्यालय, रोहतक
2. उप-प्रधान— डा० सुधीकान्त भारद्वाज, संस्कृत विभाग महर्षि दयानन्द विश्व-विद्यालय, रोहतक
3. मन्त्री— प्रो० मधुकर विद्यालंकार, रा० महिला महाविद्यालय, रोहतक
4. उप-मन्त्री— श्री सत्यवीर शास्त्री, रा० उ० मा० विद्यालय, रोहतक
5. कोषाध्यक्ष— प्रो० सत्यवीर शास्त्री, रा० महिला महाविद्यालय रोहतक
6. पुस्तकालयाध्यक्ष— श्री वेदव्रत शास्त्री, आचार्य प्रिंटिंग प्रैस, दयानन्द मठ, रोहतक

संस्कृत भाषा के प्रचार, प्रसार एवं उन्नति के लिए सभी सदस्यों ने पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। बैठक के अन्त में सर्वसम्मति से निम्न दो प्रस्ताव पास किये गये।

1. महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के उपकुलपति महोदय से प्रार्थना की जाती है कि विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में वर्तमान शिक्षा सत्र से ही एम० फिल० की कक्षा चालू की जाए।
2. महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के उपकुलपति महोदय से प्रार्थना की जाती है कि अन्य विश्वविद्यालयों की भान्ति इस विश्वविद्यालय से "शास्त्री" उपाधि उत्तीर्ण करने वाले छात्रों को एम० ए० हिन्दी तथा संस्कृत की परीक्षाओं में बैठने की अनुमति प्रदान की जाए।

—प्रो० मधुकर विद्यालंकार
मन्त्री,
हरियाणा संस्कृत सम्मेलन,
रोहतक।

आर्य समाज की महान् विभूति

स्वर्गीय श्री जगदेव सिंह जी सिद्धान्ती

लेखकः— आचार्य महामुनि जी दर्शनाचार्य
गुरुकुल भैंसवाल कलां (सोनीपत)

इनका जन्म हरियाणा प्रान्त के जिला रोहतक तहसील झज्जर स्थित बरहाणा ग्राम में जाट कुल के अन्दर विक्रमी सम्वत् 1957 विजयादशमी के दिन हुआ। पिता का नाम चौ. प्रीतराम, माता का नाम श्रीमती माम कौर था सिद्धान्ती जी के पिता आयुर्वेद का भी ज्ञान रखते थे परन्तु किसी से किसी प्रकार का शुल्क नहीं लेते थे। रोगी को नुस्खा लिख देते थे। 6 वर्ष का होने पर बेरी गांव के मिडिल स्कूल में पढ़ने भेज दिये गये जहां इन्होंने चार वर्ष में ही उर्दू प्राइमरी की पांचवीं कक्षा उत्तीर्ण कर ली। पढ़ने में चतुर थे इसलिए इनको मिडिल में वजीफा मिल गया। बेरी में मिडिल पास करने के बाद जाट हाई स्कूल रोहतक में पढ़ने के लिए भेज दिये। उस समय वहां के हैडमास्टर चौ. बलदेव सिंह थे जो अनुशासन और नियम पालन करने कराने में बड़े पक्के थे। विचारों से आर्य समाजी थे इसलिए विद्यार्थियों से प्रातःकालिक व्यायाम, सन्ध्या-हवन आदि नियम पूर्वक करवाया करते थे।

उन दिनों हरियाणा प्रान्त में आर्य समाज का प्रचार जोरों पर था। सिद्धान्ती जी के पिता जी भी आर्यसमाजी बन गये। इसके फलस्वरूप बालक जगदेव सिंह पर आर्य-समाज का प्रभाव पड़ा जिसके फलस्वरूप आगे चल कर आर्य समाज के सिद्धान्तों के दृढ़ अनुयायी होने के कारण ही उनका उपनाम 'सिद्धान्ती जी' प्रसिद्ध हो गया।

16 वर्ष की आयु में हो इनका विवाह जि० रोहतक के बरोहड़ गांव के किसान परिवार में कर दिया गया।

इनके पिता जी का बिचार इनको कालेज में पढ़ाने का था परन्तु युवक जगदेवसिह का विचार नवयुवकों की देखा-देखी सेना में भरती होने का हो गया, फलस्वरूप हवलदार चन्दगीराम के साथ जाकर सन् 1917 में पेशावर में नं० 35 सिख पलटन में सिपाही रूप में भर्ती हो गये। उन दिनों में सिपाही का वेतन 11/- रुपये मासिक और

भर्ती का इनाम 50/- रु० था। ये सिपाहियों को हिन्दी सिखाने लगे इसलिए इनको 20 रुपये मासिक अलाउंस तथा सिपाहियों के स्वेच्छा से पत्र लिख देते थे तदर्थ 7 रुपये मासिक मिलने लगा। अफसर ने 11 रु० मासिक के अतिरिक्त इनका वेतन 20 रु० और बढ़ा दिया। इनके विशेष कार्य को देख कर इनकी लेसनायक पद पर तरक्की कर दी गई। वेतन वृद्धि के साथ-साथ अलाउन्स भी 45 रुपये कर दिया गया। कुछ काल पश्चात् इनकी 6 नं० रायल जाट पलटन को लड़ाई के मोर्चे पर भेज दिया गया।

सेना में अंग्रेज आफीसर सिपाहियों को मांस खाने-खिलाने का आग्रह करते थे परन्तु सिद्धान्ती जी आदि आर्य समाजी विचार वाले सिपाहियों ने कहा कि मांस खाना हमारे धर्म के विरुद्ध है और किसी के धर्म में हस्ताक्षेप करना महारानी विक्टोरिया के आदेश के विरुद्ध है। उन्होंने महारानी विक्टोरिया का आदेश पढ़ कर सुना दिया। तब से अंग्रेज अफ़सरों ने मांस खिलाने का आग्रह त्याग दिया।

कैम्प में आर्य समाजी विचार के व्यक्तियों ने मिल कर लकड़ी का अस्थिर आर्य-समाजी मन्दिर बनाया और उसमें प्रति दिन सन्ध्या, हवन करते और सत्यार्थ प्रकाश का पाठ सुनाते थे।

स्वदेश लौटने पर जब इनकी कम्पनी बम्बई से चलकर आगरा छावनी स्टेशन पर उतरी तब सभी आर्य समाजी विचार के सिपाहियों ने सलाह करके मार्ग में "वैदिक धर्म की जय, महर्षि दयानन्द की जय" के नारे लगाये। यह इतिहास की एक अभूत-पूर्व घटना थी।

रेजीमेंट के टूटने पर कर्नल हार्डी ने सिद्धान्ती जी से कहा कि 'मैं तुम्हें सिविल में कोई अच्छी नौकरी दिलवादूंगा' उत्तर में सिद्धान्ती जी ने कहा कि मैं अब किसी प्रकार की नौकरी नहीं चाहता, मैं तो संस्कृत पढ़ना चाहता हूँ।

सन् 1922 में गुरुकुल मटिण्डु के वार्षिक उत्सव पर गये, एक मास तक निःशुल्क सेवा पर वहां रहे, फिर संस्कृत पढ़ने के उद्देश्य से वहीं पर (गुरुकुल मटिण्डु में) गणित-अध्यापक के पद पर 20 रु० मासिक लेकर नियुक्त हो गये। वहां पं० शान्ति स्वरूप से सस्कृत पढ़ने लगे। प्रथम पंजाब यूनिवर्सिटी की प्राज्ञ परीक्षा सम्मान पूर्वक उत्तीर्ण की। द्वितीय वर्ष में विशारद परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। तत्पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की 'सिद्धान्त विशारद' परीक्षा उत्तीर्ण की। तदनन्तर 'दयानन्द उपदेशक विद्यालय' लाहौर की दो वर्ष में 'सिद्धान्त भूषण' परीक्षा उत्तीर्ण की। 'सिद्धान्त भूषण' परीक्षा के बाद ही इन्होंने अपने नाम के साथ 'सिद्धान्ती' विशेषण लगाना आरम्भ किया। जो बाद में मुख्य नाम सा ही हो गया।

गुरुकुल भटिण्डु में रहते हुए वे अध्यापन कार्य के अतिरिक्त कार्यालय का भी सम्पूर्ण कार्य करते थे। चौ० पीरू सिंह जी का सिद्धान्ती जी पर पूर्ण विश्वास था। सात वर्ष तक गुरुकुल भटिण्डु में कार्य करने के बाद वे सन् 1929 में आर्य महाविद्यालय किरठल में आ गये। यदि चौ० पीरू सिंह जी जीवित रहते तो उनको वहां से (गुरुकुल भटिण्डु) सर्वथा नहीं जाने देते। जिस समय श्री सिद्धान्ती जी आर्य महाविद्यालय किरठल में आये तब विद्यालय की अवस्था शोचनीय थी। उसका रूप एक साधारण सी पाठशाला का था, तब उसका नाम भी 'संस्कृत विद्यालय' ही था। संस्था के कर्णधार चौ० मुखत्यार सिंह, चौ० कूड़े सिंह, चौ० अमीर सिंह जी ने सारी स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा कि यहाँ भीतर-बाहर का सारा काम आपको ही सम्भालना है। अर्थात् विद्यार्थियों को पढ़ाना, बाहर से चन्दा आदि का प्रबन्ध करना सब कुछ आपको ही करना है।

उनकी प्रबन्ध कुशलता तथा ईमानदारी से प्रभावित होकर इलाके की जनता उनकी ओर आकृष्ट होने लगी। धीरे-धीरे संस्था की उन्नति होने लगी। पठन-पाठन कार्य व्यवस्थित रूप से चलने लगा। आरम्भ में कई वर्ष तक पंजाब यूनिवर्सिटी की प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री परीक्षाएं दिलाई जाती थीं परन्तु बाद में विद्यार्थियों की सुविधा को देखते हुए उत्तर प्रदेश की परीक्षाएं अर्थात् प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री, आचार्य परीक्षाएं चालू कर दी गई। पं० शान्ति स्वरूप जी को भी बुला लिया। स्वामी विद्यानन्द जी भी वहां आ गये जो संस्कृत के अच्छे पण्डित थे तथा अच्छे वैद्य भी थे। उनके पास 5000 रु० थे जो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में जमा थे। सभा से आठ आना प्रतिशत ब्याज नियमित रूप पर मिलता रहता था, उन्होंने वह रुपया सिद्धान्ती जी को विद्यालय के लिए दे दिया।

शिक्षा के साथ-साथ सिद्धान्ती जी ने आर्य समाज के प्रचार का कार्य भी आरम्भ कर दिया। इसके लिए पृथ्वी सिंह जी बेधड़क आदि भजनिकों का भी सहयोग लिया गया। प्रचार कार्य से संस्था की भी लोकप्रियता बढ़ी। वैदिक रीति से विवाह संस्कार आदि कराना भी प्रचार का ही अंग था।

ईर्ष्यालु और क्षुद्र हृदय व्यक्तियों ने षड्यन्त्र करके सिद्धान्ती जी को दूध में संखिया दिला दिया था। संयोगवश संखिया कम पिसा हुआ था और शीघ्र पता चल जाने से वमन द्वारा निकाल दिया गया। गांव के एक मुसलमान हकीम नासिरुद्दीन ने शीघ्र आकर उपचार किया इससे इनके प्राण तो बच गये परन्तु विष का प्रभाव शरीर में रह गया। गर्मी बढ़ने से बवासीर का रोग हो गया। विष देने वाले व्यक्ति का पता चल गया परन्तु सिद्धान्ती जी ने अपने गुरु ऋषि दयानन्द का अनुकरण करते हुए उस पर कोई कार्यवाही नहीं की।

सन् 1939 में आर्य समाज द्वारा हैदराबाद रियासत में आर्यों के यज्ञादि धार्मिक कार्यों में तथा उपदेश प्रचार आदि पर प्रतिबन्ध होने के कारण आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक सभा ने सत्याग्रह का आह्वान दिया जिसके लिए सारे भारत से सत्याग्रही जाने लगे उसमें श्री सिद्धान्ती जी भी इलाके (प्रान्त) के प्रतिष्ठित-प्रतिष्ठित सज्जनों का जत्था लेकर गये थे वहां उन्होंने तुलजा पुर से सत्याग्रह किया।

सन् 1944 में आर्य महा विद्यालय किरठल की 'रजत जयन्ती' मनाई गई जिसमें प्रचार द्वारा 40 हजार रु० संस्था के स्थिर कोष में जमा कर दिये। इस प्रकार आर्य महा विद्यालय की स्थिति सुदृढ़ करके विद्यालय के कार्य से निवृत्त होकर दिल्ली आकर सम्राट् प्रेस की स्थापना की तथा साथ में 'सम्राट्' नामक साप्ताहिक पत्र भी चालू कर दिया। कालान्तर में स्थिति वश पत्र को बन्द कर दिया गया।

सन् 1956 में आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब में प्रवेश किया। चार वर्ष तक लगातार सभा के प्रधानमन्त्री रह कर कार्य किया। अपने कार्यकाल में सभा की उन्नति में और सभा से सम्बद्ध संस्थाओं की उन्नति में अपना सारा समय लगाया।

सन् 1957 में पंजाब में हिन्दी को समुचित स्थान दिलाने के लिए 'हिन्दी रक्षा-समिति' बनाकर उसके द्वारा सत्याग्रह आन्दोलन चलाया। जिसमें आर्यसमाज को पूर्ण सफलता मिली। सन् 1962 में लोकसभा का चुनाव लड़ा जिसमें कांग्रेसी उमीदवार को हरा कर आप विजयी हुए। लोक सभा के सदस्य बन कर भी आप लोक सभा के सदस्यों के लिए बने नये आवास भवनों में न रह कर अपने ही निजी स्थान पर रहते थे। यह सादगी का अत्युत्तम उदाहरण है।

हरियाणा की उन्नति के लिए यह आवश्यक समझा गया कि इसको पञ्जाब से पृथक् करके स्वतन्त्र रूप से अलग राज्य का रूप दिया जावे। तदर्थ आन्दोलन किया गया जिसके परिणाम स्वरूप हरियाणा का पृथक् राज्य बना। इस प्रकार श्री सिद्धान्ती ने धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रों में सर्वत्र कार्य किया और सभी में सफलता प्राप्त की। उनका जीवन सबके लिए अनुकरणीय है।

इन शब्दों के साथ स्वर्गीय श्री सिद्धान्ती जी को सादर श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ। परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

महासभा गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां तथा कन्या गुरुकुल खानपुर कलां (सोनीपत) का चुनाव

9 सितम्बर गुरुकुल भैंसवाल—यहां से 14 किलोमीटर दूर दिनांक 9-9-79 को कन्या गुरुकुल खानपुर में आगामी 3 वर्ष के लिए महासभा गुरुकुल भैंसवाल तथा कन्या गुरुकुल खानपुर का चुनाव सम्पन्न हुआ।

इस चुनाव में महा सभा के कई सौ सदस्यों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इस चुनाव की मुख्य विशेषता यह थी कि अनेकों विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के व्यक्ति इसमें सम्मिलित हुए तथा उन सब की भावनाएं शिक्षण संस्थाओं को राजनीति से दूर रख कर प्रगति की ओर अग्रसर करने की थी।

श्री महेश्वर सिंह मलिक, शास्त्री ने चौ० माड़ू सिंह का नाम प्रधान पद के लिए प्रस्तुत किया, जिसका समर्थन श्री वैद्य किलाब सिंह, जमादार रिसाल सिंह व श्री भरत सिंह आदि सरपंचों ने किया। जनता पार्टी के भू० पू० सांसद श्री मुखत्यार सिंह मलिक और जनता पार्टी के विधायक जिले सिंह तथा भू० पू० विधायक श्री इन्द्र सिंह मलिक, श्री कपिल देव शास्त्री, श्री धर्म चन्द शास्त्री, श्री होश्यार सिंह खानपुर; कांग्रेस (ई) के श्री धर्मपाल मलिक एडवोकेट, जनता (स) के श्री हरिकिशन एडवोकेट और फते सिंह एडवोकेट, श्री जय सिंह एडवोकेट, श्री सत्यवीर सिंह मलिक, श्री राजेन्द्र विद्यालंकार, श्री योगेश विद्यालंकार तथा दादा भलेराम आहुलाना निवासी आदि सभी ने एक स्वर से चौ० माड़ू सिंह मलिक भू० पू० शिक्षा मन्त्री हरियाणा को सर्वसम्मति से प्रधान चुनने की अपील कर सदस्यों से अनुरोध किया। जिसका सभी सदस्यों ने जोरदार करतल ध्वनि से समर्थन किया। शेष अधिकारियों व सदस्यों को चुनने का अधिकार भी सर्वसमिति से चौ० माड़ू सिंह को ही दिया गया। तदुपरान्त शान्ति पाठ पूर्वक सभा विसर्जित हुई।

मुझे पिछले दिनों अनेक शिक्षण संस्थाओं के चुनाव देखने का अवसर मिला। लेकिन सभी जगह लोग पारस्परिक निजी स्वार्थों के वशीभूत होकर संस्थाओं को राजनीतिक अखाड़ा बनाकर संस्थाओं को बर्बाद करने पर तुले हुए दिखाई दिये। लेकिन इस चुनाव में पारस्परिक विरोधों को त्याग कर संस्थाओं के हित की भावनाओं को ध्यान में रख कर सर्वसम्मत चुनाव किया गया जो अपने आप में एक अनोखा उदाहरण है।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि आर्य कालेज पानीपत में हुई प्राईवेट कालेजों की मीटिंग में 2-9-79 को चौ० माडू सिंह जी मलिक को "प्राइवेट कालेज मेनेजमेन्ट एशोसीएशन" का प्रधान भी सर्वसम्मति से चुना गया है।

★ ★ ★ ★

महासभा के नए पदाधिकारी

1. प्रधान : चौ० माडूसिंह मलिक एडवोकेट, रोहतक
2. उपप्रधान : चौ० मुखत्यार सिंह एडवोकेट, सोनीपत
3. मन्त्री : श्री महेश्वर सिंह शास्त्री, जाट स्कूल, रोहतक
4. कोषाध्यक्ष : जमादार रिसाल सिंह, सरपंच भैंसवाल कलां

—देवराज 'विद्यालंकार'

गुरुकुल भैंसवाल कलां का

शानदार परीक्षा-परिणाम

प्रस्तुत कर्ता :—

वीरेन्द्र कुमार 'विद्यालंकार', गुरुकुल भैंसवाल कलां (सोनीपत)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की परीक्षाओं का परिणाम आ चुका है। इस वर्ष गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां की सभी कक्षाओं का परिणाम अत्युत्तम रहा है। जो कि अध्यापकों, प्राध्यापकों एवं छात्रों के पारस्परिक अथक परिश्रम का स्पष्ट प्रमाण है। जिसका विवरण नीचे दिया जाता है :—

विद्याधिकारी (Matriculation)

पूर्णांक : 900

अनुक्रमांक	नाम	प्राप्तङ्क	श्रेणी (Division)	प्रतिशत
191	सत्यवीर	—	परिणाम लेट (R L.)	—
192	जगदीश	582	प्रथम	64·6%
193	जगवीर	468	द्वितीय	52
194	राजवीर (बड़े०)	507	,,	56·3
195	सत्यवीर (लाठ)	461	,,	51·2
196	रणवीर	520	,,	57·7
197	राजवीर	462	,,	51·3
198	सुरेश कुमार	471	,,	52·3
199	बालकृष्ण	419	,,	46·5
200	ईश्वर सिंह	608	प्रथम	67·5

अनुक्रमांक	नाम	प्राप्ताङ्क	श्रेणी (Division)	प्रतिशत
201	बसन्त कुमार	486	द्वितीय	54%
202	सुरेश चन्द्र	452	,,	50·2
203	जयदेव	448	,,	49·7
204	सज्जन सिंह	454	,,	50 4
205	कृष्ण चन्द्र	445	,,	49·4
206	महेन्द्र सिंह	456	,,	50·6
207	सत्यवीर (कु०)	443	,,	49·2
208	वेद प्रकाश	440	,,	48·8
209	राजपाल	393	तृतीय	43·6
210	सत्यवान (कासेन्ढ़ी)	429	द्वितीय	47·6
211	प्रह्लाद	340	पूरक अंग्रेजी	—
212	रणवीर (पाणची)	362	अनुत्तीर्ण	—
213	शिवकरण	478	द्वितीय	53·1
214	पवन कुमार	387	पूरक-गणित	—
215	सुखवीर	607	प्रथम	67·4
216	बलराज	451	द्वितीय	50·1

विद्याविनोद प्रथम खण्ड (Pre-University)

पूर्णाङ्क : 750

250	राज सिंह	498	प्रथम	66·4
251	बलवान	409	द्वितीय	54·5
252	प्रेम सिंह	402	द्वितीय	53·6

विद्याविनोद प्रथम खण्ड (B. A. Part I)

पूर्णाङ्क : 750

265	जयवीर	443	द्वितीय	59·6
266	बलजीत	437	,,	58·3

अनुक्रमांक	नाम	प्राप्ताङ्क	श्रेणी (Division)	प्रतिशत

विद्यालंकार द्वितीय खण्ड (B. A. Part II)

पूर्णाङ्क : 675

अनुक्रमांक	नाम	प्राप्ताङ्क	श्रेणी (Division)	प्रतिशत
280	जगदीश	473	प्रथम	70·7%
281	जयप्रकाश	420	,,	62·2
282	दिलबाग	354	द्वितीय	52·4
283	बीरेन्द्र	418	प्रथम	61 9
284	वेदपाल	431	,,	63·8

विद्यालंकार तृतीय खण्ड (B. A. Final)

पूर्णाङ्क : 675

अनुक्रमांक	नाम	प्राप्ताङ्क	श्रेणी (Division)	प्रतिशत
296	यश:पाल	456	प्रथम	67·5%
297	बलवन्त	442	,,	65·4
298	सज्जन	444	,,	65·7
299	नरेन्द्र	427	,,	63·2
300	ओम प्रकाश (मुंगेर)	417	,,	62·8
301	विजयेन्द्र	378	द्वितीय	56

- जिस प्रकार घड़े में एक भी छेद रहने से सारा पानी धीरे-धीरे बह जाता है, उसी प्रकार साधक के अन्दर यदि थोड़ी भी कमजोरी रह जाय तो सब साधना व्यर्थ हो जाती है।

- गीली मिट्टी से कोई भी चीज बनायी जा सकती है। परन्तु पकी हुई मिट्टी गढ़ने के काम में नहीं आ सकती। जिसका हृदय विषयबुद्धि की ज्वाला से पक गया है, उसमें पारमार्थिक भाव नहीं आ सकता।

- जैसे चींटी शक्कर और बालू के एक साथ रहने पर भी, बालू को छोड़ कर शक्कर खा लेती है, वैसे ही सन्त लोग इस संसार में सद्वस्तु सच्चिदानन्द भगवान का ग्रहण कर लेते हैं और असद्वस्तु कामिनी-कांचन आदि को त्याग देते हैं।

गुरुकुल समाचार

ऋतु रंग :—

इस वर्ष ऋतु रंगमंच पर वर्षा ने अपना कार्य ठीक प्रकार से नहीं किया। सारे देश में धान, बाजरा, जवार, गवार आदि की फसल सूख गई है। गुरुकुल में भी श्री मुंशी प्रभुदयाल जी की सारी आशाओं पर पानी फिर गया। धान की फसल खराब होने से गुरुकुल को हजारों रुपये की क्षति हुई है।

खेलों की तैयारी : —

प्रति वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी ब्रह्मचारी दशहरे के अवसर पर होने वाले खेलों की तैयारी में जुटे हुए हैं। इन दशहरे के खेलों को "भक्त भूल सिंह स्मारक-टूर्नामेंट" के नाम से पुकारा जाता है। यह गुरुकुल में तीन स्तरों पर खेला जाता है—1- प्राथमिक स्तर, 2- उच्च माध्यामिक स्तर और 3- महाविद्यालय स्तर। प्राथमिक स्तर पर खेली जाने वाली फुटबाल, कबड्डी, कुश्ती, दौड़, कूद आदि उच्च माध्यामिक स्तर पर खेली जाने वाली कबड्डी, क्रिकेट, वाली बाल, दौड़-कूद गोला फैंकना आदि तथा महाविद्यालय स्तर पर खेली जाने वाली कबड्डी, क्रिकेट, वाली-बाल के मैचों ने गुरुकुल विद्यापीठ को खेलों का संस्थान बना दिया है। सभी ब्रह्मचारी प्रतियोगिता में सफलता पाने के लिए निरन्तर तैयारी में लगे हुए दिखलाई पड़ते हैं।

परीक्षा परिणाम :—

लम्बी प्रतीक्षा के उपरान्त आखिर परीक्षा परिणाम (Results) आ ही गया। महाविद्यालय विभाग College Section) का रिजल्ट शत-प्रतिशत रहा। जो कि महाविद्यालय के प्राध्यापकों (आचार्य महामुनि जी, विद्यानिधि जी, नारायण जी, प्रेमचन्द जी और देवराज जी विद्यालंकार) एवं छात्रों की मेहनत का स्पष्ट प्रमाण है। विद्यालय विभाग का परिणाम भी अत्युत्तम रहा।

नया प्रवेश समाप्त :—

प्रति वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी प्रवेश के लिए सैंकड़ों प्रार्थना-पत्र आये। संस्था में पहली श्रेणी से विद्यालंकार (B. A.) तक की पढ़ाई का अत्युत्तम प्रबन्ध है। प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय के छात्रावास खचा-खच भरे हैं। जिसके फलस्वरूप नया प्रवेश रोकना पड़ा।

स्नातकों को विदाई :—

इस वर्ष 6 स्नातकों को विदाई दी गई जिनके नाम इस प्रकार हैं।—
यश: पाल, बलवन्त, सज्जन कुमार, ओम प्रकाश, नरेन्द्र और विजेन्द्र।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री महामुनि जी दर्शनाचार्य ने गुरुकुल के स्नातकों से गुरुगुल के नाम को रोशन करने की आशा प्रकट की। उन्होंने गुरुकुल की ख्याति को स्नातकों के समक्ष रखा और प्रतिज्ञा करवाई कि वे गुरुकुल की शान को न मिटने देंगे। उन्होंने ईमानदारी और त्याग-भावना को सर्वोत्तम गुण बताया।

भक्त फूल सिंह जी माहराज का स्मरण कराते हुए आचार्या धर्मभानु जी ने उन की तीन शिक्षाओं पर अपने शिष्यों को निर्दिष्ट किया। वे शिक्षाएं हैं– सफाई, सचाई और तरतीब। श्री सत्यपाल जी शास्त्री, मुख्याध्यापक ने गुरुकुल के गौरव को व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर रखने को कहा। हिन्दी विभाग के प्राध्यापक श्री देवराज जी विद्यालंकार ने स्नातकों की देश को आवश्यकता पर प्रकाश डाला और आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। श्री प्रभुदयाल जी आर्य ने अपनी ओर से सभी स्नातकों को शुभ कामना तथा उन्नति का आशीर्वाद दिया।

उत्तर में प्रत्येक स्नातक ने अपने इस आश्रम निवास के दौरान हुई गलतियों की क्षमा मांगी तथा प्रतिज्ञा की कि गुरुकुल का हित सर्वोपरि रखेंगे और संस्था के लिए रात-दिन खून-पसीना एक कर देंगे।

इस समारोह से पूर्व B. A. Part II के विद्यार्थियों द्वारा एक प्रीति-भोज का आयोजन किया गया। इसमें गुरुगुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के दर्शन विभाग के प्रो० ओम प्रकाश जी भी सम्मिलित थे।

बी० ए० एम० एस० में प्रवेश :—

इस वर्ष गुरुकुल के चार ब्रह्मचारियों (बलवन्त, सज्जन, दिलबाग और जगदीश) ने मस्तनाथ आयुर्वेदिक कालिज, अस्थल बोहर में प्रवेश फार्म भरे थे, इन चारों का मैरिट के आधार पर प्रवेश हो गया। इस प्रकार गुरुकुलीय स्नातक पहले जहां एम० ए०, बी० एड० और कानूनी शिक्षा (L. L. B) आदि के माध्यम से देश की सेवा करते थे वहां अब चिकित्सा के माध्यम से भी देश सेवा में पीछे नहीं रहेंगे।

—ब्र० राज सिंह
कासेण्ढ़ी

अनाथ

★

उबलते अश्रु पीकर भी, ओ' मन जिसका मुस्काया है,
व्यथा-वह्नि में सोकर भी, जीवनमय गान सुनाया है।
पी-पी कर जग का गरल, मन ही सरल बनाया है,
पीड़ा की महा चोट को भी, शुभ श्रृंगार बताया है ॥

आज कई कंचन-महलों में, फूलों की हैं सेज लगी.
पर अनाथ के सोने सोने वास्ते, शूलें भी हैं बहुत भली।
किसी के मच्छर तक लड़ने पर, वैद्य को पास बुलाते हैं,
पर अनाथ की अरथी को तो, उठाने तक नहीं आते हैं।

कहते यह रण में जाए पर दीन कैसे जाए भाई,
तुम तो कलियों की गोदी में सुखमय निद्रा सोते हो।
अपितु यह ग़म पीकर भी अमिय-तुल्य ही जीता है.
निहार, काल रूपी शबनम को, इसकी नयनें बुझती हैं।

मत रो, मत रो ए आंसू, रहा काल कौनसा बाकी है,
आज आतंक तिमिर है छाया, रश्मियां भी आया करती हैं।
होता है स्वागत सूर्योदय का, अस्त होने का नहीं,
विजय होती हैं चलने की, पर बैठे रहने की नहीं।

—महेन्द्र सिंह उत्साही
रा० उ० वि० बराह खुर्द (जीन्द)

गुरुकुल चाय

खांसी, जुकाम, ज्वर, इन्फ्लूएन्जा, बदहजमी तथा थकान में मादकता रहित उत्तम पेय।

च्यवनप्राश

चरख संहिता अष्टवर्ग युक्त हिमालय की दिव्य जड़ी बूटियों से तैयार, शरीर की क्षीणता तथा फेफड़ों के लिए प्रसिद्ध आयुर्वेदिक रसायन। बाल, युवक तथा वृद्ध सबके लिये हितकर।

भीमसैनी सुरमा
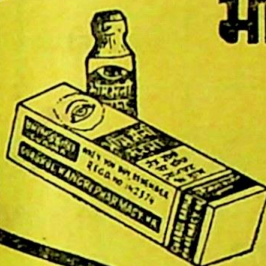
आंखों को निरोग व शीतल रखता है।

पायोकिल

- दांतों का दर्द व टीस
- मसूढ़ों का फूलना
- मसूढ़ों में खून व पीप आना
- पायोरिया को जड़ से मिटाने के लिए उत्तम आयुर्वेदिक औषधि

agnihotri

गुरुकुल कांगड़ी फ़ार्मेसी ओ३म् हरिद्वार

गुरुकुल कांगड़ी फ़ार्मेसी
हरिद्वार

शाखा : चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

Approved for Libraries by D. P. I'S Memo No. 3/44—1961 – B Dated 8-1-62

Approved by the Chairman, Central Library Committee, Panjab Vide their Memo No. PRD-Lib.-258-61/1257-639 dated Chandigarh, the 8th Jan. 1962.

सदस्य संख्या
नाम
स्थान
पत्रालय
जिला

व्यवस्थापक श्री धर्मभानु गुरुकुल भैंसवाल ने नेशनल प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर कार्यालय समाज सन्देश गुरुकुल भैंसवाल (सोनीपत) से मुद्रित तथा प्रकाशित किया।

ॐ

समाज सन्देश

(हिन्दी मासिक-पत्र)

सांस्कृतिक, सामाजिक व साहित्यिक लेखों का संगम

प्रकाशन तिथि : 25 नवम्बर, 1979

वर्ष 20 नवम्बर, दिसम्बर, 1979 अंक : 7/8

स्वर्गीय श्री भक्त फूल सिंह जी

मूल्य : एक प्रति 1-25 रु० • वार्षिक चन्दा 10 रुपये

इस अंक में–

समाज सन्देश में छपे विचारों से हमारा सहमत होना या न होना आवश्यक नहीं। समाज सन्देश में हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी मत से सम्बन्ध रखता हो अपने लोकहितकारी विचार अथवा लेख प्रकाशनार्थ भेज सकता है। उसकी मौलिकता का लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा। —सम्पादक

❀

लेख भेजने तथा अन्य विषयक पत्र व्यवहार का पता :—

देवराज विद्यालंकार

प्रकाशन प्रबन्धक

गुरुकुल भैंसवाल कलां (सोनीपत)

सम्पादकीय—

क्रान्ति का मसीहा

★

मां भारती के सच्चे सपूत, गरीबों के मसीहा और आजादी एवं लोकतन्त्र के लिए आजीवन संघर्ष करने वाले लोकनायक जयप्रकाश नारायण को भी काल के मजबूत पंजों ने जकड़ ही लिया।

लेकिन "क्या मार सकेगी मौत उसे औरों के लिए जो जीता है। जे० पी० भी स्थूल रूप से तो इस संसार से कूच कर गये लेकिन उनके कार्यों ने उन्हें अमर बना दिया।

11 अक्तूबर, 1902 को जन्मे जे० पी० ने जीवन पर्यन्त देश के लिए कार्य किया। सन् 1921 में उन्होंने महात्मा गान्धी द्वारा चलाये गये असहयोग आन्दोलन में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। 1923 में वे अध्ययन के लिए अमेरिका चले गए। अमेरिका से लौटने के बाद वे फिर से स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े और भारत को आजादी मिलने तक वे जी जान से इसके लिए प्रयत्न करते रहे।

देश को आजादी मिलने के बाद जब पण्डित नेहरू ने 1954 में उनको केन्द्रीय-मन्त्रीमण्डल में शामिल होने का निमन्त्रण दिया तब जयप्रकाश नारायण ने इस मन्त्रीमण्डल की कुर्सी को, जिसे पाने के लिए आज के नेता अपना दीन-ईमान तक बेच देते हैं, अपेक्षात्मक ढ़ग से ठुकरा दिया था। उन्हें उस समय मन्त्रीमण्डल की कुर्सी नज़र नहीं आ रही थी। उस समय वे देख रहे थे उन असंख्य पीड़ितों, शोषितों को जिन्हें दोनों समय खाने को रोटी नहीं मिल रही थी, जिनके बच्चे रात को भूखे सो जाते थे और जो अभावों में ही अपनी जिन्दगी गुजार देते थे। वे मानते थे कि सियासत में रहकर उतना काम नहीं किया जा सकता जितना राजनीति से स्वतन्त्र रह कर किया जा सकता है। इसी लिए इन्होंने जीवन पर्यन्त सियासत से दूर रह कर काम किया।

1972 में चम्बल के बागी सरदार माधो सिंह एवं जसवन्तसिंह आदि 400 डाकुओं ने लोकनायक के सामने आत्म समर्पण कर दिया। उन डाकुओं ने जिनको समाज पापी, राक्षस आदि संज्ञाओं से सम्बोधित करता है। बुरे आदमी भी जिसके सामने अस्त्र त्याग दें और भविष्य में लूट-पीट, चोरी, डकैती आदि घृणित कार्य न करने का व्रत लें, उस व्यक्ति के बारे में आप स्वयं विचार कीजिए कैसा होगा वह व्यक्ति ?

इस प्रकार उनके क्रान्ति-शोधक व्यक्तित्व को कभी लोगों ने चम्बल घाटी के डाकुओं के मध्य पाया तो कभी बिहार के बाढ़ पीड़ितों व भूमि हीनों के पास। उन्होंने काश्मीर तथा नागालैण्ड में भी बहुत कार्य किये। भारतीय भूमि से अगाध स्नेह रखने वाला वह व्यक्ति भारत सरकार से सामंजस्य न कर सका और जून 1974 को देश की युवा शक्ति का आह्वान किया—"साथियो ! अब हमारा लक्ष्य सम्पूर्ण क्रान्ति का है।" नारा दिया कि—

"सम्पूर्ण क्रान्ति अब नारा है, भावी इतिहास हमारा है ?"

उन्होंने युवा शक्ति का मार्ग-प्रदर्शन किया और गुजरात तथा बिहार की सरकारों का तख्ता पलट दिया। राष्ट्रकवि दिनकर ने लोकनायक के प्रति एक बार कहा था:—

"जय प्रकाश है नाम देश की व्याकुल हठी जवानी का।"

जीवन के अन्तिम दिनों में उन्हें अत्यन्त शारीरिक कष्टों का सामना करना पड़ रहा था परन्तु अपनी शारीरिक व्याधियों का धैर्य-पूर्वक सामना करते हुए वे यही विचार करते थे कि देश को कैसे उन्नति के पथ पर अग्रसर किया जा सकता है। देश के उनके कार्यों को देखते हुए मैं निश्य पूर्वक कह सकता हूँ कि भारतीय इतिहास में लोकनायक जयप्रकाश नारायण को ससम्मान स्मरण किया जाता रहेगा।

— देवराज 'विद्यालंकार'

कुछ गम खाले,
कुछ मुसका ले

★

कुछ गम खाले, कुछ मुसका ले,
कुछ मुसका ले, इस जीवन में !
है सब कुछ यहां निस्सार नहीं,
कुछ सार भरा इस जीवन में ॥
दो दिन की खातिर आये हैं,
पीड़ा पर फिर क्या रोना है,
जो कुछ जीवन में लिख दोगे
आखिर वह कुछ ही होना है;
तुम दूर हुए से रहते क्यों
जीवन की कुछ जड़ में आओ,
रोओ क्यों कायर बन कर रे-
हंसते-हंसते सब सह जाओ ॥

कुछ शर्महीन कुछ शरमा ले कुछ रीत बने पर की मन में।

जीवन यूं पार नहीं होगा
जीवन की परिभाषा देखो,
केवल नीरस बन मत जीवो
जीवन में कुछ आशा देखो;
सागर की तरह लहर बन कर
उठ जाओ कभी तटों पर तुम
फिर कभी छोड़ कर चंचलता
बैठो गहरे ही जाओ तुम,
कुछ थक जायें कुछ थकें नहीं सब स्वर पा ले इस जीवन में ॥

—कुमारी सुनीता मलिक
जाट कालेज, रोहतक

गुरुकुल-समाचार

प्रस्तुतकर्त्ता :— वेदपाल शास्त्री, गढ़ी अजीमाँ (हिसार)

★

१- चुनाव वाग्वर्धिनी सभा :—

आज दिनांक 3-11-69 को गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां (सोनीपत) के महाविद्यालय विभाग में पूर्व वर्ष की भांति इस वर्ष भी वाग्वर्धिनी सभा के मन्त्री व उपमन्त्री पद के लिए चुनाव हुआ। सभा की अध्यक्षता आचार्य महामुनि जी ने की। अध्यक्ष के निर्णय एवं सर्व-सम्मति से श्री जयप्रकाश विद्यालंकार द्वितीय वर्ष मन्त्री तथा श्री कृष्ण चन्द्र विद्या विनोद प्रथम वर्ष उपमन्त्री पद के लिए चुने गये। तत्पश्चात् अध्यक्ष ने कहा कि वाग्वर्धिनी सभा का उद्देश्य विद्यार्थियों की हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेजी भाषा में वक्तृत्व-कला को बढ़ाना है जिससे कि समाज में सुयोग्यवक्ता तैयार हो सकें।

अध्यक्षीय भाषण के पश्चात् सस्वर शान्ति पाठ के साथ एवं जयघोष के साथ ही सभा का विसर्जन किया गया।

२- पुष्पारोपण सप्ताह :-—

इस मास के प्रथम सप्ताह में गुरुकुल के विद्यालय एवं महाविद्यालय विभाग में पुष्पारोपण सप्ताह मनाया गया जिसके अन्तर्गत मुख्य रूप से गुलाब, गैन्दे, सदा बहार इत्यादि अनेकों पुष्प-पौधों का आरोपण किया।

३- ऋतुरंग :—

इस वर्ष जैसा कि सर्व विदित है वर्षा का अत्यन्त अभाव रहा है। इस सूखे के कारण केवल गुरुकुल को ही नहीं अपितु समूचे किसान-वर्ग को अत्यन्त कठिनाई का सामना करना पड़ा है।

वर्षा के अभाव से मौसम पर भी प्रभाव पड़ा है क्योंकि प्रायः शरद्-ऋतु का आभास दीपावली से पूर्व ही होने लगता है परन्तु इस वर्ष दीपावली के काफी दिन बाद सर्दी का अनुभव हुआ।

अब जबकि सर्दी का मौसम अपने पूर्ण योवन पर आता दिखाई दे रहा है यहां संस्था के सभी विद्यार्थियों एवं अधिकारियों में उत्साह की तरंगों का संचरण होता दीख रहा है। सभी अपने नित्य कर्मों में संलग्न मस्त हैं। शरद् ऋतु सुस्वाथ्य निर्माण का अच्छा समय है। आजकल यहाँ प्रात:काल आसनों के व्यायाम व दण्ड बैठक तथा सायंकाल खेलकूद (वाली बाल, क्रिकेट, कबड्डी व बैडमिन्टन) से छात्रों में एक विशेष प्रकार की उमंगों का अवलोकन हो रहा है। "शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्" अगर इस उक्ति को यहां हम स्मरण करें तो अतिशयोक्ति न होगी।

स्थायी स्तम्भ—एक परिचय :

जिन्हें हम भुला न सकेंगे

त्यागमूर्त्ति श्री सरूपलाल जी

कोषाध्यक्ष
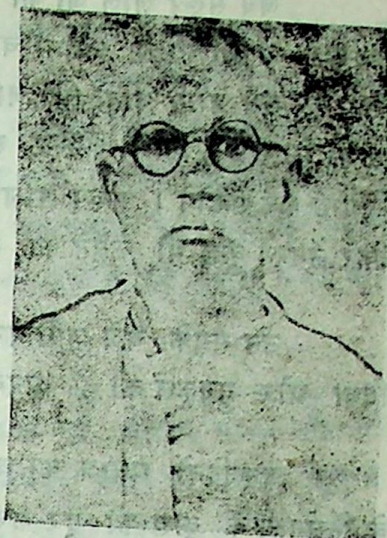
—आचार्य विष्णुमित्र 'विद्यामार्तण्ड'

●

निर्धनता, विचार भिन्नता, परस्पर अविश्वास के बढ़ने पर कलह प्रारम्भ हो जाता है। ऐसी ही अवस्था में एक दूसरे पर दोषारोपण करना साधारण मनुष्यों का स्वभाव होता है। ऐसी ही अवस्था हुई एक बार गुरुकुल भैंसवाल में लगभग 26 या 27 सन् में।

गुरुकुल में किसी भी प्रकार की फीस छात्रों से नहीं ली जाती थी। दुर्भिक्ष के पड़ने से तथा भक्त जी महाराज के कामों में उलझे रहने से निर्धनता और कार्यकर्त्ताओं में परस्पर अविश्वास तथा कलह ने स्थान ग्रहण किया। ऐसी अवस्था में भक्त फूल सिंह जी के सहयोगी गुरुकुल को छोड़ कर और भक्त जी महाराज को गुरुकुल संभालने के लिए असहाय बनाकर गुरुकुल से बाहर चले गये। इस अवस्था में मनुष्यों का जैसा स्वभाव होता है तदनुसार उन्होंने भक्त जी के विषय में उलटी सुलटी बातें भी कहनी प्रारम्भ कीं, जिससे गुरुकुल का वातावरण विषाक्त होता दिखाई दिया।

ऐसे समय भक्त जी महाराज को अपना साथ देने के लिए एक योग्य साथी की आवश्यकता थी, जिसकी वे तलाश कर रहे थे। उसी समय आपको श्री सरूप लाल जी आंवली के रूप में एक सच्चा साथी, सहायक और भाई मिला। जिसको प्राप्त कर आप को अति शान्ति लाभ हुआ।

जब सरूप लाल जी को भी गुरुकुल छोड़ कर जाने वाले साथियों ने भागने के काम में अपना साथी बनाना चाहा तब भी सरूपलाल जी ने उनको धमका कर कहा कि तुम सब जाना चाहो तो जाओ मैं तो भक्त जी का भाई बनकर उनके कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करूंगा और देखता हूँ कि तुम गुरुकुल तथा भक्त जी का क्या बिगाड़ कर सकोगे। सरूप लाल जी के ओजस्वी वचन सुन कर उन भगौड़े लोगों का फिर उनको कुछ भी कहने का साहस न हुआ। और वे गुरुकुल से चुपचाप खिसक गये।

उन सबके चले जाने पर सरूप लाल जी ने भी अपना गांव सदा के लिए छोड़ दिया और गुरुकुल को ही अपना घर बना लिया।

उन दिनों अनाज का चन्दा होना भी बन्द हो गया था। चौधरी जी ने गुरुकुल के निर्धनता के दुःख को दूर करने के लिए अनाज का चन्दा करने के लिए झोली टांगी। आप कई कई मास तक गांवों में घूम कर अन्न का चन्दा करने लगे। आपके इस साहस को देख कर जनता-जनार्दन ने गुरुकुल के लिए अन्न-संग्रह के काम में आपकी सहायता करनी प्रारम्भ की।

अब आपका प्रति वर्ष यह नियम हो गया कि अन्न।संग्रह के लिए कई कई मास बाहर रह कर काम में संलग्न रहते। अनेक जन इस काम में आपकी सहायता करते। इस प्रकार प्रति वर्ष छात्रों के लिए हजारों मन अन्न-संग्रह कर लेते। इससे छात्रों के भोजन की समस्या तो हल हो गई परन्तु कार्य-कर्त्ताओं को वेतन देने की समस्या बनी ही रही।

अब आपका ध्यान कृषि और गुरुकुल की गोशाला की ओर गया। ध्यान से कृषि कार्य कराते। गोशाला में दूध के साधन उत्पन्न करते, बछड़े और बछड़ियों की बिक्री करते इससे कुछ रुपये भी उनको मिलने लगे। इस रुपये से आप शाक सब्जी तथा कार्यकर्त्ताओं को रुपये आदि से भी सहायता करने लगे। इससे कार्यकर्त्ताओं का धैर्य बन्धा। आप प्रतिदिन गांव मे जाते परन्तु वहां भोजन खाकर न आते थे और जैसा भी रूखा सूखा भोजन ब्रह्मचारी करते वैसा आप स्वयं भी करते थे। ब्रह्मचारियों के साथ सन्ध्या हवन में बैठते। रात्रि को घूम घूम कर सोते हुए छोटे-छोटे ब्रह्मचारियों को संभालते। गुरुकुल के प्रत्येक विभाग की संभाल करना आपने कर्त्तव्य मान लिया। रात्रि को ब्रह्मचारियों के बीच में भी सोते और उनकी संभाल जैसे पिता पुत्रों की किया करते हैं इसी प्रकार संभाल करते थे। आपका सारा समय सारा जीवन गुरुकुल के लिए ही हो गया। लोग भी आपको आंवली का न मान कर गुरुकुल का व्यक्ति मानते थे।

चौधरी जी किसी भी अवाञ्छित व्यक्ति को गुरुकुल में ठहरने नहीं देते थे। आपका विचार था कि ऐसे व्यक्ति गुरुकुल के लिए हानिकर होते हैं। आप कोषाध्यक्ष पद पर काम करते थे परन्तु आपके कोष में रुपया नहीं था। बाहर से ही रुपया उधार रूप में, ऋण रूप में लाकर उन निर्धनता के दिनों में गुरुकुल का संचालन आप बड़ी चतुरता से करते थे। कार्यकर्त्ता या अध्यापक गण जब आप से रुपये मांगने आते तो "कल मैं प्रबन्ध करूंगा" ऐसा कहके कार्यकर्त्ताओं को आश्वासन देते रहते थे क्योंकि उन दिनों गुरुकुल में निर्धनता का साम्राज्य था। जो भी रुपये माँगने आता मीठी मीठी बातों को कहके सन्तुष्ट करके धैर्य बन्धाते थे।

उस संकट के समय गुरुकुल में ठहरना आपकी ही धीरता थी। यदि कोई भक्त जी की निन्दा करता उस पर सिंह के समान आक्रमण करने को उद्यत रहते थे। थोड़ी शिक्षा होते हुए भी बहुश्रुत होने के कारण किसी से भी बातें करने में कभी भी नहीं झिझकते थे। अपने पुरुषार्थ से और साधु व्यवहार से रुष्ट जनता को आपने अपना भक्त बना लिया था। जो भी मांगने वाले, आवश्यकता वाले होते थे सब आपके पास ही आकर अपने मन की बातों को कहते थे। इस प्रकार सारे इलाके पर आपका स्थायी प्रभाव हो गया था।

भक्त जी महाराज के बलिदान हो जाने से आप अत्यन्त सन्तप्त रहने लगे थे। आपके मन में सदा यही लगन लगी रहती थी कि किस प्रकार भक्त जी के बलिदान का प्रतिकार लिया जावे। इसी दौड़ धूप में आप साईकल पर सवार होकर इधर उधर फिरते रहे। भक्त जी के बलिदान के अवसर पर आपके द्वारा कहे गये शब्द थे—"यदि मैं घातकों के पास भक्त जी के बलिदान के समय होता तो उनकी छाती पर चढ़ जाता और उनको मार डालता।"

भक्त जी के स्वर्गलोक में जाने पर उनको भक्त जी के वियोग में रोते देखा गया। वह बात मुझे सदा स्मरण रहेगी। लगभग अपनी मृत्यु से एक मास पूर्व वे मुझसे बोले कि भाई विष्णु! क्या तुमको स्वप्न में भक्त जी के दर्शन हुए हैं? मैंने कहा—चौधरी जी! मुझे स्वप्न में भक्त जी महाराज गोशाला में जाते हुए झोला लेकर पांचवे सातवें दिन दिखाई देते रहते थे। चौधरी सरूप लाल जी ने कहा कि मुझे आज तक कभी भक्त जी दिखलाई नहीं दिये थे। आज रात को मुझे स्वप्न में ऐसा दिखलाई दिया कि भक्त जी ने आकर मेरी जम्फी भर ली और उनकी आंखों से अविरल अश्रुधारा बहने लगी। मैंने उनको समझाने के लिए जब कुछ बोलना चाहा तो मेरी आंखें खुल गईं और वहां कुछ भी दिखाई न दिया।

यह स्वप्न सत्य सिद्ध हुआ। इस स्वप्न के एक मास बाद ही आप अपने भाई भक्त जी से स्वर्गलोक में जा मिले।

उनके इलाज का प्रयत्न किया गया परन्तु उन्नीस दिन के लम्बे ज्वर के पश्चात् अपने भाई भक्त जी का अनुसरण करते हुए और उनकी याद को हृदय में स्थिर रखते हुए उनके अनुगामी बन गये।

भक्त जी की मृत्यु के एक वर्ष पश्चात् ही आपने भी गुरुकुल भूमि से सदा के लिए प्रयाण किया। भक्त जी की मृत्यु के पश्चात् आपके भी स्वर्गवासी होने पर गुरुकुल भूमि पर और गुरुकुल वासियों पर संकट का पर्वत गिर पड़ा।

गुरुकुल को चौधरी सरूप लाल जैसे कार्यकर्त्ता अब कहां मिलेंगे। जिनको गुरुकुल सेवा के अतिरिक्त अन्य कुछ भी दिखाई न देता था। निर्धनता में जो साथ देते हैं सच्चे मित्र वे ही हैं। सुख में तो सारे ही मित्र हैं परन्तु दु:ख में मित्रता रखने वाले बिरले व्यक्ति होते हैं। उन बिरले व्यक्तियों में त्यागमूर्ति चौधरी सरूप लाल जी का नाम प्रथम पंक्ति में लिखा जावेगा। आज उनकी याद रह गई है। उनकी बातों को भी वे साथी नहीं भुला सकेंगे जिनको उनके साथ रहने का अवसर मिला है।

लेखकों से निवेदन

1. लेखक महानुभावों से प्रार्थना की जाती है कि वे अपनी मौलिक, लोक-हितकारी रचनाएं (कहानी, लेख, कविताएं) प्रत्येक मास के अन्तिम सप्ताह तक अवश्य भेज दें।

2. रचनायें पेज के एक तरफ ही लिखें। लेख शुद्ध एवं सुपाठ्य होना आवश्यक है।

पाठकों से आशा की जाती है कि वे पत्रिका को रोचक बनाने के लिए अपने सुझाव भेज कर सक्रिय योगदान देंगे।

—सम्पादक

(क्रमशः ५)

* महाभारत *

(आदि पर्व)

लेखक :

आचार्य विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड

●

(गतांक से आगे)

ऋषियों का कुन्ती तथा पाण्डु पुत्रों को लेकर हस्तिनापुर में भीष्म को सौंपना । कौरवों पाण्डुवों की बालक्रीड़ा । भीम को विष देकर दुर्योधन का उसे गंगा में डालना ।

सतरहवें दिन ऋषि-मुनिगण पाण्डु तथा माद्री की अस्थियां लेकर कुन्ती तथा पाण्डु पुत्रों समेत हस्तिनापुर में पहुँचे । वहां पहुँच कर भीष्म आदि को सन्देश भेजा । भीष्म समेत विदुर, धृतराष्ट्र आदि प्रजा के साथ उनसे मिलने के लिए आगे आये । सबने ऋषि-मुनियों का आगे बढ़ कर स्वागत किया ।

तदनन्तर एक वृद्ध मुनि ने घोर तपस्या करने वाले पाण्डु की मृत्यु की सूचना उन सब को दी । साथ में यह भी बतलाया कि उनकी पत्नी माद्री भी उनके साथ चिता-रोहण कर गई हैं । ये युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव उनके पांच पुत्र हैं । हम लोगों ने वन में इनको अच्छी प्रकार शिक्षित किया है । यह कुन्ती राणी है । इन सबको आप स्वीकार करें । इतना कहकर उनके साथ आये हुए ऋषि मुनिगण एकदम वहां से तिरोहित हो गये ।

राजा धृतराष्ट्र ने उन दोनों की अस्थियों का राजसम्मान सहित विसर्जन किया। पाण्डु की मृत्यु की सूचना से पाण्डु की माता अम्बिका बहुत रोईं। उसके रोने से सारा वातावरण करुणामय हो गया। यह देख भीष्म आदि उसको समझा बुझा कर वापिस नगर में ले गये।

इस घटना के कुछ दिनों पीछे व्यास मुनि हस्तिनापुर में अपनी माता सत्यवती से मिले और बोले—माता जी! आगे बहुत ही निकृष्ट समय आने वाला है। अतः अब आपको यहां नहीं रहना चाहिए। आप यहां से मेरे योगाश्रम में जाकर निवास करें।

सत्यवती ने व्यास की बात को उचित जानकर उसे स्वीकार किया। वह धृतराष्ट्र की माता अम्बालिका के समीप गई और उससे बोली—हे पुत्री! मुझे व्यास देव ने बतलाया है कि आगे बहुत ही बुरा समय आने वाला है अतः मैं अम्बिका को साथ लेकर व्यास देव के योगाश्रम में जाना चाहती हूँ। यह सुन अम्बालिका ने उस से कहा—हे माता जी! मैं फिर यहां रह के क्या करूंगी। मैं भी आपके साथ योगाश्रम में चलूंगी। तदनन्तर भीष्म से आज्ञा प्राप्त कर दोनों रानियों समेत सत्यवती योगाश्रम में चली गई। वहां पर रह कर कठोर योगाभ्यास करती हुई अपनी पुत्रवधुओं के साथ स्वर्ग में सिधार गई।

धृतराष्ट्र के पुत्रों से पाण्डु पुत्र सब तरह से योग्य थे। भीम बड़ा बलवान् था। वह खेल में सब धृतराष्ट्र पुत्रों को पराजित कर देता था। मल्लयुद्ध में सब का मान-मर्दन कर देता था। भीम खेल-खेल में कभी उनको पकड़ कर छिप जाता था। कभी धृतराष्ट्र पुत्रों के शिरों को पकड़ कर आपस में भिड़ा देता था। कभी खेल-खेल में धृतराष्ट्र पुत्रों को पकड़ कर जल में बैठ जाता था। जब उनका दम टूटने लगता था तब उन्हें छोड़ देता था। वृक्ष पर चढ़े हुए धृतराष्ट्र पुत्रों को देख कर वृक्ष हिला देता था जिससे वे नीचे गिर जाते थे। कुश्ती में, दौड़ में कोई भी भीम के समान न था। यह सब काम भीम द्रोह बुद्धि से नहीं करता था यह उसकी बाल लीला थी।

दुर्योधन भीम के बल को देख कर उससे द्रोह बुद्धि रखने लगा। उसने अपने भाइयों से मन्त्रणा कर उसे कैद करना चाहा। उसने अपने भाइयों से कहा जब यह नगरोद्यान में सो जावे इसे उठा कर जल में फेंकना है। तदनन्तर इसके छोटे भाई अर्जुन को और बड़े भाई युधिष्ठर को कैद में डाल कर सारी पृथ्वी पर राज्य करूंगा।

अपनी इस घृणित अभिलाषा को पूरा करने के लिए उसने गंगातट पर जलविहार के लिए ऊनी तथा सूती कपड़ों के विशाल मण्डप तैयार कराये। अनेक पटमण्डप बनाये

गये। प्रमाण कोटि तीर्थ में दुर्योधन ने यह आयोजन किया। वहां पर बहुत बड़ा उत्सव किया गया। अनेक प्रकार के उत्तम-उत्तम भोजन भी बनवाये गये। भीम को वहां पर विशेष रूप से बुलवाया गया था। भीम का भोजन कालकूट विष डालकर गुप्त रूप से तैयार कराया गया था। वह भोजन दुर्योधन ने अपने हाथ से भीम को परोसा। भीम को जितना भी भोजन दिया गया उसे वह हंसता हुआ खा गया। इससे दुर्योधन को बड़ी प्रसन्नता हुई कि उसका कांटा निकल गया है। फिर सब पाण्डव भोजन खाकर परस्पर प्रेमपूर्वक जलक्रीड़ा करने लगे। क्रीड़ा के पश्चात् रात्रि को उन पटमण्डलों में ही सब ने रात्रि बिताने का निश्चय किया। विषैला भोजन खाने और व्यायाम करने से भीम बहुत भ्रान्त हो गये थे। भीम प्रमाण कोटि के एक पटमण्डल से बने गृह में आके सो गये। अब भीम जड़वत निश्चेष्ट होके वहां लेटे हुए थे। दुर्योधन ने जब भीम को पूर्णतया निश्चेष्ट देखा तो उसने शनैः शनैः उसे लताओं से बांध कर गंगा के ऊंचे तट से गंगाजल में डाल दिया। वहां से बहते हुए भीम नागजाति से अधिकृत राज्य में जा पहुँचे। पानी में पड़ने से विष का प्रभाव कम हो चला था। भीम भी अब पूर्ण रूप से संज्ञा शून्य नहीं थे।

नाग जाति के पुरुषों ने भीम को अपने प्रदेश में बिना आज्ञा के आने के कारण और उसे बलवान मान कर भय की आशंका से संज्ञा शून्य से दीखने वाले पर प्रहार करना प्रारम्भ किया। उनका प्रहार भी भीम के लिए लाभकारी हुआ। उस प्रहार से भीम शीघ्र ही होश में आ गया। उसने अपने को लताओं से बद्ध देखकर एक झटके में ही सारी लताओं को भंग कर डाला। फिर उसने नाग जाति के पुरुषों पर प्रहार करना प्रारम्भ किया। वे उसके कठोर आक्रमण को सहन नहीं कर सके। तदनन्तर भागे हुए अपने राजा वासुकि के समीप पहुँचे। राजा को वह सारी घटना कह सुनाई जो घटित हुई थी।

उसी समय नागराज आर्यक ने उन्हें देखा। आर्यक कुन्ती के पिता वसुदेव के नाना थे। उन्होंने अपने दौहित्र के दौहित्र भीम को छाती से लगा लिया। महाबली वासुकि भी बड़े प्रसन्न हुए। आर्यक नाग ने वासुकि से कहा—हे वासुकि! यदि आप भीम पर प्रसन्न हैं तो आप भीम को वस्त्र तथा धन न प्रदान कर उत्तम उत्तम औषधियों से इसे नीरोग बना दें जिससे इसका विष दूर होकर यह अब से कई गुना अधिक बलवान् बन जावे।

वासुकि ने आर्यक की बातों को सहर्ष स्वीकार किया। उसी समय औषधि-विशेषों के ज्ञाता वासुकि ने अमृत के समान मधुर और अमरता प्रदान करने वाली अनेक औषधियाँ विधिपूर्वक दीं। जिन के प्रयोग से कुछ ही दिनों में भीम पहले से कई गुना अधिक बलवान हो गया

इधर प्रमाण कोटि तीर्थ से युधिष्ठिर घर हस्तिनापुर जाके माता कुन्ती से मिले और उससे पूछा माता जी ! भीम आ चुका है या नहीं ? युधिष्ठिर की बात को सुन कर माता बोली– हे पुत्र ! यहां तो भीम नहीं आया है। तुम सब भीम को ढूंढो। उस घटना से युधिष्ठिर ने विदुर को भी अवगत कराया। जब विदुर ने यह बात सुनी तो वे बोले तुम यह बात कहीं न कहना कि भीम घर नहीं पहुँचा है। नहीं तो वह दुर्बुद्धि तुम्हारे शेष भाइयों का भी अहित कर सकता है। व्यास जी ने कहा है कि—"कुन्ती के सारे पुत्र दीर्घायु होंगे"। अतः चिन्ता न करो पर सावधान रहो, इस घटना का किसी को भी ज्ञान नहीं होना चाहिए।

भीम के कई दिन तक घर न आने से माता समेत चारों भाई बहुत चिन्तित रहते थे। आठवें दिन भीम अपने घर आ पहुँचे। भीम को देख कर माता और चारों भाई बहुत प्रसन्न हुए।

माता तथा भाइयों के पूछने पर भीम ने वह सारी घटना कह सुनाई जो उसके साथ घटी थी। उसने बतलाया कि गंगातट पर भाई बनकर मुझे दुर्योधन ने विष दिया और फिर उठा कर गंगा नदी में पटक दिया। नागों से उसका किस प्रकार युद्ध हुआ यह बात भी भीम ने भाइयों से कही। नागराज आर्यक की सहायता का भी उसने वर्णन किया। इस प्रकार सारी बात भाइयों को बतलाई। इस बात को सुन कर सब भाइयों ने निश्चय किया कि हम सब को बहुत सावधानी से रहना चाहिए। तभी कल्याण हो सकता है। इधर धृतराष्ट्र और भीष्म ने कौरवों तथा पाण्डवों की विशेष शिक्षा के लिए कृपाचार्य को आचार्य पद पर नियुक्त किया।

कृप, द्रोण, अश्वत्थामा की उत्पत्ति का वर्णन। परशुराम से द्रोण का अस्त्र-शस्त्र ग्रहण। द्रोण का द्रुपद से तिरस्कृत होके हस्तिनापुर में आना। द्रोण का राजकुमारों की वीटा और अपनी अंगूठी निकालना।

गौतम मुनि के शरद्वान् पुत्र हुए। उसका जानपदी नामक देव कन्या से सम्बन्ध हुआ। फिर जानपदी के गर्भ से कृप नामक पुत्र और कृपी नाम की पुत्री ने जन्म ग्रहण किया। वह देव कन्या उन पुत्र और पुत्री को जन्म देकर उनको वहीं छोड़ कर चली गई। अचानक महाराज शान्तनु किसी प्रयोजन से उस वन में पधारे जहां वे दोनों बालक जन्मे हुए थे। राजा के सेवकों ने दोनों बच्चों को उनके सामने उपस्थित किया।

उन दोनों बालक और बालिका पर राजा कृपाभाव वाले हो गये अतः उन दोनों का नाम पुत्र का कृप और पुत्री का नाम कृपी रखा गया। राजा उनको अपने साथ हस्तिनापुर में ले गये और उनकी भलीप्रकार पालना की। जब शरद्वान् गौतम को उन दोनों बालकों के जीवित होने का ज्ञान हुआ तो उसने समय पर कृप को धनुर्वेद का ज्ञाता बनाया और कृपी का बिबाह द्रोण से कर दिया। उन्हीं कृपाचार्य से अस्त्र-शस्त्रों की शिक्षा कौरव पाण्डु ग्रहण करने लगे।

जब राजकुमार कृपाचार्य से शस्त्रास्त्रों की विद्या सीख चुके तो भीष्म जी राजकुमारों की विशेष शिक्षा के लिए द्रोण को लाना चाहते थे। और वे उनको ढूंढ रहे थे परन्तु वे अभी तक उनको प्राप्त न हो सके थे।

द्रोण के पिता का नाम भरद्वाज था। घृताची देव कन्या पर वे मोहित हो गये थे अतः उन दोनों के परस्पर सम्बन्ध से द्रोण का जन्म हुआ। भरद्वाज मुनि ने अग्निवेश को आग्नेयास्त्र की शिक्षा दी थी। अग्निवेश ने भी अपने गुरुपुत्र द्रोण को आग्नेयास्त्र की शिक्षा प्रदान की।

पृषत् नामक पञ्चाल का राजा भरद्वाज का मित्र था। उसके पुत्र का नाम द्रुपद था। द्रुपद भरद्वाज के आश्रम में द्रोण के साथ प्रतिदिन खेलता और अध्ययन करता था। वे दोनों साथ रहने से परस्पर मित्र बन गये थे। द्रुपद बातों बातों में द्रोण से कहा करते थे कि जब मैं पञ्चाल देश का राजा बन जाऊंगा तब तुझे किसी प्रकार का भी कष्ट न होने दूंगा। मेरा राज्य तेरा ही राज्य होगा। इस प्रकार प्रायः प्रतिदिन दोनों मित्र बातें किया करते थे।

समय आने पर द्रुपद के पिता पृषत् स्वर्गवासी हो गये। इसी प्रकार द्रोण के पिता भरद्वाज भी परलोक गमन कर गये। अब पञ्चाल देश के द्रुपद राजा बने। कुछ समय के पश्चात् कृपी के उदर से अश्वत्थामा नाम का प्रतापी पुत्र उत्पन्न हुआ। इधर द्रोण अस्त्र-शस्त्रों की विशेष शिक्षा प्राप्त करने के लिए परशुराम जी के समीप गये। परशुराम ने अपने सारे अस्त्र-शस्त्र द्रोण को प्रदान कर उनकी प्रयोग विधि भी उनको यथावत् बतलाई। उनसे पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर द्रोण अस्त्र-शस्त्रों के और धनुर्वेद शास्त्र के ज्ञाता और आचार्य बने। वे अब द्रोण के स्थान पर द्रोणाचार्य कहे जाने लगे।

अपने पुत्र अश्वत्थामा के अन्य बालकों से तिरस्कृत होने पर निर्धनता से छुटकारा पाने के लिए अपने बालसखा द्रुपद राजा के समीप गये। वहां जाकर अपनी बाल्यकाल की मैत्री को बतलाकर बोले—हे राजन्! मैं आपका बालसखा द्रोण हूँ। निर्धन द्रोण के

वचन राजा द्रुपद को अच्छे न लगे। वह क्रोध से आंखें लाल करता हुआ राज्य के मद में द्रोण को इस प्रकार बोला—ब्राह्मण ! तुम बुद्धि हीन हो, जो मुझे सखा कहके बातें कर रहे हो। तुम को व्यवहार करना नहीं आता है। स्मरण रखो ज्यों-ज्यों मनुष्य वृद्ध होता जाता है त्यों-त्यों उसकी मित्रता भी क्षीण होती जाती है। किसी की भी मित्रता सदा रहने वाली नहीं होती है। मेरी और तेरी बाल्यकाल की मित्रता स्वार्थवश थी। निर्धन-सधन की, मूर्ख-विद्वान् की, शूर और कायर की कभी भी मित्रता नहीं होती है। तुम इस प्रकार के शब्द कहके मुझे अपमानित क्यों कर रहे हो।

जब राजा द्रुपद के ये कठोर शब्द द्रोण ने सुने तब वे अत्यन्त क्रुद्ध हुए। यह सुनते ही वे इन कठोर शब्दों का प्रतिकार लेने के लिए हस्तिनापुर की ओर चल पड़े। वहाँ जाकर वे कृपाचार्य के समीप गुप्त रूप में ठहर गये। उन दिनों वहां रह कर अश्वत्थामा भी कभी कभी कृपाचार्य के साथ विद्यालय में जाके राजकुमारों को अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा देता रहा।

एक दिन नगर से बाहर क्रीड़ाक्षेत्र में राजकुमारों के खेल को देखने के लिए द्रोण गये। वहां वे वीटा (गुल्ली) से खेल रहे थे। खेलते-खेलते उनकी वीटा एक जल रहित कूएं में गिर पड़ी। प्रयत्न करने पर भी कोई सा भी राजकुमार उसको बाहर न निकाल सका। उस समय सारे राजकुमार निराश हुए खड़े थे।

जब राजकुमारों से वह वीटा नहीं निकल सकी तो वे कृष्णवर्ण के, सफेद बालों वाले, दुर्बल शरीर वाले व्यक्ति के समीप पहुँचे और उससे उस वीटा को निकालने की प्रार्थना की। उनकी बातों को सुन उस वृद्ध ने उनको धिक्कारते हुए कहा कि तुम कुरु वंश में उत्पन्न होके भी वीटा को कूए से निकालने में असमर्थ हो। तुम्हारी अस्त्र-शस्त्र की विद्या अभी अधूरी है।

इतना कहके द्रोण उनसे फिर बोले—राजकुमारो ! देखो मैं इस अपनी अंगूठी को भी वीटा के समीप ही इस कूए में डालता हूँ। मैं इन दोनों को ही निकालूंगा। तुम सब ध्यान लगाकर मेरे कौशल को देखो। यह कह पहले सरकण्डे के समान बाणों से उस वीटा को निकाला। फिर मुद्रिका (अंगूठी) को भी बाण पर चढ़ा कर खड़े रहके बाहर निकाल दिया।

उस वृद्ध की उस कुशलतता से सारे राजकुमार प्रभावित हुए। वे राजकुमार उस वृद्ध से बोले—हे ब्राह्मण ! हम आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। आप अस्त्र-शस्त्र के

संचालन में बहुत चतुर हैं, आप कौन हैं ? कहां से आये हैं ? हम आपकी क्या सेवा करें आज्ञा दीजिए।

द्रोण बोले—हे राज कुमारो ! तुम्हारी बातों से मैं प्रसन्न हूं। तुम मेरी जानकारी भीष्म से कहो। वे ही मुझे भली प्रकार पहचान सकेंगे। उस वृद्ध की बात को सुन कर राजकुमार पितामह भीष्म के समीप गये और जो घटना क्रीड़ाक्षेत्र में घटी थी उससे भीष्म को उन्होंने परिचित कराया।

राजकुमारों से पूर्ण घटना को सुनकर भीष्म ने द्रोण को पहचान लिया। वे शीघ्रता से राजकुमारों के साथ वहां पहुँचे जहां द्रोण ठहरे हुए थे और उनसे आने का कारण पूछा। भीष्म की बात सुन कर द्रोण ने द्रुपद के समीप जाने की बात तदनन्तर द्रुपद का अभद्र व्यवहार आदि की सारी घटना विस्तार से कह सुनाई। द्रोण ने बातों-बातों में भीष्म से यह भी कहा कि मैं द्रुपद से अपने अपमान का प्रतिकार लेना चाहता हूं।

द्रोण की बातें सुनकर भीष्म बोले—हे आचार्य ! आप अपने धनुष को डोरी रहित कर दें और यहां सुख से रहें। कुरुओं के सारे धन के आप स्वामी हैं। जो इच्छा आपने की है उसे आप पूरा हुआ ही मानिये।

(क्रमशः)

मनन योग्य विचार—

* भगवान् के प्रति मन कैसा होना चाहिए ? जैसे—सती का मन पति की ओर, कृपण का धन की ओर और विषयी का विषय की ओर होता है, उसी प्रकार जिस समय मन भगवान के प्रति होगा, उसी समय भगवान प्राप्त हो जायेंगे।
* मां के पांच बच्चे हैं। उसने किसो को खिलौना, किसी को गुड़िया और किसी को खिलौना देकर भुला रखा है। उनमें से जो खिलौना फैंक कर 'मां मां' कहकर रोने लगता है, माँ झट उसे गोदी में उठाकर शान्त करने लगती है। हे जीव ! तुम कामिनी-काँचन में भूले हुए हो। यह सब फैंक कर जिस समय तुम जगन्माता के लिए रोने लगोगे उसी क्षण वह आकर तुम्हें गोदी में ले लेगी।
* धन आदि मुझे नहीं मिला, मुझे लड़का नहीं हुआ, यह कह-कह कर लोग आंसुओं की धारा बहाया करते हैं, परन्तु मुझे भगवान नहीं मिले, उनके चरण-कमलों में मेरी भक्ति नहीं हुई, यह कह कर क्या कोई अपनी आंखों से एक बून्द भी आंसू गिराता है ?

—श्री रामकृष्ण देव

भारतीय त्यौहारों में—

रक्षा-बन्धन

—वेद पाल शास्त्री
गढ़ी अजीमां (हिसार)

किसी राष्ट्र, समाज या जाति का इतिहास उसके त्यौहारों और पर्वों से पढ़ा जा सकता है। प्रत्येक त्यौहार का अपना अलग ही उद्देश्य होता है। उदाहरण के तौर पर "क्रिसमिस डे" ईसाईयों में यीशामसीह के जन्म-दिन के उपलक्ष में मनाया जाता है। इसी प्रकार '15 अगस्त' का दिन भारत वासियों के स्वतन्त्रता संघर्ष एवं सहस्त्रों मनुष्यों के बलिदान के इतिहास की स्मृति को जगाता है। 'होली' के त्यौहार के साथ श्री विष्णु के नरसिंह अवतार की घटना सम्बन्धित है तथा प्रह्लाद भक्त की कहानी प्रत्येक भारतीय बाल, युवा व वृद्ध जानता है। 'बुद्ध-पूर्णिमा' महात्मा बुद्ध की जीवन कथा सच्चे मोक्ष-प्राप्ति की कथा उनके भक्तों के हृदय में ताजा कर देता है। 'दशहरे' के दिन विश्व-विख्यात राम-रावण के युद्ध की कहानी याद आती है। 'दीपावली' के दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती की स्मृति अवश्य ही स्मृतिपटल पर छा जाती है। इस प्रकार अनेकों त्यौहार हैं जिनको समयानुकूल याद करने से हमें अपनी संस्कृति का दिग्दर्शन होता है।

श्रावण शुक्ला पूर्णिमा के त्यौहार का रूप भारतीय संस्कृति की व्यवस्था में बिल्कुल निराला है। ज्ञानोपार्जन के लिए कृत संकल्प, वीतरागी पुरुष समाज को नेह के बन्धन में बांध, घर में ही रहने को, आज के दिन बहिनें मजबूर कर देती हैं। ज्ञान के साथ-साथ कर्म की उपासना का सबक, भारत की देवियां ही देती हैं। पुरुषों का कर्त्तव्य केवल ज्ञानोपार्जन ही नहीं है अपितु देश, समाज तथा राष्ट्र की रक्षा का दायित्व भी उन पर है। केवल ज्ञानार्जन मात्र से तो संसार चलता नहीं तथा न ही ज्ञानमार्ग को त्याग कर केवल कर्म मार्ग को अपनाने से। भारत के ऋषि-मुनियों ने कभी एकांगी चिन्तन नहीं किया। समन्वय और सन्तुलन उनके जीवन का लक्ष्य रहा है। इस प्रकार

यहां हमें हमारी संस्कृति का दिग्दर्शन होता है। वह चैतन्य है और जड़ को भी चेतन बनाना उसका लक्ष्य है। इस संस्कृति की प्रेरणा से जीवन में उन्नति के पथ पर बढ़ा जा सकता है। रक्षा-बन्धन का यह पर्व हमें संस्कृति की याद दिलाता है।

प्रत्येक भारत वासी इस श्रेष्ठ "श्रावणी-पर्व" को बिना किसी भेद-भाव के मनाता है। श्रावणी उपाकर्म और रक्षा-बन्धन की सन्तुलित समन्वय की रीति को अपना कर ही हिन्दु समाज अब तक जीवित रहा है। भारतीय इतिहास इस बात का साक्षी है कि रक्षा-बन्धन के द्वारा विदेशी और विधर्मियों को भी प्रेम की डोर में बाँधा गया है।

रक्षा के इस कच्चे धागे के बन्धन में दोहरी शक्ति होती है। बहिन भाई को अपने प्रेमपूर्ण आशीर्वाद के कवच से मण्डित करती है ताकि वह संसार में रहकर और सांसारिक कृत्य करते हुए भी आध्यात्मिकता की साधना से विचलित न हो सके और नैष्ठिक जीवन व्यतीत करने में समर्थ हो सके। दूसरी ओर यदि बहिन के परिवार पर कोई संकट आवे तो भाई के नाते वह उस संकट में उसकी सहायता को सदा प्रस्तुत रहे।

इस त्यौहार का महत्त्व ऐतिहासिक अधिक और धार्मिक कम है। इस दिन प्रत्येक बहिन-बुआ अपने भाई और भतीजे के राखी बांधती है। पहले तो यह राखी युद्ध में जाते हुए भाई के हाथ पर बान्धी जाती थी या कोई विपदा-ग्रस्त बहिन अपने भाई को यह रक्षा-सूत्र भेजती थी किन्तु धीरे-धीरे यह प्रथा बनकर एक त्यौहार रूप में मनाई जाती है। इसी से मुस्लिम हिन्दु प्रेम की कहानी सम्बन्धित है। कहते हैं कि—"चित्तौड़ की महारानी ने मुगल सम्राट हिमायु को अपनी रक्षा हेतु राखी भेजी थी। वह अपनी विधर्मी बहिन की लाज की रक्षा हेतु गया किन्तु उसके पहुँचने से पूर्व ही वह जल मरी थी। अपनी बहिन का इतना दुखद अन्त देख कर हिमायु ने शत्रु पक्ष की सेना का निर्दयता से संहार किया और शत्रु पक्ष की सारी बहिनों को मरवा दिया।" यहां पर अतिशयोक्ति हो सकती परन्तु एक भाई-बहिन के निर्मल प्रेम की गाथा जब तक यह त्यौहार मनाया जावेगा सदैव गाई जावेगी।

आजादी का मूल्यांकन

—राज सिंह भनवाला
कासेन्ढ़ी (सोनीपत)

☆

विश्व के अन्दर शक्तिशाली जातियां अपने से कमजोरों को पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ कर उनसे मनमाना व्यवहार करती हैं। लेकिन मनुष्य स्वतन्त्रता के वातावरण में श्वास लेना चाहता है। और जब वह अत्याचार से पिस जाता है तो उसकी आत्मा उस अत्याचार के विरुद्ध उसको प्रोत्साहित करती है और वह आजाद रहना चाहता है।

परन्तु आजादी मांगने से नहीं मिलती, उसके लिए साहस, बलिदान, चरित्रादि गुणों की एवं खून की आवश्यकता होती है। विश्व के इतिहास को उठाकर देखिए कि अनेक देशों में खून की नदियां बहाने के बाद में आजादी मिली है।

इतिहास में कुछ ऐसे पृष्ठ आते हैं जो हमें गौरवमय अतीत के पृष्ठों में खो जाने के लिए बाध्य करते हैं जिनको याद करके प्रत्येक मानव का खून खौलने लगता है।

क्या हम महाराणा प्रताप को भूल गए ? जिन्होंने मेवाड़ की स्वतन्त्रता के लिए छब्बीस (26) वर्षों तक वनों की खाक छानी और युद्धों में अपने आपको स्वाहा कर दिया, तभी तो भारत माता के वीर सपूत एवं आजादी के रक्षक कहलाये।

शिवा जी ने कई बार मुगलों से लोहा लिया। गुरु गोबिन्द ने अपने चारों पुत्र भारत माता के लिए भेंट चढ़ा दिए। उन वीरों की याद में ही किसी कवि ने कहा है—

क्षण-भंगुर माटी की अमरता तुम्हें पास बुलाती है।
खून की परीक्षा यह कभी - कभी आती है ॥
सूरज के टुकड़े तुम हस्ताक्षर विजयी के।
तुम से इतिहासों की अमरता बढ़ जाती है ॥

हमारी स्वतन्त्रा के दुश्मन अंग्रेजों को मार कर बलिदान होने वाले अनेक वीरों पर भारत माता को आज भी अभिमान है।

भारत माता के सपूत आजादी देवी की पूजा के लिए भारत माता की गुलामी की शृंखलाओं को कतरने के लिए कष्ट तो क्या प्राण तक देने या लेने में नहीं झिझकते थे। गुलामी की अपेक्षा फांसी को चूमना या शत्रु को मौत के घाट उतारना प्रशस्यतर जानते थे। उन्हें आजादी चाहिए किसी भी कीमत पर क्यों न मिले। आजादी की कीमत स्पष्टतया बलिदान है।

ब्रिटिश सरकार को ईंट का जवाब पत्थर से देने की आवश्यकता थी, जो क्रान्तिकारियों ने दिया। लातों के भूत बातों से नहीं मानते।

भगत सिंह ने असेम्बली में धमाका उठा कर और चन्द्रशेखर 'आजाद' ने कम्पनी बाग के अन्दर 67 अंग्रेजों को अपनी गोली का निशाना बनाकर बलिदानों की पंक्ति में अपना नाम लिखा दिया।

ऊधम सिंह और मदन लाल धींगरा ने अंग्रेज अधिकारियों को करनी का फल चखाया। रामप्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह, करतार सिंह, सुखदेव एवं अशफाक उल्लाखां आदि क्रान्तिकारियों ने फांसी के फन्दे को चूमकर भारत के लोगों को आजादी प्राप्ति के लिए प्रेरित किया। इन्हीं वीर पुत्रों को देखकर कवि कहता है :—

आज चली है सेना फिर से धीर वीर मस्तानों की।
आजादी के दीपक पर है भीड़ लगी परवानों की॥

भारत माता के क्रान्तिकारियों से जब कोई उनका स्थान आदि पूछता है तो वे कहते हैं कि :—

हम दीवानों की क्या हस्ती, आज यहां कल वहां चले।
मस्ती का आलम साथ चला, हम धूल उड़ाते जहां चले॥

इसी आजादी की रक्षा के लिए ब्रिगेडियर होशियार सिंह, थापा, सुरेन्द्र सिंह, आशा राम त्यागी (जिन्होंने 2 घण्टों के अन्दर 22 टैंकों का सफाया किया था), मेजर रणजीत सिंह, सरदार भूपेन्द्र सिंह आदि ने अपूर्व बलिदान दिए हैं।

इसी प्रकार चित्तौड़ के इतिहास में चौदह हजार (14000) रानियां अपनी सतीत्व की रक्षा के लिए अग्नि में कूद पड़ी। ढ़ाका विश्वविद्यालय की तीन मंजिली बिल्डिगों से सैंकड़ों कन्याओं ने सतीत्व की रक्षा के लिए ही छल्लागें लगाई थी।

आज फिर भारत माता को चरित्रवान् महामानवों की आवश्यकता है। ऐसे

ऐसे बलिदानियों के प्रति लेखक कहता है :—

इतिहास से कायरता का नाम मिटाने वालो,
सामने जूझ के ऐ गोलियां खाने वालो।
आजादी हित में प्राण लुटाने वालो,
जीतों को भी रश्क आता है ऐ मर जाने वालो।

उन क्रान्तिकारियों (जैसे—सुभाष चन्द्र बोस, अशफाक उल्ला खां, राजेन्द्र लाहिड़ी, राम मनोहर, सरदार भक्त सिंह, चन्द्र शेखर आजाद, राम प्रसाद विस्मल, राजगुरु, सुखदेव, करतार सिंह आदि) के बलिदानों का पुरस्कार हम देंगे, देंगे और अवश्य देंगे और उसका रूप होगा :—

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा।।

उबटनों का चमत्कार—त्वचा का निखार

—डा० राजवीर, रोहतक रोड़, गोहाना

★

(गतांक से आगे)

● एक चम्मच बोरिक पाउडर, दो तीन चम्मच दूध का पाउडर, थोड़ा सा जैतून तैल तथा नीम्बू का रस मिला कर उबटन करने से रंग निखरता है तथा त्वचा चमक उठती है।

● अण्डे की जरदी तथा शहद समान मात्रा में मिलाकर अच्छी तरह फैंटें तथा फिर चेहरे तथा अन्य अंगों पर अच्छी तरह लेप करके कुछ देर बैठी रहें। तत्पश्चात् मलकर साफ करें चमत्कारिक लाभ होगा।

● यदि त्वचा बहुत धूल-मिट्टी से युक्त हो तो दूध में थोड़ा नमक मिलाकर रूई के फाये से धीरे-धीरे साफ करें।

● सन्तरों के सूखे छिलकों का चूर्ण, बेसन, हल्दी को दही में मिलाकर त्वचा पर रगड़ने से रंग निखरता है। कील मुंहासे दूर होते हैं।

● थोड़ा सा मैदा दूध में भिगो कर उसमें गुलाब तथा हरसिंगार के पिसे हुए ताजे फूल मिला दें इस मिश्रण को शरीर पर मलने से त्वचा सुगन्धित तथा कोमल हो जाती है।

हरियाणा के तीर्थ-स्थल

—कृपा कान्त 'झा' मठपति
वैद्यनाथ धाम, देवघर (बिहार)

पृथुदक—

हरियाणा को हिरण्यमयी भूमि की संज्ञा से अभिभूत किया गया है। इस हिरण्य-गर्भा भूमि में ही भारत की वैदिक संस्कृति पल्लवित और पुष्पित हुई थी। भारत वर्ष के युग युग की संस्कृति, धर्म की महान ज्योति यहीं से प्रस्फुटित हुई थी। महाराजा वेन के प्रतापी पुत्र महाराजा पृथू इसी भूमि में पैदा हुए थे। पृथू के नाम पर अम्बाला जिले में सरस्वती नदी के किनारे पृथुदक नामक स्थान है। पद्म पुराण और वामन पुराण के आधार पर पृथूदक को महान् तीर्थ सिद्ध किया गया है। वामण पुराण के अनुसार इसी स्थान पर महर्षि विश्वामित्र ने ब्राह्मणत्व धारण किया था। महाराजा पृथु ने अपने पिता महाराजा वेन का अन्तिम-संस्कार यहीं किया था। कहते हैं पृथू के नाम पर ही पृथ्वी शब्द अलंकृत किया गया है।

पृथुदक का दूसरा नाम पेहवा है। यहां पर पृथुका नामक सुन्दर सरोवर है। देश के कोने-कोने से तीर्थ यात्री प्रति वर्ष पितृपक्ष में पितरों की मुक्ति की कामना के लिए यहां आते हैं। पृथुदक के बारे में यह भी कहा गया है कि यहां स्नान कर मनुष्य पाप से रहित हो जाता है। इस स्थान पर अत्यन्त प्राचीन देवी देवताओं की मूर्तियां और मुद्राएं उपलब्ध हुई हैं।

पृथुदक में एक प्राचीन शिव मन्दिर है। इस मन्दिर का निर्माण महाराज पृथु ने करवाया था। इस्लामी शासन में यह मन्दिर विनष्ट कर दिया गया था जिसे सिक्खों के महारजा रणजीत सिंह ने इस मन्दिर का जीर्णोद्धार किया था। मध्यकालीन इतिहास के आधार पर यह कहा जाता है कि मोहम्मद गजनवी और मोहम्मद गौरी ने उत्तर भारत के अनेक तीर्थों को ध्वस्त कर दिया था। तत्कालीन समय में सिक्ख जाति के सम्राटों, गुरुओं ने तीर्थों का जीर्णोद्धार किया था। पृथ्वी श्वारादि, मधुस्रवा, धृतस्रवा, ययाति, वृहस्पति इत्यादि तीर्थों के उद्धार का श्रेय सिक्ख वीरों को है।

सरस्वती :—

पुण्य सलिला सरस्वती के पावन तट पर सरस्वती देबी का मन्दिर है। यहां सरस्वती घाट बना हुआ है। इस मन्दिर का निर्माण मरहठों ने करवाया था। मन्दिर के द्वार पर रंग-बिरंगी चित्रकारी चित्रित की गई है।

सोमतीर्थ :—

प्राचीन काल में इस स्थान पर दृषवती नदी बहती थी। यहां भी अन्य पितृ तीर्थों की तरह पिण्ड दान किया जाता है। यहां का पिण्ड दान, गोदान के समान है। कहते हैं पाण्डवों ने यहीं पर पितरों का पिण्डदान किया था। यहां एक फल्गु तीर्थ सरोवर है। इस सरोवर के समीप वर्णीश्वर, सूर्यतीर्थ तथा शुक्र तीर्थ है।

कुरुक्षेत्र :-—

प्राचीन काल में कुरुक्षेत्र की सीमा दूर-दूर तक फैली हुई थी। यह दक्षिण में पानीपत, पश्चिम में पंजाब के पटियाला क्षेत्र तक, पूरब में यमुना के मैदानी भाग तक और उत्तर में सरस्वती नदी तक विस्तृत थी। कुरुक्षेत्र प्राचीन धर्म और संस्कृति का महान केन्द्र था। यह कौरवों और पाण्डवों की समर-भूमि थी। यहीं पर 18 दिनों तक महाभारत का निर्णयात्मक-संग्राम हुआ था। श्री कृष्ण की गीता की पियूष-धारा यहां बही थी। पार्थ अर्जुन को श्री कृष्ण ने यहीं गीता का सार्वभौमिक, सार्वकालिक ज्ञान दिया था।

कुरुक्षेत्र के युद्ध-स्थल थानेसर, पानीपत, तरावड़ी, कैथल तथा करनाल तक फैले हुए थे। कुरुक्षेत्र की भूमि की मिट्टी का इतिहास वीर-बांकुरों के खून से लिखा गया है। मुस्लिम बादशाहों से टक्कर लेते हुए मराठों, सिखों ने रक्त बहाये और मुस्लिम साम्राज्य को नष्ट कर विजय की रक्त पंक्तियां लिखीं। यहीं पर मराठों और सिक्खों का पतन भी हुआ।

ब्रह्मसर तथा संन्निहितसर :—

ब्रह्मसर का अपना प्राचीन गौरवमय इतिहास है। इस स्थान का सुप्रसिद्ध नाम ही कुरुक्षेत्र है। ब्रह्मसर में एक प्रसिद्ध सरोवर है। सरोवर में दो द्वीप बने हुए हैं। इन दोनों द्विपों में प्राचीन मन्दिर तथा अन्य ऐतिहासिक दर्शनीय स्थान हैं। एक द्विप में भगवान विष्णु का पुरातन मन्दिर दर्शनीय है। यहां भगवान विष्णु के साथ श्री गुरुड़ जी की भी मूर्ति है। यहां चन्द्रकूप नामक पवित्र तीर्थ भी है।

थानेसर :—

महाभारत के कथान्तक के आधार पर यहीं महाभारत युद्ध में विजयी की कामना लेकर पाण्डवों ने भगवान शिव की पूजा की थी और विजय का वरदान पाया था। यहां के सरोवर में स्नान कर महाराज वेन कुष्ट रोग से मुक्त हुए थे। सरोवर के किनारे भगवान शिव का स्थाणु शिवलिङ्ग है।

बाण गंगा :—

महाभारत की कथा के अनुसार भीष्म पितामह इसी स्थान पर शरश्या पर आसीन हुए थे। उन्हें प्यास लगने पर वीर अर्जुन ने गाण्डवी धनुष से बाण निकाल कर पृथ्वी पर प्रहार किया और गंगा की धारा को बाहर निकाला। वह गंगा-धारा भीष्म पितामह के मुख में गिरी थी और उन्होंने प्यास बुझाई थी। यह स्थान ब्रह्मसर के समीप है।

चक्रव्यूह :—

अर्जुन पुत्र अभिमन्यु के नाम पर इस स्थान को अमीन की संज्ञा दी गई है। गुरु द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह की रचना कर अभिमन्यु को उसमें प्रविष्ट किया था। चक्रव्यूह से न निकल पाने के कारण अभिमन्यु मारा गया। यात्रीगण इस स्थान की परिक्रमा करते हैं। महाभारत युद्ध की यह एक महान स्मृति है।

ज्योतिसर तीर्थ :—

कुरुक्षेत्र की यह भूमि सदैव चिर-स्मरणीय रहेगी। यहीं पर श्री मद्‌भगवद् गीता की अमर ज्योति ज्योतित हुई थी। महाराजा हर्ष की यह राजधानी भी थी। प्राचीन नदी सरस्वती इसी स्थान से होकर गुजरती है।

भूरीसर :—

महाभारत युद्ध के समय कौरवों का महान योद्धा भूरिश्रवा ने यहीं अपने जीवन का अन्त किया था। यहां सूर्यकुण्ड है। सूर्यकुण्ड में तीर्थ यात्री स्नान कर सूर्य भगवान की पूजा करते हैं।

पाराशर :—

प्राचीन काल में महर्षि पाराशर की यह तपोभूमि थी। यह एक विशाल सरोवर है। महाभारत के आधार पर यह कहा जाता है कि युद्ध के मैदान से भाग कर दुर्योधन इसी सरोवर में छिप गया था। पाण्डवों ने दुर्योधन को खोज निकाला था।

काम्यक तीर्थ :—

यहां भगवान शिव का मन्दिर है। यहां के एक सरोवर में प्राचीन घाट बने हुए हैं। कहते हैं तेरह वर्ष के वनवास की अवधि में पाण्डवगणों ने अधिकांश समय यहीं बिताया था।

विष्णुपद तीर्थ :—

यहां पर ऋषि विमल ने विष्णु भगवान की प्रसन्नता के लिए यज्ञानुष्ठान किया था और साक्षात् भगवान विष्णु का दर्शन किया था। यहां भी एक बड़ा सरोवर है। सरोवर के तीनों ओर घाट बने हुए हैं। यहां प्राचीन शिव मन्दिर भी बना हुआ है।

कैथल :—

यह भगवान राम के परमभक्त हनुमान जी की भूमि रही है। कैथल नगर में ऐतिहासिक और धार्मिक नगर बने हुए हैं। यह स्थान कुरुक्षेत्र से लगभग 30 मील दूर है।

बृद्ध केदार :—

कैथल के निकट यह स्थान है। यहां सात शिव मन्दिर बने हुए हैं।

नवग्रह कुण्ड :—

इस कुण्ड में स्नान कर यात्रीगण नौ ग्रहों की पूजा करते हैं। संकटों से मुक्ति पाने के लिए लोग यहां के छोटे-छोटे सरोवरों (कुण्डों) में स्नान करते हैं।

सर्क तीर्थ :—

कहते हैं इसी स्थान पर स्वामी कार्तिकेय जी का जन्म हुआ था। प्राचीनकाल में यहां सरकण्डों का घना जंगल था। यात्रीगण यहां स्वामी कार्तिकेय जी की पूजा करने आते हैं।

सप्त ऋषि कुण्ड :–

यहां ब्रह्मा जी ने सप्त ऋषियों के साथ यज्ञ संपन्न किया था। यह स्थान कैथल से लगभग डेढ़ मील पर है यहां एक विशाल कुण्ड बना हुआ है। तीर्थ यात्री इस कुण्ड में स्नान करने के पश्चात् ब्रह्मा जी सहित सप्त ऋयियों की पूजा करते हैं।

जीन्द के तीर्थ :–

पिण्डारा—हरियाणा के जिला जीन्द में पिण्डतारक नामक तीर्थ है। यहां एक पवित्र जलाशय है। जलाशय के निकट अनेक देवी-देवताओं के स्थान बने हुए हैं। यात्री-गण पितृगणों को पिण्ड दान करने दूर-दूर से यहां आते हैं। यात्रीगण यहां के पवित्र जलाशय में स्नान कर पितृ-तर्पण करते हैं।

रूपवती तीर्थ —यह च्यवन ऋषि की तपःस्थली थी। अश्विनी कुमारों से च्यवन ऋषि को पुनर्यौवन प्राप्त हुआ था। तीर्थयात्री रोगों से मुक्ति की कामना लेकर इस स्थान में आते हैं।

वराह तीर्थ—भगवान विष्णु ने वराह अवतार लेकर पृथ्वी का उद्धार किया था। इसी स्थान पर भगवान विष्णु वराह रूप में अवतरित हुए थे।

सर्पदमन—यहीं पर महाराज जनमेजय ने सर्पदमन यज्ञ किया था इसे सर्पकुण्ड भी कहते हैं। यह स्थान दर्शनीय है।

पुष्कर तीर्थ—यह स्थान पिण्डारा से लगभग 3 मील है। यहां एक तीर्थ सरोवर है। पौराणिक मतानुसार यहां भगवान परशुराम के पिता जमदग्नि ऋषि की तपोभूमि थी। यहां के सरोवर के घाटों पर भगवान शिव के मन्दिर दर्शनीय हैं।

संन्निहित—हरियाणा का यह एक सुप्रसिद्ध तीर्थ है। यात्रीगण स्नान कर भगवान परशुराम और उनके माता-पिता के श्री-विग्रह की पूजा करते हैं।

(पृष्ठ 20 का शेष)

उबटनों का चमत्कार !—

- सरसों के दाने, मैथी दाना तथा चिरौंजी आधा-आधा चम्मच दूध में भिगोयें फिर उसमें थोड़ा-सा चन्दन का बुरादा, चार-पांच केसर की पत्तियां, एक टिक्की कपूर मिला कर पीस लें। यह गुणकारी उबटन त्वचा को कोमलता, क्रान्ति प्रदान कर कंचन के समान बना देता है।

- जौ का आटा, गुलाब जल, ग्लिसरीन तथा नीम्बू का रस मिलाकर उबटन करें। शुष्कता मिट कर त्वचा चमकेगी।

- सर्दियों में त्वचा खुश्क होकर फटने सी लगती है। इसके उपचार के लिए थोड़ा-सा प्राकृतिक मोम गर्म करके पिघला लें अब इसमें एक चममच जैतून तेल मिला कर उबटन करें।

- मक्खन में थोड़ी सी केसर मिला कर उबटन करने से त्वचा कोमलता तथा निखार प्राप्त करती है।

- चन्दन की लकड़ी को दूध में घिस कर चेहरे तथा अन्य भागों पर लेप करें। सूख जाने पर गुनगुने पानी से धो लें।

हमारे दैनिक आहार में—
सब्जियों का महत्त्व

—योगेन्द्र मलिक
—ज्ञानेन्द्र पाल सिंह

भारत में सब्जियां कुल भोजन का पन्द्रह प्रतिशत भी नहीं हैं। जबकि अमेरिका तथा जापान में मांस, अण्डे व दूध बहुतायत में होने के साथ-साथ भोजन का पैंतालीस से पचास प्रतिशत हिस्सा सब्जियां होती हैं। भारत की अधिकतर जन संख्या शाकाहारी है, अतः आहार को सन्तुलित रखने के लिए भोजन में सब्जियों का होना अति आवश्यक है। भारत की जलवायु भी ऐसी है जिसमें सभी प्रकार की सब्जियां उगाई जा सकती हैं। आर्थिक दृष्टि से कुछ सब्जियां ऐसी भी हैं जो अन्न के स्थान पर खाई जा सकती हैं। जैसे आलू जिमीकन्द, शकरकन्दी तथा कचालू आदि।

सब्जियों में जल, प्रोटीन, कार्बोज, चर्बी, विटामिन तथा अन्य पौष्टिक तत्व काफी मात्रा में होते हैं। इसीलिए अच्छे स्वास्थ्य के लिए आहार में सब्जियों का बहुतायत में होना अति आवश्यक है। पकी हुई सब्जियों से कच्ची सब्जियां ज्यादा लाभदायक होती हैं। इसके अतिरिक्त सब्जियों में स्वास्थ्य-वर्धक, रक्तशोधक, रोगनाशक और शक्तिवर्धक तत्व काफी मात्रा में होते हैं।

मनुष्य की शारीरिक वृद्धि तथा विभिन्न प्रक्रियाओं को चलाये रखने के लिए खनिज पदार्थों का होना अति आवश्यक है। इनमें से कैलशियम, फास्फोरस तथा लोहे की अधिक मात्रा में आवश्यकता होती है। ये पदार्थ सब्जियों के अतिरिक्त दूसरे खाद्य पदार्थों में कम मात्रा में होते हैं। इनके अतिरिक्त सब्यिों में आयोडीन तथा सोडियम भी काफी मात्रा में होते हैं।

कैलशियम :—

भारतीय आहार में इसकी काफी कमी होती है। कैलशियम हड्डियों को बनाने

तथा बीमारियों से बचे रहने के लिए आवश्यक है। बच्चों की हड्डियों की वृद्धि तथा ठीक स्वास्थ्य के लिए यह अत्यन्त आवश्यक तत्व है। कैलसियम की कमी से दांत खराब हो जाते हैं तथा बच्चों की पैदाईश के समय काफी दिक्कत आती है। अन्य पदार्थों को सही मात्रा में प्रयोग लाने के लिए भी कैलशियम का होना आवश्यक है। सेम, बन्दगोभी, गाजर, फूलगोभी, सलाद, प्याज, पालक, मटर तथा टमाटर आदि इसकी प्राप्ति के मुख्य साधन हैं।

लोहा :—

सब्जियों में लोहे की मात्रा फलों से अधिक होती है। हरी सब्जियां खाकर शरीर में लोहे की कमी पूरी की जा सकती है। लोहा लाल रक्त कणिकाओं का एक आवश्यक भाग है तथा शरीर में आक्सीजन के संचार का प्रमुख साधन है। चौलाई, मेथी, कुल्फा, पालक, करेला, सेम, मटर तथा बन्दगोभी में लोहा काफी मात्रा में होता है।

फास्फोरस :—

यह तत्व हड्डियों तथा नर्म तन्तुओं, कोशिकाओं की गुणन क्रिया तथा तन्तु के तरल पदार्थों को सन्तुलित रखने के लिए अति आवश्यक है। कार्बोडाईड्रेटस के प्रजारण में इसका प्रमुख कार्य है, जिससे शक्ति निकलती है। आलू, गाजर, टमाटर, ककड़ी, पालक, फूलगोभी तथा सलाद फास्फोरस की प्राप्ती के प्रमुख साधन हैं।

विटामिन :—

यह जन्तु वर्ग के जीवन व उनकी वृद्धि के लिए आवश्यक होते हैं। यदि 'विटामिन' प्रतिदिन के भोजन में सन्तुलित मात्रा में हों तो शरीर की वृद्धि में कोई बाधा नहीं आती। शरीर स्वस्थ व निरोग रहता है। सब्जियों में विटामिन काफी मात्रा में होते हैं, अतः हमारे प्रतिदिन के आहार में अधिक से अधिक सब्जियां होनी चाहिएं। सब्जियों से निम्नलिखित विटामिन आसानी से प्राप्त किये जा सकते हैं।

विटामिन 'ए' :—

यह चरबी में घुलनशील है। प्रजनन व शरीर की वृद्धि के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इसकी कमी से गला, श्वास नली तथा आंखों पर काफी बुरा प्रभाव पड़ता है। त्वचा सूखी व खुरदरी हो जाती है, गुर्दे व सूत्र नलिकाओं में पथरी बनने का भय रहता है। हरे पत्ते वाली सब्जियां, टमाटर, गाजर, आलू, हरी मर्च, प्याज आदि इसकी प्राप्ति के मुख्य साधन हैं।

विटामिन 'बी' :—

यह अच्छा स्वास्थ्य बनाये रखने व शरीर की वृद्धि तथा पुष्टि के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इसकी कमी से भूख नहीं लगती, शरीर का वजन व तापक्रम कम हो जाता है। यह पत्तों की बजाय बीजों में अधिक मात्रा में होता है - अतः मटर व सेम इसको प्राप्ति के मुख्य साधन हैं।

विटामिन 'सी' :—

यह पानी में घुलनशील है तथा अच्छे स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इसकी कमी से दांत गलने लगते हैं। मसूढ़ों पर सूजन आ जाती है। शरीर का वजन घट जाता है। घाव देर से भरते हैं। स्मरण शक्ति क्षीण हो जाती है। चिड़चिड़ापन आ जाता है तथा 'स्कर्वी' नामक बीमारी हो जाती। हरी मिर्च, टमाटर, बन्दगोभी, सेम, शलजम आदि इसकी प्राप्ति के मुख्य साधन हैं।

विटामिन 'डी' :—

स्वस्थ दातों व मजबूत हड्डियों के लिए यह विटामिन अत्यन्त आवश्यक है। यह चूने और फास्फोरस के लवणों का शरीर में ठीक से उपयोग करके हड्डियों को हृष्ट-पुष्ट बनाता है। पालक, मेथी, सलाद, बन्द गोभी, मटर तथा अन्य हरी सब्जियां इस विटामिन के बहुत अच्छे साधन हैं।

विटामिन 'ई' :—

शरीर में इसकी कमी से मनुष्य की प्रजनन शक्ति घट जाती है। सेम, मटर, पालक, सलाद तथा अन्य हरे पत्ते वाली सब्जियां इसके मुख्य साधन हैं।

विटामिन 'जी' :—

यह पानी में घुलनशील है। शरीर को वृद्धि व अच्छे स्वास्थ्य के लिए यह अति आवश्यक है। इसकी कमी से भूख कम लगती है व वजन घट जाता है तथा बच्चों में 'प्लेगश' नामक बीमारी पैदा हो जाती है। गाजर, शलजम, टमाटर, पालक, कुल्फा तथा अन्य पत्ती वाली सब्जियों में काफी मात्रा में मिलता है।

विटामिन 'के' :—

नवजात बच्चों की शारीरिक वृद्धि व पुष्टि के लिए अत्यन्त आवश्यक है। अंकुरित बीजों, फूल गोभी, बन्द गोभी, पालक व अन्य हरे पत्ते वाली सब्जियां इस विटामिन के बहुत अच्छे साधन हैं।

सब्जियों में 'ग्रमीनो ऐसिड' भी काफी मात्रा में मिलते हैं। ये भी शरीर वृद्धि व पुष्टि के लिए आवश्यक हैं। हरे पत्ते वाली सब्जियां जैसे—बथुग्रा, कुल्फा, पालक, मेथी, चौलाई, सलाद, सोया बन्दगोभी व सरसों ग्रादि में ये काफी मात्रा में होते हैं। हरे पत्ते वाली सब्जियों में 'रेशा' व 'शैल्यूलोज' भी काफी मात्रा में होते हैं जो पाचन-क्रिया को शिथिल नहीं होने देते। इसके ग्रतिरिक्त हरी सब्जियों में रुधिर पैदा करने वाले तथा शारीरिक व पाचन क्रियाग्रों को सही ढंग से चलाये रखने वाले तत्व भी ग्रत्यधिक मात्रा में होते हैं। इसलिए हम ग्रपने दैनिक ग्राहार में सब्जियों की मात्रा बढ़ा कर बहुत से भयंकर रोगों को दूर रख सकते हैं।

सब्जियाँ पकाते समय कुछ महत्वपूर्ण बातें :—

1. सब्जियां पकाते समय कम से कम पानी प्रयोग में लायें तथा पानी को बाहर न फेंके। इसमें काफी खनिज पदार्थ व विटामिन होते हैं।

2. सब्जियां तेज ग्रांच पर व ग्रधिक देर न पकायें।

3. सब्जियां छिलके सहित पकायें या बहुत कम छिलका उतारें क्योंकि ग्रधिकतर खनिज पदार्थ व विटामिन छिलके के नीचे ही होते हैं।

4. पकाई हुई सब्जी को दोबारा गर्म न करें।

5. सब्जियां पकाते समय मीठा सोडा व गर्म मसाले कम प्रयोग करें।

6. ग्रच्छे खाद व ग्रधिक खाद्य शक्ति प्राप्त करने के लिए सब्जियाँ खाना बनाने के बाद बनायें तथा शीघ्र प्रयोग में लायें।

7. हरे पत्तों वाली सब्जियों को ताजी ग्रवस्था में प्रयोग में लायें।

8. सब्जियां धो कर बड़े-बड़े टुकड़ों में काटें न कि काट कर धोयें ग्रन्यथा खनिजपदार्थ व विटामिन पानी में घुल कर बेकार चले जाते हैं।

गुरुकुल की परीक्षाओं की मान्यताएँ

[गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां सोनीपत, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से सम्बन्धित है। कांगड़ी विद्यालय की परीक्षाओं को भारत के प्राय: सभी प्रमुख विश्वविद्यालयों द्वारा अपनी डिग्रीयों के समान मान्यता प्रदान की हुई है। जिनका संक्षिप्त विवरण सम्बन्धित पत्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है]

—देवराज 'विद्यालंकार'

UNIVERSITY OF BOMBAY

No- El /C.21119 of 1968
Bombay,
19th August, 1968.

The Registrar,
Gurukula Kangri Vishwavidyalaya,
P. O. Gurukula Kangri,
Distt. Saharanpur, U. P.

Sir,

Please refer to your letter No. F.63-13/67 dated 1st August 1968. I am to inform you that the question of recognition of the examinations held by the Gurukula Kangri Vishwavidyalaya was considered by the Standing Committee on Equivalence of Examinations of this University at its last meeting when it recommended to the Academic Council and the Syndicate that the followiag examinations of your Vishwavidyalaya be recognised for the purpose of admission to the University as under—

1. Vidyadhikari (Matriculation)—As equivalent to the Matriculation examination of this University if passed with at least 35 per cent marks in each of the following subjects—

1. Sanskrit Grammar and Literature, 2. Hindi Literature, 3 English.

[पृष्ठ 30 पर छपे मैटर में कुछ अशुद्धियां रह गई हैं । अतः उसकी जगह इसे पढ़ें]

* ओ३म् *

卐 गुरुकुल की परीक्षाओं की 卐 मान्यताएँ

[गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां सोनीपत, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से सम्बन्धित है। कांगड़ी विश्वविद्यालय की परीक्षाओं को भारत के प्रायः सभी प्रमुख विश्वविद्यालयों द्वारा अपनी डिग्रीयों के समान मान्यता प्रदान की हुई है। जिन में से कुछ का संक्षिप्त विवरण सम्बन्धित पत्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है]

नोट : — स्थानाभाव के कारण सभी विश्वविद्यालयों की समकक्ष मान्यताएं प्रकाशित नहीं की जा सकी । आशा है पाठकगण क्षमा करेंगे ।

—देवराज 'विद्यालंकार'

	Calcutta University's Degrees
Vidyadhikari	School Final Examination
Vidyavinod	Pre-University (Arts)
Alankar	B. A.

Copy of letter No MR/532/Eq dated 11th Sept..64 from the Registrar, University of Calcutta to the Registrar, Gurukula Kangri Vishwavidyalaya, Hardwar.

With reference to your letter No. 9378, dated 21-12-63. I am desired to inform you that the 'Vidyadhikari' 'Vidyavinod' and 'Alankar' examinations of your Vishwavidyalaya have been recognised as equivalent to the School Final examination of the Board of Secondary Education, West Bengal, Pre-University (Arts) and B. A. (Pass) examinations respectively of this University on reciprocal basis.

गुरुकुल की परीक्षाओं की

The Registrar,
Gurukula Kangri Vishwavidyalaya,
P. O. Gurukula Kangri,
Distt. Saharanpur, U. P.

Sir,

Please refer to your letter No. F.63-13/67 dated 1st August 1968. I am to inform you that the question of recognition of the examinations held by the Gurukula Kangri Vishwavidyalaya was considered by the Standing Committee on Equivalence of Examinations of this University at its last meeting when it recommended to the Academic Council and the Syndicate that the followiag examinations of your Vishwavidyalaya be recognised for the purpose of admission to the University as under—

1. Vidyadhikari (Matriculation)—As equivalent to the Matriculation examination of this University if passed with at least 35 per cent marks in each of the following subjects—

1. Sanskrit Grammar and Literatu re, 2. Hindi Literature, 3 English, 4. Religious Knowledge and Ethics, 5. Mathematics, and 6. any one of the following optional subject.

1. Sanskrit Grammar, 2. Physics and Chemistry, 3. History and Givics, and 4. Home Science (for lady students only).

2. Alankar (B. A.)—As equivalent to the B. A. degree examination of this University.

The Committee has further reported to the Academic Council and the Syndicate that it is not in favour of granting recognition to the Vidyavinod (Intermediate) and M. A. examination of your Vishwavidyalaya.

The recommendations of the Committee will be considered by the Academic Council and the Syndicate at their next meeting and the final decision reached thereon will be communicated to you in due course.

Yours faithfully,

sd/-

for University Registrar

UNIVERSITY OF CALCUTTA

Our Degrees	Calcutta Univeriiy's Degrees
Vidyadhikari	School Final Examination
Vidyavinod	Pre-University (Arts)
Alankar	B. A.

Copy of letter No MR/532/Eq dated 11th Sept..64 from the Registrar, University of Calcutta to the Registrar, Gurukula Kangri Vishwavidyalaya, Hardwar.

With reference to your letter No. 9378, dated 21-12-63. I am desired to inform you that the 'Vidyadhikari' 'Vidyavinod' and 'Alankar' examinations of your Vishwavidyalaya have been recognised as equivalent to the School Final examination of the Board of Secondary Education, West Bengal, Pre-University (Arts) and B. A. (Pass) examinations respectively of this University on reciprocal basis.

UNIVERSITY OF DELHI

No. 9(16)I.O./65/6994
Delhi,
the 27th May, 1965,
31st

Our Degrees	Delhi University's Degrees
M. A. (Sanskrit, Philosophy. Hindi and English)	M. A.
M. Sc (Maths)	M. Sc. (Maths.)
B. Sc.	B. Sc.
Alankar	B. A.

The Registrar,
Gurukula Kangri Vishwavidyalaya,
P. O. Gurukula Kangri,
Distt. Saharanpur (U. P)

Sub—Recognition of our M. A /M.Sc. (Maths.) Degrees.

Dear Sir,

With reference to your letter No. F.81-12/65 dated the 22nd May, 1965, on the subject noted above, I write to inform you that the Academic Council of the University at its meeting held on 29th April, 1965, have recognised the M. A./M.Sc. (Maths.) Examination of your Vishwavidyalaya as equivalent to M.A./M.Sc. (Maths.) of this University. The Universily has also recognised the M. A. examination of your Vishwavidyalaya in Sanskrit, Philosophy, Hindi and English of this University.

Yours faithfully,

Sd/- Illegible.
Assistant Registrar (Inf.)
for Registrar.

●

GURU NANAK UNIVERSITY

From
The Registrar,
Guru Nanak University,
Amritsar.

To
The Registrar,
Gurukul Kangri
Vishwavidyalaya,
Gurukula Kangri,
Distt. Saharanpur (U.P.)

Ref. No. 27279/Recog/83 Dated—21-10-71

Subject—Recognition of Examinations.

Dear Sir,

With reference to your letter No. F. 52-30/716083 dated September 21, 1971, I am directed to inform you that the Vidyadhikari and Vidyavinod examinations conducted by your Vishwavidyalaya stand recognised as equivalent to Matriculation and Intermediate examinations, respectively, for purposes of admission to higher courses at this University.

Yours faithfully,

Sd/- Illegible

Assistant Registrar (General)

for Registrar.

GURU NANAK UNIVERSITY, AMRITSAR

No. 24267 Dated 26-11-1970

The Registrar,
Gurukula Kangri Vishwavidyalaya,
Gurukula Kangri,
Disstt. Saharanpur (U. P.)

Subject—Recognition of Degrees by all Statutory Universities and Institutions.

Dear Sir,

Kindly refer to your letter No. F. 52-30/70/6719 dated 30-11-1970 on the subject cited above.

I am to inform you that the following Degrees of your University stand recognised on reciprocal basis for purpose of admisiion to this University.

1. Alankar	B. A.
2. B. Sc.	B. Sc.
3. M. A.	M. A,

Yours faithfully,

Sd/- A. K. Sood

Asstt. Registrar (General),

for Registrar

INDORE UNIVERSITY

No. Acm-II(68)/69/ Dated—23 June, 1969

To,

The Registrar,
Gurukula Kangri Vishwavidyalaya,
Disstt. Saharanpur (U. P)

Sub—Recognition of Examinations and degrees on reciprocal basis.

Sir,

I am directed to refer to your office letter No. F-52-22/68, dated 5-6-1969 on the subject noted above and to convey recognition to the following examinations of your Vishwavidyalaya on reciprocal basis.

Degrees of Indore University	Equivalent to	Degrees of Gurukula Kangri Vishwavidyalaya
1. B. A.		Alankar
2. M. A.		M. A.
3. Ph. D.		Ph. D.
4. B. Sc.		B. Sc.
5. M. Sc.		M. Sc.
6. Ph. D.		Ph. D.

Yours faithfully,
Sd/- G. N. Tandan
Registrar

JABALPUR UNIVERSITY

प्रेषक ।

कुलसचिव,
जबलपुर विश्वविद्यालय,
जबलपुर ।

प्रति ।—

कुलसचिव,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
सहारनपुर, यू० पी०

जबलपुर, दिनांक 16 जुलाई, 1969

विषय—पारस्परिक रूप से परीक्षाओं की मान्यता।

प्रिय महोदय,

आपके पत्र क्रमांक एफ० 52-23/68 दिनांक 29 मई, 69 एवं एफ० 52-60/68 दिनांक 22 मई, 1969 के सन्दर्भ में आपको सूचित किया जाता है कि आपके विश्वविद्यालय की निम्न परीक्षाओं की मान्यता दी जा चुकी है :—

क्रमांक	परीक्षाएं	जबलपुर विश्वविद्यालय की अनुरूप परीक्षाएं
1.	अलंकार	बी० ए०
2.	विद्यावाचस्पति	एम ए०
3.	एम० ए०	एम० ए०
4.	एम० एस-सी०	एम० एस-सी०

शेष परीक्षाओं की मान्यता का विषय अभी विचाराधीन है। निर्णय की सूचना शीघ्र ही भेज दी जावेगी। कृपया आप यह निश्चय कर लें कि हमारे विश्वविद्यालय की किन-किन परीक्षाओं को आपने अभी तक मान्यता दी है।

भवदीय

सहा० कुलपति

जबलपुर विश्वविद्यालय,

जबलपुर।

KURUKSHETRA UNIVERSITY KURUKSHETRA

No. (AC-4)7112

Dated 15-12-1965

Our Degrees	Kurukshetra University's Degrees
Vidyavinod	Pre-University
Alankar	B. A.

M. A. (Vedic Litt., Sans., Hindi, Hist., Psy., Philos., Maths., Eng.)	M. A.
B. Sc.	B. Sc.
M. Sc. (Maths.)	M. Sc. (Maths)

To,

The Registrar,
Gurukul Kangri Vishwavidyalaya,
Hardwar.

Sub—Recognition of Examinations.

Dear Sir,

With reference to your letter No. F. 81-25/65 dated 22-7-1965 on the subject cited above, I am to inform you that the 'Shiksha Samiti' (Academic Council) of this University in their meeting held on the 13th August, 1965 recognised the following examinations of your Vishwavidyalaya as equivalent to the corresponding examinations of this University on reciprocal basis.

Examinations of Kurukshetra University	Examinations of Gurukhla Vishwavidyalaya
I. Pre-University (Arts) with Sanskrit	Vidyavinod Part I for admission to Vidyavinod Part II
2. Pre-University (Science)	At presenl no such course in the Vishwavidyalaya
3 B. A. (Pass) T.D.C.	Alankar Part II (for admission to M. A.)
4. M. A.	M. A.

Yours faithfully,

Sd/- Illegible
Asstt. Registrar (Academic)
for Registrar

KURUKSHETRA UNIVERSITY

Copy of Notification No. 102-Ac-64 (Ac-2)9511-31- dated 14th April, 1964 from the Registrar, Kurukshetra University, Kurukshetra.

It is notified, for the information of all concerned, that the 'Shiksha Samiti' (Academic Council) in their meeting held on the 10th April, 1964 have recognised the 'Vidaydhikari' Examination of the Gurukula Kangri, Hardwar, as equivalent to the Matriculation Examination of the Panjab University, for the purposes of admission of Vidyadhikari to the next higher courses of study, obtaining in this University.

PANJAB UNIVERSITY

Copy of the letter No. Misc /34541 dated 5-6-1953, from Registrar, Pajnab University, Solan (Simla Hills), to rhe Registrar, Gurukul Kangri Vishwavidalaya P. O. Gurukula Kangri Disst. Saharanpur, U. P.

With reference to your letter No. 423, dated 22 August 1953, I am to say that since 'Vidyadhikari' Diploma of Gurukula Kangri is recognised as equivalent to our Visharad Examination, holders of this diploma are eligible to appear in the Shastri examination of this Univerity.

PANJAB UNIVERSITY

Copy of letter No. Misc. 21630 dated 12-11-63, from the Registrar, Panjab University, Chandigarh—3 to the Registrar Gurukul Kangri Vishwavidyalaya, Hardwar.

I am to inform you that the Syndicate of this University at its meeting held on 23-10-63 has reeognised the following examinations of your University as equivalent to the examination of thes University noted againsl each :

1.	Vidyavinod	Inter
2.	Alankar	B. A.
3.	M. A. & Vachaspati	M. A.

PANJAB UNIVERSITY

Copy of letter No. Misc. 21674 dated 28-12-1964 from the Registrar, Punjab University, to the Registrar, Gurukula Kangri Vishwavidyalaya, Hardwar

Please refer to your letter No. F. 26-36/64/11854, dated 15-12-1964.

The Matriculation Gertificate (Vidyadhikari Examination) of your University has already been recognised by the Syndicate, vide paragraph 79 of tts proceedings dated 31-8-1963, as equivalent to our Matriculation Examination.

UNIVERSITY OF JODHPUR

Copy of letter No. JDR/U/64/Eq/7696 (B) dated 5-7-65 from Registrar, University of Jodhpur, Jodhpur to the Registrar, Gurukula Kangri Vishwavidyalaya.

I am directed to inform you that the University has recognised the following examinations of your University as equivalent to the corresponding examinatsons of this University on a reciprocal basis.

Examiantions of your University	Corresponding Examinations of this University
1. Vidyadhikari	High School Examination for admission to P.U.C.
2. Vidyavinod	P.U.C. for admission to Degree Course
3. Alankar	Degree Course Examination for admission to M.A. Examination
4. Vachaspati	M.A for admission to Doctorate Degree
5. M. A.	M. A.

❋

MEERUT UNIVERSITY

Our Degrees	Meerut University's Degrees
Alankar	B. A.
M. A. (Vedic Litt., Sans., Hindi, A. I. Hist, Psy., Philo.. Maths.. English)	M. A.
Ph. D.	Ph D.
B. Sc.	B Sc.
M. Sc. (Maths)	M. Sc. (Maths.)

October 28, 1969
1-11-69

Ref. No. Gen-/4 92864

The Registrar,
Gurukul Kangri Vishwavidyalaya.
Hardwar.

Subject – Recognition of Examinations

Sir,

I am directed to inform you that the following examinations/Degrees have been recognised as equivalent to our corresponding degrees on the basis of reciprocity—

Name of the Examinations	Equivalent to
1. Alankar	B. A.
2. M. A.	M. A.
3. Ph. D.	Ph. D.
4. B. Sc.	B. Sc.
5. M. Sc. (Maths.)	M. Sc (Maths.)

Yours faithfully,

Sd/- P. L. Chhabra

Asstt. Registrar (Admn.)
for Registrar

BANARAS HINDU UNIVERSITY

Copy of le:ter No. R. Ac/Equ/U/1514 dated 19 July, 1965 from the Registrar, Banaras Hindu University, Banaras to the Vice Chancellor, Gurukula Kangri Vishwavidyalaya, Hardwar.

Please refer to you ietter dated 3rd July, 1965, addressed to the Vice-Chancellor, Gurukula Kangri Vishwavidyalaya, Hardwar.

Please refer to your letter dated 3rd July, 1965, addressed to the Vice-Chancellor, Banaras Hindu University on the above subject, I am to inform you that the following examinations of the Gurukula Kangri Univeysity have been recognised as equivalent to B. H. U examlnations.

Exam of Kangri	B H. U Exam
1. Vidyadhikari Exam.	Admission Examination
2. Vedalankar	B. A. for admission to M. A. in Sanskrit
3. Vidyalankar	B. A. for admission to M. A. in Sanskrit and Hindi

ALIGARH UNIVERSITY

Copy of letter No. A/1904/dated 1-5-65 from the Registaar Aligarh Muslim University, Aligarh, to the Registrar Gurukla Kangri Vishwavidyalaya Hardwar.

With reference to your letter No. 10585 dated 20-7-1964 and subsequent reminders, I am to say that this University has recognised the M. A. degrees in English, History, Hindi, Sanskrit, Philosophy and Psychology, M. A., M. Sc. degree in Mathematics of your institution (Gurukula Kangri Vishwavidyalaya Hardwar (Saharanpur) as equivalent to M. A. Degrees in English, History, Hindi, Sanskrit, Philosophy, Psychology and M. A., M. Sc. in Mathematics of this University.

VISVA BHARTI UNIVERSITY

Copy of letter No. G/D 4-3/65 dated May 29, 1965 from the Registrar, Visva Bharti 'Santiniketan' West Bengal, India to the Registrar, Gurukul Kangri Vishwavidyalaya, Hardwar.

I am directed to let you know that the Siksha Samiti (Academic Council) of this University at its meeting held on 15-3-65 has recognised on reciprocal basis the following examinations of your University as equivalent to the corresponding examinations of Visva-Bharti.

Examinations of other Universities/Boards	Corresponding examinations of Visva Bharti
Gurukul Kangri Vishwavidyalaya	
1. Alankar	B. A.
2. M. A.	M. A.
3. M; Sc. (Mathematics)	M; Sc. (Mathematics)

BIHAR UNIVERSITY

Copy of letter No. A/11032 dated 7th July, 1949 from the Registrar, Bihar University to the Registrar, Gurukula Kangri Vishwavidyalaya, P. O. Gurukula Kangri (District Saharanpur) U. P.

With reference to your letter No. 2071 dated the 16th October, 1954 regarding equivalence of Alankar examination of your University, I have to inform you that the same has been recognised as a qualifying examination for admission to the M. A. class of this University in Hindi and Sanskrit only and not in other subjects and examinations provided that the candidate has also passed the B. A. examination in English only of this University. A candidate who has thus passed the M. A. examination in Hindi or Sanskrit, may also supplicate for the Ph. D. degree of this University in these subjects only. This decision is, of course, subject to the approval of the Academic Council.

नौकरी सम्बन्धी मान्यता

GOVERNMENT OF EAST PANJAB

Copy of a Notification No. 30643/Z dated 13-10-1949 issued by the secretary to Government of East, Panjab, Education Department, Simla.

The Governor of the East Panjab is pleased to recognise the Alankar Degree of the Gurukul Kangri Vishwa Vidyalaya, Hardwar, District Saharanpur (U. P.) as equivalent to the B. A. degree of the recognised Indian Universities for the purposeiof appo ntment to posts under the Government of the East Panjab.

राष्ट्रीय प्रतिरक्षा अकादमी में प्रवेश सम्बन्धी

The Gazette of India, 3 December, 1960 Ministry of Defence No. 2376 dated 26-10-60 has recognised Vidyadhikari diploma of Gurukul Kangri Vishwa-vidyalaya for admission to the Army, Navy and Air Force Wing of the National Defence Academy.

शास्त्री से सम्बन्धित

PANJAB UNIVERSITY CHANDIGARH

Copy of paragraph 31 from the proceedings of the meeting of the Syndicate of the Panjab, University dated April 20, 1957.

31 Considered Inspection Report by Shri Jagan Nath Aggarwal on the application of Gurukul Vidyapeeth Haryana Bhainswal Kalan, District Sonepat.

Resolved to accept the recommendations made in the report that Gurukul Vidpapeeth Haryana Bhainswal Kalan, District Rohtak, be granted "Association" for Shastri Examination only.

No. S. T./2612. Dated 25-4-57

Copy of the above forwarded to the Principal Gurukul Vidyapeeth Haryana, Bhainswal Kalan, District Rohtak for information.

(Sd.) K. C. Walia
Assistant Registrar (General)
24/4/57

Approved for Libraries by D. P. I'S Memo No. 3/44—1961—B. Dated 8-1-62

Approved by the Chairman, Central Library Committee, Panjab Vide their Memo No. PRD-Lib.-258-61/1257-639 dated Chandigarh, the 8th Jan. 1962.

'समाज सन्देश'—डाक घर गुरुकुल भैंसवाल कलां

Regd. No. D/RTK-21

सदस्य संख्या
नाम
स्थान
पत्रालय
जिला

व्यवस्थापक श्री धर्मभानु गुरुकुल भैंसवाल ने नेशनल प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर कार्यालय समाज सन्देश गुरुकुल भैंसवाल (सोनीपत) से मुद्रित तथा प्रकाशित किया।

ॐ

समाज सन्देश

(हिन्दी मासिक-पत्र)

सांस्कृतिक, सामाजिक व साहित्यिक लेखों का संगम

प्रकाशन तिथि : 25 सितम्बर, 1980

वर्ष 21 जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्तूबर, 1980 अंक : 3/4/5/6

स्वर्गीय श्री भक्त फूल सिंह जी

मूल्य : एक प्रति 1-25 रु० वार्षिक चन्दा 10 रुपये

इस अंक में—

समाज सन्देश में छपे विचारों से हमारा सहमत होना या न होना आवश्यक नहीं। समाज सन्देश में हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी मत से सम्बन्ध रखता हो अपने लोकहितकारी विचार अथवा लेख प्रकाशनार्थ भेज सकता है। उसकी मौलिकता का लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा।

—सम्पादक

❀

लेख भेजने तथा अन्य विषयक पत्र व्यवहार का पता :—

श्री धर्मचन्द शास्त्री

प्रकाशन प्रबन्धक

C/o नेशनल प्रिंटिंग प्रेस, झज्जर रोड़, रोहतक फोन : 2662

सम्पादकीय: —

राष्ट्रहित सर्वोपरि

हमारा देश धर्मनिरपेक्ष है। अतः एक कानून की दृष्टि में सभी धर्मावलम्बी समान हैं। यहां पर अनेकों धर्म रूपी सरस्वतियां मानव को उसके जीवन लक्ष्य पर पहुँचाने के लिए निरन्तर प्रवाहित हो रही हैं। सभी धर्मों की मंजिल एक ही है। धर्म कभी भी अशान्ति द्वेष, घृणा, हिंसा की शिक्षा नहीं देता, बल्कि सभी धर्म शान्ति, प्रेम और अहिंसा के द्वारा सुख शान्ति की प्राप्ति की बात कहते हैं।

लेकिन फिर भी हमारे देश में निरन्तर साम्प्रदायिक झगड़े अब तक होते चले आ रहे हैं? क्यों? क्या कोई धर्म झगड़ों या विद्रोह की बात कहता है? नहीं, कदापि नहीं धर्म कभी साम्प्रदायिक दगों की शिक्षा नहीं देता। धर्म मानव को विश्वबन्धुत्व एवं प्रेम का पाठ पढ़ाता है।

13 अगस्त को मुरादाबाद में ईदगाह पर जो रक्तपात हुआ वास्तव में वह शर्मनाक एवं देश के लिए चिन्ता का विषय है।

मुरादाबाद पीतल के बर्तनों के कारण सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रसिद्ध स्थान है। यहां पर हमेशा मजदूरों, कार्यकर्ताओं एवं क्रेता-विक्रेताओं की गहमागहमी लगी रहती

है। यहां पर प्रत्येक सम्प्रदाय एवं धर्म का देश के हर कोने का व्यक्ति देखा जा सकता है लेकिन दुर्भाग्य देश का कि आज यहां द्वेष एवं संहार की ज्वाला धधक रही है।

13 अगस्त की घटना के तुरन्त बाद जिला प्रशासन ने मन, वचन व कर्म से स्थिति सामान्य करने का प्रयत्न किया था। लेकिन हमारे राजनैतिक व धार्मिक नेताओं ने उनके प्रयत्नों पर पानी फेर दिया।

मुरादाबाद की इस घटना का देखते ही देखते दूसरे नगरों पर भी प्रभाव पड़ा। अलीगढ़, मेरठ, दिल्ली आदि अनेकों स्थानों पर सरकारी तन्त्र की जागरुकता के कारण स्थिति पर बड़ी सूझ बूझ से काबू पा लिया गया।

लेकिन यह बात भी कम चिन्ता पैदा नहीं करती कि—कई बड़े शहरों में अत्याधुनिक अवैध हथियार बरामद किए गए हैं। ये हथियार कहां बने एवं कहां से कैसे सप्लाई किए गये हैं? इस बात का बड़ी सावधानी के साथ पता लगाना होगा। दोषी व्यक्ति चाहे किसी भी सम्प्रदाय का क्यों न हो उसे कठोर से कठोर दण्ड देना चाहिए। प्रत्येक घर-घर में जाकर बड़ी सावधानी से तलाशी लेनी होगी।

दो वर्ष पूर्व जमशेदपुर में जो कुछ हुआ था उसे ध्यान में रखकर पर्याप्त ऐतिहासिक कदम नहीं उठाए गए। अतःएव बार-बार वही घटनाएं दोहराई जाने के कारण देश की प्रगति में रुकावट आती है एवं विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों में अविश्वास की भावना पैदा होती है। इन सब पर हम सब देश वासियों को विचार कर चलना होगा। केवल सरकार पर दोष देने से काम नहीं चलेगा। प्रत्येक नागरिक पर आज यह जिम्मेवारी है कि वह नए युग की नई हवा के रुख को पहचाने एवं संकीर्ण विचारों को त्याग कर धर्म के वास्तविक स्वरूप को पहचाने।

धार्मिक सम्प्रदायों के गुरुओं, नेताओं को भी मिल बैठ कर इन विवादों पर विचार करना चाहिए। देश को स्वतन्त्र हुए 33 वर्ष बीत गए हैं लेकिन हम आज भी पारस्परिक अविश्वास एवं घुटन की भावना से मुक्त नहीं हुए हैं। यह सब क्यों?

आज समय आ गया है कि यदि कोई भी धार्मिक या राजनैतिक नेता इन छोटे विवादों से अपनी नेतागिरी चमकाने का प्रयास करता है तथा भोले भाले लोगों को गुमराह करता है तो उसे हमें बेनकाब करना होगा।

प्रत्येक धर्म सम्प्रदाय के निवासियों का हमारा भारतवर्ष घर है। अतएव इसकी उन्नति के लिए राष्ट्र हित को सर्वोपरि मान कर ही हमें कार्य करना चाहिए। आज हम भले ही बाह्य रूप से शक्तिशाली बने हैं लेकिन जब तक हम सब एक न होंगे तब तक यह शक्ति एवं प्रगति व्यर्थ है। आन्तरिक विवाद समाप्त होने पर ही हम बाह्य शक्तियों एव देश की विभिन्न समस्याओं का सामना कर सकेंगे।

अत:एव हमें स्वार्थी राजनेताओं और साम्प्रदायिक धर्मगुरुओं से सावधान होकर चलना चाहिए। विपक्षी राजनैतिक पार्टियों को भी देश में शान्ति स्थापित करने के लिए बड़ी जिम्मेदारी के साथ भूमिका निभानी चाहिए। भविषय में ऐसी घटनाएं पुनः न दोहराई जावें इसके लिए सरकार को बड़ी सूझबूझ के साथ तुरन्त सख्त कदम उठाने चाहिएं और देश की समस्याओं के समाधान एवं नवनिर्माण के यज्ञ में हम सब देशवासियों को अपनी आहुति देनी चाहिए।

—देवराज 'विद्यालंकार'

---

* धन्य हैं वे, जिनकी आत्मा निराभिमान हैं क्योंकि स्वर्ग में राज्य उन्हीं का है।

* धन्य हैं वे, जो दुःख और पश्चाताप करते हैं, क्योंकि वे शान्ति पावेंगे।

* धन्य हैं वे, जो दयावान हैं क्योंकि उन पर दया की जाएगी।

* अपने बैरी से प्रेम रख और सताने वाले के लिए प्रार्थना कर।

* यदि तू बुरी नियत से किसी स्त्री की ओर देखता है तो तू उससे व्यभिचार कर चुका। यदि तुझे एक आंख ठोकर खिलाती है तो अच्छा है, तू उसे निकाल दे जिससे सारा शरीर तो नरक में जाने से बच जाये।

सूचना

21-9-80 को अन्तरंग सभा गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां की बैठक में पारित प्रस्ताव नं० 5 के अनुसार "समाज सन्देश" की व्यवस्था हेतु निम्नलिखित परिषद् की स्थापना हुई :—

मुद्रक तथा प्रकाशक — श्री महेश्वर सिंह मलिक, सचिव महासभा (पदेन)

सम्पादक — आचार्य विष्णु मित्र जी विद्यामार्त्तण्ड, उपकुलपति

सह-सम्पादक — आचार्या बहन सुभाषिणी जी, खानपुर

प्रबन्धक — श्री धर्मचन्द शास्त्री, उप-मन्त्री

सदस्य — श्रीमती कुन्ती रानी, प्रिंसिपल, (पदेन)
भक्त फूल सिंह महिला महाविद्यालय खानपुर कलां

— श्रीमती प्रियम्वदा, मुख्याध्यापिका, (पदेन)
गुरुकुल कन्या हाई स्कूल खानपुर कलां

— श्री जवाहर लाल वाङ्ग, प्रिंसिपल, (पदेन)
भक्त फूल सिंह प्रशिक्षक महाविद्यालय खानपुर

— श्री अनन्तानन्द जी, प्रिंसिपल, (पदेन)
आयुर्वेद महाविद्यालय खानपुर

— श्री कपिल देव शास्त्री, आचार्य, (पदेन)
गुरुकुल भैंसवाल कलां

— श्री राजेन्द्र सिंह जी एम०ए० 4, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली–3
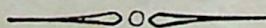
स्थाई स्तम्भ—

जिन्हें हम भुला न सकेंगे

प्रसिद्ध समाज सेविका
लक्ष्मी आर्य
रोहतक

★

—आचार्य विष्णु मित्र विद्यामार्तण्ड
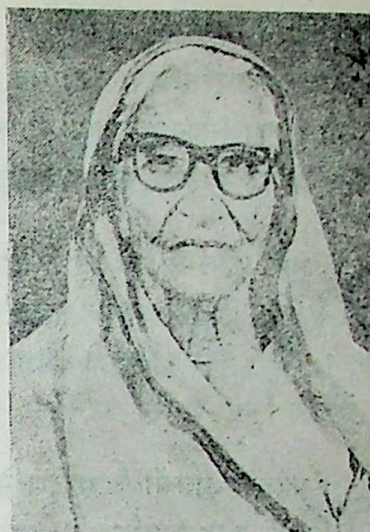
उत्तम समाज का निर्माण नर तथा नारी के सहयोग से ही हो सकता है। मेरा विचार तो यहां तक है कि पुरुष की अपेक्षा नारी ही उत्तम समाज का निर्माण अधिक कर सकती है, यदि उसका समाज निर्माण की ओर ध्यान हो।

आर्य समाज को आगे बढ़ाने में, देश को स्वतन्त्र कराने में अनेक महिलाओं ने आत्म-समर्पण किया है, बड़ा भारी त्याग किया है जिसके कारण वैदिक धर्म का प्रचार हुआ और स्वतन्त्रता युद्ध में सफलता मिली।

इस प्रकार से अपने जीवन को देश तथा राष्ट्र के लिए अर्पण करने वाली महिलाओं की गणना में बहन लक्ष्मी आर्या रोहतक की भी गणना की जा सकती है।

आपका जन्म रोहणा गांव जिला रोहतक के एक किसान के घर में सन् 1900 में हुआ। आपके बड़े भाई बलवन्त सिंह जी वैदिक धर्मी तथा प्रसिद्ध कांग्रेसी माने जाते थे। आपके भाई की इच्छा थी कि वह अपनी बहन को विदुषी बनावे परन्तु वह तीस वर्ष की छोटी सी आयु में ही काल कवलित हो गये अतः अपनी मन की चाह को मन में ले के वे परलोकगामी हो गये।

हरियाणे के प्रसिद्ध सन्त भक्त फूल सिंह जी ने बालकों के लिए 1920 में गुरुकुल खोला परन्तु उनके मन में सदा यह भावना बनी रही कि बालकों की तरह बालिकाओं

को भी शिक्षित करना अत्यन्त आवश्यक है। इसी भावना को लेकर सन्त जी ने कुछ छात्राएं आर्य विद्यालय जालन्धर में भेजीं जिससे वे सुशिक्षित होकर हरियाणे की बालिकाओं को सुशिक्षिता बना सकें। उन दिनों हरियाणे में एक भी बालिका पठित न होती थी। जालन्धर भेजी गई छात्राओं में बहन लक्ष्मी आर्या सबसे प्रधान थीं। वहीं पर रह कर आपने वैदिक धर्म के अमूल्य सिद्धान्तों का अध्ययन किया।

भक्त फूलसिंह जी की ही प्रेरणा से आप महात्मा गान्धी से स्थापित साबरमती आश्रम में गई। वहां रहकर स्वतन्त्रता के अनूठे नियमों का पालन किया। जगद्बन्धु महात्मा गान्धी के प्रवचनों से आप स्वतन्त्रता के रंग में रंगी गई। आपने अपने जीवन को देश के लिए अर्पण करने का वहाँ रहकर निश्चय किया।

महात्मा गान्धी के आदेश से आप 1930 में शराब बन्दी सत्याग्रह में सम्मिलित हुईं। जिसके कारण पुलिस ने आपको बन्दी बनाकर चार मास तक जेल के सींखचों में रोके रखा। वीर बहन ने उस कष्ट को कष्ट न मान कर उसे सहर्ष सहन किया।

जेल से बाहर आकर तो आपने निश्चय सा कर लिया कि जब तक भारत स्वतन्त्र नहीं होगा तब तक जेल ही मेरा घर होगा। वहीं पर रहकर अपने अमूल्य जीवन को अर्पण करने का निश्चय किया।

अंग्रेज ने समझा था कि यह महिला जेल में डाल देने से पुन: देशभक्ति का नाम न लगी परन्तु आप की उभरी हुई देशभक्ति ने आपको घर टिकने न दिया। आप तो जेल के लिए दीवानी हो चली थीं। पुन: महात्मा गान्धी के आवाहन पर 1931 में आपने यर्वदा जेल की कोठरियों में रह कर जेल की कठोर यातनायें सहीं। 1940 में आज़ादी का बिगुल बजने पर दिल्ली जेल में भारत माता के बन्धनों को काटने के लिए वहां जा पहुँची।

महात्मा गान्धी ने देखा कि जब तक भारतीय रचनात्मक कार्यों में सहयोग न लेंगे तब तक वे प्राप्त स्वतन्त्रता की रक्षा न कर सकेंगे। अतः महात्मा जी ने बहन लक्ष्मी को भी इन रचनात्मक कामों में लगने के लिए प्रेरित किया। आपका तो महात्मा जी का प्रत्येक आदेश पूरा करना था। अत: आपने उसी दिन से खादी प्रचार, अछूतोद्धार स्त्री शिक्षा, सर्वोदय तथा गोरक्षा आन्दोलनों में भाग लेना प्रारम्भ किया।

जो भी रचनात्मक आन्दोलन प्रारम्भ होता बहन लक्ष्मी उसमें आगे दिखलाई देती। ऐसा प्रतीत होता था कि महिलाओं को देश भक्ति के लिए प्रेरित करने के लिए आपही उनकी प्रेरणा का स्रोत हों। आप जब किसी आन्दोलन को प्रारम्भ करतीं

महिलाएं सभी आपकी अनुगामिनी बन जातीं। महिलाओं की दृष्टि में आप वास्तविक नेतृत्व करने में समर्थ थीं।

जेल में रह कर आपको महात्मा गांधी, जवाहर लाल, सरोजिनी नायडु आदि के साथ रहने का अवसर मिला। उन सब नेताओं के जीवन का प्रभाव आपके जीवन पर भी हुआ है।

आपकी इस कठोर साधना का प्रभाव हरियाणे की अनेक महिलाओं पर हुआ जिससे वे अपने भोगमय जीवन को त्याग कर त्यागमय जीवन को अपनाने के लिए अग्रसर हुईं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् ऐसी महिलाओं की तलाश की गई जिन्होंने अपने देश के लिए अपने जीवन को अर्पण किया हो। आप तो हरियाणे तथा पञ्जाब की महिलाओं में सब से आगे थीं। अत: आपको पञ्जाब सोशल वैलफेयर का चार वर्ष तक सदस्य बनाया गया। जिससे दु:खी महिलाओं की सेवा भली प्रकार हो सके। उन दिनों इस बोर्ड की प्रधान महारानी पटियाला थी।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् आपने अपना जीवन आर्य समाज के लिए अर्पण किया। जहां भी महिलाओं का समाज इकट्ठा होता वहीं पर आपको बुलाया जाता। नगर तथा बाहर जहां भी आर्य समाज के उत्सव होते आप वहां अवश्य पहुँचती तथा भाई और बहनों को अपने विचारों से अवगत करातीं।

आपके खर्च से अतिरिक्त जो धनराशि बच जाती उसे आप गुरुकुलों के लिए, आर्य महिला विद्यालयों के लिए या किसी धार्मिक संस्था और आन्दोलनों के लिए दान देती रही हैं।

आपने सैनी हाई स्कूल, धन्वन्तरी स्कूल, आर्य स्कूल रोहतक, गुरुकुल भैंसवाल, गुरुकुल खानपुर, गुरुकुल झज्जर आदि को समय-समय पर विशाल धन राशि का दान किया है।

अब आपका शरीर जरा जर्जरित हो रहा है, फिर भी दूसरों से सेवा कराने की अपेक्षा नहीं रखतीं। सफेद वस्त्रों को पहनती हैं जो सारे खद्दर के होते हैं, सफेद बालों से शोभित आप देवमहिला सी प्रतीत होती हैं। जो कोई आपके पास आप से मिलने जाता है तुरन्त उससे पूछती हैं कि भाई! कहो मैं आपकी क्या सेवा करूं।

आप उनके पास बैठ जाइये। पुराने पत्रों को दिखलाती हैं जो उनके पास बड़े-बड़े नेताओं के हैं। उनके मन में यही भावना रहती है कि युवा और युवतियां सच्ची तथा धर्मपरायण हो जावें। वार्धक्य के कारण चलने फिरने में आप कष्ट अनुभव करती हैं फिर भी आपका मन अब भी धर्म के विचारों तथा देश भक्ति से ओत-प्रोत है। आर्य समाज कैसे संकट से मुक्त होकर देश के कल्याण में लगा रहे यही विचार या इच्छा बहन जी की बनी रहती है।

पाकिस्तान बनने पर कुछ भारतीय महिलायें पाकिस्तान में रह गई थीं, उनको लाने के लिए सरकार ने महिलाओं का एक डेपूटेशन भेजा था, जो वहां रही महिलाओं को ला सके। उस डेपूटेशन का आपको प्रधान बनाकर पाकिस्तान भेजा गया था। यह वीर महिला बड़े उत्साह से निर्भय होकर वहां गई तथा वहां रही महिलाओं को लेकर आई। एक बार ही नहीं आप तीन बार पाकिस्तान में महिलाओं के दुःख को दूर करने के लिए गईं।

बहन लक्ष्मी वार्धक्य के कारण तथा रोगों के कारण बहुत कमजोर दिखलाई देती हैं। मुझे दो बार बहन जी ने बुलवाया। मैं उनके पास गया तथा उनके चरणों में मेरा सिर झुक गया। मैं उनके महान कार्यों को स्मरण करता हुआ यही सोचने लगा कि इतनी समर्थ बहन को भी समय आने पर निर्बलता ने घेर ही लिया।

मैंने बहन जी से कहा कि बहन! आप गुरुकुल खानपुर चलें हम आपकी सेवा करेंगे। उन्हों कहा कि भाई! ठीक है, जब आवश्यकता होगी आ जाऊंगी। फिर उन्होंने मुझ से कहा कि मैं गुरुकुल खानपुर को एक गाय देना चाहती हूँ, जो हरियाणा नसल की हो उसके लिए कितने रुपये की आवश्यकता होगी। मैंने कहा बहन! मैं पत्र द्वारा इसकी सूचना दूंगा।

इस वार्धक्य काल में भी वे दान में, धार्मिक भावना में पीछे नहीं हैं। युवा और युवतियों को आपसे प्रेरणा लेनी चाहिए। प्रभु की दया से आप शीघ्र स्वस्थ हों जिससे आर्य समाज तथा मानवता का पथ-प्रदर्शन करा सकें। प्रभु आपको स्वास्थ्य तथा दीर्घ जीवन प्रदान करे।

(क्रमशः ८)

* महाभारत *

(आदि पर्व)

लेखक :
आचार्य विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड

(गतांक से आगे)

युधिष्ठर के वारणावत में पहुँचने पर सारे वारणावत नगर निवासियों ने उसका तथा उसके भाइयों का हार्दिक स्वागत किया। नगर निवासियों से पूजित पाण्डव पुरोचन को आगे करके अपने ठहरने के स्थान पर पहुँचे। पुरोचन ने उनके भोजन के लिए उत्तम प्रबन्ध किया हुआ था। दस रात्रि तक पाण्डव उसी भवन में ठहरे। तदनन्तर पुरोचन ने नवनिर्मित भवन में उनको ठहरने की प्रार्थना की। पाण्डव उससे निर्दिष्ट भवन में आके ठहर गये।

एक दिन उस घर में बैठे हुए राजा युधिष्ठर ने भीम से कहा—हे भीम ! इस घर के निर्माण में अग्नि से शीघ्र ही प्रदीप्त होने वाले पदार्थ लगाये गये हैं। इसकी जानकारी यहां पर फैली हुई गन्ध से होती है। पापी पुरोचन हमको अग्नि से दग्ध करने के लिए ही यहां लाया है। इसकी सूचना हस्तिनापुर से चलते हुए मुझे चाचा विदुर जी ने दी थी।

राजा युधिष्ठर की बातों को सुनकर भीम ने कहा—हे भाई ! यदि यह भवन आग्नेय वस्तुओं से निर्मित है तो हमको यह भवन छोड़ कर पहले भवन में चला जाना चाहिए। यह सुन युधिष्ठर बोले—हे भीम ! हमको अपनी किसी भी चेष्टा से यह विदित नहीं होने देना चाहिए कि हम पुरोचन के षड्यन्त्र को जान गये हैं, नहीं तो यह कोई न कोई बहाना बना कर हमको शीघ्र मार डालने का प्रबन्ध करेगा। हमारे मारे जाने पर भीष्म का क्रोध भी व्यर्थ हो जावेगा। यदि हम यहां से भाग कर जावेंगे तो यह पापी अपने गुप्तचरों द्वारा हमारा अनिष्ट कर सकता है। अतः हमको पापी पुरोचन को धोके में रखना चाहिए। हम दिन में शिकार के व्याज से यहां के सारे मार्गों का अवलोकन करेंगे आज से हो हमको सुरंग निर्माण के कार्य में लग जाना चाहिए। इस सुरंग में प्रविष्ट होने पर अग्नि हमारा कुछ भी न बिगाड़ सकेगी। हम को यहां बहुत ही सावधानी से रहना चाहिए।

इसके कुछ दिन पश्चात् विदुर जी ने एक खनक वहां पर भेजा। उसने युधिष्ठिर से कहा—हे राजन् ! मुझे बुद्धिमान् विदुर ने सुरंग खोदने के लिए भेजा है। मुझे एकान्त में बुला के उन्होंने यह आदेश दिया है अतः आप मुझे सुरग बनाने की आज्ञा प्रदान करें। आपके चाचा विदुर जी ने मुझे बताया है कि पापी पुरोचन फागुन मास की चतुर्दशी की रात्रि को इस भवन में अग्नि लगवावेगा। वह प्रथम इस भवन के द्वार को ही अग्नि से प्रदीप्त करेगा। वह आपको आपकी माता के साथ ही दग्ध कर देना चाहता है।

खनक की बातों को सुन कर युधिष्ठिर खनक से बोले—हे मित्र ! आप इस संकट से हमारी रक्षा करें। हमारे चाचा विदुर ने पहले ही मुझे इस आने वाले कष्ट से अवगत करा दिया था।

इस प्रकार बातें करके खाई की सफाई करने के व्याज से खनक ने सुरंग को खोदना प्रारम्भ कर दिया। उसने उस भवन के बीच से महान् सुरंग निकाली। उसके मुहाने पर कपाट लगे हुए थे। वह भूमि के समान सतह पर बनी हुई थी। अतः किसी को भी इसकी जानकारी न हो सकी। पुरोचन के भय से उस सुरंग का मुख बन्द किया हुआ था। पुरोचन सदा उस भवन के द्वार पर ही रहता था। पाण्डवगण भी शस्त्रों समेत द्वार पर ही निवास करते थे। अतः पुरोचन को अग्नि लगाने का अवसर न मिलता था। अविश्वस्त रहने से पाण्डव सदा सावधान रहते थे। पाण्डव के विषय में नगर निवासी कुछ भी न जानते थे।

इस प्रकार पाण्डवों को निश्चिन्तता पूर्वक रहते हुए पुरोचन देखकर अपनी योजना की पूर्णता को मान कर वह मन ही मन बहुत प्रसन्न हुआ। युधिष्ठिर

ने उस पापी के मन की भावना को समझ लिया। उसने भीम से कहा कि अब वह समय आ गया है कि हम को इस भवन के आयुधागार में अग्नि लगा के यहाँ से निकल जाना चाहिए।

एक दिन भोज के व्याज से पाण्डवों की माता कुन्ती ने सब नगर वासियों को प्रीतिभोज दिया। भोजन के पश्चात् उसी भवन में जिसमें पाण्डव रहते थे एक भीलनी तथा उसके पांच बेटे भी भोजन से तृप्त होकर वहीं सो गये। सारे लोगों के सो जाने पर उस रात्रि में जोरों से आंधी चली। उसी समय भीम ने उठ कर पुरोचन के सोने के स्थान पर अग्नि लगा दी। लाक्षागृह के प्रमुख द्वार पर भी अग्नि प्रदीप्त कर दी। तदनन्तर भीम ने चारों ओर घूमकर उस घर को अग्नि लगा कर अग्निमय बना दिया। इसके पश्चात् भीम के संकेत से सब पाण्डव उस सुरंग में घुस गये, जो वहां बनाई हुई थी। अग्नि की चटचटाहट के सारा नगर प्रकाशित हो गया। सारे नगर निवासी जाग गये और उन्होंने इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया।

भाइयो! राजा धृतराष्ट्र की बुद्धि सर्वथा बिगड़ गई है जो उसने पाण्डवों के भवन को जलवा दिया है। देखो, पाण्डवों को जलवाता हुआ यह पापी पुरोचन आप भी मर गया है।

इस प्रकार कहते हुए नगर वासियों ने उस भवन को चारों ओर से घेर लिया, जिसमें पाण्डव निवास करते थे। पाण्डव भी अवसर पाकर उस सुरंग के द्वारा उस भवन से बाहर निकल गये। निद्रा के कारण पाण्डवगण माता के साथ जल्दी-जल्दी चलने में असमर्थ थे। महाबली भीम उन सब को अपने साथ लेकर शीघ्रता से चले। भीम ने माता को अपने कन्धे पर बिठलाया। नकुल और सहदेव को अपनी गोदी में उठाया। अर्जुन और युधिष्ठिर का हाथ पकड़ कर शीघ्रता से वहां से प्रस्थान किया।

उसी समय पाण्डवों की सहायता के लिए विदुर जी ने नदी तट पर अपना एक विश्वस्त सेवक भेजा हुआ था। उस स्थान पर उसे सब पाण्डव मिले। नदी से पार उतारने के लिए यन्त्रवाली नौका का विदुर जी ने वहां प्रबन्ध किया था। यह नाव गंगा के तट खड़ी की गई थी। उस व्यक्ति ने पाण्डवों का धैर्य बन्धाते हुए उनसे कहा—हे पाण्डवो! आपके चाचा विदुर ने मुझसे कहलवाया है कि आप लोग घबरायें नहीं, अन्त में आपकी विजय निश्चित है। यह कह उस व्यक्ति ने उनको नौका में बिठा कर नदी से पार उतारा। पाण्डव भी नाव से उतर कर विदुर के आदेश के अनुसार वहाँ से शीघ्रता से चल दिये, जिनसे उनको कोई जानकार मनुष्य पहचान न सके।

धृतराष्ट्र आदि का पाण्डवों के लिए शोक प्रकाशन। माता कुन्ती के लिए भीम का जल लाने जाना। भूमि पर सोये हुए भाइयों और माता को देख भीम का दुर्योधन पर मन ही मन क्रोध।

पाण्डवों को लाक्षागृह में जला देख नागरिकों ने भीष्म, धृतराष्ट्र और दुर्योधन के विषय में अपने-अपने विचार प्रकट किए। पाण्डवों के मरने की सूचना प्राप्त कर राजा धृतराष्ट्र शोकव्याकुल हुआ। वह दुःख में भर कर इस प्रकार कहने लगा आज मेरा भाई वस्तुतः मर चुका है। उसके पुत्रों की मृत्यु से उसकी मृत्यु हो गई है इस प्रकार शोक-व्याकुल होकर उसने अपने सेवकों से कहा—तुम सब वारणावत में जाकर पाण्डवों के शवों को शीघ्रता से लाओ जिससे उनका विधि के अनुसार संस्कार किया जा सके। पाण्डवों की मृत्यु के समाचार को सुन कर भीष्म, द्रोण, कृप आदि कुरु वृद्ध दुःख में ग्रस्त हो कर बहुत काल तक रोते रहे। विदुर जी वास्तविक स्थिति से परिचित थे अतः उन्होंने बहुत कम शोक प्रकट किया।

भीष्म जी पाण्डवों की मृत्यु से बहुत सन्तप्त हुए। वह एक-एक पाण्डव का नाम ले-लेकर बहुत विलाप करने लगे। युधिष्ठिर की धर्मात्मता, भीम की बलवत्ता, अर्जुन की अस्त्र-शस्त्र संचालन की योग्यता तथा अन्य विविध प्रकार के गुणों को स्मरण करके बहुत विलाप करते रहे। मृतकों के लिए जो अन्तिम क्रिया की जाती है, उसे पूरा करने के लिए उद्यत हुए।

भीष्म की दशा को देख कर महाबुद्धिमान् विदुर ने उनको एकान्त में बुलाया, जहां पर होने से उन दोनों की बातों को कोई दूसरा न सुन सके। विदुर जी ने उनको वे सब बातें बतलाई जिस-जिस प्रकार पाण्डव सुरक्षित रखे जा सके। भीष्म जी ने सारी बातें बड़े धैर्य से सुनीं, जिससे उनको बड़ी शान्ति मिली। अब भीष्म ने मृतकों के अन्त में की जाने वाली क्रियाओं का त्याग कर दिया।

इधर पाण्डव माता के साथ नाव के द्वारा गंगा को पार कर गये। तदन्तर उन्होंने दक्षिण दशा की ओर प्रस्थान किया। इस प्रकार वे वहां से चलकर एक घने वन में पहुँचे। रात्रि के जागरण तथा वन में चलने से पाण्डव बहुत भ्रान्त हो चुके थे, इसके साथ-साथ वे बहुत प्यासे भी थे।

उन्होंने महाबली भीम से कहा कि हे भाई ! हम सारे थके हुए हैं और प्यास से अत्यन्त व्याकुल हैं। पापी पुरोचन का भी पता नहीं कि वह जल गया है या जीवित है। हम कब तक छिप कर अपनी रक्षा कर सकेंगे इसका भी हमको पता नहीं है। हे भाई ! हमको केवल तेरा ही सहारा है। तू ही बलवान् है और हमारा रक्षक भी है। अपने भाइयों की दु:ख भरी बातों को सुन उसे बहुत दु:ख हुआ। फिर भी वह उनको धैर्य बन्धाता हुआ आगे बढ़ा।

भीम बड़े वेग से मार्गस्थ वृक्षों की शाखाओं तथा झाड़ियों को तोड़ते, मरोड़ते हुए, उन सब के साहस को बढ़ाते हुए आगे-आगे चल रहे थे। दुर्योधन के भय से वे शीघ्रता से चले जा रहे थे। इस प्रकार चलते हुए भीम माता तथा भाइयों समेत भयंकर वन में पहुँचे। उस वन में क्रूर तथा हिंस्र स्वभाव वाले पशु-पक्षी निवास करते थे। सब दिशायें उस दिन धूल से व्याप्त थीं। पाण्डव भूख, प्यास और थकावट के कारण और निद्रा के कारण आगे चलने में असमर्थ हो चले थे। अत: सबने उसी स्थान पर निवास करना उचित माना। प्यास से दु:खी कुन्ती माता ने कहा कि मैं पांच बेटों की माता हूँ फिर भी प्यासी हूँ। इससे बढ़कर मेरे लिए और क्या दु:ख हो सकता है।

माता के दु:ख से दु:खी हो भीम अपने चारों भाइयों और माता को वहीं ठहरा कर उनकी प्यास को बुझाने के लिए जल लाने के लिए गहन वन में घुस गये। कुछ दूर चलने पर भीम को एक विशाल पीपल का वृक्ष दिखलाई दिया। वहीं पर एक सुन्दर सरोवर था। भीम ने उस सरोवर में प्रवेश किया तथा अच्छी प्रकार स्नान किया और जल का पान कर शान्ति लाभ प्राप्त किया। अपने साथ ली हुई एक चादर में सबके लिए जल भी भर लिया।

तदनन्तर भीम जल से पूर्ण उस चादर को लेकर अपने भाइयों और माता के पास आये। उस समय भाइयों समेत माता भूमि पर सोई हुई थी। माता और भाइयों की इस दुर्दशा को देख कर भीम बहुत व्याकुल होकर लम्बे-लम्बे श्वास लेने लगे। वे अपने मन में सोचने लगे कि जो भाई और माता कभी महलों में गद्दों पर सोते थे आज उन की यह दुर्दशा हो रही है। इन बातों को स्मरण कर वीर भीम को बहुत दु:ख हो रहा था। वे सोचने लगे कि धृतराष्ट्र के पुत्रों ने हमको घर से निकाल कर हमको जलाने की चेष्टा की है। फिर सोचते-सोचते उनको विचार आया कि ऐसा प्रतीत होता है कि समीप कोई नगर है अत: सोते हुए भाइयों की मुझे रक्षा करनी चाहिए। ऐसा सोचकर वे उनका पहरा देने लगे। उठने के पश्चात् ही ये जलपान करेंगे ऐसा मानकर भीम ने उस वस्त्र निर्मित पात्र को सम्भाल कर उचित स्थान पर रख दिया।

हिडिम्ब राक्षस का अपनी बहन हिडिम्बा को पाण्डवों के पास भेजना। उसकी भीम से बातें। भीम तथा हिडिम्ब का युद्ध। भीम का उसको मारना। युधिष्ठिर का भीम को हिडिम्बा के वध से रोकना। भीम का हिडिम्बा से विवाह। घटोत्कच का जन्म।

उस स्थान से जहां पाण्डव सोये हुए थे कुछ दूर हिडिम्ब राक्षस का निवास स्थान था। उसकी दृष्टि सोते हुए पाण्डवों पर पड़ी। उसने अपनी बहन हिडिम्बा को अपने पास बुलाकर कहा—देखो, ये कुछ दूर सोये हुए मनुष्य मालूम होते हैं, उनकी गन्ध मुझ को आ रही है। तुम वहां जाओ और उनको पकड़ कर मेरे पास लाओ। मनुष्य के मांस खाने की मेरी इच्छा पूर्ण होगी।

भाई के आदेश को प्राप्त कर हिडिम्बा वहां पहुँची जहां चारों पाण्डव माता समेत सो रहे थे। उन सब की रक्षा में नियुक्त एक बलवान् युवा पुरुष को भी देखा। वह राक्षी उस युवा के रूप को देख कर उस पर मोहित हो गई। काम में अन्धी होकर वह उस युवा से इस प्रकार कहने लगी—

हे वीर! मैं तुम्हारे रूप को देख कर तुम पर मोहित हो गई हूँ। मेरा भाई राक्षस हिडिम्ब इस भूमि का स्वामी है जहां पर आप लोग ठहरे हुए हो। उसने मुझे तुमको खाने के लिए लाने को यहां भेजा है। मैं तुम्हारे रूप पर मोहित हूँ अतः अपने भाई की आज्ञा मानने में बेबस हो गई हूँ। तुम एक दम मेरे साथ चलो। मैं इस वन के पत्ते-पत्ते से परिचित हूँ। तुमको यहां से लेकर दूर चली जाऊंगी, जहां पर जाने से मेरे भाई राक्षस का तुमको कोई भय न होगा।

हिडिम्बा की बातों को सुनकर भीम उस से बोले—हे देवि! मैं तेरे भाई के भय से अपने भाइयों और माता को नहीं छोड़ सकता हूँ। मैं तुम्हारे भाई के भय से भयभीत भी नहीं हूँ। भीम की बातों को सुनकर राक्षी फिर बोली—हे वीर! तुम्हारे भाइयों को भी मैं सुरक्षित स्थान पर ले चलूंगी अतः अब इनको उठाने में देरी न करो।

राक्षसी की बात को सुनकर भीम बोले—हे देवि! मैं तेरे भाई के भय से अपने भाइयों और माता को नहीं उठा सकता हूँ। तू सुन, मेरी शक्ति को कोई भी राक्षस

सहन नहीं कर सकता है। चाहे तू जा, चाहे ठहर, तेरी इच्छा। पुरुष मांस भोजी अपने भाई को मेरे पास भेज दे, तू कोई चिन्ता न कर।

जब हिडिम्ब ने हिडिम्बा के आने में देर देखी वह क्रुद्ध हुआ उस स्थान पर आया जहां पाण्डव सुख से शयन कर रहे थे। उसकी आखें रक्त वर्ण की थीं। बड़ी-बड़ी उस की भुजायें थीं, उसके बाल खड़े थे। उसका मुखड़ा बड़ा चौड़ा था। शरीर का रंग काला और उसकी दाढ़ें बड़ी-बड़ी थीं।

हिडिम्बा ने अपने भाई को दूर से आता देखा। वह इससे भयभीत हो गई। वह भीम से फिर बोली—हे वीर! देख, वह राक्षस यहीं आ रहा है। आप सब को अभी खा जावेगा। अब भी अवसर है। अपने भाइयों को शीघ्र जगाओ जिससे मैं तुम सब को लेकर इस स्थान से दूर जा सकूं, जहां मेरे भाई की पहुँचने की शक्ति नहीं है। मुझ में ऐसी शक्ति है कि मैं जहां चाहूँ वहां जा सकती हूँ, तुम मेरे साथ चलो। राक्षसी की बात को सुनकर भीम उससे बोले—हे देवि! तुम घबराओ नहीं, यह मेरा मुकाबला करने में असमर्थ है। मेरी मोटी भुजाओं तथा दृढ़ जांघों को देखो यह कितनी बलवान हैं। तुम मुझे असाधारण बल वाला पुरुष मानो।

हिडिम्बा से बातें करते हुए भीम की सारी बातें राक्षस ने सुन लीं। उसने यह भी देखा कि हिडिम्बा मनुष्य के रूप पर मोहित होकर अपना लुभावना रूप बनाये खड़ी है। तब उस राक्षस को अपनी बहन पर बहुत क्रोध आया। उसने उसकी ओर आंखें फाड़ कर देखा और वह उससे बोला—हिडिम्बे! क्या तुझे मेरे क्रोध का पता नहीं है। तू पुरुष के रूप पर मोहित है। तुझे धिक्कार है। जिन पुरुषों पर तू इतनी मोहित है मैं उनको मार कर तुझे भी यमलोक में भेजूंगा।

हिडिम्बा को इस प्रकार कहके वह राक्षस उसको मारने के लिए उसकी ओर बढ़ा। जब भीम ने राक्षस का यह व्यवहार देखा तब उसने उसको ललकारते हुए इस प्रकार कहा, खड़ा रह, खड़ा रह।

अपनी बहन की ओर क्रुद्ध हुए राक्षस को देख कर भीम हंसता हुआ सा उससे बोला—हे हिडिम्ब! इन सोते हुए मेरे भाइयों से तुझे क्या लेना है। तू आज अपनी पूरी शक्ति लगा कर मुझ से युद्ध कर। मुझ पर प्रहार कर, स्त्री पर हाथ मत उठा, क्योंकि इसने तेरा कोई दोष नहीं किया है। वह अपने बस में नहीं है। यह आज मेरी कामना करती है। हे पापी! यह तो तेरी बहन है। मेरे रहते इसको तू मार न सकेगा। मैं आज तुझे यमलोक में भेजूंगा। तेरे मृत शरीर को आज गृद्ध तथा शृगाल खावेंगे। आज इस वन को तेरे बिना कर दूंगा। कोई भी राक्षस आगे इस वन में न रह सकेगा।

भीम की बातों को सुन राक्षस बोला—रे मूर्ख ! व्यर्थ गरजने से कुछ नहीं बनेगा। आज मुझ से टकरा कर तुझे अपनी शक्ति का ज्ञान होगा। अपने भाइयों को सोने दे, आज मैं पहले तेरा संहार करूगा। तेरे खून को पीकर इनको मार कर फिर हिडिम्बा को भी मारूंगा।

यह कहकर वह भयङ्कर राक्षस भीम की ओर भुजा उठाकर भागा। उसकी उठती हुई भुजा को भीम ने हंसते हुए पकड़ लिया। फिर उसका हाथ पकड़ कर अपने सोते हुए भाइयों से उनकी निद्रा टूटने के भय से बत्तीस हाथ वहां से दूर ले गया। राक्षस ने अपना हाथ छुड़ाने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु वह भीम से अपना हाथ न छुड़ा सका। तब उस राक्षस ने भीम को भुजाओं में कस कर भयङ्कर गर्जना की। उसकी गर्जना को सुनकर भीम भाइयों की निद्रा भंग के भय से उसे दूर खींच कर ले गया।

तदनन्तर दोनों एक दूसरे से भयङ्कर युद्ध करने लगे। उनके परस्पर युद्ध से आस-पास के वृक्ष, झाड़ी और झकाड़ टूटने लगे। एक दूसरे को मारने के लिए दोनों का बड़ा भयंकर युद्ध होने लगा। दोनों एक-दूसरे की भुजा को मरोड़ रहे थे। एक दूसरे को अपनी ओर मारने के लिए खींच रहे थे।

उनके इस भयंकर युद्ध की आवाज को सुन कर सोते हुए पाण्डव और माता कुन्ती जाग उठीं। उन्होंने अपने सामने खड़ी हुई हिडिम्बा को भी देखा। उसको वहां खड़ा देख कुन्ती उससे बोली हे देवि ! तुम कौन हो ? क्या कोई वन देवता हो ? क्यों खड़ी हो ? मुझे तुम सारी बातें स्पष्ट कहो।

वह बोली—हे महाभागे ! यह जो घनघोर वन दिखलाई देता है इसका स्वामी मेरा भाई हिडिम्ब है। मेरे भाई ने तुम्हें मारने के लिए तुम्हारे पास भेजा था परन्तु मैं आपके बलवान् युवा पुत्र पर मोहित हो गई। मैं उसको तथा तुमको बचाकर यहां से दूर ले जाना चाहती थी परन्तु आपके पुत्र ने मेरी बात को स्वीकार नहीं किया। जब मेरे जाने में देर होने लगी तब मेरा भाई राक्षस यहीं पर आ गया। आपका पुत्र उसे यहां से पकड़ कर दूर ले गया है। आप सब देखें ये दोनों बलवान् परस्पर युद्ध कर रहे हैं।
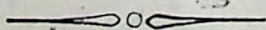
अमीर और भिखारी
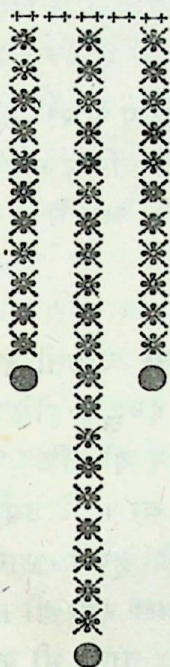
लेखक :—
फादर ऐण्ड्रू, रोहतक

एक था अमीर,
एक था लाजरस गरीब,
रहता था पड़ा
निकट महल के बड़ा;
आते थे मेहमान
करते थे भोजन पान,
बढ़ाते थे अमीर का सम्मान।
चाटता था भिखारी
फेंकी हुई पत्ती बुरी।

एक दिन आया
अमीर ने नरक में खुद को पाया,
भिखारी का हुआ स्वर्गवास
गया भगवान् के पास।
अमीर प्यास से तड़फा
भिखारी को ऊपर देखा।
की उससे एक प्रार्थना
'सूखी जीभ पर एक बूंद पानी फेंकना।'
बीच में भगवान बोले खुद,
"तूने पाया जगत में सुख,
इसने पाया सारा दुःख;
अभी करो दुःखत्रास,
यह करेगा स्वर्गवास;
यही है मेरा निर्णय
बन्द कर तेरी विनय।"
"प्रभु, भाई है मेरे साथ
जगत में मनाते हैं खुशी दिन रात;
भेजो भिखारी को वहां,
करे वे सेवा महां।"
"शास्त्र शिक्षा है पूरी,
क्यों मानते हैं उसे बुरी ?
अगर भेजूं मैं इसे.
मानेंगे इसका कैसे ? भगवान् बोले उसे।"

लोग क्या कहेंगे ?

—कुमारी सुनीता मलिक
जाट कालिज, रोहतक

अरे ! साहब चौंकिये मत। मेरा शीर्षक पढ़ कर आप सभी सोच रहे होंगे कि अजीब लड़की है। 'लोग क्या कहेंगे" यह भी कोई शीर्षक है जिस पर लिखने बैठ गई। पर जनाब आप शायद यह नहीं जानते इन शब्दों का आज के जमाने में कितना अधिक महत्त्व है।

वैसे पूरी तरह से तो मैं भी न बता सकूं, पर जितना जानती हूँ उतना अवश्य बताना चाहूँगी। अरे हां ! वैसे तो आप यह भी जानने के इच्छुक होंगे कि यह बेतुका सा शीर्षक मेरे दिमाग में आया कहां से, कई दिनों से बेचैन थी कि "समाज-सन्देश" के लिए क्या सामग्री भेजी जाये कुछ समझ में नहीं आ रहा था। रेडियो सुनने का या यूं कहिए कि गाने सुनने का मुझे बहुत शौक है। आज भी हमने कालेज से आते ही रेडियो 'आन' कर दिया। गाने की शायद अन्तिम लाईन चल रही थी। मैं बस इतना ही सुन पाई थी—लोग क्या कहेंगे। खैर सौभाग्यवश अगला गाना भी कुछ इस प्रकार का था—"कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना।" यह सुन कर मेरी समस्या का समाधान भी हो गया। कमाल है। सभी को इस बात की चिन्ता है कि 'लोग क्या कहेंगे'। मैंने कापी पेन उठाया और इस माह की सामग्री तैयार करने बैठ गई।

आजकल लोग भगवान से इतना नहीं डरते जितना इन शब्दों से। मेरा मतलब है कि सिर्फ लोक लाज रखते हैं। आप भी अक्सर सुनते होंगे कि ऐसा मत करो, वैसा मत करो यह तो ख्याल करो कि लोग क्या कहेंगे। यह मैं विश्वास के साथ कह सकती हूं कि 50% व्यक्ति कुछ गलत या अपनी नजरों में सही काम करने में इसी कारण हिचकते भी हैं "लोग क्या कहेंगे" यह ख्याल दिमाग में आते ही आपको लगभग कष्ट-सा लगता है। और लोक-लाज से वही कार्य करते हैं जो समाज में मान्य हो। खैर जाने दीजिए। मेरा मतलब है लोग क्या कहेंगे। ये तीन शब्द किसी बला से कम नहीं लगते। कभी-कभी तो झल्ला कर कहते हैं—'कहते रहें, जो कुछ कहते हैं।' पर कुछ देर में गुस्सा

उतने पर आप फिर लोगों को अच्छा या बुरा कहने से डरने लगते हैं यह किसी एक की नहीं सम्पूर्ण मनुष्य जाति की बात है। हम कितना ही यह सोचें कि लोगों से हमें क्या वास्ता हमें तो अपने काम से मतलब। पर जी नहीं, हम सब यह जानते हुए भी इस भय से मुक्ति नहीं पा सकते कि लोग क्या कहेंगे। शायद मानव स्वभाव ही कुछ ऐसा है या हमारा समाज ही कुछ ऐसा है, जिसके कारण हमारा स्वभाव या हमारी Thinking ऐसी है पर कोई बात अवश्य है जिसकी वजह से लोग इस बात की इतनी परवाह करते हैं। वरना आज के जमाने में कौन किसकी परवाह करता है। सब अपने स्वार्थ-सिद्धि में लगे हैं। छोटे बच्चे से लेकर बूढ़े व्यक्ति तक को इस बात का ख्याल होता है तो इसके महत्त्व को समझते देर नहीं लगती चाहिए।

अरे हां ! अभी इतना लिख कर मैं चाय पीने बैठी थी कि मेरा छोटा भाई बंटीं चिल्लाता हुआ आया और मुझसे कहने लगा—"क्या बात है दीदी ! मेरी कल पहनने वाली ड्रेस बिना परेस किये पड़ी है मैं कल क्या पहन कर जाऊंगा स्कूल। अगर आज वाली डाल गया तो 'लोग क्या कहेंगे' ? कि इसके पास एक ही ड्रेस है। तुम समझती क्यों नहीं दीदी ! खैर बटी अपनी बात कह कर चला गया मैं हैरान हुई कमाल है। घर में सब से छोटा सदस्य भी यही सोचता है कि लोग क्या कहेंगे ? खैर साहब मैंने जल्दी-प्याला खाली करके लिख डाला यह प्रसंग भी। मुझे समाज-सन्देश के लिए कुछ सामग्री और मिल गई।

'लोग क्या कहेंगे' इस बात से उतना ही डरना चाहिए, जितना उचित हो क्योंकि लोग किसी के नहीं। ये दुःख में हंसी उड़ाते हैं। सुख में चमचागिरी करते हैं इस संसार में सब स्वार्थी हैं। कोई किसी का नहीं।

इसका तो इस बात से अन्दाजा लगा सकते हैं, अगर आप से कोई आपके सच्चे मित्र के बारे में पूछता है तो आप इसके जवाब में उसकी अच्छाइयों के उदाहरणों का ढ़ेर लगा देंगे और उसी मित्र के बारे में किसी ऐसे व्यक्ति से पूछो जिसकी पटती न हो तो वह आपके सामने बुराइयों के ढ़ेर लगा देगा। तो जनाब, लोगों की परवाह उचित ढ़ग से करनी चाहिए ये अनुचित ढ़ंग से नहीं। इस मायावी संसार को कोई नहीं पहचान सकता है। यह पहेली शायद अनबुझ ही रहेगी। यहां पर मुझे एक हितेषी का कहा हुआ शेर याद आ गया :—

सम्भल कर रखिए पैर जमीं पर,
हर जर्रा बेजान नहीं है।
आपको भला मैं क्या पहचानू,
खुद की मुझे पहचान नहीं है॥

मानव शरीर
तथा
उसकी आवश्यकताएं

— विजय कुमारी मलिक
महिला आयुर्वेदिक डिग्री कालेज,
खानपुर कलां (सोनीपत)

मानव शरीर एक वाष्पीय इञ्जन की तरह है जिस प्रकार इंजन कोयले तथा पानी के बिना नहीं चल सकता उसी प्रकार शरीर भी भोजन के बिना नहीं चल सकता। शरीर को ठीक रखने के लिए निम्नलिखित चीजों का पर्याप्त मात्रा में प्रतिदिन लेना आवश्यक है :—

1. Protein :—ये शरीर के विकास तथा टूटे हुए तन्तुओं की मुरम्मत के लिए होते हैं। ये अण्डे, दूध, आलू तथा चने में होते हैं।

2. Carbohydrates :— ये शरीर में शक्ति देते हैं तथा गर्मी पैदा करते हैं। ये गेहूँ, चावल, गन्ने तथा बाजरे में होते हैं।

3. Fats :— ये ताप तथा शक्ति उत्पन्न करते हैं। इसके मुख्य स्रोत दूध, मक्खन, चर्बी तथा तेल हैं।

4. Calcium :—खून की सफाई तथा दांतों की मजबूती के लिए Calcium आवश्यक है। ये दूध, शलगम, पालक, चौलाई, मेथी में होता है।

5. Phosphorous :—बालों तथा हड्डियों को शक्ति तथा मस्तिष्क को बल प्रदान करता है। यह सेब, बादाम, मटर, पालक, मसूर में मिलता है।

6. Sodium :— यह शरीर में लोहा पहुँचाता है तथा बहरापन व मोतियाबिन्द दूर करता है। यह पत्ता गोभी, दूध, तरबूज, चुकन्दर में मिलता है।

7. Chloride :—यह Normal Blood Circulation के लिए आवश्यक है। Sodium Chloride आमाशय के पाचन रस को बढ़ाते हैं।

8 Potassium :— यह कब्ज को दूर करता है तथा फोड़े फुन्सियां नहीं होने देता। यह मुख्यत: सब्जियों में होता है।

9. Iron :— यह Blood में Haemoglobin के लिए आवश्यक है। यह हमें हरी सब्जियों, मच्छली इत्यादि में मिलता है।

10. Iodine :— यह वजन बढ़ाता है। इसकी कमी से Goitre (गिलहड़) हो जाता है। यह पानी में होता है।

11. Vitamin A :— यह नेत्र ज्योति तथा स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। यह गाजर, चौलाई, केला, मछली, मक्खन, दूध, अखरोट में मिलता है: इसकी पर्याप्त मात्रा न मिलने से Night Blindness और Rickets हो जाता है।

12. Vitamin B_1 : इसकी कमी से Beri-Beri, Intestinal Statis तथा कब्ज आदि रोग होते हैं।

13. Vitamin B_2 :— भोजन में इनके अभाव से चर्म रोग Pellegra इत्यादि रोग हो जाते हैं। ये मुख्यत: लहसुन, दाल और खमीर में मिलते हैं।

14. Vitamin C :— भोजन में विटामिन सी की कमी से Scurvy रोग हो जाता है जिससे मसूढ़े फूल जाते हैं तथा उनमें खून आने लगता है। ये मुख्यत: नींबू, सन्तरा, टमाटर में होते हैं।

15. Vitamin D :— इसके अभाव में हड्डियां नर्म होकर और झुक कर टेढ़ी हो जाती हैं। यह दूध, घी, अण्डों तथा सूर्य की किरणों से मिलता है।

16. Vitamin E :— इसके अभाव से नपुंसकता तथा बांझपन पैदा होता है। यह दलिए, जौ, हरी सब्जियों तथा मटर में होता है।

17. Vitamin K :-- इसके अभाव से रक्त का प्रवाह बढ़ जाता है तथा इसके सेवन से खून का बहना रुक जाता है। यह एलफा-एलफा grass में बहुत मिलता है।

18. Choline :— यह Liver को बल देता है तथा ये दालों तथा अण्डों में पाया जाता है।

19. Chlorine Gas :—यह शरीर की सफाई के लिए आवश्यक है। यह दूध, पालक, केला, खजूर इत्यादि में पाई जाती है।

20 Riboflavine :—यह मुंह, जबान, होंठ तथा आंखों को स्वस्थ रखने के लिए आवश्यक है।

इन सबका ठीक प्रकार से विधिपूर्वक सेवन करना ही मनुष्य को नीरोग बना सकता है।

लेखकों से निवेदन

1. लेखक महानुभावों से प्रार्थना की जाती है कि वे अपनी मौलिक, लोक-हितकारी रचनाएं (कहानी, लेख, कविताएं) प्रत्येक मास के अन्तिम सप्ताह तक अवश्य भेज दें।

2. रचनायें पेज के एक तरफ ही लिखें। लेख शुद्ध एवं सुपाठ्य होना आवश्यक है।

पाठकों से आशा की जाती है कि वे पत्रिका को रोचक बनाने के लिए अपने सुझाव भेज कर सक्रिय योगदान देंगे।

— सम्पादक

अवकाश—एक वरदान

—अल्पना गोयल

★

अवकाश वरदान भी है और समस्या भी।

काम के साथ अवकाश रहे तो मनुष्य को उसके महत्व का पता भली-भांति लग जाता है। अवकाश छुट्टी का पर्याय है, हारे, थके शरीर के लिए अवकाश अथवा छुट्टी की नितान्त आवश्यकता होती है, ऐसे समय में शरीर को आराम मिलता है।

यह प्रमाणित हो चुका है कि मानव के लिए ही नहीं वरन् स्थावर व जंगम के लिए भी अवकाश की आवश्यकता है। प्रकृति ने रात्रि की रचना भी इस लिए की है कि लोग आराम कर सकें। सभी पशु-पक्षियों को एवं वनस्पति को भी अवकाश की आवश्यकता होती है। अवकाश न मिलने पर आदमी धीरे-धीरे रुग्ण होता चला जाता है और अन्ततः वह चिर निन्द्रा में सो जाता है। जीवन को प्रसन्न एव क्रियाशील बनाए रखने के लिए आराम एवं अवकाश की अत्यन्त आवश्यकता है।

अवकाश वरदान भी है और समस्या भी। जहां केवल अवकाश ही अवकाश है वहां शरीर को निष्क्रिय, बेडौल एवं कुरूप होने की सम्भावना रहती है। वे व्यक्ति जिन्हें स्वयं उठकर खाने अथवा पानी पीने में भी कठिनाई होती है, उन्हें अवकाश के महत्त्व का कैसे पता चल सकता है। अवकाश का महत्त्व तो वही जान सकता है जो सारे दिन मिलों में काम करता है। हिन्दी के एक हास्य कवि ने आराम का गुनगान मुक्त कण्ठ से करते हुए ठीक ही लिखा है :—

आराम शब्द में राम छिपा
जो घट-घट अन्तर्यामी है।
आराम शब्द का ज्ञाता तो कोई
विरला योगी ध्यानी है।।

इस प्रकार अवकाश के महत्त्व का हमें ज्ञान होता है। सुरम्य वनों में भ्रमण कर अथवा वाटिका में घूम कर अवकाश का सदुपयोग किया जा सकता है।

इस प्रकार कुछ अपवादों को छोड़कर अवकाश हमारे लिए नितान्त उपयोगी है। उसकी सुखद कल्पना हमारे भीतर नव-जीवन का संचार कर देती है। निश्चय ही अवकाश वरदान है—समस्या नहीं।

(कविता)

क्या लिखूं ?

★

मैं लिखना चाहती हूँ !
पर क्या लिखूं ? किस पर लिखूं ?
धन के लोभ में हो रहे अत्याचारों पर
गरीबों पर हो रहे विकट हास्यों पर
या भगवान के नाम पर चल रही
धोखादेही पर

धन के लोभ में बेटों का गला
काटने वाले पिताओं पर
या दहेज पर आहुति होने वाली
बालिकाओं की विषाद-गाथाओं पर
विषय अनेक हैं।

भ्रष्टाचार अवनति को बढ़ावा देने वाले
अधिकारियों की मनमानी पर
या प्रजा-शासन के नाम पर चल
रही तानाशाही पर

मैं लिखना चाहती हूँ ? पर क्या लिखूं ?
जिधर भी देखो विषाद
जो भी सुनो भयंकर
विषय कौन सा अपनाऊं ?

कु० सुनीता मलिक

हमारे जीवन में आशा का महत्त्व

—अरूणा ग्रेवाल

हमारे जीवन में आशा का महत्वपूर्ण स्थान होना चाहिए। "Hope sustains life" इस कहावत का अर्थ है कि आशा पर ही हमारा जीवन निर्भर है जब हमारे दिल में कोई आशा नहीं होगी तो कोई कार्य हम कैसे पूरा कर सकेंगे। रविन्द्र नाथ टैगोर ने भी कहा है कि भारत में प्राकृतिक खाद्यानों की कमी नहीं है लेकिन फिर भी हमारा देश गरीब है। क्यों? इसका कारण यह है कि हमारे देश में अधिकतर लोगों में आशा नहीं है। घने अन्धकार में एक आशा की किरण होना ही पर्याप्त है। हम देखेंगे कि यही किरण एक नए सूर्य का स्रोत बनेगी और फिर नई सुबह आएगी। इसका यह अर्थ निकलता है परिस्थितियां चाहे कैसी भी हों हमें आशा न छोड़ कर उसका डट कर सामना करना चाहिए। तभी हम सच्चे अर्थों में इन्सान कहलायेंगे। जैसे किसी लड़ाई के मैदान में अगर सिपाही हार जीत की चिन्ता छोड़ कर लड़ेंगे तो वे कभी असफल नहीं होंगे। और यदि वे बेमन से लड़ेंगे तो अवश्य ही हार जायेंगे। क्या मालूम अगर एक या दो स्थानों पर उनकी हार है तो बाकी स्थानों पर विजय हो? क्या पता, यही छोटी विजय भारी जीत की निशानी हो। हम हिटलर, सुभाष चन्द्रबोस, गांधी जैसे व्यक्तियों की सफलता का रहस्य देखें तो वह निश्चय ही आशा होगी।

तो साथियो मैं आपसे यही कहूँगी कि अपने दिल के किसी कोने में आशा की किरण जरूर प्रज्ज्वलित रखना। यही तुम्हारी सफलता का रहस्य होगा। किसी भिखारी को भीख देने से आशा देना कहीं बेहतर है।

(मातृभाषा के प्रति)

सीखो

★

चाहे सम्मुख हो अन्धियारा
चाहे जितना दूर किनारा,
छूटा हो अभ्यास तुम्हारा,
हिन्दी को अपनाना सीखो ।
हिन्दी में अब लिखना सीखो ।।

लिखने में यदि हो कठिनाई,
शब्द चयन की कला न आई,
ध्येय विमुख मत होना भाई,
रोमन देवनागरी सीखो ।
हिन्दी में अब लिखना सीखो ।।

काम निजी हो, या सरकारी,
चाहे सरल हो, या हो भारी,
हिन्दी लिखना रखना जारी,
हिन्दी टिप्पण टंकण सीखो ।
हिन्दी में खत लिखना सीखो ।।

विपदाएं संसार बना दे,
चाहे मन शूल बिछा दे,
शूलों को जो फूल बना दे,
वह निश्चय अपनाना सीखो ।
हिन्दी हित मर जाना सीखो ।।

—कु० विजय मलिक

आर्य समाज को राजनीति में भाग लेना चाहिए

—मन्त्रपाल आर्य
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ

★

आर्य समाज की स्थापना ऐसे समय में की गई जबकि सारा राष्ट्र दासता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। और जिसके संस्थापक दोनों हाथ उठाकर घोषणा करते हों—"अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से भी बुरे से बुरा स्वदेशी राज्य अच्छा होता है।" ऐसी संस्था को राजनीति में भाग नहीं लेना चाहिए बड़ा हास्यास्पद सा लगता है।

सत्यार्थ प्रकाश के छटे सम्मुल्लास में स्वामी जी ने आर्यों के चक्रवर्ती राज्य की बात की है और पूरा सम्मुल्लास राजनीति पर लिखा है। यहां तक की महर्षि जी की आत्मा गुलामी को देख कर रो पड़ी। "आर्यों का चक्रवर्ती राज्य का तो कहना ही क्या, हमारे अपने देश में भी अपना राज्य नहीं है।" उनकी वेदना को कवि ने कितने सुन्दर शब्दों में बांधा है :—

इक हूक सी दिल में उठती है,
इक दर्द जिगर में होता है।
मैं रात को उठ कर रोता हूँ,
जब सारा आलम सोता है॥

यही वजह है स्वामी जी के शिष्य श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा ने विदेश जाकर ब्रिटिश साम्राज्य से टक्कर ली। स्वतन्त्रता आन्दोलन में अनेकों वीर आर्य समाज से प्रेरणा लेकर स्वतन्त्रता संग्राम में जूझ पड़े थे। आर्य समाज केवल सन्ध्या हवन एण्ड कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड नहीं है। आर्य समाज की अपनी राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक व्यवस्था है। जिससे एक राष्ट्र तो क्या सारे विश्व को एक झण्डे के नीचे खड़े किया जा सकता है। फिर यदि आर्य समाज राजनीति में भाग नहीं लेगा तो आर्य समाज की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक व्यवस्था का क्या बनेगा। क्या इन पुस्तकों को पुस्तकालय में सजा देने से ही यह व्यवस्था लागू हो जायेगी ?

सब से बड़ा कारण जो मेरे विपक्षी महानुभाव इसके विरोध में देते हैं वो यह कि राजनीति वेश्या के समान है और खास तौर से आजकल की। इस दलदल में आर्य समाज जैसी पवित्र संस्था को नहीं पड़ना चाहिए। मैं मेरे इन साथियों से पूछना चाहता हूँ क्या जब महर्षि जी ने धर्म का झण्डा उठाया—उस समय क्या धर्म के नाम पर पखण्ड एवं अन्धविश्वास का बोलबाला नहीं था? जब नया समाज 'आर्य समाज' बनाने की घोषणा की तब सारा समाज क्या जर्जरित नहीं हो रहा था? व्यभिचार, भ्रष्टाचार, जातिवाद जैसी बुराइयां क्या समाज को खोखला नहीं कर रही थीं? जब ऐसे धर्म एवं समाज को सुधारने के लिए आगे आ सकते हैं तो राजनीति में क्यों नहीं आ सकते? यदि राजनीति कीचड़ और दलदल न होती तो हमें इसकी तरफ क्या ध्यान देने की आवश्यकता न होती। परन्तु आज समय की पुकार है कि आर्य समाज को राजनीति में भाग लेना चाहिए। यह कि राजनीति में गन्दे आदमी आते हैं इसलिए राजनीति में नहीं आना चाहिए? तो क्या धार्मिक संस्थाओं में गन्दे आदमी नहीं घुसे हुए हैं? क्या समाज में गन्दे आदमी नहीं रहते? फिर हमें धार्मि संस्थाओं एवं समाज को भी छोड़ देना चाहिए।

दूसरा तर्क मेरे विपक्षी महानुभाव यह देते हैं कि राजनीति में झूठ, कपट, छल चलता है। मैं मेरे विपक्षी साथियों से पूछना चाहता हूँ कि क्या धर्म में झूठ, छल, कपट नहीं है। क्या धर्म के नाम पर हजारों लोगों का खून नहीं बहाया गया? क्या धर्म के नाम पर मासूम बच्चों का कत्ल नहीं किया गया? क्या धर्म के नाम पर माता व बहनों की अस्मत नहीं लूटी गई? इसके विरोध में विपक्षी साथी कहेंगे कि यह धर्म नहीं है—तो छल, कपट की राजनीति भी कोई राजनीति नहीं है। जिस प्रकार धर्म के क्षेत्र में हम एक आदर्श एवं सिद्धान्त पर मर मिटते हैं, उसी प्रकार राजनीति में भी हमें एक आदर्श कायम करना चाहिए।

जो यह कहते हैं कि आर्य समाज को राजनीति में भाग नहीं लेना चाहिए वे या तो मूर्ख हैं या अव्वल दर्जे के धूर्त। मूर्ख इसलिए कि वे आर्य समाज को समझ नहीं पाये। और धूर्त इस लिए कि यदि वे समझ गये तो इसलिए विरोध करते हैं कि उनके स्वार्थ टकराते हैं। वे सिद्धान्तों से अधिक स्वार्थों को महत्व देते हैं।

अन्त में यह कहना चाहूँगा—जिस प्रकार आर्य समाज ने धार्मिक, सामाजिक क्षेत्र में कार्य करके दिखाया है इसी प्रकार राजनीति में भी भाग ले ताकि राजनीति भी लोगों की नजरों में कीचड़ एवं दलदल न रहकर एक आवश्यक नीति हो।

सामाजिक अनुशासन और व्यक्तिगत स्वमान

— 'रक्षक'
गणेश कुटीर, गेंदा लाल मार्ग,
अजमेर—30)001

★

कोई भी विचार व्यवहार रूप ले इसके लिए व्यवस्था होती है। व्यवस्था चल सकती है, अनुशासन से, उदाहरण के लिए सड़क पर बायें (या दायें) चलने का नियम ! शासन बाहर से होता है जब कि अनुशासन भीतर से स्वतः स्फुर्त होता है। आज सबसे बड़ा समस्या सामाजिक अनुशासन है, प्रत्येक वय, प्रत्येक व्यवसाय, प्रत्येक संस्था (चाहे शासन ही हो) का व्यक्ति इसे तोड़ने में लगा है। व्यक्ति में अनेक गुण स्वभावतः होते हैं, जैसे अस्तित्व बोध, जोकि स्वभाव (सेल्फ रैस्पैक्ट) या स्वाभिमान (अथवा गरिमा जो नाम देदे) का रूप लेता है। इसका विकृत रूप ही हीन भावना (सुपीरियोरिटि, इन्फीरियोरिटि) है। व्यक्ति में जो हीनता का भाव है, वह उससे अनुशासन भंग कराता है, ये मनोवैज्ञानिक तथ्य है। अन्य विज्ञानों या शास्त्रों की दृष्टि से भी देख लें। उपभोग नामक आर्थिक प्रक्रिया के लिए उत्पादन को लेना आवश्यक है, उत्पादन न होगा तो उपभोग कैसा किया जा सकेगा ? अर्थात् सामाजिक अनुशासन की उपभोग से तथा व्यक्तिगत स्वमान की उत्पादन से समकक्षता है। गणित में पहले घन प्रक्रिया सिखाई जाती है फिर ऋण प्रक्रिया, यदि कुछ है ही नहीं तो बाकी किससे लिया जायेगा ? सामाजिक अनुशासन आज के तुल्य है तो जोड़ 'व्यक्तिगत स्वमान' के तुल्य है। राज्य शास्त्र की दृष्टि से वैसे तो वहाँ भी अभिव्यक्ति की स्वाधीनता का महत्व है जो कि व्यक्तिगत स्वमान को जारी रखने के लिए आवश्यक है। दार्शनिक दृष्टि ये बताती है कि कोई भी कार्य (इफेक्ट) कारण के बिना नहीं होता है, हो ही नहीं सकता। सामाजिक अनुशासन यदि परिणाम (या कार्य) है तो व्यक्तिगत स्वमान कारण है। जिस प्रकार से सर्वहितकारी नियमों को सामाजिक अनुशासन कहा जाता है उसी प्रकार से प्रत्येक हितकारी नियमों के बनाये रखने को व्यक्तिगत स्वमान कह सकते हैं। सामाजिक अनुशासन बनाये रखने का मतलब है व्यक्ति द्वारा सर्वाहितकारी नियमों का पालन,

इसी प्रकार से व्यक्तिगत स्वमान का तात्पर्य होगा समाज के द्वारा व्यक्ति के निजी मामलों में दखल न देना याने प्रत्येक हितकारी नियम पालने में व्यक्ति स्वातंत्र्य को बनाये रखना।

स्वाधीनता (याने आजादी) व्यक्ति की मूलभूत इच्छा है, इसके लिए व्यक्ति छटपटाता रहता है। चाहे ये उपलब्ध न हो। जिन्हें परलोक की चिन्ता है वे मुक्ति की चर्चा करते रहते हैं, परन्तु मानव को भय लोभ, मद मोह आदि से छुटकारा दिलाने का प्रयास नहीं करते। स्वाधीनता की इच्छाए सूक्ष्मता अधिक, वह दीर्घ कालिक हैं, परन्तु जीवन साथी, व्यवसाय, शिक्षा सम्बन्धी इच्छा में तात्कालिक व स्थूल अधिक है। इस लिए व्यक्ति इनके लिए प्रयत्नशील बड़ी तत्परता से रहता है। प्रत्येक व्यक्ति की रुचि, आकांक्षा आदि के अनुकूल यानि इच्छित शिक्षा, इच्छित व्यवसाय, जीवन साथी मिले तो उसके मन में एक विशेष प्रकार की तृप्ति होती है। यदि परिवार आदि की प्रतिकूलता से शिक्षा आदि अनिच्छित मिलें तो व्यक्ति के जीवन में एक रिक्तता खिलने लग जाती है, जिसकी याद उसे बराबर सताती रहती है। वह वर्तमान में जी नहीं सकता तथा भूतकाल में उसका मन दौड़ता रहता है। जैसे एक छात्र को दर्शन-शास्त्र का अध्ययन करके उसमें अनुसंधान करने की इच्छा है, यदि समाज व्यवस्था ठीक है तो दोनों कार्य पूरे हुए तथा यौवन में प्रवेश करने पर जिस कन्या से उसे मानसिक प्रणय हो उसी से व्यक्त या प्रकटतः विवाह हो जावे तो उसके लिए यह धरती ही स्वर्ग होगी (इच्छित शिक्षा, व्यवसाय, जीवनसाथी की प्राप्ति की पद्धति के लिए पाठक देखें हमारा निबन्ध स्वस्थ युवा शक्ति) परन्तु अभी उल्टा हो रहा है, बालक जो शिक्षा चाहता है अभिभावक वह शिक्षा नहीं दिलाना चाहता तथा जिससे विवाह करना चाहे उससे विवाह करने की स्वीकृति समाज नहीं देता, युवक जो व्यवसाय करना चाहता है उसे कुटुम्ब नहीं चाहता, कोई अपनी हिमाकत से कर ले तो बात अलग है। भारत में ही नहीं समूचे भूमण्डल पर अधिकांश युवक (या युवतियां) ऐसे हैं जिन्हें ये तीनों ही अनिच्छित मिलते हैं। समाज के हस्ताक्षेप के कारण। आज शिक्षा क्षेत्र में बढ़ती अनुशासनहीनता का एक प्रबल कारण है छात्रों को उनकी आकांक्षा के अनुरूप शिक्षा का न मिलना। विभिन्न प्रकार के आर्थिक भ्रष्ट-व्यवहार, रिश्वत खोरी, काला-बाजारी आदि सब अनिश्चित व्यवस्था की कुण्ठा से है तथा नगरवधु प्रथा या अनेक शरीर गमन (पोलीगेमी) जैसी यौन जीवन की विकृतियों का लगातार बढ़ते जाने का कारण है बाधित (इम्पोज्ड) विवाह। जिनके प्रथम मानसिक प्रणय हो, उनका विवाह भी हो जावे तो यौवनाचार के लिए एक के अतिरिक्त अन्य शरीर की आवश्यकता ही न पड़े। पाठक ये समझते हैं कि विकृत यौवनाचार के अभाव में मानव समाज तेजी से राजनैतिक षड़यन्त्रों से छूटता चलेगा।

समाज में जो व्यक्ति प्रौढ़ वृद्ध पीढ़ी है वह युवा पीढ़ी के प्रति उदार नहीं दीखती है। इसका एक मुख्य कारण है कि पुरानी पीढ़ी को उनके वृद्धों ने इच्छित शिक्षा आदि की प्राप्ति में सहयोग न दिया जिसके परिणाम स्वरूप वर्तमान वृद्ध पीढ़ी का आन्तरिक जीवन खोखला है, तो परिणाम यह होता है नई पीढ़ी की इच्छाओं पर निषेध (मना करते रहना) नियम ही चलता रहता है और कुछ नहीं। अन्य संस्थानों की तो बात जाने दें, धार्मिक संस्थानों वालों को तो युवा पीढ़ी को इच्छित विवाह आदि करने में मार्ग-दर्शन व सहयोग देना चाहिए। मन का कहीं नहीं अटकना ही तो मोक्ष का उपाय, मन का अटकने लगना ही तो बन्धन है। अनिश्चित शिक्षा, अनिश्चित व्यवसाय, अनिश्चित विवाह से मन अटकता है या भटकता है अथवा कुंठित होता है, कुछ भी कह दें। उत्पादन के लिए सामग्री (रा मैटिरियल) चाहिए। व्यक्तिगत स्वमान जब उत्पादन (यानि पूर्ति) के तुल्य हुआ तो इच्छित विवाह आदि उसके लिए आवश्यक सामग्री हैं। अतः अब तक हुआ जो हुआ, अब भी यदि भूतल पर जल्द स्वर्ग लाना है तो नई पीढ़ी में ये साहस भरना होगा कि इच्छित जीवन साथी आदि की प्राप्ति में भय लाभ बाधा न बनें तथा वृद्ध पीढ़ी में यह उदारता तथा विशाल वृत्ति उत्पन्न करनी होगी कि युवा के व्यक्तिगत अधिकार में हस्ताक्षेप न करें। केवल दो पीढ़ियों की दृष्टि से नहीं वरन सबके लिए ही यह सत्य है कि समाज जैसा व्यक्ति से अनुशासन चाहता है वैसे ही वह (समाज) व्यक्ति के स्वमान को हनन न करे। समाज ऐसा करे तो उसे आरक्षी (पुलिस) ही क्या ? शासन की भी जरूरत नहीं पड़े।

सब प्रकार के अपराध क्या हैं ? अनुशासनहीनता का दूसरा नाम ही। उपर्युक्त विवेचन से स्वतः ही पाठक सहमत होंगे। पाठक तनिक कल्पना करें कि उनको जीवन में शिक्षा, व्यवसाय, साथी इच्छित मिले हैं तो क्या उन्हें सम्पत्ति, सत्ता, यौन सम्बन्धी भ्रष्टता की आवश्यकता होगी ? अन्तर्तमन से उत्तर आयेगा नहीं, नहीं। तो फिर सब को इस आन्दोलन में कूद पड़ना चाहिए। किसी के व्यक्तिगत अधिकार में हस्ताक्षेप करना बन्द कर देना चाहिए तथा अपने निजी मामलों में हस्ताक्षेप सहन न करना चाहिए।

आदर्श करो : आदर्श जीओ

तूती बोल रही हो जहां पर, अनाचार-अपमानों की।
अबलाओं की लाज लूटे जहां, होली हो अरमानों की॥
बिना मोल के बोल चुकाएं, माल पराया अपना हो।
खेत बाड़ को खाए जहां पर, रक्षा केवल सपना हो॥

पशुता जहां पर नांच करे, मानवता की लाशों पर।
अधिकार जमाए बैठे जहां, कुत्ते मानव की श्वासों पर॥
नंगा नाच करे जहां पर, व्यभिचार-पाप हो निर्बन्धन।
जहां सुने नहीं पूछे कोई, कैसा रौरव कैसा क्रन्दन॥

कुत्सित जहां पर नीति हो, सद् रीति सिसके हा ! बन्धन।
जहां निकले गौरव की अर्थी, स्वावलम्बन पर भी हो बन्धन।
ममता का मान मिटे जहां पर, समता की नहीं निशानी हो।
बुरे भाव पनपें जहां पर, सद् आशा एक कहानी हो॥

जहां पूज्य जनों का जूते से, सम्मान निभाया जाता हो।
निर्बलों-दलितों-बेबस प्राणों का, खून बहाया जाता हो॥
जहां ऊंचे भावों में बिकता हो, सस्ता माल हजारों में।
जहां नहीं मिले वस्तु कोई, जनता को खुले बाजारों में॥

हो लूट-पाट फैली जहां पर, उत्कोच सहारा जाता हो।
नवसृजन जहां पर एक मात्र, कागज पर आता जाता हो॥
सुसंस्कृति जहां पर रोती हो, अपनी सत्ता को खोती हो।
मूल्य नहीं जहां पर कोई, कितना ही सच्चा मोती हो॥

सुख-शान्ति के हित क्रान्ति का, वहां सिंहनाद करना होगा।
जागरण का उद्घोष तुम्हें, जाकर घर-घर करना होगा।
तुम नहीं करोगे ऐसा जो, चित्कारों को वरना होगा।
पाप हटाओ निर्भय हो, सब पापों को हरना होगा॥

तुम्हें सुझाना होगा सबको, बलिदानों से नहीं डरो।
पापी के पांवों के नीचे, उलटे घट को नहीं भरो॥
नहीं डरो तुम, नहीं डरो तुम, खून सदा रंग लाता है।
इतिहास साक्षी है इसका, उत्सर्ग विजय को पाता है॥

है पाप सदा उनको डसता, जो पापी का पन सहता है।
आदर्श जहां पर खनक उठे, वहां नहीं अपावन रहता है॥
तुम फाड़-फैंक दो उन सबको, जो जन-जीवन की भीति हैं।
आदर्श करो—आदर्श जीओ, यह शुद्ध सनातन रीति है॥

—डॉ० चन्द्र दत्त कौशिक 'साहित्य-सरस्वति'

शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में—
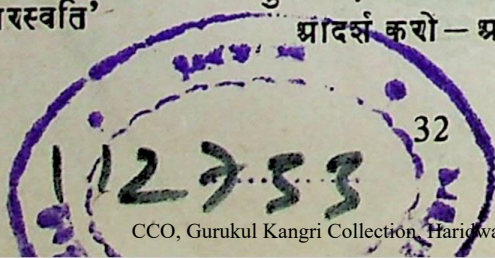
परम्परित आचार्य और शिष्य शब्दों की वैज्ञानिक व्याख्या

—भीम सिंह वेदालंकार, शास्त्री
एम. ए., एम. फिल., पी-एच. डी. (अन्तिम)
अध्यक्ष संकृत विभाग, जनता महाविद्यालय, कौल (कुरुक्षेत्र)

●

प्रस्तुत लेख में मेरा अद्यतनीय प्रदूषित शिक्षापद्धति पर टीका-टिप्पणी करने का कोई लक्ष्य नहीं है। मैं तो गुरु-शिष्य के वाचक परमपावन, मनभावन, सात्त्विक, प्राचीनतम केवल आचार्य और शिष्य शब्दों के अन्दर छिपे हुए उस गूढ़ रहस्य की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ जिनके उच्चारण में ही नम्रता, वात्सल्य, स्नेह और आत्मीयता टपक पड़ती है। सारे संसार में केवल दो ही व्यक्ति ऐसे होते हैं जोकि दूसरे से पराजित होने पर भी गौरव का अनुभव करते हैं। उनमें एक गुरु होता है तथा दूसरा पिता। ये दोनों ही यह चाहते हैं कि उनका शिष्य अथवा पुत्र उनसे भी आगे बढ़े। उन्नति करे। किन्तु यह हमारा दुर्भाग्य है कि हम आज उन स्वतःपूत अपने सम्बोधनों के उच्चारण में भी शर्म महसूस करते हैं। यदि यह सब केवल इसलिए किया जाता है कि हमें अधिक प्राचीनता का दुराग्रही अथवा रुढ़िवादी न होकर नूतनता को भी स्वीकार कर लेना चाहिए तब तो ऐसे लोगों से यह भी कहा जा सकता है कि वे अपने माता-पिता को भी छोड़ कर किन्हीं नये मां-बाप की तलाश करें। क्योंकि वे माता-पिता तो पुराने हो चुके हैं। खैर, इसलिए प्राय: लोग आजकल अपने बच्चों को प्रारम्भ से ही मम्मी, डैडी कहना सिखाते हैं। लेकिन उनको शायद यह ज्ञान नहीं है कि जितना गम्भीर अर्थ या भाव अपने पिता शब्द का है उतना डैडी शब्द का नहीं। हमारे यहां केवल जन्मदाता ही पिता नहीं कहा जाता प्रत्युत भयत्राण, अन्नदान आदि पांच गुणों से समन्वित ही

पिता कहलाने का अधिकारी है। यही माता शब्द की भी गति है। यही कारण है कि जब परस्पर व्यवहार ही हमारा स्नेहिल, प्रेमयुक्त शब्दों से नहीं होगा तो फिर एक दूसरे के प्रति श्रद्धा या प्रेम कैसे उपज सकता है। कैसे हम एक दूसरे के लिए अपने प्राण समर्पित करने की पवित्र भावना से अनुप्राणित हो सकते हैं।

प्रकृत प्रसङ्ग मे आचार्य, शिष्य तथा इनके पारस्पिरिक सम्बन्धों पर विचार करने का मेरा एक विशेष कारण है। क्योंकि व्याकरण मेरा अध्ययन का प्रिय विषय रहा है। और वैयाकरण का काम है—शब्दों की नब्ज देखना। उनकी तह में पैठकर उनका मर्म समझाना। उनमें छिपी (अन्तर्हित) शक्ति का आविष्करण या स्फुरण करना। क्योंकि शब्दों में अच्छी-बुरी दोनों प्रकार की शक्तियां होती हैं। उदाहरण के रूप में जैसे कोई किसो को अपशब्द का प्रयोग करता है तो शब्द में इतनी शक्ति है कि अपशब्द प्रयोक्ता को तुरन्त उसका जवाब थप्पड़ या चपेटे के रूप में मिल जाता है। इसके विपरीत यदि कोई किसी का सुन्दर शब्दों से स्वागत, अभिवादन आदि करता है तो उसे उसके अनुरूप फल मिलता है अर्थात् वह भो स्वागत का पात्र हो जाता है। यह सब शब्दशक्ति का ही प्रत्यक्ष परिणाम है। व्यवहार में भी हम देखते हैं कि छोटे के द्वारा बड़े को नमस्ते किये जाने पर बड़ा भी उसे नमस्ते करता है। इस प्रकार शब्दों में अन्तर्निहित उनकी अच्छी शक्ति को बताना ही वैयाकरण का उद्देश्य है।

अस्तु, शिक्षा का और शिक्षा देने वाले आचार्य का परस्पर अविनाभाव या अपृथक्सिद्ध या अयुतसिद्ध अथवा समवाय सम्बन्ध है। शिक्षा शब्द के उच्चारण करते ही शिक्षक या आचार्य शब्द वहां स्वतः एव उपस्थित हो जाता है। इन दोनों के पारस्परिक सम्बन्धों पर विचार करने से पूर्व मैं शिक्षा के प्राचीन उद्देश्य या लक्ष्य पर भी कुछ प्रकाश डालना चाहूँगा। हमारे यहाँ 'सा विद्या या विमुक्तये' शिक्षा का लक्ष्य माना गया है। शिक्षा विद्या एक ही बात है। अर्थात् शिक्षा वही सार्थक है जो हमें सांसारिक बन्धनों से मुक्ति दिलाये। इस असार कासार रूप संसार के जन्म-मरण रूप आवागमन के इन्द्रजाल से छुड़ाये और यह तभी सम्भव है जब धर्म, अर्थ, काम मोक्ष रूप पुरुषार्थ चतुष्टय में से मोक्ष का दिलाने वाली शिक्षा हो। जो हमें स्वार्थलालुप, क्रोधी, लोभी, मोहृा बनाये वह शिक्षा न होकर कुशिक्षा ही है। प्रेम चन्द के शब्दो में—जो शिक्षा हमें निबलों को सताने के लिए तैयार करे, जा हमें धरती और धन का गुलाम बनाये, जा हमें भोग-विलास में डुबाये; जो हमें दूसरों का रक्त पीकर मोटा होने का इच्छुक बनाये वह शिक्षा नहीं भ्रष्टता है।

शिक्षा का लक्ष्य इतना आदर्श है तभी तो शिक्षा देने वाले शिक्षक का भी शिष्य

को आजीवन ऋण चुकाना होता है। क्योंकि भारतीय परम्परा में बालक पर प्रारम्भ से ही तीन ऋण माने जाते हैं जोकि जीवन में उसे चुकाने पड़ते हैं। वे ऋण निम्न हैं— मातृ ऋण, पितृ ऋण तथा आचार्य ऋण। कहा भी है :—

"मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव।"

इसीलिए बालक को उपनयन या यज्ञोपवीत संस्कार के बाद आचार्यकुल में द्विज नाम दिया जाता है। द्विज का तात्पर्य है दो बार जन्म लेना। भौतिक दृष्टि से बालक एक बार माता के गर्भ से पैदा होता है किन्तु आध्यात्मिक दृष्टिकोण से बालक दूसरी बार आचार्य कुल में जाकर पुनः आचार्य के गर्भ में समा जाता है तथा उपनयन संस्कार के बाद उसका पुनर्जन्म माना जाता है। इस प्रकार बालक दो बार जन्म ग्रहण करने के कारण द्विज कहलाता है। इसी तथ्य पर प्रकाश डालते हुए भगवान् अथर्ववेद में भी कहा गया है :—

"आचार्यः कृणुते गर्भमन्तः ब्रह्मचारिणम्"

अर्थात् विद्याग्रहण की अवधि के दौरान ब्रह्मचारी आचार्य के गर्भ में रहता है। जैसे माता अपने गर्भस्थ बच्चे का पूरा ध्यान रखने के कारण कोई ऐसा काम या भोजना-च्छादनादि नहीं करती जिसका बच्चे पर दुष्प्रभाव पड़े। उसी प्रकार आचार्य भी कोई ऐसा अशिष्ट या गलत आचरण नहीं करता जिसका उसे बालक पर कुप्रभाव पड़ने की यत्-किंचित भी संभावना हो। उपर्युक्त तीन ऋणों को सर्वदा स्मरण कराने के लिए बालक के यज्ञोपवीत में भी तीन ही धागे या सूत्र होते हैं।

प्राचीन भारतीय परम्परा में गुरु के लिए निम्न शब्दों का प्रयोग मिलता है— आचार्य, शिक्षक, उपाध्याय, प्रवक्ता, श्रोत्रिय, अध्यापक तथा गुरु। इसी प्रकार शिष्य के पर्यायवाचियों में भी शिष्य, विनेय, अन्तेवासी, वर्णी, ब्रह्मचारी, स्नातक, माणव तथा छात्र इत्यादि नाम व्यवहार में आते हैं। प्रकृत प्रसङ्ग में केवल आचार्य और शिष्य शब्द ही विवेच्य हैं। इनमें प्रथम आचार्य शब्द के गम्भीर भाव पर प्रकाश डालते हुए निरुक्तकार लिखते हैं—"आचार्यः कस्मात्—आचारं ग्राह्यति आचिनोत्यर्थान्, आचिनोति बुद्धिमिति वा।" अर्थात् जो केवल अर्थों को पढ़ाता है वही आचार्य नहीं है अपितु जो शिक्षा के साथ-साथ शिष्य के आचार-विचार को भी प्रशस्त करता है तथा उसे सद्बुद्धि देकर उसका मार्ग आलोकित करता है वही सही अर्थों में आचार्य है। देखिये, आचार्य शब्द में ही कितना गूढ़ संकेत दे दिया गया है कि केवल अक्षरज्ञान या पढ़ना ही जीवन-निर्माण के लिए पर्याप्त नहीं है प्रत्युत पढ़ने के साथ-साथ आचरणवान् होना भी अपरिहार्यत्वेन अनिवार्य है। अब यदि हम Professor या Lecturer शब्दों पर

विचार करें तो आचार्य शब्द के उक्त गूढ़ अर्थ का नितान्त अभाव परिलक्षित होता है। ये दोनों शब्द तो प्रभाषक या व्याख्याता के रूप में ही सीमित हैं। इन दोनों का छात्र के आचार-विचार, आहार-विहार, चरित्र या नैतिकता के साथ कोई दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। यही हाल Reader शब्द का भी है। वह भी केवल पढ़ने-पढ़ाने तक ही सीमित है। अब पाठक स्वयं विचार कर सकते हैं कि जीवन-निर्माण तथा अर्थगाम्भीर्य की दृष्टि से कौन से शब्द का ग्रहण उत्तम है। अधिक सरल शब्दों में यों कहा जा सकता है कि जो शिष्य के लिए एक प्रतिमान आदर्श होता है, जिसकी कथनी तथा करनी यानि कथन और व्यवहार या आचरण में एकता हो वही आचार्य कहलाने का अधिकार रखता है। यों पढ़ने को तो रावण भी कम पढ़ा-लिखा नहीं था। वह चारों वेदों तथा छहों शास्त्रों का ज्ञाता था। शाब्दिक ज्ञान तो उसका अत्यन्त अधिक था। दूसरे शब्दों में – रामचन्द्र से भी अधिक रावण को शब्द शास्त्र का ज्ञान था। यही कारण है कि युद्ध के पश्चात् रावण की मृत्यु के समय रामचन्द्र ने अनुज लक्ष्मण से कहा कि जाओ और रावण से कोई ज्ञान की बात सीख कर हमें बताओ। वह बहुत ज्ञानी है। यह सुन करके लक्ष्मण रावण के पास गया और उसके सिरहाने की तरफ खड़ा हो गया। क्योंकि रावण को पराजित कर देने के कारण लक्ष्मण में कुछ अहम्भाव उत्पन्न हो गया था। अत: वह पैरों की तरफ खड़ा न होकर उसके सिरहाने खड़ा हो गया। लक्ष्मण के कई देर तक खड़ा रहने पर भी रावण कुछ न बोला। इसके बाद लक्ष्मण के निरुत्तर वापिस आने पर राम असली बात को ताड़ गये और उन्होंने पूछा कि तू प्रश्न पूछते कैसे कहां खड़ा था? लक्ष्मण ने कहा मैं तो सिरहाने की तरफ खड़ा था। राम बोले—फिर वह कैसे बोलता। तुम शिष्य या जिज्ञासु बन कर उसके पास गये थे तो नम्रता से ही पेश आना था। क्योंकि पुरुष का आभूषण नम्रता ही है। चलो, मैं चलता हूँ। यह कहकर रामचन्द्र स्वयं जाकर उसके चरणों की तरफ खड़े हुए और उन्होंने रावण से विनयपूर्वक ज्ञान ग्रहण किया। किन्तु इतना सब होने पर भी, इतना पढ़ने, लिखने पर भी, रावण आचारवान नहीं था। वह आचारभ्रष्ट था। उसकी नैतिकता गिर चुकी थी। परायी स्त्री पर कुदृष्टि रखता था। इसीलिए आज भी उसकी पूजा न करके उसका पुतला जलाया जाता है। इस प्रकार पढ़ाई—अक्षरज्ञान—के साथ-साथ अपना चरित्र चालचलन या आचार पवित्र करके जीवन क्षेत्र में पदार्पण करने का शुभ सन्देश यह आचार्य शब्द हमें प्रदान करता है आचार्य या गुरु की गरिमा को अनुभव करते हुए ही शायद सिकन्दर महान् ने अपने गुरु अरस्तु को युद्धभूमि में साथ चलने से मना किया था। उसने कहा था यदि युद्ध में सिकन्दर मर जाये तो अरस्तु सैकड़ों सिकन्दर तैयार कर सकता है किन्तु यदि अरस्तु मर गया तो सिकन्दर एक भी अरस्तु तैयार नहीं कर सकता।

शिष्य शब्द भी अपने आप में कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। इसका शाब्दिक अर्थ ही

विद्यार्थी की नम्रता, सुशीलता तथा विनयशीलता को घोषित करता है। "शसितुं योग्य: शिष्य:' इस व्युत्पत्ति के अनुसार शासन करने योग्य, आज्ञापालन करने वाला ही शिष्य कहलाने का सही अधिकारी है। जो गुरु का कहा नहीं करता, अनुशासन में नहीं रहता, वह सच्चे अर्थों में शिष्य नहीं है। शिष्य तो वही है—जो कहा जारहा है तुरन्त उसका पालन हो रहा है। "आज्ञा गुरुणां ह्यविचारणीया" अर्थात् गुरुओं की आज्ञा पालन करने में विचार नहीं करना चाहिए। हमारा प्राचीन इतिहास ऐसे गुरुपरायण शिष्यों के बलिदानों की अनेकानेक अमर घटनाओं से भरा हुआ है।

गुरुभक्त एकलव्य के द्वारा गुरुद्रोणाचार्य को गुरुदक्षिणा में दिया गया अपने दाहिने अंगूठे का दान तो पाठकों को स्मरण ही होगा। एक घटना और मेरे मस्तिष्क में आ रही है कि धौम्य ऋषि के आश्रम में आरुणि नाम का एक शिष्य था। वह अत्यन्त गुरुभक्त था। एक बार रात को खेतों में बाहर से आने वाले पानी का बान्ध टूट गया। आचार्य जी ने आरुणि को उसे बन्द कर आने के लिए कहा। आरुणि बन्द करने चला गया किन्तु पानी का प्रवाह अत्याधिक तेज होने के कारण पानी बन्द नहीं हो सका। जो भी मिट्टी डालता उसे पानी तिनके को वायु की तरह उड़ा देता। अब तक वापिस जाकर गुरुजी को पानी बन्द होने के लिए सूचित करने का भी समय नहीं था। अन्यथा सारी फसल मारी जाती। यह सर्दियों की घटना है। तब पानी के प्रवाह को रोकने के लिए आरुणि उस कड़ाके की सर्दी में भी बिना ननु-नच किये स्वयं बान्ध में लेट गया। तब भी पानी का बहाव कुछ कम हुआ। सर्वथा पानी बन्द नहीं हो सका। इधर आरुणि को बड़ी देर तक आया न देख कर आचार्य जी शेष शिष्यों समेत वहां पहुँचे तो आरुणि को इस उक्त हालत में लेटे हुए पाया। तब गुरु जी ने उसे उठा कर छाती से लगा लिया और कहा कि वत्स ! तुमने ही आज इस आश्रम को डूबने से बचा लिया। तुम्हारा सदा कल्याण हो। ऐसे होते हैं शिष्य। गुरु ने जो कहा, शिष्य ने मान लिया। घटनाएं तो और भी इसी प्रकार अनेकानेक हैं। इतिहास उनकी साक्षी देता है। शिष्य का पहला और आखिरी गुण गुरु के प्रति नम्रता है। वह यदि कुछ सीख सकता है तो केवल नम्रता की बदौलत। आचार्य शिष्य से और कुछ नहीं चाहता केवल उससे विनय की अपेक्षा रखता है। "विद्या ददाति विनयम्" यह श्लोक भी इसी तथ्य को उजागर कर रहा है।

शिष्य के प्रसङ्ग में ही एक बात और है—गुरु का शिष्य पर अनुशासन रखना, शासन नहीं करना। शासन में कठोरता होती है जबकि अनुशासन में स्नेह-मिश्रित ताड़ना होती है। जिसके मूल में शिष्य का हित ही सन्निहित होता है। उदाहरण के रूप में जैसे एक बार एक महात्मा जी किसी गांव में पधारे। वहाँ एक स्त्री अपने बच्चे को डांटती हुई कहती है—मरन जोग्गे ! तू पैदा होते ही क्यों न मर गया इत्यादि। यह

सुन कर महात्मा बोले कि देवि ! क्या तुम सचमुच इसे मारना चाहती हो। जिसे नौ मास तक अपने उदर में रखकर पाला-पोसा, जिसको पाने के लिए तुमने रूठे हुए देवी-देवता मनाये, उसे क्या तुम सचमुच मार देना चाहती हो। तब वह स्त्री बोली – नहीं, महात्मा जी, ऐसी बात नहीं है। मरें इसके दुश्मन। यह तो मुझे अपने प्राणों से भी अधिक प्यारा है। यह अत्यन्त शरारती है। मैं तो इसकी शरारत को कोस रही थी। मैं तो यह सब ऊपरले मन से ही कह रही थी। खैर यह तो हुआ दृष्टान्त, किन्तु वही बात यहां पर भी है कि आचार्य शिष्य के हित को ध्यान में रख कर उसको अनुशासित करने के लिए ताड़ना भी देगा किन्तु शिष्य को बुरा नहीं मानना चाहिए। क्योंकि आचार्य जो भी करेगा वह उसके हित को ध्यान में रख कर ही करेगा। दण्ड राजा भी देता है किन्तु कठोरता प्रधान होती है जबकि आचार्य शिष्य के मध्य वैसी कठोरता न होकर परस्पर स्नेहिल माधुर्य का वातावरण निरन्तर सुरभित होता रहता है। वे दोनों स्नेह सूत्रों में आबद्ध होते हैं। दोनों में पिता पुत्र का सम्बन्ध होता है किन्तु यह सब अपनी अपनी मर्यादाओं को दृष्टिगत रखकर ही। इसी लिए विनयशील होने के कारण शिष्य को विनेय भी कहा जाता है। 'विनेतुं योग्यः विनेयः शिष्यः'। किन्तु दुर्भाग्यवश आज स्थिति विपरीत है। आचार्य लोग विनेय हो रहे हैं और आंखें नीची करके निकल जाते हैं। क्योंकि आंखें मिलने पर शिष्य जी कहीं कोई फब्ती न कस दें। लेकिन शिष्य जी भी खूब हैं। आंखें नीची करने पर भी कोई न कोई तीर छोड़ने से नहीं चूकते। किन्तु चलते-चलते एक बात अवश्य कहना चाहूँगा कि आज समाज में शिक्षकों की जो निरीह सी स्थिति हो रही है उसमें जहां अन्य अनेक कारण हैं वहां यह एक प्रमुख हेतु है कि हमारा नैतिक मूल्यों या आदर्शों से गिर जाना। हम शिक्षिक तो समाज के लिए प्रकाश-स्तम्भ हैं, उनको रास्ता दिखाने वाले हैं। यदि हम भी उसी डगर पर चल पड़े तो हम में तथा जनताजनार्दन में क्या अन्तर रहा। यद्यपि शिक्षिक भी समाज का एक महत्त्वपूर्ण अङ्ग है, उसकी भी कुछ आवश्यलाएं एवं आकांक्षायें हैं, उसकी भी कोठियों या कारों में चलने की इच्छा होती है तथापि सत्य मार्ग पर ईमानदारी से चलते हुए ही हमें उक्त इच्छाएं पूरी करने का प्रयास करना चाहिए। इस त्याग की भावना से ही हम अपना खोया हुआ सम्मान प्राप्त कर सकेंगे और विद्यार्थियों को भी सही दिशा दे सकेंगे।

खैर, आधुनिक शिक्षा सन्दर्भों पर आक्षेप करना मेरा प्रतिपाद्य नहीं है। मेरा प्रतिपाद्य तो आचार्य और शिष्य इन दोनों शब्दों की परम्परित गरिमा पर याथाबुद्धि प्रकाश डालना था। वह मैं ऊपर प्रतिपादित कर चुका। आवश्यकता है आज भी इसी स्नेहित वातावरण की जिससे गुरु शिष्य के बीच में पड़ी यह दरार कहीं देश को ही न ले डूबे। क्योंकि शिक्षिक और छात्र ही किसी भी देश के सच्चे कर्णधार होते हैं।